॥ श्री ॥

बालकृष्ण जी सदासहाय

# चौरासी वार्ता

श्रीमदा

चार्य्याणा परमानुकम्पा

स्पद भगवदीय चतुराशी

ति संख्याक वैष्णवां नां

वार्ता

श्री युत मुन्शी नवल किशोर भार्गव

मालिक अवध समाचार पत्रकी आज्ञानुसार

स्थान मथुरा

मुन्शी कन्हैयालाल अध्यादिकाव वंशीधर

मैनेजर के प्रबंध से मुम्बै [illegible] नामशिला

यंत्र में छापी गई ॥ दूसरीबार १००० पुस्तक

नवम्बर सन १८८३ ई.

श्री कृष्णाय नमो नमः।

श्री गोपी जनवल्लभाय नमो नमः

## अथ श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवकन की चौरासी वार्ता लिख्यते।

## अथ आचार्य जी महाप्रभून के सेवक दामोदर दास हरसानी तिनकी वार्ता॥

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे हुते तब तहां दामोदर दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ हे सो श्री आचार्य जी महाप्रभू आप दामोदर दास सों अपने श्री मुख सों दमला कहते, और कहते जो यह मार्ग तेरे लिये प्रगट कीनों है सो श्री आचार्य जी महाप्रभू आप ऐसे कहते सो पृथ्वी परिक्रमा करत श्री गोकुल पधारे सो श्री गोकुल में एक चोतरा श्री गोविंद घाट ऊपर हुतो तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू आप विश्राम करते ता ठोर ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभू की बैठक है और श्री द्वारिकानाथ जी को मन्दिर है तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू बैठे हुते ता समय श्री आचार्य जी महाप्रभून कों महा चिंता उपजी जो श्री ठाकुर जी ने तो आज्ञा दीनी है जो तुम जीवन कों ब्रह्म संबंध करावो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू अपने मन में विचारें जो जीव तो दोषवंत है और श्री पुरुषोत्तम जी तो गुन निधान हैं तातें ऐसें कैसें संबंध होय तातें चिंता उपजी सो अत्यंत आतुर भए ता समय श्री ठाकुर जी आप तत्काल प्रगट होय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों पूछें जो तुम चिंता आतुर क्यों हो तब श्री आचार्य।

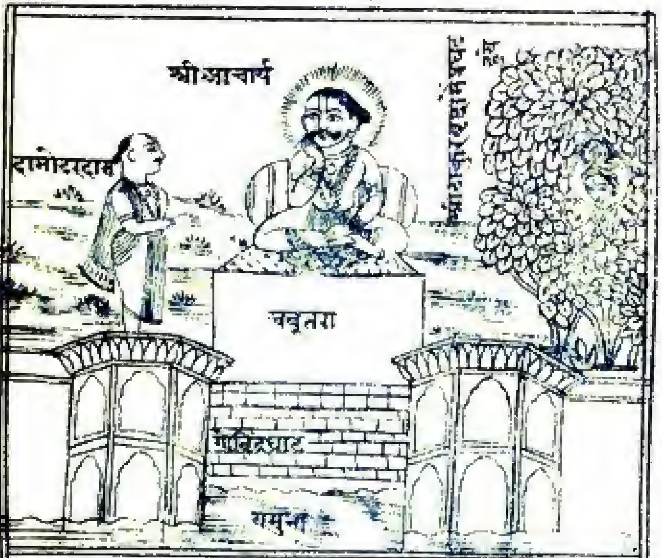


जी महा प्रभू आप कहें जो जीव को स्वरूप तो तुम जा
नत ही हो दोष वन्त है सो तुम सों संबंध कैसें होय तब
श्री ठाकुर जी आप कहें जो तुम जीवन को ब्रह्म संबंध
करावोगे तिन कों हों अंगीकार करूंगो तुम जीवन कों
नाम देउगे तिन के सकल दोष निवर्त होयंगे ये बातें –
श्रावण शुदि ११ के दिन अर्द्ध रात्रि कों भई प्रातः काल
पवित्रा द्वादशी हुती तातें पवित्रा सूत को कर राख्यो हुतो
सो पवित्रा श्री पूरन पुरुषोत्तम जी को पहरायो मिश्री भो
ग धर्यो ता समय के ये अक्षर हुते ताको श्री आचार्य जी
महा प्रभू आप सिद्धांत रहस्य ग्रंथ को ये हैं सो श्लोक १॰
॥ श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि
साक्षात भगवता प्रोक्तं तदक्षर मउच्यते ॥१

ता समय श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पूछी जो दमला ने
कछु सुन्यों तब दामोदर दास नैं बीनती कीनी जो महाराज
श्री ठाकुर जी के बचन सुने तो सही परंतु कछु समझ्यौ
नहीं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कही जो मोकों
श्री ठाकुर जी ने आज्ञा कीनी है जो तुम जीवन को ब्रह्म
संबन्ध करावो गे तिनकों हौं अंगीकार करूंगो तिन के
सकल दोष निवर्त होंयगे ताते ब्रह्म संबंध अवश्य
करनो ॥

## वार्ता प्रसंग ॥ १

बहुर श्री आचार्य जी महा प्रभून नें श्री ठाकुर जी के
पास यह मांग्यो जो मेरे आगें दामोदर दास की देह नछूटे
और श्री आचार्य जी महाप्रभू दामोदर दास सों कछु गो
प्यन राखते और श्री आचार्य जी महा प्रभू श्री भाग
वत अहर्निश देखतें कथा कहतें और मार्ग को सि-
द्धांत भगवद लीला रहस्य श्री आचार्य जी महाप्रभू
आप दामोदर दास के हृदय में स्थापन कीयो ॥

## वार्ता प्रसंग ॥ २

और एक समय दामोदर दास और श्री गुसांई
जी एकान्त में बैठे हुते तब श्री गुसांई जी ने दामोदर
दास सों पूछी जो तुम श्री आचार्य जी महाप्रभून को
कहा करि जानत हो तब दामोदर दास ने कही जो हम
तो श्री आचार्य जी महा प्रभून कौं जगदीश जो श्री-
ठाकुर जी तिनहूं ते अधिक करि जानत हैं तब श्री गु
सांई जी दामोदर सों कहे जो तुम ऐसें क्यों कहत हो
तो श्री ठाकुर जी ते श्री आचार्य जी बड़े हैं तब दामो

दर दास नें कही जो महाराज दान वडौ कै दाना वडौ काहू कै पास धन बहुत होय तो राज कहा करै जो दे य ताकौं जानिये और श्री आचार्य जी महाप्रभून को सवर्स्व धन श्रीठाकुर जी हैं सो हम जीवन कौं दान किये तातें हम श्री आचार्य जी महाप्रभून कौं सब ते बड़े करि जानत हैं ॥

## वार्ताप्रसंग ३

और एक समै श्री आचार्य जी महाप्रभू तथा श्री गुसांई जी अपनी बैठक में बैठे हुते पास द्वै चार वैष्णव हंसिवे खेलवे के बैठे हुते आप उन सों हंस ते खेलते मसखरी करते बहुत प्रसन्नता में उन सों खेलवे की वार्ता करत हुते ता समय दामोदर दास आये ता

समय श्री गुसांई जी ने बहुत आदर सन्मान कियो पा-
छें दामोदर दास बैठे तब श्री गुसांई जी सों दामोदर दास
नें कही जो महाराज अपनो मार्ग निश्चंत ताको नाहीं
यह मार्ग अत्यंत कष्ट आतुरता को है तब श्री गुसांई
जी ने कही जो तुम आछी बात कहत हो परि हम कों
जब श्री आचार्य जी महा प्रभून की कृपा होयगी तब
कष्ट आतुरता होयगी यह मार्ग तो श्री आचार्य जी
महाप्रभून की कृपा तें नहोय तब दामोदर दास साष्टांग
दंडवत करि के बीनती की जो हम कोंतो एकवार राज
सों बीनती करनी है याकें आप प्रभू हो भली जानोंगे सो
करोगे पर यह मार्ग तो या भांति को है तब श्री गुसांई
जी बहुत प्रसन्न भए और कहें जो हम को यह वार्ता श्री
आचार्य जी द्वारा है और कहें जो तुमने कही तो कौंन क
है हम तुम को देखत हैं तब अति प्रसन्न होत हैं आप श्री
आचार्य जी महा प्रभून के सेवक जानि के दामोदर दास
को सिक्षा भान न भये ताते बड़े सो बड़े ॥

### वार्ता प्रसंग ८

और प्रथम श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री ठाकुर जी
के पास यह माग्यो जो मेरे आगे दामोदरदास की देह
न छूटे ताको हेत यह जो श्री आचार्य जी महा प्रभू सन्या-
स ग्रहण करिवेकों विचार मन में करें ता समें श्री गोपी
नाथ जी श्री गुसांई जी ये दोऊ भाई बालक हुते ताते -
मार्ग को सिद्धांत वार्ता श्री आचार्य जी महाप्रभू सन्या
स ग्रहण कीयो तब कितनेक दिना पीछें श्री गुसांई जी
नें श्री जी सों पूछी जो श्री आचार्य जी महा प्रभून ने मा-

गैं प्रगट कीयौ है सो उच्छव कौ कहा प्रकार है हम तौ कछू जानत नाहीं तब श्री आचार्य जी ने कह्यौ जो मार्ग तथा उच्छव कौ प्रकार सब दामोदर दास सों कहे हैं सो तुम उन सों पूछौ तुम सों दामोदर दास कहेंगे तब श्री गुसांई जी दामोदर दास ने बहुत सन्मान करि भक्ति भाव सों घर में पधराये पाछें उच्छव कौ प्रकार श्री गुसांई जीनें पूछौ सो दामोदर दास ने सब कह्यौ ॥

## वार्त्ता प्रसंग ५

और एक समय दामोदर दास के पिता कौ श्राद्ध दिन हतौ वा दिन श्री गुसांई जी दामोदर दास के घर पधारे और दामोदर दास कौ श्राद्ध करवायौ पाछें उत्थापन के समै दामोदर दास दर्शनं कों आये तब श्री गुसांई जी ने कही जो मोकों श्राद्ध करवाये की दक्षिणा देउ तब दामोदर दास कहे जो दक्षिणा में एक बात कहूंगो सो सिद्धान्त रहस्य के डेढ़ श्लोक कौ व्याख्यान कहे यह ऐसी बात है तब श्री गुसांई जीने कही जो आगें कहौ तब दामोदर दास ने कही जो मैंनें तौ इतनौं ही संकल्प कियौ है तब श्री गुसांई जी चुप करि रहे पाछें दामोदरदास ने गायें के अनालिका श्री गुसांई जी के आगें कही श्री भागवत की सुबोधिनी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ग्रंथ की टीका और रहस्य वार्त्ता श्री आचार्य जी महाप्रभू कहे हैं सो सब कही ता पाछें श्री गुसांई जी दामोदर दास कौ नमस्कार करन न देते यातें जो श्री गुसांई जी अपने मन में बिचारे जो श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ स्वरूप दामोदर दास के हृदय विषे सदा सर्वदा

विराजमान हैं तो इन पास दंडौत नमस्कार न करावते याते नमस्कार न करन देते पाछें श्री आचार्यजी ·· ······ महाप्रभून ने दामोदर दास को दर्शन दीयो और आज्ञा दी जो अबते तू श्री गुसांई को चरणोदक नित्य लीयो कर तब प्रातःकाल दामोदर दास श्री गुसांई जी के पास आये और चरणोदक मांग्यो तब श्री गुसांई जी ने चरणोदक की नाहीं कीनी तब दामोदर दास ने श्री गुसांई जी सों कही जो मोको ······ श्री आचार्य जी महाप्रभून की आज्ञा भई है और दर्शन भये हैं और कह्यो जो तू श्री गुसांई जी को चरणोदक नित्य लीजियो तब श्रीगुसांई जी ने चरणोदक दियो और दामोदर दास को श्री आचार्य जी महाप्रभु तीसरे दिन दर्शन देते मार्ग की रहस्य वार्ता कहते ऐसी कृपा करते और कदाचित तीसरे दिन दर्शन न होतो ता दिन दामोदर दास के पेट में पीड़ा होती अत्यन्त कष्ट पावते पाछें जब दर्शन होता तब तत्काल कष्ट निवर्त हो जातो ऐसे करत कितनेक वर्ष पर्यंत दामोदर दास को श्री गुसांई जी ने दर्शन दीनो न श्री आचार्य जी महाप्रभून ने दर्शन दीनो ऐसी कृपा करते जो बात होती सो दामोदर दास श्री गुसांई जी के आगे कहते और मार्ग के प्रकार की वार्ता अहर्निश कहते जो दामोदर दास के हृदय में श्री आचार्यजी महाप्रभू आप बिराजमान हैं ताते दामोदर दास को दंडौत न करन देते और कहते जो दामोदर दास की वार्ता को पार नहीं ऐसे मार्ग के टेक के कृपा पात्र हैं ॥

## वार्ता प्रसंग ६

तब श्री आचार्य जी महा प्रभू दामोदर दास कों पूछे जो दामोदर दास तू श्री गुसांई जी को कहा करि जानत हो तब दामोदर दास नें कही जो महाराज हम तो तुम्हारे पुत्र करि जानत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास को आज्ञा दीनी जो जैसे तुम मोको जानत हो तैसे इन को स्वरूप जानियो और श्री आचार्य जी महाप्रभूननें शृंगार रस मंडन ग्रंथ कीयो है तामें लिये हैं ताते ये दामोदर दास ऐसे कृपा पात्र भगवदी हैं ॥

## वार्ता प्रसंग ७

और प्रथम श्री आचार्य जी महा प्रभू दामोदर दास सों कह्यो जो यह मार्ग मेरे लिये प्रगट कीयो है ताको हेत यह जो जहां लगिन श्री आचार्य जी महा प्रभून के मार्ग की स्थित है तहां तांई दामोदर दास की स्थित गाय्ये है पाछें दामोदर दास ने कह्यो जो मैं श्री ठाकुर जी के वचनतो सुने पर कछू समझ्यो नहीं ता समें श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो आजहू दश जन्म को अंतराय है ताको हेत यह जो जब लगन श्री आचार्य जी महा प्रभून के मार्ग का स्थित है तहां तांई दामोदर दास के आगळ फेर फेर है मार्ग के स्थंभ प्रथमया नें कहें श्री आचार्य जी महा प्रभूननें दामोदर दास के हृदय में भगवद लीला स्थापी संपूर्ण स्रष्टि की सम्बोधन करिबे कों ताको यह हेत जो जब लाग श्री आचार्य जी महा प्रभून के मार्ग की स्थित है तब लाग दामोदर दास की हू स्थिति है सो वे दामोदर दास ऐसे टेक के रूप

पात्र भगवदीय हैं तातें तिनकी वार्ता को पार नहीं तातें
इन की वार्ता कहा तांई लिखिये ॥

## वार्ता प्रसंग ८

## ॥ वैस्नव १ ॥

### अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के से- ॥
### वक कृस्न दास मेघन क्षत्री तिन्की वार्ता

सो एक समै श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परि
क्रमा करी तब कृस्नदास मेघन साथ हे सो बद्री नारायण
के परली ओर किरनी नाम पर्वत है सो तहां ते एक बड़ी
शिला गिरी सो कृस्न दास ने हाथ सो थांभी तब श्री आ
चार्य जी महाप्रभू प्रसन्न भये तब कृस्न दास सो कह्यो

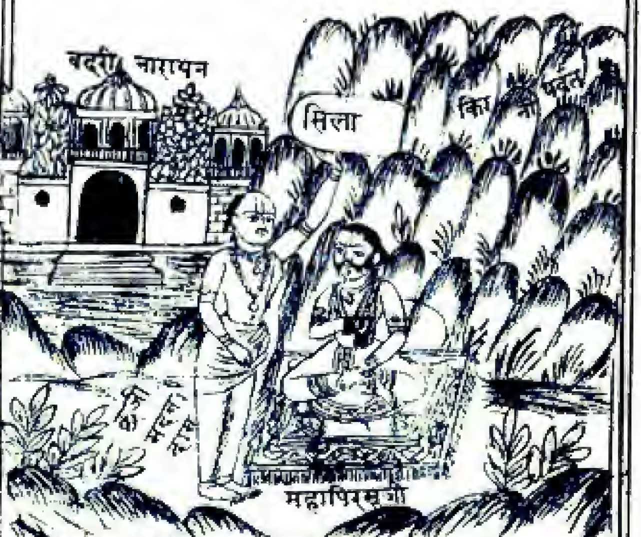

जो मांग कहा मांगत है तब तीन वस्तु मांगी एक तो मुखरता को दोष जाय दूसरे मार्ग को सिद्धांत ममभें तीसरे मेरे गुरू के घर पधारो तामें दोय वस्तु दीनी गुरू के घर पधारवे की नाहीं कीनी बद्री काश्रम ने आगें पधारे जहां जीव की गम्य नाहीं है तहां वेद व्यास जी को स्थान है तहां पधारे तब कृष्णदास सों कह्यो जो तू ठाड़ो रहियो तब श्री आचार्य जी महाप्रभु आगें पधारे तब वेद व्यास जी साम्हे आये सो श्री आचार्य जी महा प्रभून को अपने धाम में लै आए पाछें वेद व्यास जी ने श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो तुमनें श्री भागवत की टीका कीनी है सो मो को सुनावो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने जुगल गीत के अध्याय को एक श्लोक कह्यो सो श्लोक

वाम बाहु कृत वाम कपोलो वल्गित भ्रुर
धरार्पित वेणुं ॥ कोमलांगुलि भिराश्रित
मार्गं गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्दः ॥१॥

या श्लोक को व्याख्यान कर्यो सो तीन दिन में संपूर्ण भयो तब वेद व्यास जीने बीनती करी जो में या भागवत के व्याख्यान की अब धारना करि सकत नाहीं तातें अब क्षमा करो पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभूनने वेद व्यास जी सो कह्यो जो तुम वेदांत के ऐसे सूत्र कहा कीये जो माया वाद पर अर्थ लाग्यो तब व्यास जीनें जो मैं कहा करूं मो को आज्ञा ही ऐसी हुती जो ऐसे अर्थ करियों तब श्री आचार्य जी महा प्रभूनने कही जो मैं ब्रह्म वाद पर अर्थ कियो है सो व्यासजी को सुनायो सो व्यास

जी सुन कर बहुत प्रसन्न भए ता पाछें वेद व्यास जी
सों विदा होय कें तीसरे दिन पहुंचे तब कृष्ण दास सों
कह्यो जो तू गयो नाही सो काहे ते तब कृष्ण दास ने क
ही जो महाराज हों कहा जाऊं सो को तुम्हारे चरणारवि
द बिना और आश्रय नाही है तब यह सुनिकें श्री आचा
र्य जी महाप्रभु बहुत प्रसन्न भये तब कह्यो जो मांगि-
तब वेहो तीन वस्तु मांगी एक तो मुखरता को दाय जा
य दूसरे मार्ग को सिद्धान्त समझो तीसरे मेरे गुरू के घ
र पाव धारो सो तामें दोय वस्तु दीनी गुरू के घर पधा
रवे की नाही कीनी ॥

## वार्ता प्रसंग १

बहुरि एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभु गंगासा
गर पधारे तहां श्री आचार्य जी महाप्रभु पौढ़ हुते तहां
कृष्ण दास पाव दाबत हुते तब श्री आचार्य जी महाप्र
भु मन में विचारे जो धान के मुरमुरा होयतो आरोगिये तब
श्री आचार्य जी महाप्रभुन के अंतःकरन की कृष्ण-
दास सेवक ने जानी इतने में श्री आचार्य जी महाप्रभु
न को निद्रा आई तब कृष्णदास उठि के गंगासागर उ
पर आए तब देखे तो पार ‥ एक दीया वरत है ताकी
अटकर ते पैर के गंगाजी पार आये तहां गांव हो सो
खेत में ते गीले धान कटवाये तहां गांव में जाय के भ
र भूंजा को टका की जगह चार टका दे कें मुरमुरा सिद्ध-
करवाए तब लेकें आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभुन
के चरणारविंद दाब के जगाये और मुरमुरा आगें धरे
तब कह्यो राज आरोगो तब श्री आचार्य जी महाप्रभु

तनें पूछी जो तू कहां ते लायौ तब समाचार कहे जो म
हाराज मैं पार ते लायो तब श्री आचार्य जी महाप्रभु
बहुत प्रसन्न भये तब कह्यौ जो मांग तब वेही तीन व
स्तु मांगी सुखरता को होय जाय मार्ग को सिद्धांत मेरे हृ
दय में आवे तीसरे मेरे गुरू के घर पाव धारो तब श्री
आचार्य जी महाप्रभु ने कह्यौ जो जीव कहा मांगि
जानैं या समैं जो मांगतो सोई देतो जो कहतो तौ श्री
ठाकुर जी को स्वरूप दिखावतो तहांते श्री आचार्य
जी महाप्रभु सोरां पधारे तब कृष्ण दास ने बीनती क
रिकें कह्यौ जो महाराज मेरे गुरू है सो बुलाय लाउं
तब श्री आचार्य जी महाप्रभुन ने कही जो तू खेद पावे
गो पाछें कृष्ण दास अकेले गुरू के पास आयो तब कृ
ष्णदास को गुरू ने देख्यो तब कृष्ण दास सों गुरू नें क
ह्यौ जो अरे तेनें और गुरू कीयो तब कृष्ण दास ने क
ह्यौ जो मेनें तो और गुरू नाहीं कीयो मेरे गुरू तो तुमहीं
हौ पर तुम्हारी कृपा ते मेनें पुरुषोत्तम पाये हैं तब
गुरू ने कही जो पुरुषोत्तम कों जानिये तब गुरू के आ
गे अग्नि को अंगीठा धक धकातो हुतो तामेंते कृष्ण
दास ने दोउ हाथ की अञ्जुली भरि कें अंगार हाथ
में लिये और कह्यौ जो श्री आचार्य जी महाप्रभु जो
पूरण पुरुषोत्तम होयतो मेरे हाथ मति जरियो और
जो और भांति होयतो मेरे हाथ भस्म होय जइयो सो
एक मुहूर्त लों अग्नि हाथ में राखी तब गुरू ने भय खाई
और कह्यौ जो अग्नि डार देउ पाछें उन गुरून ने कृष्ण
दास के हाथ में सों अपने हाथ सों पकरि कें अग्नि

डर वाय दीनों तब कृष्ण दास उहांते खेद पाय कें उठि आयौ यह प्रसंग सब श्री वल्लभाष्टक की टीका में श्री गोकुलनाथ जी नें विस्तार करि कें लिख्यौ है ॥ ✣

## प्रसंग २

बहुर मार्ग हृदयारूढ़ भयो पाछें कदाचित गोप्य वार्ता होय सो सबन के आगे कहें पाछें काहू वैष्णवनें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यौ जो कृष्ण दास सबन के आगें गोप्य वार्ता कहत है तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने कृष्ण दास सों कह्यौ जो क्यों रे तू सबन के आगें गोप्य वार्ता कहत है तब कृष्ण दास ने कह्यौ जो महाराज आप उनही सों पूछिये जो मेंनें कहा कह्यौ

हैं तब उन वैष्णवन सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पूछी जो तुम सों कृष्णदास नें कहा वार्ता कही है तब वैष्णवन नें कही जो महाराज हम कों तो सुधि रही नाहीं तब श्री आचार्य जी महाप्रभू मुसिक्याय के चुप करि रहे॥

प्रसंग ॥३॥

और एक समय श्री ठाकुर जी की इच्छा ते श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कृष्णदास नें प्रश्न पूछो जो महाराज श्री ठाकुर जी कों प्रिय वस्तु कहा है सो मोसों कहौ मो ताको प्रति उत्तर श्री आचार्य जी महाप्रभू कहे जो श्री ठाकुर जी उत्तम वस्तु के भोगता है परंतु गोरस शब्देन वार्ता कहीयतु है गोरस अति प्रिय है ताके भाव अति बेचनो यह है और सबन तें भक्ति को स्नेह प्रभाव अतिप्रिय है ता तें भक्ति वत्सल कहावत हैं तब कृष्णदास ने फिर प्रश्न पूछो जो महाराज श्री ठाकुर जी कों अप्रिय वस्तु कहा है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो श्री ठाकुर जी कों ध्रुवा समान अप्रिय वस्तु कछु नाहीं और तातें अ प्रिय भक्तन के दूषी हैं फिर कृष्णदासनें प्रश्न पूछो जो महाराज श्री रघुनाथ जी संपूर्ण सृष्टि कों लेकें स्वधाम में पधारे हैं और राजा दशरथ कों स्वर्ग दीयो सो काहे तें ताको प्रति उत्तर श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो श्री रघुनाथ जी परम दयाल हैं तातें स्वर्ग दीयो नातर दशरथ कों स्वर्ग की योग्यता न हुती यातें अपनो वचन सत्य करिवे कों बनवास पठाय दीये ऐसो कर्म कीयो॥

प्रसंग ॥४॥

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कृष्ण

दास ने प्रश्न पूछ्यौ जो महाराज भक्त होय के श्री ठाकुर जी
की लीला कौ भेद नाहीं जानत सो काहेतें तब श्री आचार्य
जी महाप्रभुन नें कह्यौ जो ए विधि पूर्वक समर्पण जो
कह्यो है सो नाहीं करत अनुभव कौं जानें और भग
वद भक्त को संग करें तो श्री ठाकुर जी की लीला कौ
भेद जानें सो तो आप कों योग्यता मान काहू कौ संग
नाहीं करत और कछु करत हैं सो अंतःकरण पूर्वक ना
हीं करत हैं सोतें श्री ठाकुर जी के स्वरूप कों तथा लीला
कौ भेद नाहीं जानत उत्तम भक्तन को संग करें श्री भा
गवत श्री सुबोधिनी ग्रंथन कौ अहर्निश श्रवण गाहन क
रें तब भगवद भाव उत्पन्न होय श्री ठाकुर जी भक्तन
के हृदै विषैं सदैव रहत हैं तथा सेवा करि कें वंध हैं
तहां एक अन्य मार्गी वैष्णव जाके हृदय में श्री ठाकुर
जी विराजत हैं ताकौ संग करनो तहां गडुत धावन वै
ष्णव कौ दृष्टान्त दियो है जिन जिन भाव पूर्वक सेवा क
री तिन के सकल निवर्त भए तातें लीलास्थ ब्रज भक्तन
के भाव कौ विचार करनों जे वैष्णव श्री ठाकुर जी कौ स्व
रूप जानत हैं तिनकौ स्वरूप अलौकिक दृष्टि सों जानो
जाय जो आज्ञा होय सो जानों जे वैष्णव श्री ठाकुर जी
कौं जानत हैं सो जो कछु कारज करत हैं और श्री ठाकुर
जी सों विरह भावना प्रकरत हैं अपनों स्वदोष भाव वि
चार करत हैं अपनों स्वरूप जानें जो हौं कौन हौं पहले
कहा हुतो भगवद संबंध किये तें कहा भयो अब मोकों
कहा कर्तव्य रात दिवस ऐसो विचार करत रहे तब अ
पनों स्वरूप जानें ए प्रागट्य ब्रज भक्तन के अर्थ तथा ए

तन्मार्गीय के अर्थ तातें उनम संग होय तो एतन्मार्ग के ए ठाकुर जानें और श्रुति पुराण अनेक सिद्धान्त इतिहास हैं तातें ब्रजराज के घर प्रगटे सो श्री ठाकुर जीन जानें तातें ए श्री ठाकुर जी कों नबही जानें तातें भगवद भक्त को संग करनो सेवा को प्रकार एतन्मार्गी वैष्णव जानत हैं तिन सों मिलि तिन को भाव पूछि कें सेवा करनी तब भगवद् भाव उत्पन्न होय श्री ठाकुर जी को स्नेह युक्त सेवा करे तो श्री ठाकुर जी वा कों सब जतावें ॥

प्रसंग ॥ ५ ॥

और एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू श्री बद्रीनाथ जी के मन्दिर में पधारे तब वेद व्यास जी साथ हे तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें वेद व्यास जी सों पूछी जो भमर गीत को अध्याता में उद्धव जी कों ब्रज भक्तन के पास पठाए हैं ता प्रसंग में श्लोक आधो घटत है तब वेद व्यास जी ने श्लोक आधो कह्यो ॥

श्लोक ॥ आतम त्वात् भक्त वत्सलात
सत वत्कात् स्वभावतः ॥+

या की टीका श्री आचार्य जी महा प्रभूनने पहले ही कीनी हैं सो सुनि कें वेद व्यास जी बहुत प्रसन्न भए ता पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभू बद्रीनाथ जी के मन्दिर पधारे ता दिन बामन द्वादशी को दिन हतो सो ता दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून को बिचार मनमें व्रत करिबे को हतो तब श्री बद्री नाथ जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो मेनं फलाहार को सबनि योज कीनो

पर पाइयत नाहीं तातें तुम रसोई करि श्री ठाकुरजी
को भोग धरि भोजन करो श्री ठाकुर जी की इच्छा ऐसे
ही देखत हैं इतने में श्री कृस्नदास नें आय कें कह्यो
जो महाराज यहां तो कछू पावत नाहीं पाछें ता दिन
ने वामन द्वादशी के दिन दान न करने उत्सवा ने च
पारणां ऐसो वचन है पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू
बद्रीनाथ जी ने बिदा भये नव कृस्नदास साथ होइ

॥ वार्ताप्रसंग ॥ ६ ॥

प्रथम श्री आचार्य जी महाप्रभू वेदव्यास जी के मंदि
र में पधारे नव कृस्नदास सों कह्यो जो तू ठाढ़ो रहियो
नव कृस्नदास ठाढ़े रहे पाछें आप तीसरे दिन पधारे
नव कह्यो जो तू गयो नाहीं सो काहे ते नव कृस्नदा
स कह्यो जो महाराज तुम्हारी आज्ञा न मानों तो
सेवक काहे को सेवक को आज्ञा में चलनो सो कृ
स्नदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय प्रभून की आज्ञा
मानते तातें श्री आचार्य जी महाप्रभू कृस्नदास के
ऊपर सदा प्रसन्न रहते पाछें मुखरता को दोष मन में
न लावते ऐसे आप उदार राय जीवन को श्रम न दे
खते दया राखते और अपनी ओर ते दया राखि जी
वन को अंगीकार करते जीवन की ओर को विचा
र न करते कृस्नदास मार्ग तथा घर में सदैव रहते सो
ये कृस्नदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृ
पापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं
सो अब कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ताप्रसंग ॥ ७ ॥ वैस्नव ॥ ३ ॥ सम्बंध ॥ १८ ॥

॥ अथ श्री आचार्य जी महाप्रभून के ॥ १२ ॥
सेवक दामोदर दास सम्भलवारे खत्री
कन्नौज के वासी तिनकी वार्ता है

सो दामोदर दास कों एक पत्र नामें कों पायो और स
त्र में यामें कह्यो जो या पत्र कों बांचनारो कोई तू सम
जैयो सो यह पत्र काहू सों बांच्यो न जाय सो किनेक
दिन पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू कन्नौज पधारे
तहां गांव के बाहिर आय उतरे और कृष्णदास मेघन
कों गाव में पठायो और कह्यो जो सीधो सामग्री लें
आउ परि काहू सों कहियो मति जो श्री आचार्य जी महा
प्रभू यहां पधारे हैं तब कृष्णदास गाव में जाय सीधो साम
ग्री सब लीनो सो लेकें जब चलन लागे तब दामोदरदा
स ताही समय राजद्वार से आवत हूते सो मार्ग जात
कृष्णदास कों देखे तब दामोदर दास घोड़ा ते उतर
कें कृष्णदास के पास आये और दंडवत कीये पाछें
पूछी जो तुम कहां ते आये और श्री आचार्य जी महा
प्रभू पधारे हैं तब कृष्णदास नें कह्यो जो आज्ञा नाहीं
तब दामोदर दास नें कह्यो जो ये श्री आचार्य जी महाप्र
भून बिना काहे कों आवें सो जब कृष्णदास चले तब पा
छें २ दामोदर दास आये और घोड़ा हो सो पठाय दी
यो सो कृष्णदास कों दूर ते आवत श्री आचार्य जी म
हाप्रभून ने देख्यो पाछें दामोदरदास कों देखे तब दामो
दर दास ने दंडवत कीनी तब कृष्णदास सों श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें पूछी जो तेनें या सों क्यों कह्यो तब कृ
ष्णदास नें कह्यो जो महाराज मैंने तो इनसों नहीं कह्यो

तब

दामोदर दास नें बीनती कीनी जो महाराज इन मों सों
नाहीं कह्यौ हुतो इन के पाछें पाछें चल्यौ आयौ हुं औ
र श्री आचार्य जी महाप्रभु नाहीं कीयो सो यातें कन्नौज
पधारोगे तब पावन करोगे तब श्री आचार्य जी महा
प्रभु मन में विचारे जो आज्ञा भई है सो अवश्य होयगी
ताके लिये नाहीं कही हुती पाछें श्री आचार्य महाप्र
भून नें दामोदर दास सों पूछी जो पत्र लायो है तब दामो
दर दास नें बीनती कीनी जो महाराज पत्र को कहा काम
है मो कों शरण लीजिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभु
नने कही जो तो कों आज्ञा भई है जो यह पत्र बाचे तो
को तू शरण जइयो तातें तू पत्र लाउ तब पत्र मगायो
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पत्र बाच्यो पाछें वा
पत्र को अभिप्राय दामोदर दास सों कह्यो दामोदर दा
स को पाछें नाम सुनायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभु
न कों दामोदर दास ने अपने घर पधराये पाछें दामोदर
दास तथा दामोदर दास की स्त्री दोउ जने स्नान करिकें
श्री आचार्य जी महाप्रभु की शरण आये तब दामोदर
दास कों समर्पण करवायो और दामोदर दास की स्त्री
कों प्रथम नाम सुनायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभु
नने समर्पण करवायो तब दामोदर दास ने बीनती की
नी जो महाराज अब हम कों कहा आज्ञा है अब हम क
हा करें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आज्ञा करी जो अ
ब तुम सेवा करो तब दामोदर दास ने कही जो महाराज
सेवा कौन भांति करें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
कही जो कहुं श्री ठाकुर जी को स्वरूप देखो सो एक

दर्जी के घर श्री ठाकुर जी को स्वरूप हतो सो ता को दा
मोदरदास द्रव्य देकें लै आये पाछें मन घर पात्र पात्र
सब बदलाये पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें वा स्व
रूप कों पंचामृत में स्नान करवायो श्री द्वारका नाथ जी
नाम धर्यो पाछें सिंहासन बैठाये नब दामोदर के माथे
सेवा पधराय कें पाछें भोग समर्प्यो समयानुसार भोग
सराय बीड़ा समर्पन लागे नब देखें तो पान हरे हैं तब
श्री महाप्रभून नें कह्यो जो दामोदर दास हरे पान कबहूं
नहीं समर्पिये उत्तम सामग्री होय सो श्री ठाकुर जी को
समर्पिये श्री ठाकुर जी तो उत्तम वस्तु के भोक्ता हैं पाछें
स्त्री पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागे नब श्री द्वारि
का नाथ जी की सेवा भली भांति सों होन लागी और श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो उतर्यो पर
काल्यो होय सो श्री ठाकुर जी कूं कबहूं न समर्पिये वह
काम न आवे सारे पर काले में ते प्रथम श्री ठाकुर जी
कों लाजिये और उत्तम कोमल वस्त्र होय सो श्री ठाकु
र जी के काम आवें पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
और आज्ञा दीनी जो उत्तम सामग्री होय सो श्री ठाकुर
जी के लिये अपने घर लै आइये श्री ठाकुर जी की सा
मग्री में ते और ठौर खर्च न करिये तब दामोदर दास स्त्री
पुरुष दोऊ जने भली भांति सों सेवा करन लागे और सा
मग्री उज्ज्वल होती जो रूपान के कटोरन में आपरस
राखते सो ऐसी उज्ज्वल कोई जानतो नाहीं जो या
में सामग्री है या भांति सों सेवा करन लागे ॥

• वार्त्ता प्रसंग १

और दामोदर दास श्रीठाकुर जी को जल आप भरते सो एक दिन या को ससुर दामोदर दास के घर आय कें दामोदर दास सों कहन लाग्यो जो तुम जल भरि ल्यावत हो सो हम को लाज मैं लाग्या आवत है, ताते तुम जल मति भरो लौंडी के हाथ जल भरावो तब दामोदर दास ने एक घड़ा तो आपनों ल्यो और एक घड़ा स्त्री के हाथ में दीयो तब दोउ जने घड़ा लेकें या को हाट के आगें होय कें निकसे

तब जल भरि कें घर आये पाछें दामोदर दास २ को ससुर आयो सो आय कें दामोदर दास के २ पायन पर्यो और बीनती करिकें कह्यो जो ये चूकें

अवतें तुमही जल भंग परि श्री पास जल भरिम
गयो आज पाछें हम कछू न कहेंगे तब आपही
जल भरन लागे जो चाहिये सो श्री द्वारकानाथ जी
दामोदर दास से भाग लेने वाले कारने सेवा करि कें
श्रीठाकुर जी कों ऐसे प्रसन्न किये तब श्री आचा
र्यजी महाप्रभू आपने श्री मुखतें कहें जो जिननें राजा
अंबरीष न देख्यो होय सो दामोदर दास कों देखें ॰
राजा अंबरीष तो मर्य्यादा मार्गीय हुते और ये पु॰
ष्टि मार्गीय हैं इनमें इतनी अधिकता है ॥ ४३

वार्ता प्रसंग ॥ ४४ ॥

और एक दिन उष्ण काल के दिन हुते तब श्री द्वार
का नाथजी कों पौढ़ाये आप दामोदर दास तिनकें
चौवारे में सोये सो वा दिन गरमी बहुत भयी तब श्री द्वा
रिका नाथ जी ने लौंडी कों आज्ञा दीनी जो किवाड़ खो
ल मोकों गरमी बहुत लागत है तब लौंडी नें किवाड़ खो
ले तब श्री द्वारिका नाथ जी नें लौंडी सों कह्यो जो पंखा
करि तब लौंडी ने पंखा कीयो सो घड़ी १ लों पंखा कि
यो पाछें लौंडी सों कह्यो जो तू अब जाय के सोय रहि ॥
तब सवारो भयो तब दामोदर दास देखे तो किवाड़ खुले
पड़े हैं तब पूछी किवाड़ किन खोले तब लौंडी नें कही
जो मोकों श्री ठाकुर जीनें किवाड़ खोलन की आज्ञा
करी है तब खोले हैं तब दामोदर दास लौंडी ने बहुत
खीजे और कह्यो जो तैनें किवाड़ क्यों खोले जो मो
कों श्री ठाकुर जीनें किवाड़ खोलन की आज्ञा क्यों न
करी आप क्यों न खोले और लौंडी सों क्यों कही पर प्रभू

२ नव लौंडीनें किवाड़ खोले

बड़े दयाल हैं ता विसें स्नेह होय नाही सों संभाषण करें श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंगीकार में सब समान हैं लौकिक में कोऊ ऊंच ...... नीच कहिलेउ श्री ठाकुर जी तो स्नेह के वस हैं पाछे श्री ठाकुर जी ने कह्यो जो मैंने किवाड़ खुलाए हैं तब इन खोले हैं तू तो चौबारे में जाय सोयो और मोकों भीतर सुवायो मोंको गरमी बहुत लगी ताते खुल्वाए हैं तू लौंडी सों क्यों खीजत हैं यों कहि के बहुत खीजे तब दामोदर दासने कह्यो जो प्रसाद तब लेउ जब मन्दिर सम्हराऊं तब स्त्रीने कह्यो जो प्रसाद न लेउ तो ऐसो क्यों बनें यह तो पांच सात दिन को काम नाही प्रसाद लीयें बिना क्यों चलें तब कह्यो जो प्रसाद तो नाही लेउं फलाहार करूंगो तब ऐसे करत २ मन्दिर सिद्ध भयो तब श्री द्वारकानाथ जी के मन्दिर में पाट बैठाये तब उत्सव कीयो वैष्णव को प्रशाद लिवायो ता पाछें आपनें प्रशाद लीयो ॥२॥ ४ मह।

## प्रसंग ॥३॥

और एक दिन दामोदर दास श्री ठाकुर जी कों राजभोग समर्पि के सइया मन्दिर में समारन गये तब देखें तो दुलीचा ऊपर बिल्ली ने बिगार दीयो है तब दामोदर दास नें कह्यो जो श्री ठाकुर जी अपनी सेया हू राख सकत नाही ऐसें कह्यो तब श्री ठाकुर जी ने यार चौकी ऊपर सों लात मारि के डार दीनी और दामोदर दास सों श्री ठाकुर जीनें कह्यो जो तू कैसो सेवक है सेवक होय के या भांति कहत है ऐसे बहुत खीजे

पाछें दामोदर दास नें वीनती कीनी मनुहार बहुत करी
सामग्री सिद्ध करवाय के श्रीठाकुर जी को भोग समर्प्यो
तब श्रीठाकुर जी आरोगे पर नाहू मास दोय लों बोले
नांहीं तब दामोदर दास नें वीनती बहुत कीनी तब फेर बो
लन लागे ॥३॥

## वार्ता प्रसंग ४

पहुर एक समय दामोदर दास हरसानी इनकेप
र पाउन आए सो दामोदर दास संबल वार के घर पांच
सात दिन रहे तब इनने भली भांति सों समाधान कीयो
पाछें दामोदर दास हरसानी इन सों विदा होय के अडेल
आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने दामोदर दास
सों कह्यो जो दमला तू कहां उतर्यो हो और कहां प्रसे
द लीयो हो तब दामोदर दास हरसानी ने श्री आचार्य
जी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज कन्नोज
में दामोदर दास संबल वार के घर उतर्यो हो पर
अनसखडी महाप्रशाद लेनो सखडी न लेनो तब श्री
आचार्य जी महाप्रभू दामोदर दास संबल वार के ऊ
पर अप्रसन्न भए और कह्यो जो यह मेरो अंतरंग से
वक याको सखड़ी महा प्रशाद क्यों न लिवायो सो
यह बात श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंतःकरन की
दामोदर दास संबल वार नें घर बैठे जानी जो श्री आ
चार्य जी महाप्रभू आप अप्रसन्न भए मेरे ऊपर तब
स्त्री सों कह्यो जो तू श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी
भांति सों करियो और मैं तो श्री आचार्य जी महाप्र
भून के चरन दरसन को अडेल जात हों सो तब नहान

चले सो अड़ैल जाय पहोंचे तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून के दर्शन करिकें साष्टाङ्ग दंडवत कीनी तब श्री
आचार्य जी महा प्रभू पीढि दै बैठे तब दामोदर दास
संवलवार ने श्री आचार्य जी महा प्रभून सों बीनती
कीनी जो महाराज मेरौ अपराध कहा है और जीव
तो अपराध करत ही आयो है परि अपराध.........
.....जानिये तौ भलौ है तब श्री आचार्य जी महा प्रभू
न नें कह्यौ जो तैंने दामोदर दास हरसानी कों अपने
घर महा प्रशाद अनसखड़ी क्यों लिवायो सखड़ी
क्यों न लिवायो तब दामोदर दास संवलवार ने बीन
ती कीनी जो महाराज दामोदर दास सों आप पूछियें
जो सखड़ी क्यों न लीनी तब श्री आचार्य जी महा प्रभू
न नें दामोदर दास हरसानी सों कह्यौ जो तैंनें सखड़ी
महा प्रशाद क्यों न लीनो तब दामोदर दास ने कह्यौ
जो महाराज श्री ठाकुर जी प्रातः काल बाल भोग आ
रोगने पाछें पकवान मिठाई दूध पाक बहुत लेतो सो
सखड़ी की रुचि रहती नाहीं तातें न लेतो तब श्री आ
चार्य जी महा प्रभू न नें कह्यौ जो तूतो अपनी इच्छा
तें न लेतो परि मोकों तो याके ऊपर बड़ी खुन्स भई
हुती सो भक्तन के अंतःकरन की वृत्ति देखवे कों प्रभू
न कों प्रागट्य है काहे ते जो दामोदर दास संवल वार
नें अपने घर कन्नौज में श्री आचार्य जी महा प्रभून
के अंतःकरन कों जानो तो श्री आचार्य जी महा प्रभू
तो भक्तन के हृदय में सदा स्थित हैं तो भक्तन के हृ
दय की बात क्यों न जानें परि भक्तन की परीक्षार्थ यह

प्रभून को प्रागट्य ह्वै पाछें दामोदर दास सबल वार कों बहुत सन्मान करि कें श्री आचार्य जी महा प्रभून नें वा को अपने घर को पठायो तब दामोदर दास अपने घर कन्नौज में आए तब दोउ स्त्री पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागे ॥ ४॥

## वार्त्ता प्रसंग ५

और सिंह नंद के वैष्णव श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास जाते सो सब कन्नौज में दामोदर दास को मिलि कें जाते जो वैष्णव आवतें तिन सबन को कन्नौज में अपने घर आदर सन्मान करि कें उतारते सबन कों महा प्रशाद लिवावते पाछें जब अडेल बिदा होते तब तिन वैष्णव प्रति एक एक मोहर एक एक श्री फल आचार्य जी महाप्रभून को भेंट पठावते काहे ते जो मेरी दंडोत खाली हाथन कैसें करेंगे ऐसे श्री आचार्य जी महाप्रभू इन पर सदा प्रसन्न रहते ॥५॥

## वार्त्ता प्रसंग ६

बहुर दामोदर दास को सुसर बहुत प्रसन्न हुतो तिन नें १०० सौ लोंडी बेटी के दायजे में दीनी जो मेरी बेटी बैठी रहेगी काम काज सब लोंडी करेंगी परि ऐसे न करती सेवा सम्बन्धी कार्य्य सब आपु करती सो वह ऐसी भगवदीय ही ॥

## वार्त्ता प्रसंग ७

बहुर एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू आप दामोदर दास के घर पोढ़े हुते और दामोदर दास पाव दाबत हुतो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोद

र दास सों पूछो जो दामोदर दास तेरे मन में काहू वात
को मनोरथ है तब दामोदर दास नें कह्यौ जो महाराज
मों कों तो काहू बात कौ मनोरथ आप के अनुग्रह तें र
ह्यौ नाहीं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो तू
अपनी स्त्री सों पूछि आउ जो तो कों काहू वात को मनोरथ
है तब दामोदर दास जाय कें अपनी स्त्री सों पूछो जो ते
रे काहू वात को मनोरथ है तब स्त्री नें कह्यौ जो कोई वा
त को मनोरथ र ह्यौ नाहीं एक पुत्र को मनोरथ है एक
पुत्र होय तो भलौ तब यह बात दामोदर दास नें जा
य कें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यौ जो महाराज

स्त्री को मनोरथ है जो एक पुत्र होय तो भलो है तब
श्री आचार्य जी महा प्रभू आप कहें जो हो होयगो पाछें
श्री आचार्य जी महा प्रभू आप तो श्री नाथ जी द्वार पधा
रे पाछें जब वाके समय भयो तब स्त्री गर्भ स्थित भई पा
छें वा वाखर में कितनेक दिन में एक डांकोनिया आयो
तब वाकों सब साथ की स्त्री पूछन लागी तब तामें ते
काहू नें दामोदर दास की स्त्री सों कही जो अमुको तू हू
पूछि देखि जो कहा होयगो बेटा होयगो कै बेटी हो
यगी पाछें वाकी लोंडी ने जाय कैं वा डांकोनिया सों पू
छी जो दामोदर दास की स्त्री कें कहा होयगो बेटा होय
गो कै बेटी होयगी तब वा डांकोनिया ने कही जो बेटा
होयगो पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभू कितनेक दिन में
कन्नौज में पधारे तब दामोदर दास चरण छूवन लागे
तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यौ जो मोको छुवे
मति तो को अनाश्रय भयो है तब दामोदर दास नें क
ह्यो जो महाराज में तो कछू जानत नाहीं हो तब श्री आ
चार्य जी महा प्रभून ने कह्यो जो तू अपनी स्त्री सों पूछि
आउ तब दामोदर दास ने स्त्री सो पूछो जो तेनें कछू अ
नाश्रय कीनो है सो स्त्री ने जो प्रकार भयो हुतो सो सब
कह्यो सो बात श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कही तब
श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कही जो या के पेट में म्ले
छ होयगो पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभू आप तो अडेल पधारे
पाछें यह बात दामोदर दास की स्त्री ने सुनी तब ते श्री
ठाकुर जी के पात्रादिक सेवा सम्बन्धी वस्तु स्पर्शन करती
और कहती जो मेरे पेट में म्लेछ है ताते श्री ठाकुर जी के पा

मतथ्या सामग्री कैसें करूं या भांति सों कहती पाछें जब प्रसूत के दिन आए तब दामोदर दास की स्त्री ने अपनी महतारी सों कहवाय पठाई जो मेरें पुत्र होयगो सो होत मात्र तू अपने घर लै जैयो हम वाको मुख न देखेंगे जो ह मता को मुख देखेंगे तो हमारो धर्म नष्ट होयगो तातें हम ताको मुख न देखेंगे सो उपाय तू करियो पाछें वा की महतारी ने ऐसें ही कीयो प्रसूत मोच होत अपने घर लै गई पाछें धाय को देकें बड़ो कीयो ॥ ७ ॥

## वार्ता प्रसंग ८

बहुर कितनेक दिन पाछें दामोदर दास की देह छूटी तब वाकी स्त्री ने छिपाय राखो पाछें वा स्त्रीनें एक वैष्णव सों कही जो तुम अडेल कों एक नाव भाड़े करि ल्यावो सो वह वैष्णव भाड़े करि ल्यायो ता नाव में श्री द्वारिका नाथ जी और घर में की सामग्री तिनूका पर्य्यंत कछु घर में राख्यो नाहीं घर में जो हुतो सो सब नाव में भर्यो तब वा वैष्णव सों कह्यो जो यह नाव अडेल कों लै जाउ श्री आचार्य जी महाप्रभून के मन्दिर में पहुंचाय आवो सो वह वैष्णव नाव लैकें चल्यो सो कोस तीस पर नाव गई ता पाछें स्त्री ने प्रगट करी जो दामोदर दास की देह छूटि गई है तब वैष्णव जुरि आये दामोदर दास को संस्कार कीयो पाछें दामोदर दास को बेटा तुरक भयो हुतो सो आयो आय के घर में देखे तो कछू नाहीं जल को भर्यो करवा घर में धर्यो है सो देखि के मूंड पीट रह्यो पाछें दामोदर दास को सुसर आयो तिन नें अपनी बेटी सों कह्यो जो बेटी तुमने घर में कछू राख्यो नाहीं सो तू अब कहा खा

यगी तब वानें कही जो तुम देउगे सो में खाउंगी सबी-
लोगन के पास में सगे सोंदरे कछु देत हैं असी ख्याति की
कछु रीतिहै तब दामोदर दास की स्त्री ने अन्न जल कौत्या
ग कीयो सो थोरे से दिन में वाकीहू देह छूटी तब कृत्य दा
उन को साथ ही भयो वह असी भगवदीय ही सो यहवा
त कितनेक दिन पाछें काहू वैष्णव नें श्री आचार्य जी म
हा प्रभून के आगे आय कही तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून ने कही इन को योंही चाहिये वे दोउ जने असे
भगवदीय हे उन की सराहना श्री आचार्य जी महाप्रभु
श्री मुखने करते तातें इन की वार्ता अनिर्वचनीय है
इन की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥८॥

वार्ता प्रसंग ९ संवद ॥२४॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के
सेवक पद्मनाभ दास कन्नोजि
या ब्राह्मण कन्नोज में रह
ते तिनकी वार्ता॥

सो एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभु कन्नोज पधा
रे तब पद्मनाभदास श्री आचार्य जी महा प्रभून के द
र्शन कों आए तब पद्मनाभ दास नें श्री आचार्य जी म
हा प्रभून के श्री मुखने भगवत् वार्ता को प्रसंग सुन्यो
तब जानी जो एतो साक्षात् ईश्वर हे असें श्री आचार्य
जी महा प्रभून के दर्शन भये प्रथम पद्मनाभ दास व्या
स आसन बैठते सो कन्नोज में अपने घर कथा कहते
ऊंचे आसन बैठते श्रोता बहुत कथा सुनिवे कों आ
वते काहू के घर जानो न पड़तो इन घर बैठ चली अ

आवती याभांति सों रहते सो पद्मनाभि दास श्री आचार्य जी महा प्रभून के श्रीमुखते भगवत् प्रसंग सुन्यौं तब ते जान्यौं जो ए साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं सो पूरन पुरुषोत्तम जानि कें पद्मनाभ दास श्री आचार्य जी महाप्रभून की सरण आये नाम पायौ पाछें समर्पण करवायौ तब उत्थापन के समय श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पोथी खोली तहां दामोदर दास संभलवार के घर बैठ हते ता समय पद्मनाभि दास अपने घर ते आये श्री आचार्य जी महाप्रभून कौं दंडवत् करि कें बैठे तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने पोथी खोली और श्लोक निबंधन कौ कह्यौ ॥

॥ श्लोक ॥

पठनीयं प्रयत्नेन सर्व हेतु विव
र्जितं ॥ वृत्यर्थं नैव युंजीत प्राणैः
कंठ गतै रपि ॥ तदभावे तथै
वस्या तथा निर्वाह मांचरत् ॥

यह श्लोक पढ़ सो पद्मनाभ दास ने सुन्या पाछें दशमस्कंध की कथा कही सो सुनी तब श्री आचार्य जी महा प्रभू कथा कहि रहे तब पद्मनाभ दास नें जल की अञ्जुली भरि कें संकल्प कीयौ जो अपने कथा कहिवे कौ द्रव न करूंगो ऐसे श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे संकल्प कीयौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री मुखते कह्यौ जो श्री भागवत रत्न रथन कहनौ और तो तुम्हारी वृत्य है तुम ब्राह्मण हौ और पुराण महाभारथ तो इत्यादिक कहनौ तब पद्मनाभदास ने कह्यौ जो महा

राज हमनें अब तों संकल्प कीयो सो तो कीयो यातें क
छू न कहनों तब श्री आचार्य जी महा प्रभू कहें जो तुम ग
हस्थ हो सो कौन भांति निर्वाह करोगे तब पद्मनाभ दास
नें कह्यो जो महाराज भिक्षा मांगि कें निर्वाह करूंगा
पाछें एक जिजमान के घर छत्र्य गए तिन तब बहुत
आदर सन्मान कीयो तब पद्मनाभ दास के मन में ब
हुत ग्लानि आई जो कबहूं पहलें तों भिक्षा द्रव्य करी
नाहीं और अब वैष्णव भये ताकों तों यह भिक्षा हू उ
चित नाहीं तब फेर संकल्प कीयो जो अबतो भिक्षाक
नहूं न करूंगा तब फेर श्री आचार्य जी महा प्रभून नें क
ह्यो जो अब निर्वाह कौन भांति करोगे तब पद्मनाभदास
नें कही जो अब वैष्णव द्रव्य करि निर्वाह करूंगा पाछें
कोडी बेचनें लकडी लै आवनें पर और बात न विचारी
या भांति देहा दि पर्य्यंत निर्वाह कीनों ऐसे टेक के कृपा
पात्र भगवदीय हैं ॥

## वार्ता प्रसंग २

अब श्री आचार्य जी महा प्रभू अराग में पधारे हैं
तब पद्म नाभ दास साथ हैं रात्रि पहर १ गई ही तब श्री
आचार्य जी महा प्रभून नें पद्मनाभ दास सों कही जो श्री
भक्काजी कों पार ते पधराय लावो सो सुनत ही पद्म
नाभ दास उठ चले तब पांच सात वैष्णव तहां बैठे
हुते सो कहन लागे जो यह ब्राम्हण बावरो भयो है यें
पेर कहां जायगो नाव सब बंधी हैं घटवार सब घर
गये हैं तातें यह बिरियां जाइबे की नहीं पर या कों
तो श्री आचार्य जी महा प्रभून की आज्ञा है ताकों वि

स्वाम जो यह काम अधिक अवस्य होयगो सो घाट ऊपर आये तब इत उत देखन लागे इतने में देखें तो अकस्मात एक लरिका बर्ष दस कौ एक डोंगी लेकर-आयौ सो वानें पद्मनाभ दास कौं पूछो जो तू पार जाय-गो तब पद्मनाभदास नें कह्यौ हां हां जाऊंगो तब उन

पार उतार दीनों पाछें फेरि पूछौ जो तू फेरि आवेगो तब पद्मनाभ दास नें कह्यौ जो घड़ी दोय पाछें आउं गो तब लरिका नें कह्यौ जो डोंगी राखत हों तू वेगी आ इयो पाछें अड़ेल में जाय कें श्री अक्काजी कौं पधरा य लाये तब वाही डोंगी में बैठार पार उतारे तब फिर देखें तो वहां डोंगी हू नाहीं और लरिका हू नाहीं पाछें श्री अक्काजी कौं पधराय कें घर आये पाछें श्री आ-

चार्यजी महाप्रभून नें पद्मनाभि दास कों आज्ञा दीनी जो जाउ सोय रहो जब जहां वैष्णव सोये हते तहां आये तब वैष्णव सब पूछन लागे जो तुम कहा करि आये तब पद्मनाभि दास नें सब समाचार कहे तब वैष्णवन नें कह्यौ जो तैनें श्री ठाकुरजी कों श्रम बहुत करवायो पाछें वैष्णवन नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों पूछो जो महाराज पद्मनाभ दास नें श्री ठाकुरजी कों श्रम बहुत करवायो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह जो भयो है कछु सो मेरी इच्छा ने भयो है ता तें तुम पद्मनाभि दास सों कछु मति कहो॥

## वार्ता प्रसंग २

बहुर एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री गोकुल तें अडेल कों जात हते तब एक व्योपारी केछु वस्तु लैके साथ में चल्यौ और श्री आचार्य जी महाप्रभू कन्नौज के बीच पधारे तब व्योपारी पाछें रह्यौ ताके ऊपर चोर आय पड़े सो वस्तु सब लूट लीनी और श्री आचार्य जी महा प्रभू आप तो दामोदर दास संबलवार के घर पधारे सो वहां उतरे रसोई करि श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो इतने में वह व्योपारी रोवत पीटत आयो तब पूछो जो श्री आचार्य जी महाप्रभू कहां करत हैं तब पद्मनाभि दास ने कह्यौ जो भोजन करत होयगे तब वा व्योपारी ने कह्यौ जो हमारो माल सब लुटि गयो है और श्री आचार्य जी महाप्रभू भोजन करत हैं तब पद्मनाभ दास ने अपने मन में विचार्यो जो श्री आचार्यजी महा प्रभू सुनेंगे तो भोजन न करेंगे

घड़ी दोय को अबार होयगो तातें पद्मनाभदास वा
व्यापारी को बांह पकर के एक साहू की दुकान पर
लेगये ता साहू ने पद्मनाभदास को बहुत आदर सन्
मान कीयो तब वाने कह्यो जो आज्ञा करो कैसें पधारे
हो तब पद्मनाभदास ने वा साहू सों कह्यो जो या
व्योपारी कों इतनो द्रव्य दियो चाहिये या द्रव्य को ख
त पत्र व्याज हम लिख देयंगे तब साहू ने कह्यो जो प
द्मनाभ दास जी तुम कों जितनो द्रव्य चाहिये तितनो
लेउ खत पत्र को कहा बात है तब पद्मनाभदास नें
कह्यो जो पहिले तो खत पत्र लिखोंगो पीछें द्रव्य
लेउंगो बिना खत लिखे तो लेउंगो नाहीं तब साहू ने
कही जो तुम्हारी इच्छा पाछें पद्मनाभदास ने खत
लिख दीनो तब साहू नें वा व्योपारी को द्रव्य दीयो त
ब वह व्योपारी तो अपनो द्रव्य लेके अपने घर गयो
तब पद्मनाभदास अपने घर आये तब पद्मनाभदा
स सों श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पूछो जो पद्मनाभ
तू कहां गयो हो तब पद्मनाभदास ने कह्यो जो महा
राज एक काम गयो हो सो श्री आचार्य जी महाप्रभू
आप तो साक्षात् ईश्वर सो तत्काल जानि गये तब प
द्मनाभ दास सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें क
ह्यो जो हम वा व्योपारी को संग तो लीनो न हुतो
जो वा को माल देनो वह पीछें रह्यो तो हम कहा क
रें परि तेंनें बहुत बुरी करी सो ऋण काढ़ि के पैसे
दीनो तब पद्मनाभदास नें कही जो महाराज सो तो
मेल्यो पर वह व्योपारी पुकारे तो राज भोजन में दो

य घड़ी की अबार होती तौ मेरौ जन्म सब वृथा जा
तौ और करज तौ कालि देउंगो यह कितनी कबात
है तब श्री आचार्य जी महाप्रभुन नें कह्यो जो तेनें
धर्म गहनै लिखदीनी सो काहे तें तब पद्मनाभ दास
नें कह्यो जो महाराज ऐसो गाढ़ो लिख दीयो जो बिना
दिये न जाय पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभु तौ अड़ेल
पधारे पाछें पद्मनाभ दास एक राजा हुतो ताके पा
स गए तब पद्मनाभ दास कौ वा राजा ने बहुत आदर
सनमान कीयो पाछें राजा ने कह्यो जो मोकों कृपा
करिकें कछु सुनावो तब पद्मनाभ दास ने कह्यो जो रा
जा श्री भागवत तौ नाहीं सुनाऊं कहो तौ महाभारत
सुनाऊं सो राजा ने कह्यो जो महाभारत ही सुनावो
सो महाभारत ही कहन लागे सो जब युद्ध कौ प्रसंग
आयो तब सबन के हथियार छुड़ाय धरे तब आगें
कहन लागे सो कथा कहत में कोई वीररस ऐसो
उपज्यो सो आपस में सब लात मुक्कान सों लरन ला
गे पाछें .... कितेक दिन में महाभारत सम्पूरण
भयो तब राजा बहुत दक्षिणा दैन लाग्यो तब पद्मना
भदास नें कह्यो जो इतनो तौ मैं नाहीं लेउंगो मेरे माथे
ऋण है तितनो लेउंगो पाछें वा साह कौ मूल ब्याज
दैनो हुतो तितनों लीनों बाकी कौ फेर दीनो पाछें सा
ह कौं द्रव्य दैकें खत फारि डारो ॥ २॥

## वार्ता प्रसंग ३

और पद्मनाभदास कें एक बेटी कुमारी हुती ता
केनिमित्त एकबेर श्री आचार्य जी महाप्रभुन कौ सेव

क चाहियत हुतो सो वैस्नवन सों पूछन लागे तब वै स्नवन नें कह्यो जो एक वर श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक है परि सनोडिया ब्राह्मण है सो पद्मनाभ दास कों लौकिक त्याग में विवहार की सुधि रही नाहीं वैस्नवन कह्यो जो भलो वैस्नव है सो याकों बेटी दीजिये तब पद्मनाभदास ने कह्यो जो भलो सो पद्मनाभदास नें वा वैस्नव को तिलक कीयो विवाह सही करि कें अपने घर आये तब तुलसा बड़ी बेटी हुती तासों कह्यो जो अपनी बेटी को विवाह अमुक वैस्नव सों सही कर आयो हूं तब तुलसा ने कही जो वह तो सनोडिया ब्राह्मण है और आपुन कनोजिये ब्राह्मण हैं सो ऐसें कैसें होय तब पद्मनाभ दास नें कही जो अब तो भई सो भई तब तुलसा नें कह्यो जो सगाई फेरो तब पद्मनाभ दास ने कही जो सगाई कैसें फेरी जाय पाछें पद्मनाभदास ने कही छुरीला वो मेरो अंगूठा काटो तब तुलसा नें कह्यो जो अंगूठा कैसें काट्यो जाय तब पद्मनाभ दास ने कह्यो जो सगाई कैसें फेरी जाय जो अंगूठा काटे तो सगाई फेरी जाय पाछें पद्मनाभदास नें विवाह कर दीयो जात के सब झखमार रहे वैस्नव के कहे को विस्वास ताते सगाई न फेरी ॥३॥

## वार्ता प्रसंग ४

और एक क्षत्राणि पद्मनाभ दास के घर नित्य आवती तब एक दिन तुलसा नें कह्यो जो क्षत्राणि जानू नित्य को आवत है तब वा क्षत्राणी ने कही जे

पद्मनाभ दास बड़े भगवदीय हैं और महा पुरुष हैं और मेरे संतति नाहीं होत है तातें आवत हौं तातें तुम पद्मनाभ दास सों मेरी बीनती करो तब पद्मनाभ दास सों एक दिन तुलसा ने कह्यो जो पद्मनाभ दास एक क्षत्राणी के संतति नाहीं होत है ताके लियें तुमसों बीनती करत हौं तब पद्मनाभ दास नें कह्यो जो तुलसा जल लाउ तब तुलसा नें जल लाय कें आगे धर्यो तब जल लेकें अंगूठा कौ चरणोदक करिकें पद्मनाभ दास नें वा क्षत्राणी कों चरणोदक दियौ और कह्यो जो जा तेरे पुत्र होयगो ता कौ नृ मथ रादास नाम धरियो पाछें वाकें पुत्र भयौ ॥

## वार्त्ता प्रसंग ५

और एक समें बड़े रामदास जी अपने सेव्य ठाकुरजी कों पद्मनाभ दास के घर पधराय कें आप श्रीनाथजी की सेवा करन लागे श्रीनाथजी के भीतरिया भये तब पद्मनाभ दास श्री ठाकुरजी की सेवा करन लागे सो कितेक दिवस पाछें मुगल की फोज आई ताने गांव लूट्यो सो श्री ठाकुरजी कों मुगल लेगये तब पद्मनाभ दास वा मुगल के पीछे सात दिन लों है जल पान न कर्यो तब वा मुगल सों वाकी मुगलानी नें कह्यो जो यह ब्राह्मण जल पान हू नाहीं करत याकों सात दिन भये हैं अन्नजल छोड़ें सो जो यह ब्राह्मण मरेगो तो तेरे माथें हत्या चढ़ैगी तो तेरो संग छोड़ देउंगी नातर देव याके तेरे पास हैं सो तुम देव याके देउ तब वा मुगल नें पद्मनाभ दास कों श्रीठा

कुर जी दीये सो लेकें पद्मनाभदास अति आनन्द पा
य कें अपने घर आए पाछें आप स्नान करि श्री ठाकु
र जी को पंचामृत सों स्नान कराय अंग वस्त्र करि शृं
गार कीयो रसोई करि भोग समर्प्यो पाछें समयानु
सार भोग उसराय अनोसर करि पाछें महा प्रशाद
आपु लीयो और जा दिन ते वा कन्नोज में श्री ठाकुर
जी मुगल के हाथ परे सो ता दिन रामदास ने हू यह
बात जानी सो ता दिन ते बड़े रामदास ने हू सात दिन
ताई महा प्रशाद लीनों नाहीं परि श्री नाथ जी की
सेवा सावधानी सों करत रहे यह बात पद्मनाभदा
स ने घर बैठे जानी जो रामदास हू या बात के ऊपर
बहुत दुख पायो सात दिन लों जल पान हू नाहीं
लीयो यह जानि पद्मनाभदास श्री नाथ जी के द
र्शन तथा रामदास जी सों मिलिवे को श्री नाथ जी
द्वार आये तब श्री नाथ के दर्शन कीये पाछें राम
दास जी सों मिले तब रामदास जी ने पद्मनाभदास
सों कह्यो जो तुमनें बहुत दुख पायो तब पद्मनाभ
दास नें कह्यो जो हू तो दुख पायो सो तो न्याव है
परि तुम मेरे साथ सेवा पधराय आये और तुमने सै
त दिन लों महा प्रसाद नाहीं लीयो सो काहे ते तब
रामदास ने कह्यो जो तुम कहत हो सो तो साच है परि
में हू तो बहुत दिन लों सेवा कीनी है ताते इतनों तो
संबन्ध चाहिये पाछें कितनेक दिन लों उहां रहिके
पद्मनाभदास श्री नाथ जी सों तथा रामदास जी सों
विदा होय कें अपने घर आए पाछें सेवा करन लागे

## वार्ता प्रसंग ६

और एक समय पद्मनाभ दास अपने सेव्य श्री ठाकुर
जी श्री मथुरा नाथजी तथा अपनो कुटुम्ब लेकर अडेल
आय रहे परंतु द्रव्य को संकोच बहुत हुतो ताते श्री ठा
कुर जी को भोग समर्पते सो कोल्हा तलि के समर्पते
सो कोल्हा आछी भांत सों बीन के पहिले दिन भिजोय
राखते दूसरे दिन ताकी भांत सों तलि के परोसते ए
क मुट्ठी भरि के कहें जो यह दारि एक मुट्ठी भरि के धरें
और कहें जो यह रोटी है या भांति जितने सालन होंय
तितनेन को नाम लेके एक एक मुट्ठी समर्पते या भां
ति सों नित्य करते सो श्री ठाकुरजी सोई आरोगते पाछें
एक वैष्णव ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे क
ह्यो जो महाराज पद्मनाभ दास श्री ठाकुर जी को या भां
ति समर्पत हैं सो एक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभु
भोग समर्पिबे की बिरियां आप पद्मनाभ दास के
घर पधारे सो जैसें नित्य भोग समर्पत तैसेंई पद्म
नाभ दास ने भोग समर्प्यो हो सो जब भोग उसरायो
तब पद्मनाभ दास नें कह्यो जो महाराज यह खीर है
यह भात है यह दारि है यह साक है यह सिखरन है
यह रोटी है यह बरा है ऐसें कहि के सब सामग्रीन के
नाम लेके कोलान की ढेरी बनाई तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून को हृदय भरि आयो और कह्यो जो
द्रव्य को संकोच है ताके लिये ऐसें करत हैं पाछें
श्री आचार्य जी महाप्रभु आप तो घर को पधारे तब
श्री अक्का जी सों कह्यो जो पद्मनाभ दास के घर नित

रसोई की सामग्री पठावति रहियो तब दूसरे दिन श्री
आचार्य जी महा प्रभून नें पद्मनाभदास के घर सीधो
सामग्री पठायो तब पद्मनाभदास नें तुलसा सों कह्यो
जो इहां ने प्रभु काहून हार भये हैं तब पद्मनाभदास
ने दिन द्वै चारि कौ सामान करि पाछें आपने सेव्य
ठाकुर जी श्री मथुरा नाथ जी सों कह्यो जो महाराज
को मन होय तो श्री आचार्य जी महा प्रभून के पास
पधराय आऊं तहां सकल सामग्री सिद्ध है तब श्री
मथुरा नाथ जी नें कह्यो जो मोकों तेरो ही कीयो भा
वत है तातें तेरे यहां बहुत प्रसन्न हों तू कछु संकोच
मति करै ऐसे श्री मथुरा नाथजी आप कहे तब पद्म
नाभदास नें नाव भाड़े कीनी तामें श्री ठाकुरजी पधरा
ये और सब कुटुम्ब नाव में बैठाय के आप श्री आचार्य
जी महा प्रभून सों बिदा होन गये और सीधो सामग्री
दिन द्वै चार कौ आयो हुतो सो भंडारी कों फेर दैके
आप श्री आचार्य जी महा प्रभून के पास बिदा होय
के दर्शन करिके दंडौत करि कै कह्यो जो महाराज
हम तो चलत हैं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पूछो
जो श्री मथुरा नाथ जी कहां हैं तब पद्मनाभ दास नें
कह्यो जो महाराज श्री ठाकुर जी तो नाव में बिराजत
हैं श्री ठाकुर जी कों नाव में पधराय कें, हों महाराज
के पास दर्शन करिवे कौं तथा बिदा होयवे कौं आ
यौ हूं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पद्मनाभ
दास कों बिदा कीयो पाछें भंडारी नें आचार्य जी म
हा प्रभून सों आय कें कह्यो जो महाराज पद्मनाभ

दास के घर सीधो सामग्री दिन द्वै चार की पठाई हती
सो पद्मनाभ दास फेरि दे गए हैं तब श्री आचार्य जी
महा प्रभून नें कह्यो जो सीधो सामग्री पठाई तानें प
द्मनाभदास गयो तातें न आनो यह बात आप श्रीमु
खतें कही सो पद्मनाभदास की वार्ता श्री गोकुलना
थ जी श्री सर्वोत्तम की टीका में लिखे हैं सो पद्मनाभ
दास सौ विरला कोटि त्यागी दुर्लभ है सो वे पद्मनाभ
दास श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक ऐसे पर
म कृपा पात्र भगवदीय है तातें इनकी वार्ता को पा
र नाहीं पद्मनाभ दास की ऐसी ऐसी कितनीक वा
र्ता है ॥६॥ ः ः

## वार्ता प्रसंग ७
## वैष्णव ४ सम्बन्ध ॥ ३१
## अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक पद्म नाभ दास की बेटी तुलसा तिनकी वार्ता लि० खते

सो एक समय एक वैष्णव श्री आचार्य जी महा प्रभू
न को सेवक तुलसा के घर आयो सो श्री ठाकुर जी को
दर्शन कीयो तब राज भोग समर्प्यो हो तब तुलसा नें
वा वैष्णव सो कह्यो जो उठो स्नान करो महाप्रसाद ले
उ तब वा वैष्णव नें कह्यो जो हुं तो घर जाय के महा
प्रशाद लेउंगो तब स्नान करूंगो तब तुलसा चुप

है रही पाछें वह वैष्णव उठि कें अपने घर गयो तब तुलसा के मन में बहुत खेद भयो जो देखो मेरे घर तें वैष्णव भूखो गयो बहुरि मन में आई जो ख्याति व्यवहार के लिये सखड़ी न लेनो होगो या भलो सकारें पूरी करि महा प्रशाद लिवाउंगी पाछें सेवा कानि सिह कर वाई तब सोई पाछें रात्रि कों मथुरा नाथ जी पद्मनाभ दास के सेव्य ठाकुर तिनने स्वप्न में तुलसा सों जनायो जो सकारें वा वैष्णव कों सखड़ी महाप्रसाद लिवाइयो वह वैष्णव अपने घर प्रशाद नाहीं लेइगो पाछें वा वैष्णव सों स्वप्न में कही जो सकारें तू सखड़ी महा प्रसाद तुलसा के घर लीजियो पाछें प्रातः काल स्नान करि तुलसा नें पूरी करी श्री ठाकुर जी कों जगाय सेवा करन लागी इतने में वह वैष्णव आयो श्री ठाकुर जी के दर्शन कर बैठि रह्यो तब तुलसा भोग समर्पि कें बाहर आई तब वा वैष्णव सों कह्यो जो उठो स्नान करो महा प्रशाद लेउ तब वैष्णव नें कह्यो जो भलो तब वा वैष्णव ने स्नान करि तिलक मुद्रा करि कें स्मरन कीयो इतने में राज भोग सर्‍यो तब वा वैष्णव ने दर्शन कीयो पाछें तुलसा नें श्री ठाकुर जी कों अनोंसरि करि तुलसा बाहर आई तब पूरी बूरो समाधो वा वैष्णव के आगे रख्यो और कह्यो जो महा प्रसाद लेउ तब वा वैष्णव नें कह्यो जो यह तो नाहीं लेउगो हूं तो सखड़ी महा प्रशाद लेउगो तब तुलसा ने कह्यो जो कछू सकोच मति करो यह तो जानि व्यवहार है तब

वा वैष्णव नें कह्यौ जो मोनो मांच पहिले नो ऐसें ही मनमें आई हती परि अब नो आज्ञा भई है या है या वैष्णव नें सखड़ी महा प्रशाद लीयो तव दो उ जने परस्पर प्रसन्न भये ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

बहुर एक दिन तुलसा के घर श्री गुसांई जी पधारे तव तुलसा ने भली भांति सों सेवा कीनी तातें श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये और एक दिन श्री गुसांई जी भोजन करि के पोढ़े इतें तव तुलसा ने भगवद वार्ता करी अति प्रसन्नता में श्री गुसांई जी कही जो पद्मनाभ दास की संतति ऐसी होंची हिये पाछें श्री गुसांई जी ने तुलसा सों पूछो जो श्री ठाकुर जी मानु भावना जनावत हैं तव तुलसा नें कह्यौ जो महाराज अब नो पेट भरि खाइयत है और नींद भरि सोइयत हैं और श्री आचार्य जी महाप्रभून के ग्रंथन को पाठ करि यत हैं तव श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये वह तुलसा ऐसी भगवदीय हती तातें श्री ठाकुर जी आर्ति सहि न सके तातें वा तुलसा के ऊपर श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न रहते तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग २

वैष्णव ५ सम्बन्ध ३३॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के।
सेवक पद्मनाभ दास को बेटा।
ताकी बहू पार्वती की वार्ता

सो पारवती श्रीठाकुर जीकी सेवा नीकी भांतिकर
ती और पुरुषोत्तम दास मेहरा इनकों नीकी भांति
सों जानती तब कन्नौज जानों तब पार्वती के घर र
हती तब कितने क दिन पाछें पार्वती के हाथ पांव
स्थिर ह्वै गये तब ते श्री ठाकुर जी को स्नान करत त
था स्परस करत बहुत बहुत ग्लानि आवती तब पु
रुषोत्तम दास मेहरा कों पार्वती ने पत्र लिख्यो तामें
लिख्यो जो मेरी बीनती श्री गुसांई जी सों कहियो
मेरी देह कों यह प्रकार भयो है तातें मोकों सेवा कर
त पाक करत बहुत ग्लानि आवत है सो मैं कहा क
रूं सो पुरुषोत्तम दास मेहरा ने पार्वती को लिख्यो
पत्र श्री गुसांई जी कों बांचि सुनायो और बीनती
कीनी भेट की मोहर ही सो आगें राखी पाछें श्री
गुसांई जीने पुरुषोत्तम मेहरा कों आज्ञा दीनी जो
दिन द्वै चारि में कहेंगे पाछें दिन द्वै चार बीते तब श्री
गुसांई जीने पुरुषोत्तम दास मेहरा कों आज्ञा दी
नी जो पार्वती कों पत्र लिख तामें लिखियो जो तू
श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करियो काहू
बात की ग्लानि मति लाइयो श्री ठाकुर जी तेरो रोग
सब आपही ते दूर करेंगे तब पुरुषोत्तम दास मह
रा ने पार्वती कों पत्र लिख्यो तामें श्री गुसांई जी ने
श्री मुख ते वचन कहे सो लिख पठाये सो वह पत्र
पार्वती पै पहुंच्यो सो पत्र बांचि के श्री गुसांई जी
की आज्ञा ते सेवा प्रसन्नता सों करन लागी काहू
ग्लानि मन में नहीं लावती पाछें महीना तीन चारि में

हाथ पांव नीके भए तब पार्वती बहुत प्रसन्न भई सो प्रसन्न तासों सेवा करन लागी बहुर श्री गुसाईं कों पत्र लिख्यो भेट पठाई और कह्यो जो महाराज के प्रताप तें नीको भई हों सो पत्र बांचि कै श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भए सो वह पार्वती बड़ी कृपा पात्र भगवदी हुती प्रभुन के प्रमान चलती ताते श्री गुसांई जी इनके ऊपर सदा प्रसन्न रहते यह वार्ता सब पद्मनाभ दास के कुटुम्ब की भई ताते पद्मनाभ दास बड़े भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥

वार्ता प्रसंग १ ॥

वैष्णव ॥ ६ ॥ सम्बन्ध ३४ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभुन के सेवक पद्मनाभ दास की नाती पार्वती को बेटा रघुनाथ दास ताकी वार्ता।

सो रघुनाथ दास बनारस में बहुत शास्त्र पढ़ि कें श्री गोकुल आयो तब श्री गुसांई जी को दंडौत कीनी सो गुसांई जी बड़ेन की कानि ते इन के ऊपर कृपा करते कथा कहते सो रघुनाथ दास सुनते सो एक दिन परमानन्द सोनी ने इन सों पूछी जो रघुनाथ दास तुम तो बहुत शास्त्र पढ़े हो पण्डित हो आज श्री गुसांई जी ने कहा कथा कही हुती सो कहो तब रघुनाथ दास ने परमानन्द सोनी सों कह्यो जो तुम तो सांच पूछत हो पर हमें तो कछु समझत नांहीं

तब यह बात परमानन्द सोनी ने श्री गुसांईं जी के
आगें कही जो महाराज रघुनाथ दास तौ कछु
समझत नाहीं पाछें श्री गुसांईं जी नें रघुनाथ दास
कों ग्रन्थ देय चार पदारथ और मार्ग की प्रनालिका
कही पाछें रघुनाथदास समझन लाग्यो बड़ो पंडित
भयो सो कितनेंक दिन पाछें अपनें घर कन्नौज
में आयौ तब माता सों कही जो हूं तो न्यारो होयगो
श्री ठाकुर जी की सेवा करूंगो तब माता नें कही
जो भलें ई तू सेवा करि पाछें न्यारो भयो वाकी-
माता जल भर लावती पार्वती पात्र मांजती श्री
ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करती परचार
गो सब करती तब राजभोग सरतें तब अपनें घर
अकेली लौटी करि श्री ठाकुर जी कौं भोग समर्पि
भोग सराय आप प्रसाद लेती या भांति सों करती
ऐसे करत दिन पांच सात बीते तब अपने सेव्य
श्री ठाकुर जी नें कह्यो जो अरी पार्वती मेरो गरो
खरखरात है अकेली लौटीन ते तातें तू दारि तौ
कर्यो करि तब पार्वती नें कह्यो जो महाराज तुम
तौ दारि भात सालन सों आरोगत हो तब श्री ठाकुर
जी नें कह्यो जो मैं तो तेरो कीयो आरोगत हौं पाछें
दार भात सब सालन करन लागी तातें पार्वती बड़ी
कृपा पात्र भगवदीय हती ये वार्ता सब पद्मनाभदा
स के परिवार की भई तातें वे पद्मनाभदास श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं
सो इनकी वार्ता ऐसी औरो कितनीक है तातें अब

कही नाई निर्गियं ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १

वैष्णव १ ॥ सम्वन्ध ॥ ३५

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून

को सेवक रजो छत्राणी

अडेल में रहती।

ताकी वार्ता

सो व रजो छत्राणी नित्य पकवान सामग्री करि श्री आचार्य जी महा प्रभून के लिये ले आवती सो श्री आचार्य जी महा प्रभू आरोगते वाको नित्य नेम हुतो सो एक दिन लक्षमन भट्ट जी को श्राद्ध दिन आयो सो श्री आचार्य महा प्रभून नें ब्राह्मण भोज न कों बुलाये हुते तहां घृत थोरो सो चहियत हुतो तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें एक वैष्णव सों कही जो रजो केसें घृत ले आउ तव वा वैष्णव नें रजो सों कही जो रजो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें घृत मगायो है तव रजो ने वा वैष्णव सों कह्यो जो घृत काहे कों चाहियत है तव वा वैष्णव नें क ह्यो जो आज श्री लछमन भट्ट जी को श्राद्ध दिन है सो ब्राह्मण भोजन कों बुलाये गये हैं सो थोरो घृत र सोई में घट्यो है ताते मंगायो है तव रजो ने कह्यो जो मेरे तो घृत नाहीं है तव वह वैष्णव फिर आयें आय के श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो महाराज रजो कें घृत नाहीं है तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तू फेर जा ओर खोज के

कहियो जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें घृत-
मंगायो है तब वह वैष्णव फिर गयो और रजो-
सों कह्यो जो श्री आचार्य जी महाप्रभू खीजत हैं
तबहू रजो ने घृत नाही दियो तब वह वैष्णव फिर
आयो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो
महाराज रजो घृत नाही देत तब श्री आचार्य जी-
महाप्रभून नें कह्यो जो अब कै फेरि जा और क-
हियो जो श्री आचार्य जी महाप्रभू खीजत हैं ता
ते घृत देउ तबहू नाही दियो तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज रजो घृत नाहीं दे
त तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें और ठौर तें
मगवायो तब रात्री कौं रजो पकवान लेकैं आई
तब रजो कों देखि क श्री आचार्य जी महाप्रभू पीठ

रजो का पकवान लेकर श्री आचार्य जी महाप्रभु के पास आना और श्री
॥ महा प्रभु का पीठ दे बैठना ॥

दे बैठे तब रजो ने कही जो महाराज मेरो अपराध कहा है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो तैं घृत न हुतो तौ सामग्री कहा ते करवाई तब रजो ने कह्यौ जो हूं लछमन भट्ट की बेटी हौं नाहीं मेरे घृत न हुतो ताते न दीनो ताते तुम्हारे घृत हुतो सो क्यों न दीनो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो मैं श्री ठाकुर जी को घृत क्यों कर के देउं तब रजो नें कही जो मैं श्री ठाकुर जी को घृत क्यों कर कै देउं तब आप बोले नाहीं तब रजो नें सामग्री आगें राखी और कही जो राज आरोगो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो आज श्राद्ध दिन है ताते दूसरी बार लेनों नाहीं तब रजो ने कही जो महाराज तुम्हारे घर को होय सो मति लेउ यह तौ लीयो चाहिये तब रजो के आग्रह ते श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आरोगी रजो श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदीय है ताते इन रजो की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १

वैष्णव ८ सम्बन्ध ३६

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक सेठ पुरुषोत्तम दास क्षत्री बनारस में रहते तिन्की

॥ वार्ता ॥

सो सेठ पुरुषोत्तम दास को श्री आचार्य जी महाप्रभू

न की आज्ञा हुती जो तुम पास कोई नाम लैन आवे
ताकों तुम नाम दीजियो तातें सेठ पुरुषोत्तम दास ना
म देते और अपने घर श्री मदन मोहन जी की सेवा क
रते परि कबहू विश्वेश्वर नाथ महादेवजी के दर्शन
कों न जाते ऐसें करत बहुत दिन बीते तब एक दिन
विश्वेश्वर नाथ महादेव जीने सेठ पुरुषोत्तम दास सों
कह्यो जो सेठजी तुम हम सों गांव कौ नातो तो राखो
कबहू हम कों प्रशाद तो दियो करो ऐसें स्वप्न में
कह्यो तब सवारे सेठ पुरुषोत्तम दास उठि सेवा सों प
हुंच के बाहर आये तब वस्त्र पहर के बीड़ा दोय प्र
शादी लैके दूसरो प्रशाद कों लेके विश्वेश्वर नाथ मं

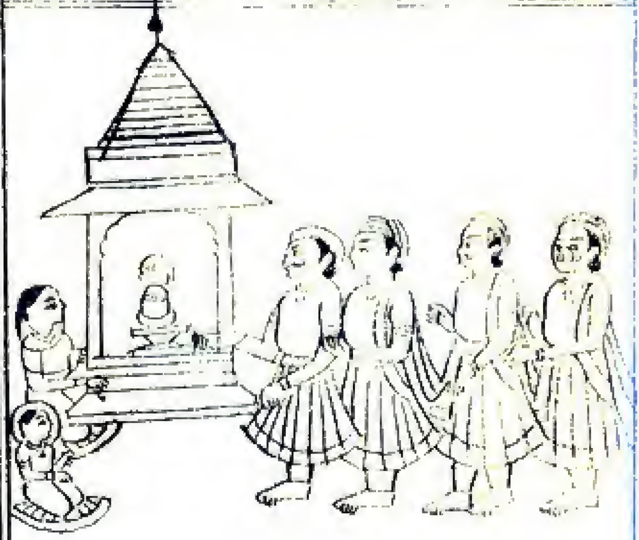

देवजी के दर्शन कों चले तब गांव के लोग आश्च
र्य भए जो सेठ पुरुषोत्तम दास कबहू दर्शन कों न आ
वते सो आज क्यों आये सो सब लोग साथ आए सो
सेठ पुरुषोत्तम दास ने देवालय में जाय के विश्वेश्व
र नाथ महादेव जी के आगे बीड़ा दोय धरि प्रसाद के
डबरा धरि श्री कृष्ण स्मरन कहि के उठि चले तब बा
ड़े बड़े पंडित ब्राह्मण हुते तिननें सेठ पुरुषोत्तम दास
सों कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास दंडोत नमस्कार
कछून कीनों श्री कृष्ण स्मरन कहि के उठि चले
सो तो तुम को उचित नाहीं तब सेठ पुरुषोत्तम
दास ने उन ब्राह्मणन सों कह्यो जो तुम महादेव
जी कों पूछि लीजियो तुम सों महादेव जी कहेंगे
पाछे उन ब्राह्मणन में एक महादेव जी को बड़ो कृ
पापात्र भगवदीय हतो ताकों महादेव जी ने स्वप्न
में कह्यो जो हमनें इन सों महा प्रसाद मांग्यो हो
सो देन आये हे हमारो इन को व्योहार जै श्री कृष्ण
को है ताते तुम इन सों कछू मति कहो पाछे सेठ
पुरुषोत्तम दास बड़े उत्सव को प्रसाद कबहू का
हूं ले जाते तब एक दिन महादेव जी नें काल
भैरव सों कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास वैष्णवन के
घर ते अबेरो सबेरो आवत है ताते तू इन के घर कों
चौकी पहरा नित्य देत रहियो सो काल भैरव नित्य
इन के घर को चौकी पहरा देतो सो एक दिन सेठ
पुरुषोत्तम दास वैष्णवन के घर ते अबेरे आवत
हे सो सेठ पुरुषोत्तम दास घर के द्वार आये तब

फिर कें देखें तौ काल भैरव एक ठौर ठाडौ है तब से
ठ पुरुषोत्तम दास नें वा सों पूछी जो तू कौन है तब
वह बोल्यौ जो हूं काल भैरव हौं मोकों महादेव
जीनें आज्ञा दीनी है ताते तुम्हारे घर की चौकी
पहरा देत हौं तब सेठ पुरुषोत्तम दास खिरकी दे
कें भीतर गए ॥१॥

## वार्ता प्रसंग १

तहां एक दीक्षाण देशकौ ब्राह्मण सर्वाहुतौ
सो बडौ पंडित महादेव जी कौ कृपा पात्र हतौ
सो वा ब्राह्मण कौं महादेव जी कौ साक्षात् दर्शन
होतौ सो वह ब्राह्मण नित्य प्रति महादेव जी के
दर्शन करतौ तब जल पान करतौ ऐसौ महादेव

जी कौ भक्त हुतौ सो एक समै जन्माष्टमी कौ उत्स
व आयौ सो विश्वेश्वर नाथ महादेव जी सेठ पु
रुषोत्तम दास के घर गये जन्माष्टमी कौ उत्सव
देखन कौं सो वा ब्राह्मण ने जन्माष्टमी के उत्सव
के दिना दर्शन न पायौ और नवमी के दिना दुपहर
लों जब सेठ पुरुषोत्तमदास के घर ते महादेव जी
विदा होय के आये तब वा ब्राह्मण ने महादेवजी
कौ दर्शन पायौ तब वा ब्राह्मण ने महादेवजी
सों पूछी जो कालि और आज हम दर्शन दुपहर
लौं नाहीं पायौ सो काहे ते तब वा ब्राह्मण सोम
हादेव जी ने कह्यौ जो हम कालि सेठ पुरुषोत्तम
दास के घर उत्सव देखन गए हे सो अबही सेठ
पुरुषोत्तम दास के घर ते विदा होय के आवत हों
तब वा ब्राह्मण ने कही जो सेठ पुरुषोत्तम दास
कौन है जिन के घर तुम उत्सव देखन कौं जात हौ
तब महादेव जी ने कह्यौ जो बड़े भगवद भक्त हैं
तब वा ब्राह्मण ने कही जो मोहू कों भगवद भक्त
करौ तब महादेव जी ने कह्यौ जो सेठ पुरुषोत्तम
दास के पास तू जाय के नाम लै आउ तब वा ब्रा
ह्मण ने कही जो तुमही मोकों नाम देउ तब महा
देव जी ने कही जो मैं तो तोकों नाम देउंगो सही
परि मेरौ दीयौ नाम तोकों फलैगौ नाहीं ताते तू
सेठ पुरुषोत्तम दास के पास नाम लै आउ वे तोकों
नाम देयगे तब वह ब्राह्मण सेठ पुरुषोत्तम दास
के पास नाम लेबे गयौ सो आय के भीतर खबर

कर वाई जो एक ब्राम्हण आयो है तब सेठ पुरुषो
त्तमदास नें कही जो वैष्णव मायो खाली करन
आयो होयगो तब सेठ पुरुषोत्तम दास सेवा
सों पहोंचि के बाहर आये तब वा ब्राम्हण ने दंडौत
कीनी तब सेठ पुरुषोत्तम दास नें कही जो ऐसो स
नुचित क्यों करत हो हम सबी तुम ब्राम्हण ऐसे
योंन घटे है तब वा ब्राम्हण ने सेठ पुरुषोत्तमदास
सों कही जो हमकोनाम देउ तब सेठ पुरुषोत्तम
ने कह्यो जो हंतो नाम नाहीं देउंगो बहुरि ब्राम्हण
ने बहुत आग्रह कीनो परि पुरुषोत्तम दासनें नाम
न दीनो तब वह ब्राम्हण महादेव जी के पास आयो
तब कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास नाम नाहीं देत
तब महादेव जीने कह्यो जो तू फेरि जा हमारो नाम
लीजियो जो मोको श्री महादेवजीने पठायो है तुम
सों महादेव जीनें कह्यो है तब वह ब्राम्हण फेर से
ठ पुरुषोत्तम दास के पास आयो और कह्यो जो
मोको महादेव जीनें पठायो है ताते मोको नाम दे
उ तब सेठ पुरुषोत्तम दास नें वा ब्राम्हण को नाम
दीयो नाम सुनाय कें हाथ जोरि कें श्री कृष्णस्मरन
कह्यो तब वा ब्राम्हण ने कह्यो जो अब मोको प्र
नाम क्यों करत हो तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने कह्यो
जो अब तुम भगवद भक्त भये सो तुम वंदनीय हो
तुम्हारे और हमारे वंदनीय श्री आचार्य जी महा
प्रभू हैं सो तो श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपातें
नाम देत हों पाछें वह ब्राम्हण श्री आचार्य जीम

हाप्रभून के पास अंदल आयो तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून के पास नाम समर्पण करवायो पाछें
कितनेक दिन रह कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के
ग्रंथ पढ़े ॥ ❀

## वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

बहुरि एक समय सेठ पुरुषोत्तम दास बैठे बैठे मंदि
र वस्त्र करते हुते इतने ही में गोपाल दास बेटा श्री
ठाकुर जी को सैन भोग सरायवे को मन्दिर में न्हाय
कें आयो तब देखें तो सेठ पुरुषोत्तम दास बैठे
बैठे मन्दिर वस्त्र करत हैं तब गोपाल दास के
मन में आई जो अब तो सेठ जी वृद्ध भए हैं ताते
में सेवा में तत्पर में होउ तो आछो तब यह बात गो
पाल दास के मन की सेठ पुरुषोत्तम दास ने जानी
तब कह्यो जो बेटा आगें आउ तब गोपाल दास
जाय कें देखें तो वर्ष बीस तथा पच्चीस के बैठे हैं
तब पुरुषोत्तम दास नें कह्यो जो बेटा यह भगव
दीयन को मन में न लावनी भगवदीय सदा तरुन
हैं परि अवस्था होय ताकों मान दीयो चाहिये ॥

## वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥

बहुरि एक समय सेठ पुरुषोत्तम दास झाड़ खंड
में मदार मधु सूदन ठाकुर हैं सो पर्वत ऊपर
मन्दिर है पर्वत को नाम मंदार पर्वत है ता ऊ
पर ते मनुष्य गिरे तो चोट न लगे और अपने स
ब पाप छोड़ि कामना करि गिरे तो देह छूटे पा

प दूर होय और जो कामना करी होय सो दूसरे
जन्म में सिद्ध होय वह ऐसो स्थल है तहां एक
समय श्री आचार्य जी महाप्रभू पधारे हते तहां
सेठ पुरुषोत्तम दास और एक ब्राह्मण श्रीआ
चार्य जी महा प्रभुन को सेवक सो दोउ जने मंदार
मधु सूदन जी के दर्शन कों पर्वत ऊपर चढे सो

उहां जाय के मधुसूदन जी को दर्शन कीनो पा
छें रात्रि पर गई ताते उहां ही सोय रहे पाछे रा
त्रि कों एक सिद्ध आयो वह जाति कौ ब्राह्मण हु
तो वाने सेठ पुरुषोत्तमदास के साथ के ब्राह्मण
सों पूछो जो तुम कौन हो तब वह बोल्यो हम वै
ष्णव हैं श्री आचार्य जी महा प्रभू के सेवक हैं

तब वा सिद्ध ब्राह्मण नें कह्यौ जो मेरे पास एक म
णि है सो तुम नें जाउ तो लेउ तब वा वैष्णव नें क
ह्यौ जो यह मणि कौन काम आवत है तब सिद्ध ब्रा
ह्मण नें कही जो यह मणि ऐसी है जो मांगे सो देत
है तब वा ब्राह्मण नें कही जो मैं तो विरक्त हों मैं म
णि लैकें कहा करूं परि मेरे साथ एक दूसरो है सो
वह गृहस्थ है सो वह सोवत है जो वाकों देउ तो ज
गाऊं तब वा सिद्ध ब्राह्मण नें कही जो जगावो तब वा
वैष्णव नें सेठ पुरुषोत्तम दास कों जगायौ और कही
जो यह ब्राह्मण मणि       सो तुम लेउ तब सेठ पु
रुषोत्तम दास नें कही जो यह मणि कौन काम आ
वत है तब वा मणि कौ प्रभाव कह्यौ तब सेठ पुरुषो
त्तम दास नें कह्यौ जो यह मणि हमारे काम की
नाहीं तातें हूं तो न लेऊंगो तब सिद्ध ब्राह्मण फिर
गयौ तब सेठ पुरुषोत्तम दास के संग ब्राह्मण हतो
तानें सेठ पुरुषोत्तम दास सों कह्यौ जो तुम तो गृह
स्थ हो बहुत कुटुम्बी हो तुम्हारे माथे सेवा है तुम
नें मणि क्यों न लीनी तुम कों तो मणि लेनो उचित
हो तब सेठ पुरुषोत्तम दास नें कह्यौ जो और ब्रा
ह्मण वावरे थे श्री ठाकुर जी कौ तथा श्री आचार्य
जी महा प्रभून कौ आश्रय छांडि कें कहा मणि कौ
आश्रय करूं तैनें मणि क्यों न लीनी तब वानें क
ह्यौ जो मैं तो विरक्त हौं मैं मणि लैकें कहा करूं
मोकों जगदीस सेर चून देयगो तब सेठ पुरुषोत्तम
दास नें वा वैष्णव सों कह्यौ जो मोकों जगदीस सेर

चून देयगो तो मोकों कहा जगदीसदश सेर चून न देयगो जगदीस कें काहू वात की न्यूनता है ऐसें कहि कें दोउ जनेंन नें दो भगि न लीनो ते सेठ पुरुषोतमदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हैं ॥ ३ ॥

॥ वार्ता प्रसंग ४ ॥

बहुरि एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू सेठ पुरुषोतमदास के घर पधारे तब दामोदरदास हरिसानी श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ हे सो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सेठ पुरुषोतमदास के सेव्य श्री ठाकुर जी मदनमोहन कों पंचामृत स्नान करवायो और आप पाक करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्यो भोग सराय अनोंसर करि श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आप भोजन कीयें तब दामोदरदास हरिसानी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों पूछो जो राज यह कहा तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह मेरी आज्ञा तें नाम देत हैं तथापि या कों या की इतनी मर्य्यादा राखनी चाहियें सो वे सेठ पुरुषोतमदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ताते इन की वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखियें ॥ ४ ॥

॥ वार्ता प्रसंग ५ ॥

वैस्नव ॥ ९ ॥ ॥ सम्बध ४१

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून

के सेवक सेठ पुरुषोतम दा
स की बेटी रुक्मनी १
ताकी वार्त्ता॥

सो एक समय श्री गुसांईजी कासी में पधारे हु-
ते तब तहां सूर्य्य ग्रहण आयो तब श्री गुसांई-
जी मन कर्णिका स्नान कों पधारे तब रुक्मनी हू-
श्री मदन मोहन जी कौं स्नान कराय कें आप म
नकर्णिका स्नान कौं गई श्री गुसांई जी पधारे न्हान
कें तब श्री गुसांई जी सों वैस्नवन नें कह्यो जो म-
हाराज सेठ पुरुषोतम दास की बेटी रुक्मनी आ
ई है तब श्री गुसांई जी नें कह्यो जो रुक्मनी आगें
आउ तब आपने पास बुलाय लीनी तब श्री गुसांई
जीने पूछो जो तू कितेक दिन पाछें गंगास्नान कूं आई

है तब रुक्मनी नें कह्यौ जो सदा राज चौबीस वर्ष
पर्यंत पाछें आई हों तब यह सुनि कें श्री गुसांई
जी कौ ह्रदौ भरि आयौ और कह्यौ जो ऐसी भग
वदीय जिन को एक बाग है सब कोऊ नाहीं है जो
गंगास्नान कौं आवै श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भ
ये और रुक्मनी कौं देखि कें श्री गुसांई जी कहते-
जो याके श्री ठाकुर जी आरोगा कब होयगे ॥

वार्ता प्रसंग १

बहुत स्त्री लोग सब कार्तिक मास में गं-
गा स्नान करत तब रुक्मनी ने सेठ पुरुषोत्तमदास
सों कह्यौ जो तुम आज्ञा करौ तो मैंहू कार्तिक स्नान
करूं तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने कह्यौ जो भलेंहू-
स्नान करि जो चाहिये सो लीजिये तब रुक्मनी ने-
कह्यौ जो खांड घृत दिवाय देउ मेरो तो घर मैं है
तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने खांड घृत दिवाय दीयो
तब रुक्मनी पहर रात्रि पिछली रहे जब उठ सो ने
म सामग्री करि कें समय राजभोग लौं श्री मदन
मोहन जी कौं समर्पे फिर उत्थापन सों सामग्री
करै सो सैन भोग लौं समर्पे ऐसें कार्तिक मास
में करै और वैशाख में शीतल सामग्री करै श्री
ठाकुर जी कौं आरोगावै सो प्रसाद वैष्णवन कौं
लिवावै या भांत सों करै सो एक दिन सेठ पुरुषो
त्तम दास ने रुक्मनी सों कही जो रुक्मनी तू स्नान
सदा करत है तोकों तोन कबहू देखियत नाहीं-
तू कार्तिक कौन बेर न्हाति है तब रुक्मनी ने क-

हौ जो मोकों स्नान सों कहा काम है ऐसें यामां-
ति सों करत हौं तब यह सुनि कें सेठ पुरुषोत्तमदा
स बहुत प्रसन्न भए श्री गुसांई जी आप श्रीमुख
तें सराहना करते रुक्मनी ऐसी कृपा पात्र भगव
दीय ही ॥

वार्ता प्रसंग २

बहुरि कितेक दिन में रुक्मनी की देह असमर्थ
भई तब रुक्मनी ने कह्यौ जो अब यह देह छूटै तो
भलो है श्री ठाकुर जी की सेवा न होय आवे तो य
ह देह कौन काम की है तब कितेक दिन पाछे रु-
क्मनी देह छूटी सो एक वैष्णव ने श्री गुसांई जी सों
कही जो महाराज रुक्मनी ने गङ्गा पाई तब श्री गु-
सांई जी श्री मुख तें कहें जो ऐसें मति कहो जो रु-
क्मनी नें गङ्गा पाई ऐसें कहो रुक्मनी गङ्गा ने पा-
ई वह रुक्मनी श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी
कृपा पात्र भगवदीय ही तातें इनकी वार्ता अनि-
र्वचनीय है सो कहां तांई लिखिये ॥

वार्ताप्रसंग २।

वैष्णव ॥ ८ ॥ सम्बन्ध ५४

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक सेठ पुरुषोत्तम दा
स कौ बेटा गोपालदास
ताकी वार्ता ॥

सो गोपालदास सों श्री मदनमोहन जी सानुभा
वहुते जो चहियें सो मांगि लेते ऐसें सदैव कृपा क

रते बहुरि गोपाल दास कीर्तन बहुत करते और गोपाल दास की देह आसक्ति भयी तब भगवद्नाम को उच्चारण करते तब श्री मदनमोहन जी आप हुंकारो देते ऐसी कृपा करते श्री आचार्य जी महाप्रभून के ग्रंथ सुबोधिनी जी श्री भागवत निबंध और रहस्य ग्रंथ सो सब पाठ करते भगवद् लीला में मग्न रहते सदैव लीला को विचार करते ऐसे करि कें सर्व काल व्यतीत कीयो॰ पाछें देह छूटी तब श्री गुसांई जीनें सुनी जो गोपालदास की देह छूटी है तब आप श्री मुखतें कही जो गोपालदास की सराहना करी सो वे गोपालदास ऐसे भगवदीय हैं सो ये वार्ता सब मत पुरुषोत्तम दास के परिवार की भई तातें इन की वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥ ॰ ॥ ४ ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ११ ॥ सम्बंध ॥ ६४

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक रामदास सार
स्वत ब्राह्मण ता॰
की वार्ता है

सो वे रामदास श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करते अपरस में जल भरते बीड़ा हू अपरस में राखते या प्रकार सों करते सो रामदास के पास द्रव्य बहुत हतो सो कितेक दिन पाछें सह द्रव्य खरच भयो थोरो सो द्रव्य आय रह्यो तब

मन में विचारी जो कछु आवत होय तो भलौ है त
व तादिन ते वह द्रव्य तातीन कों ब्याजू दीनों तव
ब्याज बहुत आमन लाग्यो लोभ के लिये तातीन
कौ ब्यौपार कीयो पूरब देश में फटे वस्त्र बुनत हैं
तिन सों ताती कहत हैं तव राम दास जी के सेव्य श्री
ठाकुर जी श्री नवनील प्रिया जीने कह्यो रामदास
तूंतो हम कों तातीन पर राखत हैं तव रामदास जी
यह बात सुनि कें चोंकि उठे और कह्यो जो महारा
ज मोसों चूक परी तव रामदास जी तातीन पर गए
और कह्यो जो मेरो द्रव्य देउ तव उन तातीन नें
रामदास जीसों पूछी जो यह कारन कहा है सो द्रव्य
मांगत हो तव रामदास जी नें कह्यो जो में कहा क
रूं मो कों तो लरिका संग काम पर्यो है ताते लरि
का को मन राख्यो चाहिये तव तातीन नें कह्यो
जो हम द्रव्य इक ठोरो करत हैं तव कितेक दिन
पाछें उन तातीन ने द्रव्य दीयो सो द्रव्य लेकें घर आ
ए फेर वैसें ही सेवा करन लागे सो सव द्रव्य निवस्यो
तव वनियान की दूकान ते उचापनि करन लागे त
व करजा बहुत है गयो तव उचापनि वनियां की
दूकान ते दूर कीनी और वनियां की दूकान ते उ
चापनि करन लागे पीर वा वनियां की हाट आगे
होय कें निकसते नाहीं और गेल होय के जाते तव
एक दिन वनियांनें राम दास सों कही जो भलो तुम
मेरी दुकान के आगे होय कें नाहीं निकसत हो औ
र उचापनि नाहीं करत तो मेरो लेखो करि कें मेरो

पैसा चुकाय देउ तगादो बहुत करें तो तब श्री ठाकुर जी राम दास जी को स्वरूप धार के वा बनिया की हाट ऊपर गए और श्री मुख ते कही जो लेखो लाउ पैसा चुकाय देउं तब वा बनिया ने बही देखि लेखो करि के पैसा चुकाय दीनों रुपैया एक सौ अधिक दीए श्री ठाकुर जी आप श्री हस्त सों लिखि आये परि यह बात रामदास जी नें न जानी तब एक दिन राम दास जी कों बुलाय वे वैष्णव आए तब उन वैष्णवन के पाछें पाछें रामदास जी गए सो रामदास जी वा बनियां की दुकान के आगे होय के निकसे तब आनाकानी देके निकसे इतने में वा बनियां नें कही जो रामदास जी तुम मेरी हाट ते उथापनि नाहीं करत सो तौ मेरो अभाग्य है परि तुमारो मांयें अधिक द्रव्य है सो तो उठाय लेउ तब रामदास जी नें कह्यो जो उहां ते फिर आवत हों तब रामदास नें मन में विचार्यो जो मेंने याकूं कछु दीयो नाहीं और यह कहत है जो तुम्हारो अधिक द्रव्य है सो तौ उठाय लेउ यह कारन कहा है परि जानियत है जो यह श्री ठाकुर जी को और ते काम भयो है पाछें रामदास जी वैष्णवन के घर ते आये तब वा बनियां की हाट पै जाय के लेखो मांगो जो लेख्यो लाउ तब वा बनिया नें कह्यो जो कहा लेखो देखोगे तब वा बनियां नें बही दिखाई तब वा बही में रामदास जी ने श्री ठाकुर जी के हस्ताक्षर देखे तब चुप करि रहे तब घर

आय रामदास जी नें स्त्री सों कही जो हूं तो घर में नाहीं रहूंगो चाकरी करूंगो तब सिपाहगीरी को विचार कीयो तब घोड़ा मोल लीयो सब हथियार बांधन लागे तब जल और बीड़ा अपरस में लेत हे सो अपरस छूटी बिना अपरस में लेन लागे सो कितनेक दिन पाछें रामदास जी अड़ेल आये सो हथियार बांधे ही जाय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के

दर्शन कीने दंडवत कीनी तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री मुख ते धन्य धन्य कह्यो जो राम दास तूं धन्य है तब और वैष्णव पास बैठे हे सो कहन लागे जो महाराज अब याको धन्य क्यों कहत नहीं अब तो यह अपरसता सों नाहीं रहत है सि-

पाहीन में चाकरी करत हैं तब श्री आचार्य जी म हा प्रभून ने कही जो यह धन्य याते है श्री ठाकुर जी को श्रम नाहीं करवावत याकी बराबर काउ धीरज वंत नाही श्री आचार्य जी महाप्रभू आप नो समें गंगास्नान कों पधारे तब मार्ग में एक खाड़ देख्यो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह खाड़ अजहू भर्यो नाहीं सो इतनों कहत ही वैस्नव सब खाड़ भरन लागे बागा पहरें ही तब रा मदास जीहू एक टोकरा लैंकें खाड़ भरन लागे त व श्री आचार्य जी महा प्रभू स्नान करि कें पधारे तब तांई खाड़ भर दीनो तब रामदास जी को देखि कें श्री महा प्रभू जी बहुत प्रसन्न भए ॥

## वार्ता प्रसंग ३

और रामदास जी के कछु संतन न हुती तब स्त्रीनें रामदास जी सों कह्यो जो तुम और विवाह करो तो तुम्हारे बालक होय तब रामदास जी नें क ह्यो जो हम को तो बालक की इच्छा नाहीं तब स्त्री ने कह्यो जो मोकों तो बालक की इच्छा है तब रा मदास जी नें कह्यो जो तो कों बालक की इच्छा है तो हमारे श्री नवनीत प्रिया जी की बाल भाव सों सेवा करि जैसें बालक कूं खवाइये प्याइये खि लाइये हित करियें तैसे तुम श्री नवनीत प्रिया जी को लडावो तब तेरें बालक होयगो तब रामदास जी की स्त्री नें श्री नवनीत प्रिया जी की बाल भा व सों सेवा करी सो या प्रकार सों सेवा करि जो वा

लक भयौ है सो वे रामदास जी श्री आचार्य जी
महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते
इनकी वार्ता को पार नाहीं सो इनकी वार्ता अब
कहां तांई लिखियै ॥

वार्ताप्रसंग २

वैष्णव ॥ ७ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक गदाधरदास॰
सारस्वत ब्राह्मण कडा
में रहते तिनकी
वार्ता ।

सो गदाधरदास के माथे श्री मदनमोहन जी की
सेवा हती सो श्री ठाकुर जी बड़े गोर इते सो नित्य

ग्रांन जैसो उनके जिजमान केसें आवतो तैसो श्री
ठाकुर जी कों समर्पते सो एक दिन जिजमान केसें
कछु आयो नाहीं तब जल ही छान के समर्प्यो परि
मन में बहुत खेद भयो छाती में आगिन सी उठी ऐसें
करत रात्रि पर गई तब एक जिजमान द्वार पे आ
य पुकार्यो और कह्यो जो किवाड़ खोलोतब गदा
धर दास ने किवाड़ खोले तब वा जिजमान ने एक
थागा और चार रुपैया और कछु सामग्री गदाधर
दास कों दीये और कह्यो जो आज मेरे पिता को श्रा
द्ध दिन हतो ताको यह दीजियो लेउ तब गदाधर
दास ने लीनो सो थागा सामग्री घर में धरि के आ
प बाज़ार में गये सो एक हलवाई मिठाई ताको क
रत हतो ताकी हाट पे गए तब जाय के वा हलवाई
सों पूछी जो तेरे मिठाई कैसी है तब वा हलवाई ने कही
जो मिठाई जलेबी अबही कीनी है या मेंने बेची
नाहीं तब जलेबी तुलाय मोल देके घर आए त
ब गदाधर दास आप के स्नान करि श्री ठाकुर जी
कों भोग समर्प्यो समयानुसार भोगसराय अनो
सर करके पाछे वैष्णवन कों बुलाय महा प्रसाद
सबन कों लिवायो सो अति अलौकिक स्वाद
भयो ऐसो जो कछु कह्यो न जाय सो सब महा प्र
साद वैष्णवन कों लिवायो और आप भूखे ही सो
य रहे पाछे सवारे उठि सीधो सामग्री लाए तब स्ना
न करि रसोई करी श्री ठाकुर जी सेवा शृंगार करि
श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो भोग सराय वैष्ण

व फेर बुलाये जब वैष्णव प्रशाद लेवे को आगे बैठे तब पूछन लागे जो राधि को महा प्रशाद ह मने लीनो सो बहुत स्वाद भयो सो कोन कोन सम र्प्यो तब गदाधर दास ने सब प्रकार कह्यो तब स ब वैष्णव बहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो गदाध र दास नें सत्य कह्यो ॥

## ॥ वार्ता प्रसंग ९

बहुर एक दिन गदाधर दास नें सब वैष्णव महा प्रसाद को बुलाए हुते पारि साक भाजन कछु न हुतो तब गदाधर दास नें कही जो ऐसा कोइ वै ष्णव है सो साक लै आवे तब तिन में एक वैष्ण व वेणीदास को भाई माधौ दास सो बड़ो विषयी हुतो तातें वेश्या घर में राख्यो हुतो तिन नें कह्यो जो मैं लै आऊंगो तब गदा धर दास नें कह्यो जो भ ले लै आवो तब माधोदास गयो सो बथुवा को भाजी लै आयो सो माधो दास नें ताको भांति सों दीनी रसोई में पाछें रसोई सिद्ध भई तब श्रीठा कुर जी को भोग समर्प्यो पाछें भोग सराय अनो सर कर के वैष्णवन को महा प्रशाद लेन बैठाए पारि वह भाजी अति स्वाद भई तब गदाधर दास ने माधौ दास को आसीर्वाद दियो जो तू हरि भक्त हद होयगो पाछें गदा धर दास के आसीर्वाद ते माधोदास भलो वैष्णव भयो सो वे गदाधरदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भ गवदीय हुते तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं तातें

इनकी वार्ता अब कहां तांई लिखिये॥
वार्ता प्रसंग १॥
वैष्णव ॥८॥ सम्बन्ध ॥४८
अब श्री आचार्य जी महा प्रभून
के सेवक वेणीदास माधो
दास दोऊ भाई ति०
न की वार्ता

सो बड़े भाई वेणीदास छोटे भाई माधोदास सो माधोदास वही जो गदाधर दास के घर बथुवा की भाजी ले आयो हो सो माधोदास बड़ो विषयी हतो ता नें घर में वेश्या राखी हती ताते सब वैष्णव माधो दास की निंदा करते सो बात श्री आचार्य जी महा प्रभून नें सुनी जो माधोदास बड़ो विषयी भयो है घर में वेस्या राखी है सो एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून नें माधो दास सों पूछो जो क्यों रे माधो दास तैनें घर में वेश्या राखी है तब माधो दास नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो महाराज मेरो मन आसक्त भयो है तासों राखी है तब श्री आचार्य जी महा प्रभू आप चुप कर रहे सो तीन बेर आपने माधो दास सों पूछो तब तीन्यो बेर माधो दास ने योंही कही जो महाराज मेरो मन वा सों आशक्ति भयो है तासों राखी है तब वैष्णवन नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कही जो महाराज अब लों तो आप की कांनि ही परि अब तो तुम्हारे आ गें कहै तासों तुम नें तो कछू न कही तब श्री आ

चार्य जी महाप्रभून नें उन वैस्नवन सों कही जो वा
को मन वासों आसक्त भयो है सो श्री ठाकुर जी कों
फेर तें कितनो बार लागेगो और गदाधरदासनें
वाकों आसीर्वाद दीयो है जो ताकों दृढ भक्ति होय
गी सो यह माधो दास है तब किनेक दिन पाछें मा
धोदास की बुद्धि श्री ठाकुर जी ने फेरी तब नौ बानें
वेश्या दूर कीनी पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून
की कृपा ते माधोदास भलो वैस्नव भयो॥

वार्ता प्रसंग १

बहुर किनेक दिन पाछें एक माला मोतीनकी
बहुत सुन्दर बहुत मोल की बिकबे कों आई सो दे
ख कें माधोदासनें बड़े भाई वेणीदास सों कह्यो
जो यह माला श्री ठाकुर जी के कंठ लायक है त
ब बड़े भाई वेणीदासनें कही जो यह माला कीक
हा है हमारे पास जो है सो सब श्री नवनीत प्रिया
जी को है ऐसें कहि कें बात टार दीनी तब माधो
दास नें कही जो अपने घर में है सो सब ठाकुरजी
को है तो माला क्यों न लेउ तब बड़े भाई वेणीदा
स ने कही जो हम गृहस्थ हैं हम को विवाह का
ज सब करनो है ऐसें क्यों बनें तब छोटे भाई मा
धोदास नें कही जो हूं तो न्यारो होउंगो सो न्यारो
भयो द्रव्य सब बांट लीनी सो द्रव्य की वस्तु लेकें
दक्षिण गयो तब वस्तु सब बेची तब व्यवहार क
र कें द्रव्य बहुत उपज्यो तब एक माला मोतीन
की पहिले मोल ते उत्तमोत्तम लीनी सो माला ले

के घर कों चले सो आवत वाट में एक बड़ी नदी
आई तब नाव में बैठे तब नवनीत प्रिया जी ला
ल कड़ी हाथ में लेकर आये और कह्यो जो नाव
डुबाऊं तब माधोदास नें कह्यो जो निजेच्छातः कार
य्यनि: तब श्री ठाकुर जी नें कही तो तू क्यों गयो

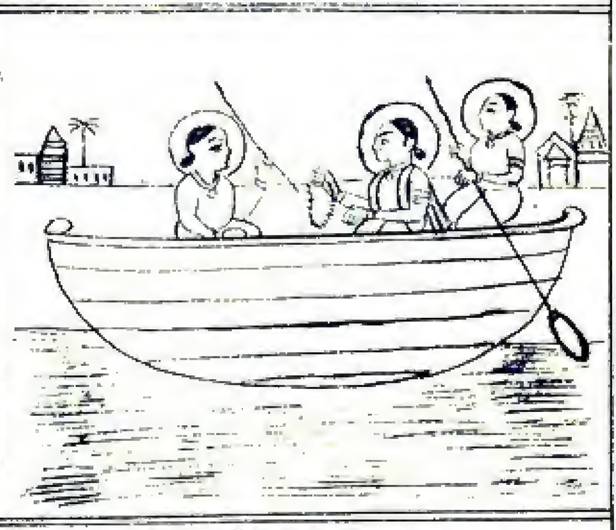

हो तब माधो दास नें कही जो महाराज में माला
लेन गयो हो तब श्री नवनीत प्रिया जीनें कह्यो
जो हमारे का माला न हुती हमारे माला बहुतेरी
हैं तब माधोदास नें कह्यो जो तुम्हारें माला ब
हुतेरी हैं पर सेवक कों तो उपाय करनो तब ना
व डूबवे ने रही जितने मनुष्य नाव में बैठे हते ते
सब हलचल करन लागे और माधोदास को।-

मन प्रसन्न हुतो तब सबन के मन में आई जो एव
डे महा पुरुष हैं पाछें माधोदास उहांते घर आये
तब श्री आचार्य जी महा प्रभून कों दंडवत कीनी
और हाथ में माला दीनी तब श्री आचार्य जी म-
हा प्रभून नें कही जो नाव डुबवे ते कैसें रही तब मा
धोदास ने सब समाचार कहे तब और वैष्णव पा
स बैठे हुते तिननें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों-
कही जो वही माधोदास है जो श्री महा प्रभून की
कृपा ते श्री ठाकुर जी ने माधोदास को मन फेर्यो
और भगवद भाव उत्पन्न भयो आग्य ऊपर आ
सक्तिता हुती सो श्री ठाकुर जी के ऊपर भई सो
माधोदास ऐसे भगवदीय हैं तातें इन वेणीदा-
स माधोदास की वारता को पार नाहीं सो इनकी
वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्णव ॥९॥
अब श्री आचार्य जी महा प्रभून
के सेवक हरिवंश पाठक
सारस्वत ब्राह्मण ब-
नारस में रहते ॥
तिनकी वार्ता

सो वे हरिवंश पाठक पटना में गये हे सो वहां
के हाकिम सों बहुत मिलाप हुतो सो वा हाकिम
अपने मन में कहे जो ए मेरे पास कछु मांगे तो मैं
इन कों देउं पर वे कछु मांगे नही यों करत दोल
उत्सव के दिन है रहे तब अपने सेव्य ठाकुर जी हू

ते तिनने स्वप्न में जताई जो तू मो कों डोल तें झू
लावेगो। तब हरिवंश पाठक नें मन में विचारयो जो
अब कहा करूं तब हरि वंश पाठक हाकिम पास
गये सो जाय कें कही जो आप के पास कछू मांग
न आयो हूं सो मो कों दीयो चाहिये तब राजा ने क
ही जो कहा चाहिये तब हरि वंश पाठक नें कह्यो
जो मो कों दिन द्वै में बनारस पहुंचनों है तब हाकि
म नें कह्यो जो भलो तब हाकिम नें घोड़ा और मनु
ष्य साथ दीये पेंड़ें में डांक चोकी बनाई ऐसे कर
ने अपने घर आये पाछें आप मन्दिर में आय कें
डोल सिद्ध कीयो डोल की सामग्री सब सिद्ध क
रकें पाछें श्री ठाकुर जी कों डोल में बैठाये बहने-

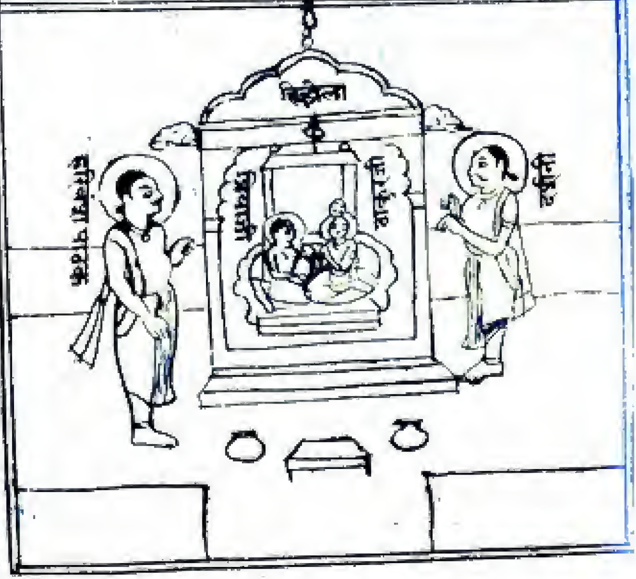

सुख भयो सो थोरे से दिन पाछें फिर पटना गये त
ब हाकिम ने कही जो तुम को ऐसी कहा जलदी
हुती ? तब हरि वंश पाठक नें कही जो कछु काम
हुतो परि मन की बात कछु न कही सो वे हरिवं
श पाठक श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृ
पापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता अनिर्वच
नीय है सो कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव १० ॥ संबंध ५२

## अब श्री आचार्य जी महा प्रभू न के सेवक गोविंद दा स भल्ला ताकी वार्ता

सो गोविंद दास भल्ला की गांठि में द्रव्य बहुत
हुतो सो श्री आचार्य महाप्रभून के सेवक भये त
ब गोविंद दास ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों
पूछो जो महा राज मेरी गांठि में द्रव्य है सो मैं क
हा करूं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो
जो श्री ठाकुर जीकी सेवा करि तब गोविंद दास
ने कह्यो जो महाराज सेवा कैसें करूं स्त्री अनु
कूल नाहीं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें क
ह्यो जो तू स्त्री को त्याग करि तब गोविंद दास
ने स्त्री को त्याग कीयो पाछें कही जो महा राज द्र
व्य को कहा करूं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून
नें कह्यो जो अब द्रव्य को चार विभाग करि तब
गोविंद दास नें द्रव्य के चार बट कीये तब फेरि क
ह्यो जो महाराज कहा आज्ञा है तब श्री आचार्य

जी महा प्रभून ने कह्यौ जो विभाग तो श्री नाथ जी कौ समर्पि और एक विभाग अपनी स्त्री कों दै और एक विभाग सेवा के लियें तू राखि तब गोविंद दास ने कही जो महा राज कछु आप अंगीकार करिये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यौ जो भलौ एक विभाग हमैं दै तब सब विभाग जहां के तहां दैकें अपने घर कौ द्रव्य लैकें आपु महा वन आय रहे सो महाप्रसाद वैष्णवन कों लिवावते वैष्णव न मिलै तौ गायन कों खवावते तामें ते आप रंचक हू न लेते आप न्यारी लौटी करि भोग समर्पि के लेते ऐसी भांति सों सेवा करते सो सब द्रव्य निवर्यौ तब श्री गोवर्द्धन नाथ जी की सेवा में आय रहे तब श्री गोवर्द्धन नाथजी की परि चारगी करते रसोई की टहल सब करते दोऊ वार के पात्र मांजते और रात्रि दिन तथा सवा पहर पाछली रहतो. तब उठते सो गागरि तहां ते लैकें चलते सो मथुरा में विश्रांत घाट पै स्नान करि कें श्री यमुना जल की गागरि भरि कें चलते सो राज भोग पहिले आय पहुचते वहां पात्र मांजि रसोई पोति अपनी सब सेवा सों पहुंच कें नीचे आवते पाछें तिलक पोंछि माला उतार गांठि बांधि कें आस पास के गामन तें भिक्षा मांगि लावते सो सेर चार पांच कौ आहार करते सो आहार माफिक जुरतौ तब आवतौ तब आप पास रोटी करि श्री नाथ जी की ध्वजा के

सन्मुख दिखाय तामें चरणोदक मिलाय प्रसाद ले
ते ऐसें निर्वाह करते तब ऐसी भांति करत बहुत दि
न बीते परि यह बात श्रीनाथ जी कों न भावै तब श्री
नाथ जीनें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो
तुम्हारो एक सेवक मो कों बहुत दुख देत है तब श्री
आचार्य जी महा प्रभून अडेल तें चले सो आगरे में
आए तब तहां के वैष्णव सों श्री आचार्य जी महा
प्रभून नें पूछी जो श्री ठाकुर जी किन रुठाए हैं तब
इन वैष्णवन नें कही जो महा राज हम तो कछु जा
नत नाहीं तब वहां ते श्री आचार्य जी महा प्रभू म
थुरा पधारे तब मथुरा के वैष्णवन सों श्री आचार्य
जी महा प्रभून नें पूछी जो श्री ठाकुर जी किन
रुठाए हैं तब वहां के वैष्णवन नें कह्यो जो महा
राज हम तो कछु समझत नाहीं तब श्री आचार्य
जी महा प्रभू उहां ते श्री जीद्वार पधारे तब श्रीनाथ
जी के दोऊ कपोल हाथन सों छुई के कह्यो जो
बाबा अनमने कैसें हो तब कही जो तुम्हारो से
वक मो कों बहुत खिजावत है तब श्री आचा
र्य जी महा प्रभून नें सब सेवकन सों पूछी जो तुम
कहा कहा सेवा करत हो और कहा प्रसाद लेत हो
तब सबन नें अपनी अपनी सेवा कही और प्रसाद
लेबे कौ प्रकार कह्यो पाछें गोविंद दास सों पूछी
जो तू कहा सेवा करत है तब जो सेवा करत हुतो
सो सब कही और प्रसाद लेबे को प्रकार कह्यो
सो सब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें सुनानन्त अ

यने मन में जानी जो इन रुठाए हैं तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें गोविंद दास भल्ला सों कही जो
तुम श्री ठाकुर जी की रसोई में प्रसाद लेउ तब गो
विंद दास ने कह्यो देव अंस कैसें लेउ तब श्री आ
चार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तू हमारी रसोई
में प्रशाद ले तब गोविंद दास ने कह्यो गुरु अंस
कैसें लेउ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो
जो तू सेवा मति करें तब गोविंददास बड़ी अहंकार
सों सेवा छोड़ि कें मथुरा गए सो केसोराय जी
की सेवा को इजारो पठान के पास ने लीयो तब
सेवा करन लागो सो एक बार श्री केसोराय जी
की सिज्या निवार ने बुनाई सो सिज्या बहुत अ
द्भुत भई तब श्री केसोराय जी वा सिज्या के ऊप
र पोंढन लागे तब तैसी ही निवार वा गाम के हा
किम ने बुनवाई परि वह निवार वैसी न भई तब
वा कारीगर नें कही जो वह निवार तो श्री ठाकुर
जी की है तब हाकिम नें कही जो वह निवार में
देखूंगो पाछें हाकिम श्री ठाकुर जी के दिवाले
में जाय के सिज्या ऊपर चढ़ि बेठ्यो सो गोविंद
दास नें सुनी तब गोविंद दास ने आय कें गुसीले
कें हाकिम को गारी दीनी जो तू कौन है सो हमारे
श्री ठाकुर जी की सिज्या ऊपर बैठ्यो है ऐसें वा
हाकिम कों ठौर मास्यो तब हाकिम के मनुष्यन
नें गोविंददास को ठोर मास्यो सो यह बात श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के आगे काहू वैश्नवनें जाय

कही और कह्यो जो ऐसी गति वैष्णव की कैसे बू
झिये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने कह्यो जो या
के परलोक में तो कछु हानि नाहीं परि इन मेरी आ
ज्ञा न मानी तासों याको देह या भांति सों छूट्यो है
यह गोविंद दास पहिले जन्म में श्री नंदराय जी को
भैंसा हुतो याने माटी पानी बहुत ढोयो सो वे गोविं
द दास भक्त श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे
कृपा पात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता को पार
नाहीं सो कहां तांई लिखिये ॥

## वार्त्ता प्रसंग १ ॥

## वैष्णव ॥ ११ ॥ सम्बन्ध ॥ ५३

## अब श्री आचार्य जी महा प्रभून की सेवक अम्मा क्षत्राणी जो। कड़ेस में रहती तिन की वार्ता

सो अम्मा के दोय बेटा हुते सो दोऊ परम वैष्णव हु
ते आप वैष्णव हुती और वाके लरिका वासों अ
म्मा कहते और श्री ठाकुर जी की सेवा ताकी भां
ति सों करती सो वाके सेव्य ठाकुर जी श्री बाल कृ
ष्ण जी वासों अम्मा कहते सो कितेक दिन पाछे ए
क बेटा वाको मर गयो तब श्री ठाकुर जी की रसो
ई करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पे समयानुसार
भोग सराय पाछे रोवन लागी तब अम्मा को रोवन
देखि कें श्री ठाकुर जी खिद पावन लगे श्री ठाकुर
जी कहै अम्मा तू रोवे मति परि यह रोवन ते रहे नाहीं

ऐसें करत वाकौ दूसरौहू बेटा मरगयौ तब तौ बहुत रोमन लागी तब श्री ठाकुर जी वाकौ रोवेन सों रावें और कहें अम्पा तू मति रोवें तब अम्पा रोवन ते रहे नाहीं तब श्री ठाकुर जीने श्री गुसांई जी सों कह्यौ जो अम्पा रोवति है सो मैं बहुत खेद पावत हौं तब श्री गुसांई जी अम्पा के घर पधारे और कह्यौ जो अम्पा तू मति रोवे श्री ठाकुर जी खेद पावत हैं तब रोवन ते रही और अम्पा सेवा को सब साज करि कें पाछें स्नान करि कें पाछें मन्दिर में जाय कें दोऊ हाथ सों सांधों लगाय कें श्री ठाकुर जी कें लगावे या भांति सों सेवा आछी तरह करती॥

## वार्ता प्रसंग १

बहुर एक दिन दूध कौ कटोरा श्री ठाकुरजी के आगे भरि राख्यौ हुतो ता समय श्री गुसांई जी अम्पा के घर पधारे मन्दिर कौ टेरा सरकाय कें दर्शन करन लागे तब श्री गुसांई जी देखे सौ ठाकुर जी दूध पीवते हैं तब श्री गुसांई जी देखि कें पाछें फिर आये तब अम्पा नें कही जो बावा पाछें क्यों फिर आये तब श्री गुसांई जी ने कह्यौ जो श्री ठाकुर जी दूध पावत हैं तब अम्पा ने कही जो श्री ठाकुर जी तो लरिका हैं तुम कहा जानत नाहीं तब श्री गुसांई जी दर्शन करि कें पाछें फिरे और अम्पा सों श्री गुसांई जीनें कह्यौ जो यह दूध हमारे घर पठाय दीजियो तब अम्पा नें कह्यौ जो राज आपही तो सें

रोगन वारे भावै तौ इहां आरोगो भावै उहां आरो
गो पाछें श्री गुसांई जी आपनें घर पधारे तब
अम्मा नें वह दूध श्री गुसांई जी के घर पठायदी
यौ सो अम्मा सों श्री ठाकुर जी ऐसें सानु भाव
हुते प्रत्यक्ष वार्ता करते जो वस्तु चहियै सो मां
गि लेते सो अम्मा श्री आचार्य जी महाप्रभून की
ऐसी कृपा पात्र भगवदीय ही तातें इनकी वार्ता
कौ पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखियै ॥

वार्ता प्रसंग २

वैष्णव ॥१२॥ सम्बन्ध ५४

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक गज्जन धावन

## दाथी आगरे के वा।
## सी तिन्की वार्ता।

सो गज्जन धावन श्री नवनीत प्रिया जी को म वा नौको भोंन मों करते श्री ठाकुर जी सानुभाव हुते गज्जन के साथ श्री नवनीत प्रिया जी खेलते गज्जन को कवहूं गाय करते कवहूं वछरा करते तव गाय को मुख अपने पीताम्बर सों पोंछते तव वछरा करते तव पकर रावते चलन न देते और जव घोरा करते तव पीठ ऊपर असवारी करते जव हाथी करते तव ग्रीवा ऊपर असवारी करते

श्री ठाकुर जी का गज्जन धावन को गाय करना।।

ऐसें करत गज्जन के घूटरू घिसि गये ऐसी कृपा श्री नवनीत प्रिया जी गज्जन धावन के ऊपर ऐ

सो करने भोग सामिग्री जो चहिये सो मांगि लेनें औ-
सो कितनीक वार्ता हैं सो कहां तांई लिखिये और
एक दिन श्री नवनीत प्रिया जी ने गज्जन धावन सों
कही जो मोकों श्री गुसांई जी श्री आचार्य जी महा
प्रभून के घर पधराय ता समय श्री आचार्य जी महा
प्रभू गोकुल मेंहुते ताहां गज्जन आय कें श्री आचा
र्य जी महाप्रभून सों कह्यौ जो महाराज श्री नवनीत
प्रिया जी को ऐसी आज्ञा भई है जो मोकूं श्री आ-
चार्य जी महाप्रभून के पास पधराय तब श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें कही जो भलो पधराय तब ग
ज्जन धावन नें श्री नवनीत प्रिया जी श्री आचार्यजी
महा प्रभून के मन्दिर में पधराये तब श्री आचार्य जी
महा प्रभून नें जैसो अस्नाव वन्यौ तैसें पधराय भोग
समर्प्यो पाछें रात्रि कों आप वहुत सोंधो लगाय कें
श्री नवनीत प्रिया जी कों अपनी सिज्या ऊपर ले
पोढे दूसरे दिन नई सिज्या करवाई ता ऊपर पोढे
परि वह सिज्या छोटी भई तब श्री नवनीत प्रिया
जी नें कह्यौ जो हूं तो या सिज्या ऊपर न पोढुंगो तब
श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो ऐसें कैसें
वनें तब श्री नवनीत प्रिया जी नें कही जो कछू वाध
क नाहीं है तब श्री आचार्य जी महाप्रभू आप सों-
धो लगाय कें पास ही लै पोढे पाछें दूसरे दिन
सिज्या बड़ी करवाई ता पर पोढाए तब पोढे ता
पाछें थोड़े से दिन रहिकें श्री आचार्यजी महाप्रभू
गोकुल तें अडेल को पधारे तब गज्जन हू साथ ग

यौ गज्जन धावन विना श्री नवनीत प्रिया जी एक
छाण हूं न रहते ऐसें ही नवनीत प्रिया विना गज्जन
न एक छाण न रहते तब एक दिन श्री नवनीत प्रि
या जी के लिये श्री अक्का जी ने गज्जन धावन कौ
पान लेवे पठायौ कह्यौ जो पान लै आवौ तब
गज्जन ऐसें तौ कह न सक्यौ जो श्री नवनीत प्रि
या जी मोसों हिले हैं सो में कैसें जाऊं ताते अन
बोल्यो पान लैन कों उठि चल्यौ सो थोरी सी दूर
गयौ इतनें में ज्वर चढ़ि आयो सो उहांही पड़ि र
ह्यौ और इहां श्री अक्का जी ने श्री नवनीत प्रिया
कों भोग समर्प्यौ तब अक्का जी सों नवनीत प्रिया
जीनें कह्यौ जो गज्जन कों बुलावो मेरो गज्जन
आवैगो तब भोजन करूंगो तब श्री अक्का जीनें
मनुष्य दोय बुलावन कों पठाये तब वे मनुष्य दे
खैं तो गज्जन थोरी सी दूर पै पर्यौ है ज्वर चढ़ि र
ह्यौ है मनुष्य उहां ते बुलाय लाये तब गज्जन आप
स्नान करि मन्दिर में गयौ तब तत्काल ज्वर उतर
गयौ तब गज्जन नें श्री नवनीत प्रिया जी सों कह्यौ
जो बाबा भोजन क्यौं नाहीं करत अब भोजन करौ
तब भोजन श्री नवनीत प्रिया जीनें कीयौ गज्जन
धावन सों श्री नवनीत प्रिया जी ऐसे सानुभाव हु
ते श्री नवनीत प्रिया जी तें एक छाण न्यारो भयो
जो तत्काल ज्वर चढ़ि आयौ और जब निकट
आयौ तब तत्काल .............. ज्वर उतर गयौ
तातें गज्जन धावन श्री नवनीत प्रिया जी के सदा

पास रहते सो वे गज्जन धावन श्री आचार्यजी महा
प्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे नाते इनकी
वार्ता को पार नाहीं सो कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १॥

वैष्णव १३ सम्बन्ध ५५

अब श्री आचार्य जी महा प्रभू
न के सेवक नारायणदास
ब्रह्मचारी सारस्वतब्रा
ह्मण महावन में र
हते तिन्की
॥ वार्ता ॥

सो नारायणदास के सेव्य श्री ठाकुर जी श्रीगो
कुलचन्द्रमा जी सो नारायणदास श्री गोकुल
चन्द्रमा जी की नीकी भांति सों सेवा करते और गा
यन कों घास खवावते सो धोय पोंछि के खवा
वते ताको तात्पर्य्य यह जो श्री ठाकुर जी दूध
आरोगत हैं जो मति दूध में रज आवे ऐसें करते
और श्री आचार्य जी महा प्रभू जब श्री गोकुल
पधारते तब नित्य प्रातः काल श्री गोकुल तें म
हावन पधारते श्री गोकुलचन्द्रमा जी की सेवा
करिवे कों सो सेवा करि भोग समर्पि के पाछें
श्री गोकुल पधार ते और नारायणदास जहां
हाथ पांव धोयवे को बरहे में जाते जा ठौर ते मा
टी खोदते ता ठौर द्रव्य निकसनो ता ऊपर मांटी

डारि उठि आवते परि द्रव्य कों स्पर्शन करते सो
नारायण दास ऐसे त्यागी हुते सो नारायणदा
स एक दिन सोवत हुतौ तहां खाट के आसपास
द्रव्य के ढेर भये हुते तब नारायणदास देखे तो खा
ट के आस पास द्रव्य के ढेर भये हैं तब नारायण
दास ने भतीजी सों कही जो बेटी वेगि उठि ···
घर में विगार बहुत भयो है बुहारि कें कूरौ सब
बाहर डारि आउ तब नारायणदास तो बाहे में
देह कृत को गये पाछें भतीजीनें सोई कीयो स
ब बुहार कें कूडे को नांई बाहर डार दोनों जो
सब लीप डारी पाछें नारायणदास स्नान करि
मन्दिर में गये तब सेवा सिंगार सब करिकें श्री

ठाकुर जी के मन्दिर देखें सो श्री ठाकुर जीनें नारायण दास कों अति सुन्दर दर्शन दीनो तब अति प्रसन्न श्री ठाकुर जी कों देखिकें नारायणदासनें कह्यो जो महाराज यह घटा काहे कों उनही है न जानें कहां बरसेगी पाछें आपही कह्यो जो यह घटा श्री आचार्य जी महा प्रभून को सरवस्व है उहां बरसेगी पाछें नारायणदास श्री गोकुलचन्द्रमा जी को राज भोग समर्पि कें बाहर आय बैठे तब मढ़ो भरि आयो जो श्री ठाकुर जो कौन भांतसों आरोगत हैं ऐसो विचार मन में लाए तब भतीजी ने कही जो श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक जहां भोग समर्पित हैं सो श्री आचार्य जी महा प्रभून की कानितें आरोगत हैं सो तुमतो श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक परम कृपा पात्र भगवदीय हो तातें तुम्हारो समर्प्यो कों न आरोगेंगे तुम सन्देह को करत हो तब नारायण दास नें कह्यो जो बेटी आरोगें तब जानियें तब को ई वैष्णव अपने घर आय अचानक महा प्रसाद लेय तब जानियें जो श्री ठाकुर जी आरोगे होंयगे वैष्णव ऊपर नारायणदास को ऐसो भाव हुतो ॥९॥

## वार्ता प्रसंग १

बहुरि एक दिन नारायणदास श्री गोकुल चंद्रमा जी को शृंगार करि रसोई में गये तहां शृंगार भोग कों सिद्ध करि कें सरायवे को थार धर्यो इतने में एक वैष्णव नें नारायणदास के पास आय कें बधाई दीनी जो श्री आचार्य जी महा प्रभू गोकुल ने पधा

रत हैं सो नारायण दास सुनत ही ताती खीर कों दूव
रा में मेलि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पि उतावले
श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आए तब
आय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कर
कें दंडवत कीनो सो श्री आचार्य महाप्रभून के
चरणारविंद ऊपर माथो मेलि रहे तब नारायण दा
स को माथो पकरि आप श्री हस्त सों उठायो और
पूछी जो श्री गोकुलचन्द्रमा जी के यहां कहा समय
है तब नारायण दास नें कही जो महाराज अबही
सिंगार भोग समर्पि कें आयो हूं सो सुनि कें श्री
आचार्य जी महाप्रभू तत्काल पधारे तब जातही
स्नान करि कें मन्दिर में हाथ धोय आचमन की
झारी हाथ में लेंके भोग सराय वे कों मन्दिर में प
धारे तब भीतर जाय कें देखें तौ श्री गोकुलचंद्र
मा जी के श्री हस्त खीर में भरे हैं और श्री हस्त कम
ल खैंचि रहे हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री
गोकुलचन्द्रमा जी सों कही जो महाराज श्री हस्त
कों क्यों खैंचि रहे हो तब गोकुलचन्द्रमा जी नें क
ही जो तुम कों आयें जानि के मोकों नारायणदा
स ताती खीर समर्पि कें तुमारे पास गयो सो खीर
मेरे हाथ सों ताती लागी सो मैंनें थारी सों चाट के
हाथ झटके सो सब मन्दिर में छींट लागी हैं और
मेरे हाथ और ओठ राते भए हैं सो श्री गोकुलच
न्द्रमा जी के हाथ और ओठ अजहूं लाल हैं पाछें
श्री आचार्य जी महाप्रभून नें खीर पंखा सों सीरी

करि भोग समर्पि कें बाहर आये तब नारायणदा
स सों खीजे और कह्यो जो तैनें श्री ठाकुर जी कों ते
नो खीर समर्पी तब नारायणदास नें श्री आचार्य
जी महाप्रभून सों बीनती कीनी जो में राज कों पधा
रे जानि उतावलो राज पास आयो तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें कही जो आज पीछें ऐसो काम
मति करियो पाछें समय भयो तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें भोग सरायो तब श्री गोकुलचं
द्रमा जी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दोउ श्री
हस्त पखार कें कह्यो जो तुम खीर महाप्रसाद लेउ
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो महा
राज जानि व्यवहार को कठिन है तब श्री गोकुल

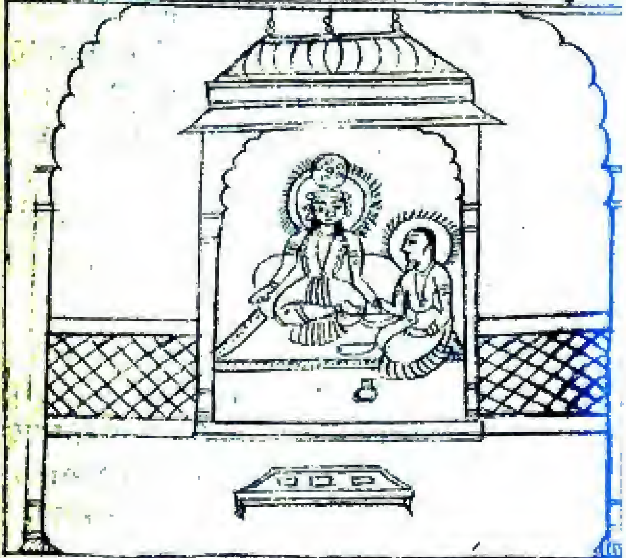

चन्द्रमाजीनें कह्यो जो यह मेरी आज्ञा है तातें तुम कछू विचार मति करौ खीर को महाप्रसाद लेउ-तब श्री गोकुलचंद्रमाजी नें खीर कौ महाप्रसाद दीयो सो अपने आगे ही श्री आचार्य जी महाप्रभून कों लिवायो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें लीनो-तादिन ते खीर अनसखड़ी में होत है नारायणदास सों श्री गोकुलचन्द्रमा जी ऐसी भांति सेवा करावते वे नारायणदास ऐसे भगवदीय है तातें श्री गोकुलचन्द्रमा जी ऐसी कृपा करते॥

## वार्ता प्रसंग॥२॥

बहुरि कितनेक दिन पाछे नारायणदास की देह थकी सो बहुत अशक्ति भई तब एक दिन श्री गोकुलचन्द्रमाजीनें नारायणदास सों कह्यो जो नारायनदास तू कछु मांगि तब नारायनदास ने कही जो महाराज हूं यह मांगत हूं जो तुम श्री गुसांई जी के-घर पधार सेवा करावौ नारायनदास के मन में यह जो श्री ठाकुर जी और कहूं सुख न मानेंगे सेवा आकी भांति सो न होयगी सो नारायणदास ने अंत समें श्री ठाकुर जी के पास यह मांग्यो पाछें कितनेक दिन में नारायणदास की देह छूटी तब श्री गोकुल-चन्द्रमा जी ने कितनेक दिन ताई कृष्णदास स्वामी के पास सेवा करवाई पाछें श्री गुसांई जी के घर मथुरा में पधारे सो श्री गुसांई जी ने श्री रघुनाथ जी के माथे पधराय दीए सो वे नारायणदास ब्रह्मचारी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय

है तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥+

वार्ता प्रसंग ३ ॥

वैस्नव १४ ॥ सम्बन्ध ५८

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेव
क एक क्षत्राणी महावन में
रहती ताकी वार्ता है

सो एक समें श्री आचार्य जी महा प्रभू एथ्वी परि क्रमा करत करत महावन पधारे सो वा क्षत्राणीकें चारि स्वरूप आप्र भए हैं सो चारों स्वरूप श्री आचार्य जी महा प्रभून के आगें आनि धरेवे सो तिन चारों स्वरूपन के नाम एक तो श्री नवनीत प्रिया जी औ र एक श्री गोकुल चन्द्रमा जी और एक श्री लोलित त्रिभंगी जी और एक श्री लाडले जी ये चारों स्वरू प श्री आचार्य जी महा प्रभून नें चार वैस्नवन के माथे पधराय दीए सो या भांति श्री गोकुल चन्द्रमा जीनों नारायण दास ब्रह्मचारी के माथे पधराये औ र श्री लाडले जी आय दास क्षत्री के माथे पधराये और श्री लोलित त्रिभंगी जी देवा क्षत्री के माथे प धराये और श्री नवनीत प्रिया जी गज्जन धावन के माथे पधराये या भांति चारों स्वरूप चार वैस्नवन के माथे पधराय दीए तब चारों वैस्नवन सों श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो यह मेरे सर्वस्व हैं सो स्वरूप तुम्हारे माथे पधराये हैं सो इनकी से वा तुम नीकी भांति सों करियो और तुम सों जब सेवा न होय आवे तब हमारे घर पधराय जेयों

पाछें नवनीत प्रिया जीने तौ कछुक दिन गज्जन धा
वन के माथे सेवा करवाई पाछें श्री आचार्य जी म
हाप्रभून के घर पधराये सो सब तौ गज्जन धावन
की वार्ता में लिख्यो है और श्री गोकुलचन्द्रमा जीने
किनेक दिन ताई नारायणदास ब्रह्मचारी के माथे
सेवा करवाई पाछें कृष्णदास स्वामी के पास सेवा
करवाई पाछें श्रीगुसांई जी के घर पधारे पाछें श्री
गुसांई जीने श्री रघुनाथ दासजी के माथे पधराये
सो प्रकार नारायणदास ब्रह्मचारी की वार्ता में लि
ख्यो है और श्री लाडलेजी को प्रकार सन्त जीयदास
की वार्ता में लिख्यो है सो अब श्री आचार्य जी के
कुल में विराजत हैं सो ललित त्रिभंगी जी अंतर
ध्यान भए सो प्रकार देवा कपूर की वार्ता में
लिख्यो है सो वह क्षत्राणी श्री आचार्य जी महा
प्रभून की ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही ताकी
वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ :

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ८५ सम्बंध ५९ ॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून
के सेवक जीयदास क्ष
त्री सूरति के ता
तौ लिख्यते

सो जीयदास के माथे श्री आचार्य जी महाप्रभू
नने श्री लाडिले जीकी सेवा दीनी सो जीयदास के
पास श्री लाडिले जीने चार पहर सेवा करवाई सो
जीयदास के चार बेटा हुते तिनमें पुरुषोत्तमदास

कवील दास इन दोऊ भाईननें कोई एक दिन सेवा
कीनी पाछें दोऊ भाईन के संतति न भई तब इनके
पाछें इन के मामा कृष्णदास चोपडा हते तिन के
माथे श्री लाडले जीपधारे सो कितेक दिन तांई
कृष्ण दास चोपडा सों सेवा करवाई सो भली भांति
सों सेवा कीनी सो एक समय महामरी आई सो
कृष्णदास कें घर के सब कुटुम्ब की देह छूटी तब
कृष्णदास अकेले रहे तब कृष्णदास के मित्र हु
रजी तथा मथुरामल खत्री हते सो कृष्णदास तहां
आय रहे सो कितेक दिन तांई कृष्णदास और हर
जी दोऊ मिल कें सेवा कीनी पाछें कृष्ण दास
की देह छूटी तब हरजी भाईनें डेढ़ वर्ष लों सेवा-

कीनी पाछें श्री गुसांई जी के घर पधारे सो श्री ल
इन्ने जी अब विराजत हैं सो वे ऐसे दास श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भग
वदीय हैं सो इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां
तांई लिखियै ॥+

वार्ता प्रसंग ॥१॥

वैस्नव ॥९६॥ सम्बन्धई०

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक देवा सखी कपूर
तिनकी वार्ता लिख्यते

सो देवा कपूर के माथे श्री आचार्य जी महाप्रभू
न नें श्री ललित त्रिभंगी जी की सेवा पधराय दीनी

सो देवा कपूर की जब लों देह रही तब लों सेवा की
नी ता पाछें देवा कपूर की स्त्री की देह छूटी ताकौ
संस्कार कर आये ता पाछें मन्दिर उघार कें देखें तो
श्री ठाकुर जी नाहीं और सामग्री सब धरी हैं एक
श्री ठाकुर जी नाहीं हैं सो जानें कहा अन्तर ध्यान
भए यातें यों जानी परी जो देवा कपूर के चार बेटा
हुते पर उनके पास सेवा न करवाई श्री ठाकुर जी
तो स्नेह के बस हैं सो भगवद इच्छा ऐसी ही भई
तातें देवा कपूर तथा देवा कपूर की स्त्री श्री आ
चार्य जी महा प्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदी
य हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें॥
॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैष्णव १७॥ सम्बन्ध ८१॥

## अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक दिन कर दास सेठ तिनकी वार्ता लिख्यते॥

सो दिन कर दास को कथा के ऊपर बहुत रुचि
हुती सो श्री आचार्य जी महाप्रभू आप अड़ैल में
कथा कहते तहां दिन कर दास नित्य सुनते सो
एक दिन दिन कर दास रसोई करत हुते सो आ
टौ सान्यौ हुतो ऊपरा बराय दीने हे लोटी कोर रा
खी हुती इतने में श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेव
क जल घरिया जो श्री ठाकुर जी कौ जल भरिवे
कौं आयौ तब दिन कर दास ने पूछौ जो श्री आ
चार्य जी महा प्रभू कहा करत हैं तब वा जल घ-

रिया नें कह्यौ जो पोथी खोली है अब कथा कहैं गें तब दिन कर दासनें काची ही अंगाकरी लीनी. सेकी नाहीं वेगि उठि वस्त्र पहर कें आयौ. आय कें कथा सुनी श्री आचार्य जी महाप्रभु कथा कह रहे हैं तब वा जलघरियानें श्री आचार्य जी महाप्र

भून सौं कह्यौ जो महाराज दिनकर दासनें काची. अंगा करी लीनी सेकी हू नाहीं तब दिन कर दास सौं श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो तू काची अंगाकरी क्यों खाय आयो है तब दिन कर दासनें कही जो महाराज अंगाकरी तो नित्य लेउंगो परि यह अमृत कथा कब सुनूंगो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो अब ते तू रसोई करि श्री ठा...

कुरजीकों भोग समर्पि प्रसाद लेंदु पहुंचि कें जब आवेंगो तब पोथी खोलूंगो तेरे आश बिना कथा न कहेंगे आजते हमारी कथा को श्रोता तू तातें तू निश्चिंत होय कें आइयो तब ता दिन ते दिनक रदास वेगिही रसोई करि भोग समर्पि प्रसाद लेकें जब कथा के समय आवते तब श्री आचार्यजी महाप्रभू पोथी खोलते सो वे दिनकर दास सेठ श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भग वदीय हे सो इनकी वार्ता को पार नाहीं तातें अब कहां ताईं लिखिये ॥+

॥वार्ता प्रसंग॥१॥वैष्नव १८॥संबंध ६२॥

अब श्री आचार्यजी महाप्र भून के सेवक मुकन्द दा स कायस्थ तिनकी वार्ता लिख्यते

सो मुकन्द दास आप कवि हुते सो कवित कर ते सो कवित बहुत कीये हे श्री आचार्यजी महा प्रभून के तथा श्री गुसांईजी के तथा श्री ठाकुर जी के बहुत कवित कीये हें और मुकंद सागर एक ग्रंथ कीयो सो एक समय मुकन्द दास उ ज्जैन के कारकुन होय कें आए तब तहां के पंडि त सब आय मिले तब पंडितन ने मुकन्द दास सों कह्यो जो तुम हमारे पास श्री भागवत सुनों तो सुनावें तब मुकन्ददास ने कह्यो जो तुम हमा रो भागवत जानत हो तब उन पंडितन ने कह्यो तुमा

कहा भागवत न्यारो है तब मुकन्ददास नें एक श्लो
क को व्याख्यान कीयो पाछें महीना तो मुनायो
परि आप काहू पास कथा न सुनी कोई पंडित क
दाचित व्याख्यान करतो ताको बहुत भांति दूषण दे
के आवते जो काहे ते सुबोधिनी में बहुत प्रवेश हो
मुकन्ददास को श्री आचार्य जी महाप्रभून के चर
ण कमल पर दृढ़ता हुती ताते सुबोधिनी स्फुर्दे
रूप हुती ऐसें करत करत कितनेक दिन में उज्जै
न में मुकन्ददास को देह छूटी तब काहू वैष्णव नें
श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें आय कही
जो महाराज मुकन्द दास नें अवंतिका पाई तब
श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कही जो ऐसें मति
कहो ताते ऐसें कहो जो मुकन्द दास को अवंति
का नें पाए सो वे मुकन्ददास श्री आचार्य जी महा
प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इ
नकी वार्ता को पार नाहीं सो कहां ताई लिखिये॥
वार्ता प्रसंग १॥ वैष्णव ९८॥ सम्बन्ध ८३॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक प्रभु दास जलोटा।
खत्री सीह नन्द के।
वासी तिनकी।
वार्ता।

सो प्रभु दास के सेव्य ठाकुर श्री मदन मोहन जी
सो राज नगार सिकन्दर पुर में बेठे हे सो जब श्री आ
चार्य जी महाप्रभू मथुरा पधारे तब प्रभुदास साथ हे

नब एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभू आप संध्या
वन्दन करि कें स्नान करत हुते विश्रांत के ऊपर
तहां दो चार वैस्नव और बैठे हे तब तहां रूप सनां

तब कृष्ण चैतन्य के सेवक नें श्री आचार्य जी महा
प्रभून सों पूछौ जो यह वैस्नव कौन हैं तब श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो ये हमारे सेवक हैं तब
रूप सनातन नें कह्यौ जो ऐसें दुर्लभ क्यों रहत हैं
तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यौ जो में इन को
बहुत बरजे जो तुम या मार्ग में मति परो पर इन मेरो
कह्यौ न मान्यौ ताको फल ये भोगत हैं पर रूप
सनातन कछू समझे नाहीं तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून के दर्शन करि कें रूप सनातन तौ गए पाछें

कितनेक दिन में एक वैस्नव रूप सनातन के साथ
को श्री जगन्नाथ जी के दर्शन को गयो तहां कृस्न
चैतन्य मिले तब कृस्न चैतन्य नें वा वैस्नव सों श्री
आचार्य जी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे औ
र कह्यो जो ना थ हैं कहां मिले हुते कहा करत पाये
हुते तब वा वैस्नव ने कृस्न चैतन्य सों कह्यो जो
श्री आचार्य जी महाप्रभु मथुरा पधारे हुते और
विश्रांत उपर मिले हुते बहुत नीके हैं और श्री
आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों रूप सनातन
हू गए हुते विश्रांत उपर सो श्री आचार्य जी महा
प्रभून सों रूप सनातन नें और वैस्नवन की बात पू
छी जो ये ऐसे दुर्लभ क्यों रहत हैं तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून ने कही प्रभूदास की बात कही जो
मैं इनकों बहुत बरजे परि इन मेरो कह्यो न मान्यो
ताको फल ये भोगत हैं सो यह बात सुनिकें कृ
स्न चैतन्य कों मूर्छा आई सो एक मुहूर्त लों मूर्छा
रही पाछें सावधान भये तब फेरि पूछो जो तुमनें
कहा बात कही तब वा वैस्नव नें फेरि कह्यो जो
श्री आचार्य जी प्रभून नें कह्यो जो या मार्ग में मेंम
ति परो तब कृस्न चैतन्य कों फेरि मूर्छा आई सो
दोय महूर्त लों रही पाछें फेरि सावधान भए ऐसें
तीन बार पूछो सो तीनों बार मूर्छा आई चौथी बा
र फेरि वा वैस्नव सों पूछी जो कहा कही तब वा
ने कृस्न चैतन्य सों कही जो अब मोपे कही न जाय
जो यह बात ऐसी है जो कोउ न चिरही होय सो ज

नै रूप सनातन कहा जानें ॥०

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥

औेर एक समय प्रभूदास नें बेगि रसोई करी सो दार तौ काची रही और अंगाकरी जरगई तब प्रभूदास के मन में आई जो ऐसी सामग्री श्री ठाकुर जी कूं कहा समर्पूं सो चरणोदक मेलि के प्रसाद लीयो और श्री ठाकुर जी तौ बाट देखत होरहे जो प्रभूदास भोग समर्पेगो और में आरोगूंगो औ र प्रभूदास नें तौ बिगरी सामग्री जानि के न समर्पी तब श्री ठाकुर जी ने श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कही जो आज मोकों प्रभूदास नें भोग समर्प्यो नाहीं मैनें बाट देखी जो अब मोकों प्रभूदास भोग समर्पेगो और में आरोगूंगो पर प्रभूदास नें भोग समर्प्यो नाहीं तब उत्थापन के समय प्रभूदास दर्शन कों आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें प्रभूदास सों कह्यो जो आज तेनें श्री ठाकुर जी के बिनें समर्पे प्रसाद लीयो तब प्रभूदास नें सांची बात कही जो महाराज दार तौ काची रही और अंगाकरी जरगई ताते ऐसी सामग्री जानि भोग समर्प्यो नाहीं चरणोदक मेलि प्रसाद लीयो तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कह्यो जो ऐसी रसोई क्यों करी श्री ठाकुर जी ने तौ बड़ी बार लों बाट देखी जो प्रभूदास भोग समर्पेगो और में आरोगूंगो ताते तेंने ऐसी रसोई क्यों करी सावधान है कें स्नान करी पाछे सावधान है कें रसोई करनलगे

## वार्ता प्रसंग २

और एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभु व्रज में पाव धार हुते तब प्रभु दास साथ हे तब एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभुन नें व्रज में श्री गोवर्द्धन के निकट स्थल भोग धरायो पाछें भोग सरायो तब प्रभु दास सों श्री आचार्य जी महा प्रभुन नें कह्यो जो प्रसाद लेउ तब प्रभुदास नें कह्यो जो महाराज मैनें स्नान नाहीं कीनो तब श्री आचार्य जी महा प्रभुन नें प्रभु दास सों कह्यो जो तू देखि तब श्लोक करि के दिखायो ॥ सो ॥

### ❋ श्लोक ❋

वृक्षे वृक्षे वेणु धारी पत्रे पत्रे
चतुर्भुजः ॥ यत्र वृन्दावने तत्र
लक्ष्या लक्ष कथा कुतः ॥१॥
जलादिभिः रजः पुण्य रज सो
पि जलांबरं ॥ यत्र वृंदावनंत
त्र स्नानो स्नान कथा कुतः ॥२॥

यह श्लोक पढि कें प्रभु दास कों दिखायो व्रज को स्वरूप वृक्ष वृक्ष विषें वेणु धारी पत्र पत्र विषें चतुर्भुज देख या भांति को प्रभुदास कों दर्शन करवायो ऐसो माहात्म्य व्रज को स्वरूप दिखायो पाछें प्रभु दास नें प्रसाद लीयो दंडवत करि कें प्रभुदास के ऊपर श्री आचार्य जी महा प्रभुन की ऐसी कृपा हुती सो आप नें कृपा करि कें व्रज को स्वरूप दिखायो ॥ ५ ॥

## वार्ता प्रसंग ॥३॥

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू आप मन्दिर में हुते तब ऐसी मन में आई जो श्री ठाकुर जी को भोग समर्पिये सो दही को भोग समर्पिये ता समें प्रभू दास बाहिर हुते सो प्रभूदास नें श्री आचार्य जी महा प्रभून के अंत:करन की जानी तब प्रभूदास बाहिर गये तब गांव में जाय के एक अहीरी मिली तासों पूछी जो तेरे दही है तब वा अहीरी ने कह्यौ जो हां दही है तब प्रभूदास ने कह्यौ जो लाउ तब अहीरी दही ले आई तब प्रभूदास नें कह्यौ याको मोल कहि तब वा अहीरी नें कही जो तू मोकों कहा देयगो तब प्रभूदास नें कह्यौ जो तू मांगगी सो देउंगो तब वा अहीरी कही जो एक टका दे और कहा मुक्ति देयगो तब प्रभूदास नें कही जो यह तो टका ले और तोकों मुक्ति दीनी तब वा अहीरीनें कही जो तू मोकों लिख दे जो मुक्ति दीनी तब प्रभू दासनें लिख दीनी और दही लैके घर आए सो दही भीतर दीयौ तब श्री आचार्य जी महा प्रभूननें वह दही भोग समर्प्यौ सो श्री ठाकुर जी आरोगे सो वह दही अति स्वाद भयौ पाछें गुसांई जी तब सांझ के समय दर्शन को आये तब यह बात श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कही जो महाराज प्रभूदास नें दही के ऊपर मुक्ति दीनी सो लिखि आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभू जी ने प्रभूदास सों पूछी जो प्रभूदास वह दही अति स्वाद भयो हुतो

सो तैनें वाकौ मोल कहा दीयौ हुतौ तब प्रभुदास
नें कह्यौ जो महाराज वा अहीरी नें एक टका और
मुक्ति मांगी सो एक टका और मुक्ति दीनी तब श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो तैनें कछु नहीं
लौ तब प्रभुदास नें कही जो महाराज हूं कहा करूं
जो सोई मांग्यौ हुतौ सो दीनौ जो भक्ति मांगती तौ
भक्ति देतौ पाछें वा अहीरी कौ मरद नें कह्यौ जो
तोकों तौ ठग लीनौ तब वा अहीरी नें मरद सों
कह्यौ जो तू कहा जानें ये बड़े भगवद्भक्त हैं इन
कौ वचन सत्य है तब कितनेक दिन में वा अहीरी
की देह छूटी तब यमदूत आए इतने में विष्णुदूत
हू आए सो आपुस में झगरन लागे तब यमदूतन
सों विष्णुदूतन नें कही जो याकौं तौ श्री आचार्य
जी महाप्रभून के सेवक प्रभुदास नें मुक्ति दीनी है
सो कागद याकौ साड़ी की खूंट में बंध्यौ है सो यह
बात वा अहीरी के संग सोदरन नें सुनी पर आंखि
न देखें पाछें वा अहीरी कौं विष्णुदूत लै जान
लगे तब वा अहीरी नें विष्णुदूतन सों कह्यौ
जो मेरे मरद कौं दर्शन देउ वाकौं अविश्वास
है पाछें विष्णुदूतन नें वाकौं दर्शन दीनौ तब
वह कहन लाग्यौ जो मोहू कौं लै जाउ तब विष्णु
दूतन नें कह्यौ जो हमारे हाथ कहा है हम तौ आ
ज्ञाकारी हैं तातें तू प्रभुदास सों कहि तब वह स
ग्यौ प्रभुदास के पास आई तब प्रभुदास नें वाकौं
श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम दिवायौ

तब दाह कौ कार्य भयो पाछें निस्मृत श्री अदी
री कौ लै गये तब वाकौ भूमि भई पाछें श्री अदी
री के सगे कुटुम्ब नें वाकौ माटी के खंड ते कागद
खोलि कें देख्यो तब वांके रोमनतें रंग सो प्रभू
दास कों श्री आचार्य जी महाप्रभुन की कृपा तें ऐ
सी सामर्थ हती सो वे प्रभूदास बडे भाग्यवान् हैं
तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

## वार्ता प्रसंग ४ वैष्णव ७० सम्बन्ध ६७

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक प्रभूदास ॥
भाट सीहनन्द ॥
के तिनकी ॥
वार्ता ॥

सो वे प्रभूदास भाट श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी
भांति सों करते सो बहुत दिन सेवा करत बीते पाछें
वृद्ध भये तब बहुत अशक्ति भए तब जानी यह
देह दिन चार पांच में छूटेगी तब सावधान ना रही
असावधान भए तब सगरे मिल के प्रभूदास कों
प्रयोदक तीर्थ है तहां लै गये जब प्रयोदक आयो
तब सावधान भए आंखि खोल कें देखें तो प्रयो
दक तीर्थ है तब प्रभूदास ने कह्यौ जो मोकों इहां
क्यों लाए हौ तब सगरे जनेन नें कह्यौ जो यह प्र
योदिक तीर्थ है तुम्हारी अंत अवस्था देखि कें
लाये हैं तब प्रभूदास ने कही जो मोकों प्रयोदिक
में कहा काम है मैंनो श्री आचार्य जी महाप्रभुन

कौ सेवक हो सो कों प्रयादिक कहा क्रनार्थ करेंगो
मोकों कारस ५ लों इहां राखोगा नोऊ मेरी देह यहां न
छूटेगी ताते मोकों सीहनन्द लै चलौ तब अपने श्री
ठाकुर जी के चरण देखूंगी तब देह छूटेगी तब दिन
पन्द्र सात लों राखे ओर दिन दिन प्रभूदास को शरीर
नीकों भयो सावधान भए तब फिर सीहनन्द लै गये
तब अपने सेव्य श्री ठाकुर जी को देखे दर्शन कीये
के दंडवत कीनो तब प्रभूदास नें श्री ठाकुर जी सों
कह्यौ जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें तुम कों मेरे
माथे पधराए हैं और ये तो बावरे लोग तुम्हारो आ
श्रय छुड़ाय के मोकों तीर्थ आगें ले गये परि श्री
आचार्य जी महाप्रभू ऐसो क्यों करें जो मेरी देह
तीर्थ पे छूटे पाछे श्री ठाकुर जी की सेवा सिंगार क
रिके बेगिबेगि भोग समर्प्यो भोग सराय अनोंसर
कीयो पाछे सबन ते कह्यौ जो तुम बेगिबेगि प्रसाद
लेउ ना पाछे मेरी देह छूटेगी तब सब प्रशाद लेचु
के तब सबन सों प्रभूदास ने जै श्री कृष्ण कह्यो औ
र प्रभूदास नें तत्काल देह छोड़ी पाछे सीहनन्द में
एक कोरन चौधरी हतो सो प्रभूदास की निन्दा क
रन लाग्यो और कह्यो जो प्रभूदास प्रयादिक ते उ
लटो फिर आयो और सीहनन्द में देह छोड़ी ऐसे
निन्दा करतो सो एक दिन रात्रि को सोयो हतो तहां
कोऊ चारि जने हाथ में मुद्गर लैके आये सो कोरन चौध
री को बहुत मार्यो तब कोरन चौधरी नें कह्यो जो
तुम मोकों क्यों मारत हो तब उन ने कह्यो जो प्र

भूदास की निन्दा तू क्यों करत है तब कीरत चौध
री नें कह्यौ जो अब मैं निन्दा न करूंगो और बहु
त मनुहार करी तब उन कह्यौ जो तू फेरि निंदा करै
गो तौ तोकों याही भांति सों मारेंगे तब कीरत चौ
धरी नें कह्यौ जो अबतें निन्दा न करूंगो भक्ति
करूंगो पाछें स्तुति करन लागे तब प्रभूदास की
बात चले तब कीरत चौधरी कहै जो वे बड़े महा
पुरुष हैं तब और लोग कहन लागे जो पहले तौ
तुम प्रभूदास की निन्दा करत हुते और अब स्तुति
क्यों करत हो तब सबन कों कीरत चौधरी
ने अपने देह की व्यवस्था दिखाई और कह्यौ
जो रात्रि कों कोउ चारि जने आय के मार मार हा

इ तृन करैगो तातें भगवदीय की निन्दा सर्वथा न करनी
और जो करै तो या लोक में बड़ो हानि होय और परलो
क में अघोर नर्क में जाय सो वे प्रभुदास भाट श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे
तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ॰

## वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥२१॥ ❋

## अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक पुरुषोत्तम दास आगरे में राजघाट ऊपर रहते हुते तिनकी वार्ता है ॥ ❋

सो एक समय श्री गुसांई जी आगरे पधारे हुते तब
पुरुषोत्तम दास के घर उतरे तब पुरुषोत्तम दास की
स्त्री छिप रही तब पुरुषोत्तम दास सों श्री गुसांई जी
ने पूछो जो तेरी स्त्री कहां गई है तब पुरुषोत्तम दास
ने कही जो जनेऊ टूटो होयगो पाछें श्री गुसांई जी बे
गि बेगि रसोई करि दार भात साक चार पांच करे
तब रोटी बेलिवे को और पुरुषोत्तम दास की स्त्री
आई तब श्री गुसांई जी ने पूछो जो अबलों तू कहां
ही तब पुरुषोत्तम दास की स्त्रीने कही जो राज कछु
काम करत हुती पाछें पुरुषोत्तम दास की स्त्रीने रोटी
बेल बेल दीनी तब रसोई सिद्ध भई तब श्री गुसांई
जी ने श्री ठाकुर जी को भोग समर्प्यो पाछें समया-
नुसार भोग सराय पाछें वही थार कटोरा पड़घी स
ब उन पात्रन में श्री गुसांई जी सों कही जो मात्तन-

करियै तब श्री गुसांई जीनें कह्यौ जो ये तो श्री ठाकुर
जी के पात्र हैं इन में भोजन कैसें करें तातें हम इनपा
त्रन में भोजन न करेंगे तब पुरुषोत्तम दास तथा उस
की स्त्री ने कह्यौ जो महाराज की कृपा तें कछु द्रव्य
निवर्यो नाहीं और पात्र नये मंगावेंगे आप इनमें
भोजन करिये तब श्री गुसांई जी भोजन करन कों
बैठे तब पुरुषोत्तम दास की स्त्री श्री गुसांई जी के पास बै
ठि कें पंखा करन लागी और कह्यौ जो महाराज
और सामिग्री लाऊंगी तब श्री गुसांई जीने कह्यौ
जो मोकूं रुचेगी सो मैं मांगूंगो तब पुरुषोत्तमदास
नें कह्यौ जो महाराज श्री नन्दराय जी के घर कैसें
आरोगत हो ऐसें करि कें स्त्री पुरुष दोऊ जने श्री
गुसांई जी कों बहुत सामग्री लिवाय सो तिन के संको
च के लिये श्री गुसांई जी कहैं जो तुम कहोगे सो क
रेंगे तब भोजन कीये पाछें अपनें सेव्य श्री ठाकुर जी
की सैया ऊपर पिछोरा बिछाय श्री गुसांई जी कों
पोढ़ाये पुरुषोत्तम दास चरण सेवा करन लागे स्त्री
पंखा करन लागी पाछें घड़ी एक रहि कें श्री गुसांई जी
नें दोउन सों कह्यौ जो अब तुम जाय कें महाप्रसाद ले
उ तब उन कह्यौ जो महाराज महाप्रसाद तो नित्य
लेत हैं परि तुम्हारी सेवा कब करेंगे सो वे स्त्री पुरुष
दोउ जने श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा
पात्र भगवदीय हैं तातें इन की वार्ता अब कहां
ताई लिखिये ॥ ❀

✻ ॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैस्नव ॥२२॥ ✻
अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक चपुरदास का
यस्थ पोरगढ के ॥
वासी हुते ॥
तिनकी
वार्ता

सो चपुरदास कों श्री आचार्य जी महाप्रभून ऊप
र तथा श्री गोवर्द्धननाथ जी के विषें बहुत समस्व
हुतो जहां बैठते जहां ठाडे होते तहां श्री नाथ जी
को पीठ न दैकें बैठते पीठ दैकें ठाडे न होते सो चपु
रदास एक तुरक कें चाकरी करते परगना बहुत

कमायो जो कछु वस्तु आवनी सो पहिलें श्रीनाथ
जी कों पहुंचावने और मालन साक पहुंचावनेमें
में सदां सर्वदा रहते सो एक दिन वा तुरक नें चपुर
दास कों बन्दीखाने में दीए और कह्यो जो तेंनें मे-
रो द्रव्य बहुत खायो है सो जब वह तुरक सोयो तब
कोउ चार जनें हाथ में मुगदर लेकें आए सो आय
के वा तुरक कों खाट ने औंधो पटकि बहुत मारो
तब वा तुरक नें कह्यो जो तुम मोकों क्यों मारत हो

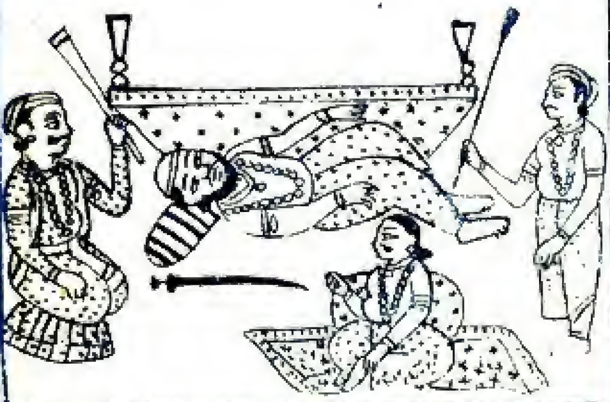

तब उन्हें कह्यो जो तेंनें चपुरदास कों बन्दीखानेमें
क्यों दियो है तब वह तुरक बहुत विनविलानो
हाहा करिकें नाक भूमि में घिस कें उनसों कह्यो
जो मोकों तुम मारो मति में अबही चपुरदास कों-

छोड़त हो तब उन कह्यो जो त्रिपुरदास कों न छोड़ोगे तो हम याही भांति सों नित्य भोगेंगे ऐसें कह्यो न व देतो गये तब वा तुरक नें आय के अपने लोगन सों कह्यो जो त्रिपुरदास को बन्दीखाने में ते अबही छोड़ देउ तब मनुष्य त्रिपुरदास को छोड़न गए तब त्रिपुरदास नें उनसों कह्यो जो अब तो रात्रि बहुत गई है सवारें छोड़ियो तब वे मनुष्य फिर आये और वा तुरक सों कह्यो जो साहिब त्रिपुरदास कहत हैं जो अब तो रात्रि बहुत गई है सवारे छोड़ियो त ब वा तुरक नें अपने मनुष्यन सों कह्यो जो तुम अ बही त्रिपुरदास को छोड़ लावो तब वे मनुष्य बेग ही जाय के त्रिपुरदास को छोड़ लाए तब वा तुरक ने त्रिपुरदास सों कह्यो जो तुम आपने घर जाउ तब त्रिपुरदास ने कह्यो जो अब तो रात्रि बहुत गई है सवारे जाउंगो तब वा तुरक नें त्रिपुरदास सों कह्यो जो तू कहा काहू को जीव लेयगो तातें तू अबही इतनी बेर अपने घर जाउ तब त्रिपुरदास अपने घर आये ॥

## ❋ वार्ता प्रसंग ॥१॥

बहुर कितनेक दिन पाछें त्रिपुरदास वाही तुरक के साथ अटक गये पाछें एक दिन रसोइया ने त्रिपु रदास सों कह्यो जो चरणोदक महा प्रसाद निबट्यो है रंचकहू नाहीं तब त्रिपुरदास नें रसोइया सों क ह्यो जो पांडे नें न हम सों पहिलें क्यों न कह्यो हम चरणोदक महाप्रसाद मगाय देते अब कहा

कहियें तब रसोइया चुपि कर रह्यौ तब सवारे उठि
कें त्रिपुरदास जी तुरक के दरबार जान लगे तब क
ह्यौ जो पांडे रसोई करि श्री ठाकुर जी को भोग सम
र्पि प्रसाद लीजियो मेरी वाट मति देखियो मेरी
आवनों न बनैगो और मन में यह निश्चै कीयौ जो
जबलों यहँ चलैगी तब लों काम काज करूंगो और
देह जब न चलैगी तब पड़ रहूंगो परि चरणोदक
महा प्रसाद लीयें बिना जल पान न करूंगो यह नि
रधार कीयौ तब तुरक के दर्बार गये तब रसोइया
ने स्नान करि रसोई करन लागो तब आधी रसोई
भई इतने में एक लरिका वर्ष दस कौ तान थैली
लायौ सो एक थैली में तौ चरणामृत और एक

थैली में श्री आचार्य जी महाप्रभुन कौ चरणामृत और एक थैली में श्री नाथजी कौ महाप्रसाद सो वे तीनों थैली रसोइया को दीनी और कह्यो जो ये तीनों थैली त्रिपुरदास ने पठाई हैं सो थैली देकें वह लरिका तुरंतही चल्यो गयो पाछें रसोई सिद्ध भई तब श्री ठाकुरजी को भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सरायो तब रसोईया नें त्रपुरदास कों बुलाय वे कों मनुष्य पठायो परि त्रिपुरदास आये नाहीं तब दोय तीन बार मनुष्य बुलायवे कों पठायो तब त्रपुरदास ने रसोइये सों कह्यो जो पाछें तुम मोकों काहे कों बुलावत हो मैंतो चरणामृत महाप्रसाद लीये विना जलपान करूँगो तब रसोइया नें त्रपुरदास सों कह्यो जो चरणामृत महाप्रसाद की थैली तो तुमही नें पठाई है एक लरिका वर्ष दश की हुतो सो तीन थैली देगयो है तब त्रपुरदास नें कह्यो जो वह लरिका कहां है मोकों दिखाय तब रसोईया नें कह्यो जो वह लरिको तो तुरतही थैली देकें चल्यो गयो तब त्रपुरदास नें जान्यो जो ये श्री ठाकुर जी के काम हैं तब आप को धिक्कार करन लागयो जो मैंनें ऐसो हट क्यों कियो जो श्रीठाकुर जी कों श्रम करनों पड़यो सो आप धिक्कार बहुत करन लागो जो मैंनें श्री ठाकुर जी को श्रम बहुत करवायो पाछें स्नान करि चरणामृत महाप्रसाद लीयें पाछें समर्प्यो महाप्रसाद लीयो ॥ ✧

## वार्ता प्रसंग २

बहुरि कितनेक दिन में त्रिपुरदास की चाकरी छूटी

सो शीतकाल के दिन आए तब श्री नाथ जी कों कब
य पहरावे सो कहां ते पहरावे इनको भंडार में नाहीं
चपुरदास की कबाय हुती सो श्री नाथ जी
आप अंगीकार करते तब चपुरदास ने कह्यो जो अ
ब कहा कीजिये तब एक हाथ पीतर की हतो सो बे
चौ ताके दामन की गजी मगाई सो रंगाई ताकी क
बाय बनवाय कें श्री नाथ जी कों पहराई सो रंगी के
सि कें भंडारी नें भंडार में डार दीनी तब कितनेक दि
न में श्री गुसांई जी श्री नाथ जी द्वार पधारे सो जब श्री
नाथ जी कौ शृंगार करन लागे तब श्री गुसांई जी सों
श्री नाथजी ने कह्यौ जो मोकों शीत बहुत लागत है
तब श्री गुसांई जीनें कह्यौ जो दूसरी अँगीठी लावो
तब दूसरी अँगीठी लाए तोहू कह्यो जो मोकों सीत
बहुत लागत है तब श्री गुसांई जीनें गद्दल उढायौ
तबहू श्री नाथ जीनें कही जो मोकों सीत लागत है त
ब श्री गुसांई जीनें तीसरी अँगीठी मगाई तबहू कही
जो मोकों शीत लागत है तब श्री गुसांई जीनें भन्डारी
को बुलायौ और वासों पूछी जो कौन कौन वैस्नवन
की कबाय आई हुती तब जाजा वैस्नव की आई हु
ती ताता वैस्नव को नाम लीयौ तब श्री गुसांई जीनें
कही जो चपुरदास की कबाय नाहीं आई तब भ
न्डारी ने कह्यौ जो चपुरदास की एक रंगीन कबाय
आई है सो भंडार में पड़ी है तब श्री गुसांई जी नें क
ह्यौ जो वह रंगीन कबाय लै आवौ तब भंडारी वह
रंगीन कबाय लै आयौ तब श्री गुसांई जी देखें तो से

सो मरगजो सो होय रह्यौ है तब वाकों भार पोंछि के तत्काल दर्जी बुलाय के फरगुल सिद्ध कर वाई तब वह फरगुल श्री नाथ जी कों उढ़ाई तब श्री नाथ जी नें कह्यौ जो अब मेरो सीत निवर्त भयो ऐसें श्री नाथ जी भक्ति के पक्षपात जो भक्ति भाव की वस्तु कों या भांति अंगीकार करें सो वे चपुरदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥ *

वार्ता प्रसंग ॥३॥ वैस्नव २३॥
अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक पूरन मल खत्री।
* तिनकी वार्ता लिख्यते

सो पूरन मल्ल की गांठि में द्रव्य बहुत हुतो सो पूरनम
ल्ल को श्री नाथ जी की आज्ञा भई हुती जो तू मेरो मन्दि
र समराउ तब पूरनमल्ल श्री आचार्य जी महाप्रभून
के पास आयो और आय के कह्यो महाराज मोको
श्री नाथजी की आज्ञा ऐसी भई है जो तू मेरो मन्दि
र समराउ तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो
जो मन्दिर वेग समरावो तब पूरन मल्ल नें श्री आचार्य
जी महा प्रभून सों नाम पायो पाछें मन्दिर उठावन ला
ग्यो सो द्रव्य हुतो सो सब नीव खोदवे में लायो जब
सब द्रव्य निवट्यो पाछें पूरन मल्ल पूरब चाकरी को
गये तब राज सी लोगन नें श्री आचार्य जी महा प्र
भून सों पूछी जो महाराज आज्ञा देउ तौ हम मन्दिर स
मरावें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री नाथ जी
सों पूछी जो महाराज ये राजसी लोग मन्दिर समरा
वन कहत हैं सो समरावें तब श्री नाथ जी नें श्री आ
चार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो पूरनमल्ल आवेगो
तब मन्दिर समरावेगो तब राजसी लोगन सों श्री आ
चार्य जी महाप्रभून नें नाहीं कीनी तब वे फिर गये
तब कितेक दिन में पूरनमल्ल पूरब ते बहुत द्रव्य क
माय कें लायो तब पूरनमल्ल नें कितेक दिन में म
न्दिर समराय कें सिद्ध करवायो पाछें श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें आछो मुहूर्त देख कें श्री नाथ जी
के मन्दिर में पाट वैठाये तब पूरन मल्ल नें बहुत द्रव्य
खरचो ॥ ७ ॥

वार्ता प्रसंग २

बहुरि श्री गुसांई जी श्री नाथ जी द्वार पधारे तब
पूरनमल्ल श्री नाथ जी के दर्शन कों आयो सो अति
आनन्द सों दर्शन कीयो तब श्री गुसांई जीने कह्यो
जो पूरनमल्ल तेरे मन में और कछु मनोरथ है सो
कहि दीजे तब पूरनमल्लने श्री गुसांई जी सों कह्यो
जो महाराज मेरे मन में एक मनोरथ रह्यो है जो अ
ति सुन्दर अति सुगन्ध को अरगजा अपने हाथन
सों मैं समर्पूं तब श्री गुसांई जी नें आज्ञा दीनी जो
ना समर्पि तब पूरनमल्लने अत्युत्तम सुगन्धि को
अरगजा करि कें श्री नाथ जी को समर्प्यो तब पू
रनमल्ल नें अपने मन में अति आनंद पायो ता
पाछें पूरनमल्ल श्री नाथ जी के पास तें श्री गुसांई
जी के पास आयो तब श्री गुसांई जी पूरनमल्ल के
ऊपर बहुत प्रसन्न भए तब श्री गुसांई जी आपपे
ढ़े सो उपरना पूरनमल्ल को उढ़ायो तब पूरनम
ल्लने अति आनन्द पायो पाछें श्रीगुसांई जीने श्री
नाथ जी को पंचामृत सों स्नान करवायो पाछें
अंग वस्त्र करि कें सेना श्रृंगार करि कें रसोई को
भोग समर्प्यो समयानुसार भोग सराय के पाछें
श्री गुसांई जीने श्री नाथ जी को प्रसादी [illegible]
पूरनमल्ल कों [illegible]यो पाछें प्रति वर्ष [illegible]
श्री गुसांई जी पूरनमल्ल कों देते सो [illegible]
श्री गुसांई जी के तथा श्री [illegible] पूरनके
ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वा
र्ता कहां तांई लिखिये ॥ ✱ श्री

॥वार्ताप्रसंग॥२॥वैष्णव॥२४सम्बन्ध॥

## अब श्री आचार्य जी महाप्रभू नके सेवक पादवेन्द्र दास कुम्हार॥ तिनकी वार्ता

सो श्री आचार्य जी महाप्रभू तथा श्री गुसांई जी जब परदेश कों पधारते तब पादवेन्द्र दास इनके साथ सामग्री लेकें चलते हटवाई कनात बिना बांस की छोटी रावटी तथा एक दिन को सीधो सामग्री इतनो बोझ लेकें संग चलते और रसोई की चाकरी सब करते रात्रि कों पहरो देते॥

### वार्ता प्रसंग॥१॥

बहुरि श्री गुसांई जी श्री गोकुल में हुते तब रात्र पहर एक गई हुती तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो या बिरियां मन्दिर की नींव खोदी जाय तो मंदिर में लो दृढ़ होय अब भलो मुहूर्त है ऐसें कहि कें श्री गुसांई जी तो पौढ़े पाछें पादवेन्द्र दास ने एक पहर में नींव खोदी सो खोदि सिद्ध कर राखी सो जब पिछली रात्रि कों श्री गुसांई जी पौढ़ के उठे तब देखें तो माटीन के ढेर पड़े हैं तब पूछो जो यह माटी कैसी है तब वैष्णवन नें कह्यो जो महाराज पादवेन्द्र दास ने खोदी है तब श्री गुसांई जी ने पादवेन्द्र दास सों पूछो जो यह नींव तेनें खोदी है तब पाद वेन्द्र दास ने कह्यो जो महाराज रात्रि कों

वा बेर आपने आज्ञा करी हुती नाही बेर खोदो है
सो नीव ऐसी बड़ी खोदी जो महीना एकलों राज म-
जदूर दश पन्द्रह लगें तोहू भरी न जाय सो ऐसो साम-
र्थ्य पादवेन्द्र दास में हुतो ॥७॥

वार्ता प्रसंग ॥८॥

और पादवेन्द्र दास ने श्रीनाथ जी द्वार कौ कूआ
अपने ही हाथन सों खोद्यो सो माटी निकसी ताकी
ईंट पकाई अपने हाथन ही कूआ चिन्यो पाछें जल

खारो निकस्यो तब पादवेन्द्र दास सोच पायो श्रीगङ्गा
जी में ते जल लैकें आंजुली भरि भरि केडारे और क-
है जो या कूआ कौ जल आपसो करौ ऐसें कहिकें
तर्पण कीयो ऐसें करत जब जान्यो जो जल मीठो

भयौ तब श्री गंगाजी में तें निकस्यौ पाछें श्री नाथ
जी द्वार आए तब वा कूआ कौ जल श्री नाथ जी कौं
अंगीकार करवायौ सो पादवैन्द दास श्री आचार्य
जी महाप्रभून के परम कृपा पात्र भगवदीय हैं ता
तें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥ +

॥ वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव २४ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक गुसांई दास सार
स्वत ब्राह्मण तिनकी
॥ वार्ता ॥

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून कौं श्री ठा
कुर जी कौ स्वरूप प्राप्त भयौ सो स्वरूप गुसांई दास
के माथें सेवा कौं पधराय दीये और कह्यौ जो इनकी
सेवा तू नीकी भांति सों करियो सो गुसांई दास सेवा
नीकी भांति सों करन लागे सो गुसांई दास सों श्री
ठाकुर जी मातृ भाव सों बोलन लागे पाछें किनेक
दिन में एक वैष्णव सों गुसांई दास नें कह्यौ जो तुम
इहां रहौ तो हम कौं सहायता होय हम तुम मिलि
कें सेवा करें परि वह वैष्णव हां न करें पाछें एक दिन
श्री ठाकुर जी नें गुसांई दास सों कह्यौ जो तू मो कौं
वा वैष्णव के माथें पधराय पाछें वा वैष्णव सों गुसांई
दास नें कह्यौ जो श्री ठाकुर जी की आज्ञा तो ऐसी भ
ई है जो तू मो कौं वा वैष्णव के माथें पधराय तातें भ
गवद इच्छा ऐसी ही दीसत है तब वा वैष्णव नें गुसां
ई दास सों कह्यौ जो तुम कहा करोगे तब गुसांई दास

नें कह्यौ जो हूं तो बद्रिकाश्रम जाउंगो उहां मेरी दे-
ह छूटेगी तब वा वैस्नव नें गुसांई दास सों कह्यौ जो
श्री ठाकुर जी की गति नांहीं जानी जात है जो तुम्हा
री देह उहां न छूटे और तुम इहां फिर आवो तो मैं
श्री ठाकुर जी को देउंगो नाहीं तव गुसांई दास नें
कह्यौ जो श्री ठाकुर जी ऐसी तो न करेंगे और क-
दाचित करेंगे तो तुम्हारी द्वार पौरिया रहूंगो श्री ठा
कुर जी के दर्शन कर्यो करूंगो तव वा वैस्नव नें श्री
ठाकुर जी पधराये सांनी की भांति सों सेवा करन
लाग्यो पाछें गुसांई दास तो बद्रिकाश्रम गये सो-
बद्रिकाश्रम में उहां गुसांई दास की देह छूटी पाछें
वा वैस्नव ने गुसांई दास की देह छूटी की खबर-
पाई तब वह वैस्नव सुख सों सेवा करन लाग्यो-
तब वह वैस्नव श्री आचार्य जी महा प्रभून की कृ-
पा ते भलो वैस्नव भयो सो वे गुसांई दास श्री आचा
र्य जी महा प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय
हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये॥ +
॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैस्नव॥२६॥ सम्बंध॥ ※

अव श्री आचार्य जी महा प्रभून
के सेवक माधो दास भट्ट
काश्मीर के वासी।
तिनकी वार्ता।
लिख्यते।

सो माधो भट्ट प्रथम केशव भट्ट के सेवक हुते सो-
केशव भट्ट श्री आचार्य जी महा प्रभून के पास आ

ये सो बहुत दिन रहे सो श्री आचार्य जी महाप्रभु कथा
कहते सो केशव भट्ट सुनते सो माधौ भट्ट श्री आचा
र्य जी महाप्रभून के सेवकन में जाय बैठते तब भगव
द्वार्ता कहते सो प्रथम प्रसंग चले तब माधौ भट्ट
सों केशव भट्ट ने कह्यौ जो तू मेरी संग छांडि के उ
हां के सेवकन में क्यों जात है वहां जाय के हांसी ठ
ठोरी करत है तब माधौ भट्ट ने केशव भट्ट सों कह्यौ
जो मोकों तुम्हारी संग तथा तुम्हारी कथा तें उहां
की हांसी आछी लागत है तातें हौं जात हौं तब केस
व भट्ट नें जान्यौ जो अब यह हमारे काम कौ नाहीं
अब हमारे काम तें गयौ पाछें केसव भट्ट ने श्री
आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यौ जो मैंने श्री भाग
वत तुम पास तें सुन्यौ पर मोकों कछू बोध न भयौ
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो तुम
मेरी बराबर बैठ के सुनौ और जानि कौ भाव राखे
तातें बोध न भयौ और माधौ भट्ट को भागवत की
स्फूर्ति भई यह देवी सृष्टी कौ प्रकार जाननौं तब
श्री भागवत की कथा सम्पूरण भई तब केसव भट्ट
ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कही जो कछु गु
रु दक्षिणा लेउ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने
कह्यौ जो हम कछु लेत नाहीं तब केसव भट्ट नें क
ह्यौ जो मैं तुम कों एक सेवक समर्पित हौं सो माधौ
भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून कौं सौंपे पाछें के
शव भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास तें बि
दा होय कें अपने देश कों गयो पाछें माधौ भट्ट नें

श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम पायो पाछें
समर्पण करवायो ॥

## वार्ता प्रसंग २

और जा गाम में ......माधौ भट्ट रहत हुते ता
गाम में एक बड़ो गृहस्थ रहत हुतो ताके एक बे
टा हुतो सो मरगयो तब वह गृहस्थ बहुत रोवन ला
ग्यो विलाप करन लाग्यो और कहन लाग्यो जो-
कोउ याकों जिवावेगो तो मैंहू जीउंगो नाहीं तो
मैंहू मरूंगो ऐसें कहि कें बहुत सोक करे तब ए
क वैष्णव पेंडे में जात हुतो तब वा गृहस्थ कों वि
लाप करतो देखि कें वाने कह्यो जो या गाम में-
माधौ सांग के भगवदीय रहत हैं वे बड़े भगवदी
य महा पुरुष हैं तिन के पास तू जा वे कृपा करेंगे
तब तेरो लरिका जीवेगो तब वह गृहस्थ माधौ
भट्ट के पास आयो और बहुत विलाप करन-
लाग्यो और माधौ भट्ट सों कह्यो जो यह लरिका
मेरो जीवेगो तो मैंहूं जीऊंगो नातर मैंहू मरूंगो या
भांति सों बहुत विलाप करे और रोवे तब वा गृह
स्थ कों देखि कें माधौ भट्ट कों दया आई तब मन
में विचार करने लागे जो याको बेटा जीवे तो आ
छो है यह गृहस्थ भलो है यह बहुत विलाप कर
त है बहुत दुख पावत है यह विचार के माधौ भट्ट
के मन में बहुत खेद भयो और कह्यो जो याको दु
ख दूर होय तो भलो है पाछें माधौ भट्ट मन्दिर में जा
य कें श्री ठाकुर जी सों विनती कीनी एक श्लोक-

करि के श्री ठाकुर जी के आगें कह्यो ॥ सो

श्लोक ॥ +

दया सर्व समर्थस्य दुखारो च
दयालुना ॥ विप्रो द्वारगा दक्ष
स्य उन्नवे कस्य सोभिने ॥१॥

यह श्लोक श्री ठाकुर जी ने सुनि कें कह्यो जो यह कितनीक बात है जो तुम कों दया आई तो वासों कहीजो जा तेरो बेटा जीवेगो पाछें माधौ भट्ट श्री ठाकुर जी कों पोढाय कें बाहर आये तब वा गृहस्थ सों कह्यो जो जा तेरो बेटा जीवेगो परि वा गृहस्थ कों विस्वास न परे मन में विचारे जो हूं घर जाउंगो और जो कदाचित न जीयो होय तो कहा करूं मुख तें तो कछु कह्यो न जाय परि मन में विस्वास परे नाहीं इतने में घर के लोग दौरि कें आय वासों कह्यो जो तेरो बेटा जीयो है ताकी बधाई देउ तब वह गृहस्थ माधौ भट्ट कों दंडवत करिकें अपने घर आयो पाछें बधैया कें बधाई दीनी और वह तहर्षित भयो पाछें माधौ भट्ट नें अपने मन में विचार कीयो जो बहुत अनुचित कीयो अब ये लोग याही भांति सों नित्य दुख देयेंगे याते अब या गाम में रहिवे कों काम नाहीं ऐसो विचार कें रात्रि जब आधी गई तब श्री ठाकुर जी कों जगाय संपुट में पधराय कें तुरत ही गांव छोडि कें चले सो अडेल में श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास आ यरहे दया आये ते स्थल छूटो श्री ठाकुर जी कों

आधी रात्रि के समय भाजनों परी नाते भगवदीय कों जो काम करनों सो विचार कें करनों विना विचारें सर्वथा नहीं करनों ॥

## वार्ता प्रसंग २

और श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री भागवत की सुबोधिनी कहते सो माधौ भट्ट वेगि वेगि लिखत जाते और जा ठौर न समझ परें ता ठौर लेखनी छोड़ कें बैठि रहते तव श्री आचार्य जी महाप्रभू माधौ भट्ट कों समझाय कें अर्थ कहते तव माधौ भट्ट समझ के आगे लिखते और श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें माधौ भट्ट या भांति सों बैठते सो पावन दीसे ऐसी सावधानी सों रहते ॥ +

## वार्ता प्रसंग ३

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू प्रदेस कों पधारें तव माधौ भट्ट साथ हे तव श्री आचार्य जी महाप्रभू पेंडे में एक गांम में उतरें तव रात्रि पहर डेढ़ गई हुती तव माधौ भट्ट उठि कें लघुवाधा कों गाम में आए तहां चोरन नें तीर चलायौ सो माधौ भट्ट कें लाग्यौ तव श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ नाम लेत माधौ भट्ट नें देह छोड़ी तव इतने में श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ के वैष्णव आय गये तव देखें तो माधौ भट्ट की देह छूटी है तव वैष्णवन के मन में सन्देह भयौ जो माधौ भट्ट मारि के वैष्णव की ऐसी गति क्यों वूझिये तव साथ के वैष्णवन नें श्री आचार्य जी महाप्रभून

सो पूछो जो महाराज यह बात कैसें होय जो माधौ सा
रिके वैस्नव की ऐसी गति क्यों वूभिये तब श्री आ-
चार्य महाप्रभून नें उन वैस्नवन सों कही जो माधौभ
ट्ट नें तो श्री ठाकुर जी के चरणारविंद चांपे सो इनकों
कछू कर्तव्यता रही नाहीं यह बड़ो भगवदीय हो प
रन्तु सों एक भगवद अपराध पर्यौ हो तब वैस्नवन
नै पूछी जो महाराज ऐसो कहा अपराध पर्यौ तब त
व श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो यह पहलें
अपने सेव्य श्री ठाकुर जी को सैया ऊपर फूल बिछा
वत हो सो एक दिन बिना जानें फूलन में सुई रहगई
सो माधौभट्ट नें नाहीं कीनी सो वा सुई को श्री ठाकु
र जी के श्री अंग में स्पर्श भयो सो वा अपराध तें
ऐसें भयो परि याकी देह सावधानता सों छूटी है
भगवद नाम लेत छूटी तातें यह श्री नाथ जी को प्रा
प्त है मेरी कान तें श्री नाथ जी बुरी गति कबहू न
करेंगे अपने पास ही राखेंगे यह श्री आचार्य जी म
हाप्रभून नें अपने श्री मुख सों कह्यौ तातें वैष्णवन
को श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करनी
बहुत सावधानी सों वे माधौदास भट्ट श्री आचार्य
जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तातें
इन की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ✦

वार्ता प्रसंग ३ वैस्नव ॥ २७ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक गोपाल दास
तिन की वार्ता ॥

सो गोपाल दास नें मार्ग चलन वारेन को अपने घर के पास विश्राम के लीये अस्थल करि राखे हुतौ जो मार्ग में विश्राम करे ताको हेत यह जो कोई भगवद भक्त आय रहे तासों भगवद वार्ता करें ता कारन अस्थल करि राख्यो हुतो सो वहां एक समय पद्मरावल उज्जैन के वासी सो द्वारिका आवते हे सो रात्रि को वा गाव में आय रहे सो गोपालदास सेवा सों पहुंचि के पद्मरावल के पास आए और पद्मरावल सों पूछो जो तुम कहां ते आए हो तब पद्मरावल नें कह्यो जो हम श्री द्वारिका ते आए हें तब गोपाल दास नें श्री रणछोड़ जी के कुशल समाचार पूछे तब उहां के समाचार पद्मरावल नें गोपालदास सों कहे पाछे पद्मरावल की जो बालपने ते अवस्था हुती सो बात चाली जो पद्मरावल द्वारिका मे बहुत रहते श्री रणछोड़ जी के दर्शन बहुत करते सो जब खरची निबड़ते तब अपने घर आवते सो पद्मरावल के जिजमान मावजी पटेल आजन कुनबी गांव के देसाई हुते सो पद्मरावल द्वारिका जी ते आवते तब मावजी पटेल खरची देते सो लेके जब पद्मरावल द्वारिका जी को जाते ऐसें बरस दिन में तीन बार जाते पद्मरावल को श्री रणछोड़ जी के विषे बहुत आसक्ति हुती सो श्री रणछोड़ जी की वार्ता पद्मरावल नें गोपालदास के आगें कही तब गोपाल दासनें अपने मन में कही जो जैसी इनको श्री रणछोड़ जी के

दर्शन में आसक्ति है तैसी इनकों श्री महाप्रभून के
विषें आसक्ति होय तो इनको कार्य होय तातें इन-
सों कछू कहिये तब गोपालदास ने पद्मरावल
सों पूछी जो तुम सों कबहू श्री रणछोड़ जी बोलत
हैं कछू कहत हैं कछू मांगत हैं तब पद्मरावल नें
कह्यौ जो मोसों तो कबहू कछू कहत नाहीं तब
पद्मरावल ने गोपालदास सों पूछी जो कहा श्री
रणछोड़जी काहू सों बोलत हैं तब गोपालदास
ने कह्यौ जो हांहां बोलत हैं तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून की वार्ता कही जो तुमनें एते दिन श्री
रणछोड़ जी सेए हैं सो श्री रणछोड़ जी प्रगट भए हैं
तब पद्मरावल ने पूछी जो वे कहां हैं तब गोपाल-
दासनें कही जो वे अड़ेल में हैं तब पद्मरावल ने-
कही जो जैसो दर्शन श्री रणछोड़ जी देत हैं तैसो द
र्शन श्री आचार्य जी महाप्रभू देयगे तब गोपालदा
सनें कही जो हांहां देयंगे तब पद्मरावल के मन में
बिस्वास आयो जो यह बात सत्य नाहीं दिनते पद्म
रावल कों आतुरता भई जो कब मैं जाऊं और क
ब श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन पाऊं सो ऐसे
आतुर होय रहे॥ ता पाछें सवारे गोपालदास सों बि
दा होय कें तहांते चलो सो मार्ग में विचार करत
जात जो मैं कब जाऊं और कब श्री आचार्य जी मह
प्रभून के दर्शन पाऊं ऐसे विचार करत घर अपने
गाम में आए परि चित्त उदास में रहो पाछें गाव
को पटेल सों मिले तब गावको पटेल ने पूछी जो

गुरुजी अब के तुम्हारो मन प्रसन्न देखियत नाहीं सो काहेते तब पद्मरावलने गोपालदास सों सुनी हुती सो बात कही जो श्री रणछोड़जी खंडेल में प्रगट भए सो मेरो मनोरथ दर्शन करिबे को है सो जानों हौं कब आऊंगो तब माधवजी पटेल ने कह्यो जो तुम रणछोड़ जी के दर्शन कों जात हो सो मोहू कों अपने साथ लेचलो तब पद्मरावल ने कह्यो जो तुम गृहस्थी लोग हो तुम्हारे साथ बहुत मनुष्य होंयगे और यह दर्शन तो एकांत स्थल को है तातें यह बात तो मोकों भावत नाहीं तब माधवजी पटेल ने कह्यो जो हूं तो सर्वथा तुम्हारे संग अकेलोही चलूंगो तब पद्मरावल नें कह्यो जो भलो तब यह समाचार अपनी स्त्री सों कहे और कह्यो जो मैं तो पद्मरावल के संग खंडेल दर्शन कों जात हौं तब स्त्री ने कह्यो जो वहां कहा है तब माधवजी पटेल नें कह्यो जो वहां श्री आचार्य जी प्रगट भए हैं सो साक्षात श्री रणछोड़जी प्रगट भये हैं और जैसो दर्शन श्री रणछोड़ जी देत हैं तैसो दर्शन श्री आचार्य जी महाप्रभु देत हैं सो यह बात सुनि के माधवजी पटेल की स्त्री के मन में बहुत उत्साह भयो और कह्यो जो आप के संग में हूं चलूंगी तब माधवजी पटेल नें कह्यो जो मैं तो पांयन चलोंगो तू कैसें चलेगी तब स्त्रीने कह्यो जो मैंहूं पांयन चलूंगी मेरें कछू लरिका तो है नाहीं तब फेरि माधवजी पटेल नें कह्यो तो हम तुम दोऊ जन चलेंगे तो घर कौन के भरोसे रहेगो

स्त्री ने कह्यौ जो मेरो घर ते कछु प्रयोजन नांही है
हौं सर्वथा तुम्हारे साथ चलूंगी। तब भावजी पटे
लने अपने मन में विचारो जो याकों बहुत आतु
रता भई दर्शन को बहुत मनोरथ है तब कह्यो जो
भलो तूहू चल तब भावजी पटैलने अपनो घर॰
काहू अन्य मनुष्य के हवाले कर दीनो। तब प्रस
गवल भावजी पटैल तथा उसकी स्त्री विरजो ये
तीनों चले सो जब प्रयाग पहुंचे तब अडेल को
दर्शन ... भयो तब बहुत आतुरता भई जो श्री
यमुनाजी होय के चलौ जैये तो समै थी ....
... आचार्य जी महाप्रभू श्रीयमुनाजी ऊपर प
धारे हुते सो सन्ध्यावन्दन करत हुते तहां सेव॰

क दोय चार साथ हुते तब इन तीनोंन कौं श्री आचा
र्य जी महाप्रभून कौ दर्शन भयौ तब तौ बहुत ही आ-
तुरता भई ता समें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें इन
कौं देख्यौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने सेवकन
सौं कह्यौ जो यह नाव पार लै जाउ पद्मरावल श्री र
णछोड जी के सेवक आये हैं सो इन तीनोंन कूं ना
व में बैठारि कें बेगि लै आउ सो नाव लैकें वैष्णव-
पार आए तब उन वैष्णवन नें कह्यौ जो पद्मरावल
तीनों जने होंय सो आवौ श्री आचार्य जी महाप्रभून
ने नाव पठाई है तब पद्मरावल और मावजी पटेल
तथा मावजीकी स्त्री बिरजो इन तीनों जनेन कौं नाव में
बैठाय के लै आए तब श्री आचार्य जी महाप्रभून
कौ दर्शन भयौ सो जैसौ गोपालदास ने कह्यौ हुतो-
तैसोई दर्शन भयौ सो दर्शन करि कें मन में बहुत प्र-
सन्न भये पाछें पद्मरावल नें श्री आचार्य जी महा
प्रभू पास नाम पायौ सो नाम पाय कैं उठे तब पद्म
रावल नें बीनती करिकें कह्यौ जो महाराज अंगीका
र करिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें प्रसन्न
होय कें कह्यौ जो तू कहा कहत है तब पद्मरावल
ने कह्यौ जो मोकों गोपालदास नें कह्यौ है तासों
निवेदन करवाइये और पद्मरावल ने बीनती कर
कें कह्यौ जो महाराज मावजी पटैल और मावजी
पटैल की स्त्री बिरजो ये दोऊ जने आप की सरणा आ
ये हैं सो इन कौं नाम निवेदन करवाइये तब श्री-
आचार्य जी महाप्रभून नें कृपा करकें नामसमर्प

गा करवायौ पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभू आप भी
तर पधारे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पदारा
वल सों कह्यौ जो तुम महाप्रसाद इहां ई लीजि
ये तब पदारावल ने बीनती करिकें कह्यौ जो मह
राज मोकों तुमनें श्री रणछोड़ जी को दर्शन दीनो-
है सो स्वरूप आप कृपा करि कें आरागोगे तब
श्री आचार्य जी महाप्रभून कों दर्शन भोजन कर
त में पदारावल कों श्री रणछोड़ जी को दर्शन भयो
सो साक्षात श्री रणछोड़ जी भोजन करत हैं तब प
दारावल कों दृढ़ विस्वास भयो तब श्री आचार्य जी
महा प्रभू आप भोजन करि कें विराजे तब महा प्र-
साद को पातर पदारावल कों कृपा करकें दीनो
पाछें पदारावल नें बीनती कीनी जो महाराज मो
कों कहा आज्ञा है तब श्री आचार्य जी महा प्रभून
नें आज्ञा दीनी जो तुम श्री ठाकुर जी की सेवा करो
तब पदारावल नें कह्यौ जो जैसो मेरो मन महारा
ज के स्वरूप में लग्यौ है तैसो मन सेवा में लगे तो
सेवा करूं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यौ
जो तुम श्री ठाकुर जी की सेवा तो करो जो तुम्हारे
मनोरथ श्री ठाकुर जी सब पूरन करेंगे तब पदारा
वल श्री आचार्य जी महा प्रभून सों विदा होयकें
अपने देश कों गये तब पदारावल अपने देस में
जाय कें श्री ठाकुर जी की सेवा करन लागे तब अ
पने सेव्य श्री ठाकुर जी की सैया बनवाई सो सैया
छोटी भई तब श्री ठाकुर जी ने कह्यौ जो या सैया

पै मैंपै सोयो जाय नाहीं पाछे पद्मरावल नें दूस
री सेया वड़ी करवाई ताके ऊपर श्री ठाकुर जी
पौढ़न लागे और श्री ठाकुर जी सानुभाव जनावन
लागे और एक समय पद्मरावल की स्त्रीने श्री ठा
कुरजी कों भोग समर्प्यो तामें खीर ताती समर्पी
तब श्री ठाकुर जी नें खीर में श्री हस्त मेल्यौ तब खी
र बहुत ताती लागी सो श्री ठाकुर जी ने श्री आचा
र्यजी महाप्रभून सों कह्यो और श्री हस्तकमल दि
खायो सो लाल परि गयो तब पद्मरावल श्रीआ
चार्य जी महाप्रभून के पास बैठे हते तब पद्मरा
वल सों श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो ते
री स्त्रीने श्री ठाकुर जी कों ताती खीर समर्पी सो

श्रीठाकुर जी को ताती खीर न समर्पिये तव पद्म
रावल ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो
श्री ठाकुर जी ने एक मुहूर्त्त लों सीरी कोंन होंने
दीनी तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो
श्रीठाकुर जी तो वालक है श्री ठाकुर जी को भोग
धरे पाछें विलंव न सहि सकें याते जो भोग धरिये
सो वहुत तातौ न धरिये सो पद्मरावल को श्री आ
चार्य जी महाप्रभून नें ऐसी आज्ञा दीनी आज्ञा
देकें श्री ठाकुर जी को ऐसो अनुभव जतायो पाछें
पद्मरावल अपने घर आये तव यह वात अपनी
स्त्री सों कही पाछें पद्मरावल वहुत सावधानी
सों सेवा करन लागे श्री आचार्य जी महाप्रभून की
कृपाते श्रीठाकुर जी सानुभावता जनावन लागे
जो चहिये सो मांगिलेते अपनी सव वात कहते सो वे
पद्मरावल गोपाल दास के संग ते ऐसे भगवदीय हैं
ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १ वैष्णव २८
अव श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक पद्मरावल सो
चोरा ब्राह्मण उज्जै
न के वासी ति-
नकी वार्ता
लिख्यते

१ सो पद्मरावल अडेल में आय कें श्री आचार्य जी
महाप्रभून के सेवक भए सो गोपाल दास वांसवाड़ा

के तिनकी वार्ता में लिख्यो है विस्तार करि कें पाछें अपने देस कौं चलन लागे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून सों बीनती कीनी जो महाराज हों तो अति मूर्ख हों जड़ हों कछु जानत नाहीं और मेरी जाति के ब्राह्मण महा कर्मी जड़ हैं स्मार्त्त हैं सो मोकों दुख देत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने अपने चरणारविंद कौ चन्दन और चरणामृत दीनो और कह्यो जो तोकों सब सिद्धांत स्फुरेगो सो चरणामृत लीनो सो इतने ही में सब सिद्धांत स्फुर्द भयो पाछें देश उज्जैन में आए पाछें बड़े २ ब्राह्मण प्रति प्रति पूछन लागे तब जितनेन ने पूछो तिनकूं प्रति उत्तर देकें सब बिदा किये सो पद्मरावल कों श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते ऐसी विद्या स्फुर्द भई जो बड़े पंडित जीन कें बिदा कीये वे पंडित प्रति उत्तर देन सके ॥ ✚

## वार्ता प्रसंग १

और पद्मरावल द्वारिका श्री रणछोड़ जी के दर्शन कों चले तब श्री रणछोड़ जीनें स्वप्न में कह्यो जो राज नगर में एक सेवक हमारो है ताके घर तू जैयो और पाक उद्धाई करियो तब पद्मरावल नें कह्यो जो महाराज मैंतो जानत नाहीं और बिना बुलाए में कौन के घर जाउं तब श्री रणछोड़ जीनें कही जो वह तोकों आपही बुलावन कों आवेगो पाछें श्री रणछोड़ जीने अपने सेवकन सों कह्यो जो पद्मरावल इहां आवेगो सो उनकोसे

वा तू नीकी भांति सों करि यों और अपने घर प-
धराय पद्मरावल कों रसोई भली भांति सों करि
यो तब वा सेवक नें श्री रणछोड़ जी सों कह्यौ जो
महाराज में उन कूं कैसें जानूंगो तब श्री रणछोड़
जी ने कह्यौ जो वे तो प्रसिद्ध हैं तू आपही नें जानें
गो तब कितनेक दिन में पद्मरावल उहां आये
सो वा गांव के बाहिर उतरे सो पद्मरावल के सा
थ विद्यार्थी एक हुतो तासों पद्मरावल ने कह्यौ
जो तू गांम में जायकें कोरी भिक्षा मांग लाउ तब
वह विद्यार्थी गांव में गयो सो चार पांच ठौर ने कोरी
भिक्षा मांग लायो तब पद्मरावल ने वा विद्यार्थी सों
कह्यौ जो तू अन्न जाजा कैसें लायो है ताताकैसें उल
टो फेर आउ तब वह विद्यार्थी जाजा को अन्न लायो
हो सो ताको फेरन लाग्यो तब एक ने कह्यौ जो तुम
लेगये हे अब फेरन क्यों आए हो तब वा विद्यार्थी ने
कह्यौ जो मैं कहा करूं हमारे बड़े गुरू हैं तिनकी
आज्ञा मानी चाहिये तब वा विद्यार्थी सों कह्यौ जो
तुम्हारे गुरू को नाम कहा है तब वा विद्यार्थी नें क
ह्यौ जो मेरे गुरू को नाम पद्मरावल है तबवह श्री
रणछोड़ जी को सेवक विद्यार्थी के साथ चल्यो आ-
यो सो आय के पद्मरावल सों कह्यौ जो मेरे घर पधा
रो तब पद्मरावल ने कह्यौ जो हुतो काहू के घर जा-
त नाहीं तब वा ने कह्यौ जो मोकों श्री रणछोड़जी
ने आज्ञा दीनी है जो तू पद्मरावल कों अपने घर प
धराइयो सो रसोई भली भांति सों करवाइयो तब-

पद्मरावल कों अपने घर पधराय रसोई भलीभां-
ति सों करवाई सो पद्मरावल ने रसोई करि श्रीठा
कुर जी को भोग समर्प्यो पाछें प्रसाद लीयो और
रात्रि को उहांही सोय रहे तब सवारें पद्मरावल च
लन लागे तब श्री रणछोड़ जी को सेवक रावरला
गो तब पद्मरावल रहे नाहीं ॥

## वार्ता प्रसंग ॥ ३॥

बहुर एक दिन आटो बहुत मिल्यो और घृत थे
रो मिल्यो तब जितनी रोटीवा घृत में चुपड़ी गई-
सोतो ऊपर धरी और कोरी हुती सो नीचे राखी त
ब श्रीठाकुर जी को भोग समर्प्यो और कह्यो जो-
महाराज बिनु चुपरी रोटी तो रहन दीजियो और
चुपरी रोटी आरोगियो तब श्री ठाकुरजी नें तो-
सबही रोटी आरोगी पाछें पद्मरावल सों कह्यो जो
तेने मेरे आगे काहे कों धरी मेरे आगे जो तू धरै
गो सो आरोगूंगो पाछें महाप्रसाद लेन कों बैठे तब
रोटी बहुत अद्भुत स्वाद भयी तब पद्मरावल ने क-
तनीक रोटी बची सो साथ बांधि लीनी सो नित्य
जब पाक करि भोग समर्पे पाछें प्रसाद लेन कों-
बैठते तब रोटी मेंते एक टूंक मेलि लेते तब महा-
प्रसाद लेते पाछें कितनेक दिन में द्वारका जाय-
पहुंचे तब श्री रणछोड़ जी को दर्शन कीयो दिन
पांच सात रहि के श्रीरणछोड़जी सों बिदा होय-
कें चले तब मार्ग में गोपाल दास वाम बाड़ा के घ
र आये तब रात्रि कों उहाहीं रहे तब पद्मरावल

ने गोपालदास सों कह्यो जो तुम्हारी कृपा ते मोकों श्री आचार्यजी महाप्रभून को दर्शन भयो और तुम्हारी कृपा ते मोपे श्री आचार्यजी महाप्रभून ने कृपा करी सो पद्मरावल श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां ताई लिखिये ॥

वार्ताप्रसंग ॥३॥ वैष्णव ॥२८

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक पुरुषोत्तम जोसी सांच्योरा ब्राह्मण तिन की वार्ता लिख्यते ॥

सो एक समय पुरुषोत्तम जोसी यमुना रस को चले सो मार्ग में उज्जेन आये सो उज्जेन आय के पूछो जो पद्मरावल के बेटा कहां रहत हैं ..........

................ सो पद्मरावल के बेटा चारि हुते सो तीन बेटा तो इकठौर हुते और बड़े बेटा कृस्नभट्ट सों न्यारे हुते सो पुरुषोत्तम जोसी जहां पद्मरावल के तीन्यो बेटा इकठौर हुते तिनके घर गये तिनने पुरुषोत्तम जोसी को थोरो सो अन्न दीयो सो कछु भूखे रहे तब मन में कह्यो जो पद्मरावल के बेटा ऐसे क्यो बूझिये वे तो सूधे ब्राह्मण हे पाछें कृस्नभट्ट ने सुनी जो पुरुषोत्तम जोसी आए हैं तब कृस्नभट्ट ने पुरुषोत्तम जोसी को अपने घर पधराय तब भली भांति सों प्रसाद लिवायो तब

पुरुषोत्तम जोसी बहुत प्रसन्न भये दिनचार राखे तब पुरुषोत्तम जोसी चलन लागे तब कृस्न भट्ट साथ चले सो मजल जाय उतरे तब रात्रि कों जब कृस्नभट्ट सोये तब पुरुषोत्तम जोसी ने अपनी स्त्री सों पूछो जो कृस्न भट्ट सोये तब स्त्री ने कही जो हां सोये तब पुरुषोत्तम जोसी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून की वार्ता कही पाछें कृस्न भट्ट ने मन में विचास्यो जो पुरुषोत्तम जोसी नें मेरे आगें श्री आचार्य जी महाप्रभून की वार्ता नाहीं कही परि हों अब कछू चर्चा वार्ता चलाउं सो जब श्री गोकुल मजल पांच सात रह्यो तब कृस्न भट्ट ने प्रसंग चलायो सो पुरुषोत्तम जोसी घोड़ा पे हुते सो वे तो विहूल भए तब कृस्न भट्ट नें पुरुषोत्तम जोसी को

श्री सों कह्यो जो एक ओर ते तुम थामे रहो और एक ओर ते में थामत हों तब कृष्ण भट्ट ने वार्ता चलाई सो भगवद् वार्ता में पुरुषोत्तम जोसी तो विह्वल भये सो घोड़ा ऊपर रह्यो न जाय तब दोउ जने आस पास थामें जाय ऐसे करत मजल आय उतरे तब घोड़ा ऊपर ते उतारन लागे तब पुरुषोत्तम जोसी ने कह्यो जो मोको तुम क्यों उतारत हो तब कृष्णभट्ट ने कह्यो जो मजल को मुकाम आय पहुंचो है ताते उतारत हैं परि पुरुषोत्तम जोसी को मंजल आयवे की खबर नांही भगवद वार्ता में रसाविष्ट भए सम्पूर्ण दिवस भयो परि प्रसाद लेवे हू को कछु सुधि रही नांही ऐसे करत कितनेक दिनमें श्री गोकुल आय पहुंचे तब पुरुषोत्तम जोसी ने श्री गुसांई जी को दर्शन कीनों और श्री गुसांई जी सों पूछो जो महाराज कृष्ण भट्ट के ऊपर ऐसी कृपा काहे ते भई है तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो याको चाचा हरिवंस जी को संग है ताते ऐसो भयो तब पुरुषोत्तम जोसी को गर्भ निवर्त भयो और अति प्रसन्न भये और कृष्ण भट्ट सों आप वार्ता पूछन लागे पाछे कितनेक दिन रहि के श्री गुसांई जी सों बिदा होय के चले सो उज्जैन आये मार्ग में भगवद वार्ता करत चले आमे और दोउ जने अति प्रसन्न भए सो वे पुरुषोत्तम जोसी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥वार्ताप्रसंग॥१॥वैस्नव ३०॥ संबंध ८७।

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न सेवक जगन्नाथ जोसी
तिनकी वार्ता

सो जगन्नाथ जोसी ने श्री ठाकुर जी कों वा
गो पहराय सब सिंगार करि कें राजभोग को थार
आगे आन राख्यौ तब जगन्नाथ जोसी के मन
में आई जो श्री ठाकुर जी वागे पहरें ही आरोगत
हैं तातें थार छूइ जायगो तब श्री ठाकुर जी ने जग
न्नाथ जोसी के मन की जानी तब थार में लात मा
रि कें डार दीनों तब जगन्नाथ जोसी ने और पाक
वेगि वेगि करि कें थार परोसि श्री ठाकुर जी के

आगें आनि राख्यो तब श्री ठाकुर जी के मनमें आ ई जो वैसेंही फेरि लोन माग के डारि दीनो तब फेर तीसरी बेर पाक करिके श्री ठाकुर जी के आगें आनि राख्यो तबहू श्री ठाकुर जी ने लोन मारिके डारि दीनो तब चौथी बार पाक करन लागे तब जगन्नाथ जोसी बहुत श्रमित भये पाछें नीचौंसा थो करिकें विचार करन लागे जो कौन अपराध ते श्री ठाकुर जी आरोगत नाहीं थार डार देत हैं पाछें बहुत बीनती कीनी तब श्री ठाकुर जीने यह बात जनाई जो तू थार कूड़ बेल डारतहै तौ तू हमारे आगें काहे को आनि राखत है इतनों व चन श्री ठाकुर जी को सुनिकें जगन्नाथ जोसी चौंक उठे तब नाक भूमि में घिस बहुत मनुहार करिकें कह्यो जो महाराज मैं तो कछु जानत ना हीं अब मेरो अपराध क्षमा करिये पाछें श्री ठा कुर जी आरोगे परि मास दोय लों बोले नाहीं फे र बहुत बीनती कीनी तब बोलन लागे ऐसो सरल भाव हुतो ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

## वार्ता प्रसंग १ ॥

और जगन्नाथ जोसी श्री ठाकुर जी को भोग समर्पिते तामें तातो खीर बहुत समर्पिते सो श्री ठाकुर जी वैसोही तातो खीर आरोगते सो कि तनेक दिन पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू गुज रात पधारे तब खिराल में जगन्नाथ जोसी के घ र उतरे तब श्री ठाकुर जी को दर्शन कीयो तब दे-

रहे तो श्री ठाकुर जी के आरोग गये हैं तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें श्री ठाकुर जी कों पूछ्यौ जो इतनो भात
किहां और आरोग गये क्यों हैं तब श्री ठाकुर जी ने क
ह्यौ जो जगन्नाथ जोसी सोकों नानो खीर बहुत २
समर्पत है सो तैसो ही मैं आरोगत हों तब जगन्नाथ
जोसी सों श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो तू
नानो खीर श्री ठाकुर जी कों कैसे समर्पत है तब जग
न्नाथ जोसी ने कह्यौ जो महाराज हम तो कछु जान
त नाहीं जो ऐसो बात है हम तो जानत जो नानी खी
र भली तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो
खीर सुहानी भली खीर बहुत नानो न समर्पियेना
पाछें जगन्नाथ जोसी वैसे ही करन लागे ॥ ÷

## वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून के
दर्शन करिबे कों जगन्नाथ जोसी अड़ेल कों चले
तब मार्ग में अन्नकूट को दिन आयौ तब एक सेव
क साथ हतो तासों कह्यौ जो चावर दार घृत खां
ड़ और कछु आछी सामग्री मिले सो सब लै आउ
तब वह सेवक गयौ तब देखे तो गाँव में कछु नाहीं
तब वह सेवक फिर आयौ और कह्यौ जो इहां तो
कछु मिलत नाहीं एक ज्वार मिलत है तब जगन्ना
थ जोसी ने कह्यौ जो भलें ज्वार ही लै आउ तब गाँ
म में जाय कें ज्वार लीनी तब वाकों भांति कूट फ
टक छानि बीन चुनि कें लै आये पाछें जगन्नाथ
जोसी नें वा ज्वार को ठामर कीयौ तब वा सेवक ने

कह्यौ जो भुसी निकसी है सो ताकों टोकरा में करि ऊपर राख्यौ जो ताकी बाफ सों जल्दी होय आवेगी तब जगन्नाथ ने कह्यौ जो भलें तब वह ठौमर खद खदान लाग्यौ तब वह टोकरा वामें गिर पर्‍यो सो सब इकठौरो मिलि गयो पाछें भगवद इच्छा मानि कें जैसो तैसो श्री ठाकुर जी कौं भोग समर्प्यौ पाछें भोग सराय महा प्रसाद लीयो तब जोसी रात्रि कौं सोयो तब श्री ठाकुर जी ने कह्यौ जो मेरे पेट में दूखत है तब जगन्नाथ जोसी ने सुनिवा-और सोंठ और अजवायण समर्पी परि मन में पश्चाताप बहुत भयो पाछें श्री ठाकुर जीनें कह्यौ जो अब मेरे पेट में सुख भयो ॥ +

## वार्ताप्रसंग ३

वहुर एक समय जगन्नाथ जोसी अपने सेव्य श्री ठाकुर जी कौं उत्थापन करि कें पास ठाडे हुते श्री ठाकुर जी कौं सृंगार करत हुते और वैष्णव ठाडे दर्शन करत हुते ता समय एक रजपूत गरासिया आयौ सो वे वैष्णव हुतो सो आय कें वैष्णवन में ठाडो भयो ता समय एक डोकरी फूल की माला लैकें आई सो वह माला दूर तें श्री ठाकुर जी के ऊपर वानें डारी तब जगन्नाथ जोसी कौं रिस चढी सो माला वैष्णवन के ऊपर डारी सो वह माला वा वैष्णव के गले में जाय परी तब वा गरासिया रजपूत कौं रिस आई तब गरासिया नें अपने मन में विचारी जो देखो या जोसी ने माला डाकौ दीनी औ

र धोखो न दीनो यदि भलो जो रजपूत को गायो सोय
जोसी कों ठौर मारूं तब वह रजपूत तरवार हाथ में
लेकें नित्य नकल फिरे दाव पावै तो घात करे त
ब जगन्नाथ जोसी एक दिन वाही भूमि तें आवत
हुते तब वा रजपूत ने जगन्नाथ जोसी के ऊपर पी
छे ते तरवार चलाई तब श्री ठाकुर जी ने वह तर
वार श्री हस्त में पकरी और श्री मुख सों कह्यो जो

याकों मार भलो वह तब गिरि पर्यो तब जगन्नाथ
जोसी फिर कें देखे तो श्री ठाकुर जी श्यामल भये
पीछे ठाडे हैं तब जगन्नाथ जोसी ने वा गरासिया
सों कह्यो जो फिरि रे पापी तैनें यह कहा कीयो
तब वह रजपूत तरवार डारि कें जगन्नाथ के पा
वन पर्यो और कह्यो जो मेरे ऊपर कृपा करिये

अनुग्रह कीजिये और जगन्नाथ जोसी के पाव-
हाथ सों पकर रह्यो तब जगन्नाथ जोसी कों द-
या आई तब वा कों नाम दीयो सो जगन्नाथ जोसी
ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तब वा रजपूत कों जग-
न्नाथ जोसी ने नाम दीयो निवेदन करवायो तब
वह भलो वैष्णवदीय भयो वैष्णव के बीच ठाड़ो
रह्यो ताकें फल सिद्ध भयो ये जगन्नाथ जोसी
ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता
कहां तांई लिखिये ॥ ४ ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ३१ ॥

## अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जगन्नाथ जोसी की माता तिन की वार्ता ।

### तिनके

तार्कें द्वै बेटा हुते बड़े बेटा तो नरहर जोसी और छो-
टे बेटा जगन्नाथ जोसी सिंहनन्द के वासी तिनने
उन सों माता नें कह्यो जो तुम जाय के श्री आचार्य
जी महाप्रभून के पास नाम पाइ आवो और समर्प-
ण कर वाय आवो और बेटान के हाथ में एक एक
मोहर दीनी सो मोहर एक लोटी में मेलि के वे दोउ भा-
ई अडेल कों चले सो कितनेक दिन में अडेल जाय
पहुंचे सो श्री आचार्य जी महाप्रभू तो अडेल में
हुते नाहीं .. आप तो पुरुषोत्तम क्षेत्र श्री जगन्नाथ
राय जी के दर्शन कों पधारे हुते तोहू जगन्नाथ जोसी

नरहर जोसी ने विचार कीयो जो हम फिरि चलेंगे
तो हमारी माता खीजेगी जो नाय समझेगी ताते हि
नु तुम कों आज्ञा ताते आपुन पुरुषोत्तम क्षेत्र च
लें यह अपने मन में विचार करके जगन्नाथ जो
सी और नरहर जोसी ये दोउ भाई पुरुषोत्तम क्षेत्र
कों चले सो थोरे दिन में पुरुषोत्तम क्षेत्र जाय पहु
चे जाय के पूछो जो श्री आचार्य जी महाप्रभू आपु
कहां रहत हैं तब एक वैष्णव ने घर बताय दी
नों तहां ये दोउ भाई गये तब श्री आचार्य जी मह
प्रभून को दर्शन करिकें बैठे तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून ने पूछो जो तुम्हारी माता ताको है तब
इनको बहुत आश्चर्य भयो जो ये तो हम को पह
चानत हैं और हम तो कबहूं देखे नाहीं और श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें फेर पूछो जो श्री ठाकु
र जी के दर्शन कर आये तब इन दोउनें कह्यो जो
महाराज नाहीं किये तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून ने आज्ञा दीनी जो जाय कें दर्शन करि आवो
तब ये दोउ भाई दर्शन कों गये तहां देखे तो श्री
आचार्य जी महाप्रभू जगन्नाथ राय जी के पास ठाड़े
हैं तब इनको आश्चर्य भयो जो यह कहा हम तो
इनको अबही घर देखि आये हुते तब मन में फिर
जानी जो दूसरी बाट होयगी तहां होयकें आये हों
यगे फेर मन में सन्देह भयो पाछें दर्शन करिकें आ
ये तब देखें तो श्री आचार्य जी महाप्रभू बैठे हैं तब
आय कें दंडोत करिकें बैठे तब दोउ भाई विस्मय

भये आपस में मोंहड़ो देखन लागे चकृत होय गये
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पूछी जो दर्शन
कीर आये और जो तुम्हारे मन में सन्देह आयो
हुतो सो निवर्त भयो तब इन दोउ भाई ने कही
जो सन्देह तो निवर्त भयो तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून ने कही जो तुम्हारी माता ने भेट मो
हर पठाई हैं सो लावो तब नारी मेते मोहर का
ढि के आगे राखी पाछें नाम निवेदन करवायो
अपनो महात्म इन दोउ भाईन कों आपने ऐसो
दिखायो सो स्वरूपा शक्ति भई ता पाछें कितनि
कनेक दिन रहि के आज्ञा मांगि के चले सो मार्ग
में श्री आचार्य जी महाप्रभून के स्वरूप को चि-

चार करत जाय ऐसें करत अपने घर आय पहुंचे
सब माता सों सब समाचार कहे तब माता बहुत प्र
सन्न भई पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा
ते भले भगवदीय भए तातें इनकी वार्ता अब कहां
तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ३२ ॥
अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक नरहर जोसी जगन्ना
थ जोसी के बड़े भाई ।
तिनकी वार्ता ।
लिख्यते ॥

सो एक समय नरहर जोसी पुरुषोत्तम क्षेत्र श्री ज
गन्नाथ राय जी के दर्शन को चले सो तहां सजल जा
य उतरे तब स्नान करिकें रसोई करी श्री ठाकुर जी
को भोग समर्प्यो तब देखे तो एक बालक बरस दस
को एक रूख ऊपर ते उतर कें आय ठाढ़ो भयो तब
वा बालक को देखि कें नरहर जोसी को आश्चर्य भ
यो जो यहां यह लरिका कहां ते आयो तब वह ल
रिका नरहर जोसी के आगें हाथ पसार कें मांगन ल
ग्यो तब नरहर जोसी ने अपने मन में विचार्यो जो य
ह सुन्दर लरिका मेरे आगें काहे कों हाथ पसारे
तब नरहर जोसी ने द्वै रोटी थी सो चुपरि कें तिनके
ऊपर दार धरि कें बालक के हाथ में दीनी तब वह
बालक इमली के रूख ऊपर चढि गयो पाछें फेर न
रहर जोसी देखे तो वह बालक नाहीं तब दूसरे दि

न मजल जाय उतरे स्नान करि श्री ठाकुर जी कों-
भोग समर्प्यो तब तैसें ही वह बालक इमली के रू-
ख ऊपर तें उतर कें आयो और तैसें ही हाथ पसा
र्यो तब नरहर जोसी कों और सन्देह भयो जो कोउ
छलिवे कों आयो होय तो कैसें देंउ और जो भगव
द स्वरूप होय तो प्रसादी महा प्रसाद कैसें देंउ त
व यह सन्देह करि कें वा बालक कों कछून दीनो
तब वह बालक रूख ऊपर चढ़ि गयो पाछें नरहर
जोसी ने महा प्रसाद लीयो सो यह बात खिराल
में जगन्नाथ जोसी सों श्री ठाकुर जी ने कही जो-
आज में नरहर जोसी के पास गयो हो तहां में हाथ
पसार कें मांग्यो परि मोकों कछून दीयो तब जग
न्नाथ जोसी ने वह दिन वह महीना वह सम्वतव

हु बार लिखि राख्यो जो नरहर जोसी आवेंगे तब पूछेंगे तब कितनेक दिन पाछें नरहर जोसी अपने घर आये तब माता सों भाई सों मिले पाछें दूसरे दिन दोऊ भाई सेवा में न्हाए तब जगन्नाथ जोसी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे जो नीकें हैं पाछें जगन्नाथ जोसी ने नरहर जोसी सों कह्यो जो अमुके सम्वत में अमुक महीना में अमुकी तिथि में अमुके वार पटना ते आगें पंथ में मजल उतरे तब रसोई करिकें श्री ठाकुरजी को भोग समर्प्यो तहां कोऊ बालक हाथ पसारत देख्यो तब नरहर जोसी ने कह्यो जो एक दिन तो में सुन्दर बालक देखकें द्वै रोटी घी सों चुपरि ता ऊपर दार धरिकें दीनी और दूसरे दिन तो मोकों सन्देह भयो जो कोऊ छलिवे को आयो होय तो कैसें देउ ताते न दीनी तब जगन्नाथ जोसी ने कह्यो जो तुमने बुरी कीनी जो न दीनी वे तो श्री ठाकुरजी आप हुते और जब आपन दोऊ भाई श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों गये हुते तब हमारी माता ने मोहर भेंट पठाई हुती सो आपन सन्देह करि राखी हुती तब आप श्री आचार्यजी महाप्रभून ने मांग लीनी ताते अपने मार्ग में श्री आचार्य जी महाप्रभून बिना श्री ठाकुर जी बिना और संदेह न करनो अपने मार्ग में श्री आचार्य जी महाप्रभू के चरन प्रताप ते उन बिना कछु न संभवे तब दोऊ भाईन के मन में यह निश्चय भयो ॥

## वार्त्ता प्रसंग ॥ १ ॥

और एक समय नरहर जोसी कौ जिजिमान अ-
लियान गाव में रहतौ ताकौ नाम महीधर जी हतौ
तथा वाकी बहन कौ नाम फूलबाई हतौ तिनसौं
नरहर जोसी ने कह्यौ जो तुम श्री गुसांई जी के पास
नाम पावौ वैस्नव होउ तब उन कह्यौ जो भलें अ-
वश्य तुम श्री गुसांई जी कौं पधरावौ तब नरहर जो-
सी आगें आय कें श्री गुसांई जी कौं पधराय कें अ-
लियान में गये तब महीधर जी तथा फूलबाई
सौं कह्यौ जो श्री गुसांई जी पधारे हैं तब दोउ भा-
ई बहन अत्यंत प्रसन्न भए तब महीधर जी ने न-
रहर जोसी सौं कह्यौ जो मैं श्री गुसांई जी कौ खाले

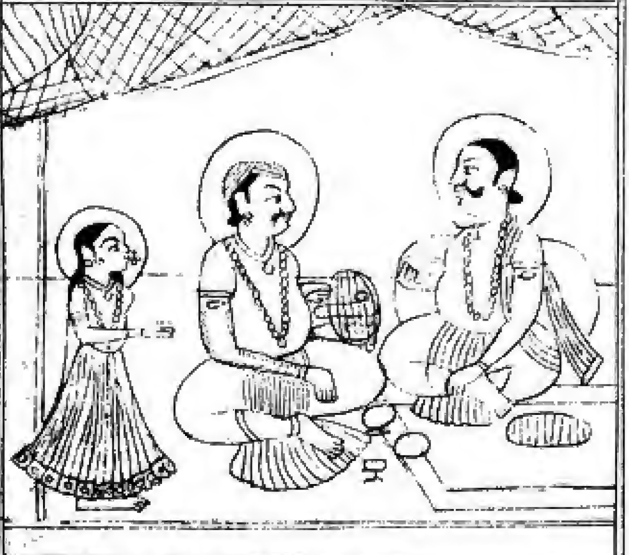

हाथन कैसें पधराऊं तब महीधर जीने नरहर जोसी सों रुपैया मोहरन की खीचरी करवाय कें न्यौछावर करि कें श्री गुसांई जी कों अपने घर में पधरायेता पाछें महीधर जी फूलवाई तथा सब बाल गोपाल सब कुटुम्ब कों श्री गुसांई जी के पास नाम दिवायौ निवेदन करवायौ और भली भांति सों श्री गुसांई जी की सेवा करि कें विदा किये पाछें श्री गुसांई जी द्वारिका कों पधारे तब नरहर जोसी खिराल् अपने घर आये ता पाछें कितनेक दिन में वा अलियान गाव में आगि लगी ता समय नरहर जोसी खिराल् के तालाव के ऊपर ते नित्यकर्म करिकें तुलसी फूल की डारी तथा भारी हाथ में लैकें घर आवत हुते ता समय नरहर जोसी के मन में आई जो अलियान गाम में आग लगी तब नरहर जोसी पेंडे ठाड़े होय कें तुलसी दल बीच में धरि कें भारी मेंते जल लेकें अंजुली सों तुलसी दल के पास पानी की धारा करिकें कुंडलिया कीनी इतने ही में अलियान में आग बुझी और महीधर जी की हवेली घर सब बच्यौ ता पाछें कितनेक दिन में नरहर जोसी अलियान में गए तब फूलबाई ने नरहर जोसी सों कह्यो जो यहां आगि को उपद्रव बहुत भयो हैं सो श्री गुसांई जी की कृपा ते अपने तो कल्याण भयौ तब नरहर जोसी ने कह्यो जो प्रभुन की कृपा ते सदा कल्याण ही होय इतनो कहि कें नरहर जोसी खिराल् आये तब महाप्रसाद लीयो पाछें

दोऊ भाई एकांत बैठे तब नरहर जोसी ने जगन्नाथ जोसी सों कह्यो जो मैं एक दिन नित्य कर्म कर कें तालाब के ऊपर ते आवत हुतो तुलसी फूल की डा रि तथा भारी मेरे हाथ में हती और अलिखान गां व में आगि लगी सो बात कही तब नरहर जोसी सों जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो आपुन कों इतनो हट कीयो न चाहिये जो श्री ठाकुर जी कों श्रम करवायो यह अपने मार्ग की रीति नांही तब नरहर जोसी ने क ह्यो जो मैंने हठ नाहीं कीयो परि मेरे मन में ऐसो आयो जो ये अबही वैस्नव भए हैं और आगि लगी तातें मैंनें ऐसो कीयो तब दोउ भाई हंसि मुसिक्याय चुप कर रहे पाछें कह्यो जो प्रभू बड़े कौ तुकी हैं इनकी कृपा ते सब भलो होय आपन हठ न कीजे यह अपनों धर्म नाहीं ताते श्री वल्लभ राज कुमार की अद्भुत लीला हैं सरण आये तिनकों अतिही कल्याण होय सो वे नरहर जोसी तथा ज गन्नाथ जोसी तथा इनकी माता ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे जो परमार्थ के लिये ऐसें कीयो ताते इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो अब कहां तांई लि खिये ॥ + ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैस्नव ॥ ३२ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक गणाव्यास साचोरा।
ब्राह्मण गोधरा के वासी
तिनकी वार्ता लि०॥

सौ जगन्नाथ जोसी ने प्रथम गणाव्यास पास नाम
पायौ हुतौ फिर श्री आचार्य जी महाप्रभून पास नाम
पायौ परि जगन्नाथ जोसी गणाव्यास के पास बहुत
रहते सो एक समय गणाव्यास भगवद इच्छा ते गा
धरा की वेस्या नें इनसों संग कीयौ सो वात राजद्वार
में सुनी तव हाकिम के प्यादे गणाव्यास कों लैन आ
ये तव जगन्नाथ जोसी ने गणाव्यास कों और गाम
में करदीनों पाछें जगन्नाथ जोसी तहां अकेले रहे
और वे प्यादे आये हुते सो गणाव्यास कों ढूंढन
लागे तव जगन्नाथ जोसी नें कह्यौ जो गणाव्यास
तौ इहां नाहीं चलौ हो उत्तर देउंगो तव जगन्नाथ जो
सी कों लायकें हाकिम के आगे ठाड़ौ कीयौ तव
हाकिम ने कह्यौ जो गणाव्यास कहां है उनने पराई
स्त्री सों अन्याव कीयौ है तातें वाकों लावो और
मैंनो जगन्नाथ जोसी कों नीकें जानत हों जो जाकों
नाम जगन्नाथ जोसी सो कवहूं अन्याव न करै यह
तौ गणाव्यास ने अन्याव कीयौ है ताते उनकों ला
उ तव जगन्नाथ जोसी ने कह्यौ जो मेरी कही सुनों
तौ मैं कहूं तव हाकिम ने कह्यौ जो कहो तव जग
न्नाथ जोसी ने कह्यौ जो गणाव्यास ने अन्याव
नाहीं कीयौ गणाव्यास ऐसौ काम कवहू न करै
तव हाकिम ने कह्यौ जो क्यों जानिये तव जगन्ना
थ जोसी ने कह्यौ जो मेरी कही मानों तौ मैं कहूं जो
गणाव्यास के बदले जो कछु कहौ सो मैं करूं त
व हाकिम ने एक पैया कौ मुगदर मगायौ सो अ

सिन में भेलि कें तातो कीयो तब जगन्नाथ जोसी स्नान करिकें आयो तब जगन्नाथ जोसी ने ठाढ़ो होय कें कह्यो जो गगाव्यास नें अन्याय कीयो होयतो मोकों अग्नि जराय के भस्म करि डारियो और नाही अन्याय कियो होयतो मुगदल शीतल होय जइयो पाछें वह मुगदल अग्नि मेंसे काढ़ि कें दोउ हाथन मों उठाय अपने गरे में मल्यो सो घड़ी१ लों राख्यो सब जने बोले जो जोसी तू काढ़ि तब जगन्नाथ जोसी ने कह्यो जो हूं काढ़ि कें कोंन के गरे में डारूं तब हाकिम नें कह्यो जो मेरे गरे में डारो पाछें जोसी नें भूमि में डार दीनों तब भूमि जरगई तब सब जने कहन लागे जो जगन्नाथ जोसी तुम धन्य हो तुम साचे हो तुमकों तुम्हारे धनी को असो साच हे यों कहिकें जगन्नाथ जोसी को समाधान करिकें कह्यो जोसी तुम कछु मांगो मैं तेरे ऊपर प्रसन्न भयो हों जो जोसी ने कह्यो जो इतनों मागत हों जो जानें यह चुगली करी है तासों कछु मति कहियो तब यह सुनिकें हाकिम तथा सब जने बहुत प्रसन्न भये पाछें जगन्नाथ जोसी अपने घर आये वे असे भगवदीय हे जो श्री आचार्य जी महा प्रभून की कृपा ते कहा न होय ॥ ० ॥ ० ॥

## वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥

और पाछले गगाव्यास नें माधोदास सारस्वत के पास नाम पायो हुतो पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक भये तब परम वैष्णव भये सो वे गगा

व्यास सिद्धपुर में रहते सो गंगाव्यास और जगन्ना
थ जोसी सरस्वती में स्नान करत हते ता समय ए-
क रजपूतानी सती होयबे कों आई तब गंगाव्या
स के पास जगन्नाथ जोसी हते तिनने पूछी जो सती
होत है ताको प्रकार कहा तब गंगाव्यास ने कही
जो प्रेत के संग वृथा ऐसो शरीर जरावत है जो गं-
गाव्यास नें मूंड हिलाय के कही जो वह रजपूतानी
सती होन आई हती तानें देख्यो तब वा रजपूतानी
नें साथ के मनुष्यन सों कही जो हूं तो न जरूंगी
मोकों सत नाही है तानें मेरी हत्या चढेगी ऐसें क-
हि कें बहुत हंसि दीनी और जरी नाहीं तब वे लोग
वा मृतक कों जराय कें वा स्त्री कों गाम के बाहिर
झोंपरी करि दीनी तब स्त्री उहां रही ता पाछें गंगा
व्यास न्हायबे कों आये तब वा स्त्री ने गंगाव्यास
सों आय कें पूछी जो तुमने मूंड हलाय के कहा बा
त कही ता बात के देखतें होंन जरी नातें मोसों क
हु बात कहो तब गंगाव्यास नें कही जो हम तो
आपुस में हसत बात करत हते तब स्त्री ने कही
जो हमसों काहे कों दुरावत हो जो बात होय सो क
हो और बहुत आग्रह कीयो तब गंगाव्यास ने क-
ही जो हम आपस में हंसत हते जो यह ऐसो उत्त
म देह पाय के नाहक प्रेत के साथ जरावत है यादे
ह सों श्रीठाकुर जी की सेवा न कीनी न भजन कीयो
ऐसो उत्तम देह धरि कें श्री ठाकुर जी कों न भज्यो
तब वा स्त्रीने गंगाव्यास सों कही जो हूं तो तुम्हा-

री धारणा है जो जा भांति यह देह श्री ठाकुर जी कें
काम आवै सो करौ तब यह बात सुनिकें गणा
व्यास ने कह्यौ जो अब तो तोकों सूतक है सूतक उ
तरैगो तब होयगो तब स्त्री अपने स्थल कों गई प
रि वाकों बहुत बिरह उत्पन्न भयौ जो दिन प्रति दि
न आवै सो गणाव्यास कौ दर्शन करि जाय ऐसें क
रत सूतक उतरयौ तब सुद्ध होय कें गणाव्यास के
पास आई तब गणाव्यास ने कही जो तू सवारें आ
इयो सो वा स्त्री ने वा दिन कछू खायो नाही पहिलें
चना चबाय कें रहती सो वा दिन वा स्त्री ने जल पान
हू नाहीं कीयो पाछें प्रातःकाल भयौ तब गणा
व्यास के आयवे को समौ भयौ तब आय के बैठि र
ही तब गणाव्यास आये और स्नान करिकें भगवद
स्मरण कीयो तब वा स्त्री सों कह्यौ जो तू स्नान क
रिकें बैठि रही पाछें गणाव्यास ने श्री आचार्य जी
महा प्रभून कौ ध्यान धरिकें वाके कान में नाम सु
नायो तब नाम सुनत ही वा स्त्री कौं भगवद भाव
उत्पन्न भयौ तब वा स्त्री नें गणाव्यास सों पूछो जो
अब मैं कहा करूं तब गणाव्यास ने कह्यौ जो अ
ब भगवद सेवा करि तब वा स्त्री ने कह्यौ जो मेरी
स्थिति तौ ऐसी है जो तुम कछू टहल देउ सो मैं क
रूं पाछें गणाव्यास उपरना पर्दनी धोयवे कौं
देते सो धोयकें सिद्ध करिकें पहुंचावती प्रसाद
गणाव्यास के घर लेती ऐसें करत गणाव्यास के
घर कौ काम काज सब करन लागी पाछें भगवद

सेवाकी सब काज काम करन लागी सो कितनेक दिन पाछें राणा
व्यास के घर श्री आचार्य जी महाप्रभू पधारे तब राणाव्यास
नें वा स्त्रीकों श्री आचार्य जी महाप्रभून पास नाम निवेदन
करवायो तब वह स्त्री परम वैस्नव भई सो राणाव्यास श्री
आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम भगवदीयहे ताते
इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

## ॥ वार्ता प्रसंग ।२। वैस्नव ॥ ३३ ॥

## अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक रामदास सारस्वत ब्राह्मण राजनगर में रहते तिन की वार्ता

सो रामदासजी के माथे नटवर गोपालजी श्री आचार्यजी
महाप्रभूननें और अपनी पादुकाजी सेवा के लिये पधरा
राय दीनी सो सेवा सदैव करें ऐसे कृपा पात्र भगवदीयहें
सो रामदास विवाह करिकें पृथ्वी परिक्रमा कों चले सो
कितनेक दिन में पृथ्वी परिक्रमा करिकें अपने घर
आये परि रामदास स्त्री कों अंगीकार न करें तब दि
न द्वे तथा चारि रहिकें द्वारिका कों चले तब रामदास
की स्त्रीहू साथ चली परि रामदास स्त्रीकों साथ न
आवन देहि ईटन सों मारें परि रामदास की स्त्री तो दूर
दूर साथ ही भई और रामदास के दासकी पातर में जूठ
न उबरें सो खाय नाहीं भूखी ही परि रहे परन्तु पति के साथ
साथ ही रहे तब एक दिन श्री रणछोड़ जी नें रामदास सों
कही जो तू अपनी स्त्रीकों अंगीकार करि त्याग न करिकें

करतहे तब रामदास ने कही जो में विरक्त हों वैरागी हों मेरो स्त्री सों कहा काम है तब श्री रणछोड़ जी ने कह्यो जो तेने विवाह काहे को कियो जो तू श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक है तोकों ऐसी निठुरता न चाहिये जो श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक जानि कछु कहत नाहीं अब हों कहत हों तू अपनी स्त्री को अंगीकार करि तब रामदास ने अपनी स्त्री सों कह्यो जो तू मेरे साथ चली आउ तब मार्ग में रामदास के साथ जान लागी तब मजल जाय उतरे तब रामदास ने अपनी स्त्री सों कही जो तू वस्त्र साज लैके डेरा में बैठी रहियो और में ऊपरा बीनि लाऊं पाछें आप

स्नानकरि रसोई करी श्रीठाकुरजी कौं भोगसम
र्प्यो भोग सराय पाछें प्रसाद लीयौ औरस्त्री कों
प्रसाद दियो सो कितनेक दिन मार्ग मेंचले आये
पाछें एक दिन श्रीरणछोड़जीनें रामदास कौंआ
ज्ञा दीनी जो तू अपनी स्त्री कौ नामदै तब रामदास
ने कह्यो जो हूं नाम कैसें देउं तब श्री रणछोड़ जी
ने कह्यो जोतू नामदै मेरी आज्ञा है तब श्रीआचा
र्जी महाप्रभून कौ नामले श्रीरणछोड़जी की आ
ज्ञा ते स्त्री कौ नाम दीयौ तब स्त्री कॆहाथ कौ म
हाप्रसाद लैन लाग्यो पाछें कितनेक दिन में श्री
आचार्य जी महाप्रभू राजनगर पधारे तब रामद
सनें आयकें श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन
कीये तब रामदास ने कह्यो जो महाराज मेरी स्त्री
कौं नाम समर्पण करवाइये तब आपने कह्यो जो
अबतो तेनें नाम दीयो है फेरि कहा तब रामदासने
कह्यो जो महाराज मैंतो श्रीरणछोड़ जी की आज्ञा
ते नाम दीयो है और मोकों श्री रणछोड़ जीकी आ
ज्ञा है जो श्री आचार्यजी महाप्रभून पास नामनि
वेदन करवाइयो तब यह सुनि कें श्रीआचार्यजी
महाप्रभून ने नाम निवेदन करवायो पाछें घर आ
य गृहस्थाश्रम करन लागे वे रामदास श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है
ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥०

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥३४॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू

न के सेवक गोविंद दुबे
सांचोरा ब्राह्मण ति
न की वार्ता ।।

सो गोविंद दुबे श्री ठाकुर जीकी सेवा नीकी भां
तिसों करें परि मन में विग्रह हुतो तब गोविंद दुबे
नें श्री आचार्य जी महाप्रभून को वीनती पत्र लि
ख पठायो जो महाराज मेरे मन में विग्रह बहुत
रहत है तातें में कहा करूं तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून ने नवरत्न ग्रंथ प्रगट करि गोविंद दुबे कों लि
ख पठायो और पत्र में लिख्यो जो या ग्रंथ कों
पाठ तू नित्य करियो सो तेरो विग्रहता सब मिट
जायगो सो कृपा पत्र आयो तब गोविंद दुबे नव
रत्न को पाठ करन लागे सो पाठ करत गोविंद दुबे
की सब विग्रहता मिट गई तब श्री ठाकुर जी की
सेवा नीकी भांति सों करन लागे ।।

वार्ता प्रसंग १

और एक समें गोविंद दुबे मीरा बाई के घर हुते
तहां मीरा बाई सों भगवद वार्ता करत अटके तब
श्री आचार्य जी ने सुनी जो गोविंद दुबे मीरा बाई
के घर उतरे हैं सो अटके हैं तब श्री गुसांई जी ने ए
क श्लोक लिख पठायो सो एक ब्रजवासी के हाथ
पठायो तब वह ब्रजवासी चल्यो सो वहां जाय प
हुंचो ता समय गोविंद दुबे सन्ध्या वन्दन करत हु
ते तब ब्रजवासी ने आय कें वह पत्र दीनो सो पत्र
बांचि कें गोविंद दुबे तत्काल उठे तब मीरा बाई

बहुत समाधान की यो परि गोविंद दुबे नें फिर पाछें नदेख्यो ॥१॥

## वार्ताप्रसंग २

और एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू आप द्वारिका पधारे तब गोविंद दुबे और जगन्नाथ जोसी और पांच सात वैस्नव हुते सो आप के साथ हे तब श्री आचार्यजी महाप्रभून सों द्वारिका में बीनती कीनी जो महाराज कछु कथा कहिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें गोविंद दुबे सों कह्यो जो अबही तो मोकों अवकाश नाहीं तब गोविंद दुबे नें बीनती कीनी जो महाराज थोरी सी कहिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कथा कहिवे को पोथी

खोली तब इतने में गोविंद दुबे सों श्री रणछोड़ जी बा तें करन लागे तब आपनें गोविंद दुबे सों कह्यो जो पोथी खुलाय कें बातें कौन सों करत हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें फिर देख्यो जो श्री रणछोड़ जी सों बातें करत हैं तब आपनें पोथी बांधी और फिर आप पोढ़े ॥२॥

## वार्ताप्रसंग ३

और सब वैस्नव श्री आचार्यजी महाप्रभून के थार को महाप्रशाद पावते तब एक दिन श्री आचार्यजी महाप्रभून नें खवास सों कह्यो जो तुम इन वैस्नवन कों थार को महाप्रशाद मति देउ सो ता दिन श्री आचार्य जी महा प्रभू भोजन करि कें उठे हुते सो उठत ही खवास नें थार धूय कें मांजि धर्यो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून के थार को महाप्रशाद न मिल्यो सो ता दिन सब वैस्नवन नें उपवास कर्यो तब श्री रणछोड़जी नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो तुम इन वैस्नवन कों थार नित्य देत हो तैसें इनकों नित्य दीजियो तब दूसरे दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून नें गोविंद दुबे और जगन्नाथ जोसी सों कह्यो जो तुम ने कालि महा प्रसाद कों नहीं लीनों भूखे काहे कों रहे तब गोविंद दुबे और जगन्नाथ जोसी ने श्री आचार्य जी महा प्रभून सों वीनती करि कें कह्यो जो महाराज कालि आप के थार को महाप्रशाद न मिल्यो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तुमकों अपने थार को महाप्

साद तो न देतो परि तुम्हारी सिपारस बड़ी ठौर ते भ
ई है तातें अब देनो परयो पाछें जो नित्य प्यार को
महाप्रसाद देत हुते तैसेंही देंने लागे तब ये वैष्ण
व प्रसन्न होय के रसोई करन लागे तब तहां तां
ई श्री आचार्य जी महाप्रभू द्वारिका में बिराजे
तहां तांई वैष्णव पास रहे पाछें श्री आचार्यजी
महा प्रभू श्री रणछोड़ जी सों बिदा होय के अडेल
को पधारे तब सब वैष्णव श्री आचार्यजी मह
प्रभून के साथ आए सो श्री आचार्य जी महा
प्रभून कों अडेल में पहुंचाय के फेर अपने अप
ने घर आये पाछें श्री ठाकुर जी की सेवा करन
लागे सो वे गोविंद दुबे श्री आचार्यजी महा प्र
भून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे तातें
इन की वार्ता अब कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता ॥४॥ वैष्णव ॥ ३४ ॥
अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक राजा दुबे माधो।
दुबे दोउ भाई सांचोरा
ब्राह्मण तिनकी
वार्ता

सो ना गाम में दोउ भाई सांचोरा ब्राह्मण और
रहते सो एक को नाम हरिकृष्ण हुतो और एक
को नाम राम कृष्ण हुतो सो बड़ो भाई रामकृष्ण
पढ़ो बहुत हुतो और छोटो भाई मूरख हुतो सो
रव्वहु बड़ो जो पढ़ो हुतो सो गाम के चोतरा ऊपर

बैठि कें पटेल के आगें कथा कहतौ और छोटो भाई-
मूरख हुतौ सो खेती की रखवारी करतौ सब टहल क
रतौ सो वह बड़ो भाई कछू काम गयो हुतो दूसरे गा
म में सो तादिन इहां की कथा रहगई पाछें एकदिन
मेह की वर्षा बहुत भई सो वह छोटो भाई खेततेंउठि
कें घर आयो तब भावज नें कह्यो जो तुम रोटी जें
वोंउ तब वा देवर नें कह्यो जो सीत बहुत लागत है
औरमें बहुत भीज्यो हूं तातें तू ताती परोसे तो मैं जें
ऊं तब भावज नें कह्यो जो तू खाय तो खा नातर-
में जाय कें सोय रहत हूं अब तू कहा गाम के चोंतरा
ऊपर बैठि के पटेल कें आगे कथा कहेगो के दादे
की ग्रास फेरेगो तातें खानो होय तो खा नातर हूं
तो जाय कें पड़ि रहूंगी और जैसो है तैसो खा नात
र कहूं उठि जा तब वा देवर के मन में बहुत दुख-
लाग्यो और अपने मन में विचार्यो जो हूं या देश
कों त्याग करूं कहूं निकस जाऊं ता पाछें घर में
ते निकस कें मन में विचार करन लाग्यो जो राजा
दुबे माधौ दुबे बड़े महापुरुष हैं तातें इनकों नमस्का
र करि कें जाऊं पाछें तहां गयो तब राजा दुबे माधो
दुबे दोउ भाईन को नमस्कार कीयो और रोवन ला
ग्यो तब दुबे जीने पूछो जो तू कौन है पाछें देखि कें
पहिचान्यो तब वासों कह्यो जो तू तो अमुके को
बेटा है हरिरुक्म तेरो नाम है और तू हमारी जाति
को है सो तोकों ऐसो कहा दुख है तासों तू रोवत
है तब वाने कह्यो जो मैं दुख को पार नाही तब

दुबेजीने कह्यौ जो तू अपनौं दुख कहि तोकों क-
हा दुख है तब यानें कह्यौ जो तुम मेरे दुख कों दूर
करौ तौ मैं कहूं तुम बड़े ही महापुरुष हौ तब दुबे-
जी ने कह्यौ जो श्री ठाकुर जी बड़े हैं वे सब कों दु-
ख दूर करेंगे तू अपनौं दुख कहि तब याने सब
समाचार कहे जो मोकों भावज ने ऐसे ऐसे व-
चन कहे हैं सो मेरे हृदय में खटकत हैं ताते तुम्हारे
पास आयो हूं सो मेरो दुख तुम से दूर होयगो पाछें दु-
बेजीनें वाकौ समाधान कीयौ समाधान करि
कें वाकों महाप्रसाद लिवायौ पाछें रात्रि कौ स-
मय रह्यौ तब प्रातःकाल भयौ तब वासों दुबेजीनें
कह्यौ जो तू स्नान करि आउ तब वह जायकें दे-
हकृत करि स्नान कर कें आयौ तब माधौ दुबे सों
राजा दुबे ने कह्यौ जो अब कहा करिये तुमहीं
जानों तुम्हारी जीभ चली है जो तुम करोगे नाहीं
तौ कैसें छूटोगे झाड़ लग्यौ है तब माधौ दुबेनें कह्यौ
जो अब तौ तुम्हारी शरण आयौ है तुम श्री आ-
चार्य जी महाप्रभून के सेवक हौ अब तौ याकौ
कार्य कीयौ चाहिये तब पहिले तौ याकौ क्षौर
करवायौ पाछें स्नान करवाय कें मन्दिर के द्वार
के आगें बैठायौ तब माधौ दुबे ने राजा दुबे सों
कह्यौ जो अब याकौ कहा होय सो कहौ तब
राजा दुबे ने माधौ दुबे सों कह्यौ जो तुम्हारो यह का-
म है मेरो काम नाहीं ताते तुमहीं कहौ तब माधौ
दुबे ने राजा दुबे सों कह्यौ जो तुम बड़े हो ताते

तुमहीं कहौ तब राजा दुबे ने माधौ दुबे सौं कह्यौ जो मेरी आज्ञा है ताते तुमहीं कहौ तब माधौ दुबे ने वाकूं उपदेश दीयौ अष्टाक्षर मंत्र कान में कह्यौ पाछें वाकूं अष्टोत्तर सत नाम कौ जप करवायौ सो जप कीयौ सो एक एक माला जप कीये पाछें संस्कृत बोलन लाग्यौ तब माधौ दुबे ने राजा दुबे सौं हँसि कें कह्यौ जो अब आज्ञा होय तो एक बार याकों फेरि जप करवाइये तब राजा दुबे ने माधौ दुबे सौं कह्यौ जो अवश्य करवाइये पाछें माधौ दुबे ने दूसरी बार जप करवायौ तब भगवद स्वरूप स्फुर्त भयौ और पुराण इतिहास में ज्ञान भयौ तब माधौ दुबे ने राजा दुबे सौं कह्यौ हँसि के कह्यौ जो आज्ञा होय तो अब फेर याकौं जप करिवाइये तब राजा दुबे नें माधौ दुबे सौं कह्यौ जो अब यह इतने ही कौ पात्र है अधिक समाय नाहीं और कह्यौ जो तुम कछु मन में मति लाइयो जो हमतें भयौ है ताते यह कछु भयौ है सो श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा तें भयौ है हमारौ तुम्हारौ स्वरूप तो वे जानत हैं पाछें वाने उहां ही प्रसाद लीयौ पाछें दुबे जी की आज्ञा मांगि कें अपने गाम के चौंतरा ऊपर जाय बैठो और कथा कहन लाग्यौ पहलें बड़ौ भाई कथा कहतौ सो वह गांव गयौ जानि कें कोई न आवतौ सो वा दिन जाहू तें वा कौ सेवक आयौ ताने कथा कहत देख्यौ तब वाने गांम के पटैल सौं आय कह्यौ जो तुम कथा सुनवे

कौ ध्यान गयो भट्ट जी तौ कथा कहि रहे हैं तब पटैल ने आ-
य के देखे तौ भट्ट जी कहत कथा रहे हैं तब पटैल ने-
कह्यो जो भट्ट जी अब ताई तुम कथा कहन कौं नाहें
आए तब भट्ट जी ने कह्यो जो पहिले बड़े भाई कथा
कहते ताते मैं नाहीं आवतो अब वे और गाम गए हैं-
ताते मैं कथा कहिवे कौं अब आयौ हूं तब वे भगवद
इच्छा ते भट्ट जी भली भांति कथा कहन लाग्यौ ताते
सब कोऊ बहुत प्रसन्न भये और सब कोऊ कहन
लागे जो हमारो बड़ो भाग्य है जो अब के ऐसो ब्रा-
ह्मण मिल्यौ तब कितने क दिन में वह कथा सम्पू-
र्ण भई तब सबने मिलि के भट्ट जी की पूजा करी-
और कह्यो जो अब तो तुमहीं कथा कहिवो करौ
कथा को आइयो पाछे वह ब्राह्मण माधौ दुबे के
पास आयौ आय के बीनती करी जो तुमारी कृपा
ते मैंने कही जो जाकौ यह पूजा मिली है सो तुम
लेउ यह सब द्रव्य तुम्हारो है तुम मेरे गुरु हौ तब ग
माधौ दुबे ने वासों कह्यो जो हमारे और तुम्हारे
गुरु श्री आचार्यजी हैं ताते यह द्रव्य सब उनकौं-
दे हमारो यामें कछू नाहीं ताते यह द्रव्य सब अडेल
पहुंचावनो तब वा ब्राह्मण ने सब द्रव्य अडेल-
पहुंचायौ सो कितनेक दिन पाछे रामदास सांचौरा
ब्राह्मण और जगन्नाथ जोशी ये वैष्णव श्री आचा-
र्य जी महाप्रभून के दर्शन कौं अडेल जात हैं तिन
के साथ वह द्रव्य अडेल पहुंचाय दीयो तब कित
नेक दिन में ताकौ बड़ो भाई आयौ वह गाँव गयौ-

हुतो सो आयो तब याने राजा दुबे माधो दुबे सो क
ह्यो जो तुम आज्ञा देउ तो मेरे पिता को ग्रास है सो
फेरों तब दुबे जी ने कह्यो जो सब कहा कछु संदेह
है तू जा सब सिद्धि होयगो तब यह दुबे जी सो आ
ज्ञा लैके वा गाम को चल्यो सो जाय पहुंच्यो पाछें
वा राजा सो मिल्यो आशीर्वाद दीयो तब वह रज
पूत वा भट्ट को देखिकें बहुत प्रसन्न भयो और क
ह्यो जो हमारो बडो भाग्य जो तुम कृपा करि कें आ
ये और कह्यो तुम डेरा करो तब उन डेरा कीयो पाछें
रसोई की सामिग्री चलती करी पाछें सब जने भट्ट
जी के पास आय बैठे तब भट्ट जी ने एक श्लोक को
व्याख्यान करो तब वे सब जने बहुत प्रसन्न भये औ
र कह्यो जो तुम पांच रात्र कृपा करि कें रहो पाछें तुम
री विदा करेंगे ऐसे कहि कें वे तो अपने घर को
गये पाछें रसोई करि श्री ठाकुर जी को भोग सम
र्प्यो भोग सराय कें महा प्रसाद लीयो तब दूसरे दि
न सब मिलि कें विचार करन लागे जो भट्ट जी को
विदा कब करिये और कहा करिये और यह ब्रा
ह्मण बहुत योग्य है और बहुत दिन में आयो है
तब उन सबन में एक वृद्ध हुतो तिन ने कह्यो जो
याको १००५ मन तो अन्न देउ और एक सत याकों
मुद्रा देउ और याके पिता को ग्राम पुरातन भूमि है
सो एक १०० सो बीघा है सो याको लिखि देउ
इतनो लिखि देउ जो हम हू ब्राह्मण रिण ते छूटें तब
सबन ने कह्यो जो यह ठीक बात कहे है सो याको

कह्यौ सबन कों करनों चाहियै पाछें सबनें मिल-
कें चीठी लिखि दीनी और कह्यौ जो याको अन्न
सिद्ध है सो लै आउ तब भट्ट ने कह्यौ जो यह सब-
अन्न मेरे घर पहुंचाओ तब वा अन्न के गाड़ा भ-
रि दीने और कह्यौ जो अपने साथ लिवाय लै जा
उ और सबनें मिलि के वस्त्र दीने और गाय और
एक भैंस और सत मुद्रा इतनी याकौं दीयी और
कह्यौ जो तुम इतनो प्रति वर्ष आय कें लै जायौ क
रौ तब भट्ट जी सबन सों बिदा होय कें अपने गांव
कूं चले सो आय पहुंचे तब अपने द्वार के आगें ठा
य पुकार्यौ और पुकार कह्यौ जो भाग्यो विवाद-
गयो लिखो पटेल के चौतरा ऊपर कथा कहि कें और

पिता कौ ग्रास फेरि कै आयौ हौं ताते अब हारि खो
लि तब भाभी खोल्ल कै देखे तौ देह सांचें हौं ठाढ़ो
है तब देख कै बड़ो भाई उठि आयौ तब देखे तौ छो
टे भाई के ऊपर भागवद तेज विराजत है तब वह बड़े
भाई डर्प्यो जो मति यह कछु मन में बुरौ लावे तब
वह छोटो भाई भाभी के पाय लाग्यो और कह्यौ॰
जो तुम्हारे वचनते मोकों श्री ठाकुरजी की कृपा भई
है तब वाके बड़े भाई ने कह्यौ जो स्नान करौ महाप्र
साद लेउ तब छोटे भाई ने कह्यौ जो मैं तौ राजा दुबे
माधो दुबे कों नमस्कार कीये बिना जलपान न क
रूंगो तब वाके बड़े भाई नें कह्यौ जो यह कहा तब
छोटे भाई नें कह्यौ जो यह भयौ है सो सब उन की
कृपा ते भयौ है मोकों तो तुम नीके जानत हो जैसो
हो तैसो तब बड़े भाईने कह्यौ जो मैं तुम्हारे साथ-
चलूंगो तब दोऊ भाई राजा दुबे माधौ दुबे के घर
गये तब जाय कै बड़े भाई ने उन कों नमस्कार की
यो और छोटे ने दंडोत करी तब राजा दुबे ने माधौ॰
दुबे सों कह्यौ जो तुम्हारो सेवक आयौ है और य
ह प्रसंग वाके बड़े भाई के आगें मति कहियो त
ब दुबे जी ने कह्यौ आवो बैठो तब वे दोउ भाई बै
ठे ता पाछें दुबेजी सों छोटे भाई नें सब वार्ता निवे॰
दन करी तब दुबे जीने कह्यौ जो तेरे ऊपर श्री आ
चार्य जी महाप्रभून को हाथ है ताते ऐसो क्यों न
होय तब वाके बड़े भाई नें कह्यौ जो हम तो श्री
आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन नाहीं करे हम

ने तो तुम देखे हो और जैसें याके ऊपर कृपा करिकें याकों कृतार्थ कीयो है तैसें मोकूं हूं कृपा करिकें कृतार्थ करो तब वाकूं हूं दुबेजी ने कृतार्थ कीयो नाम सुनायो पाछें दोउ भाईन कों महाप्रसाद लिवायो पाछें छोटे भाईनें दुबेजी सों कह्यो जो आज्ञा होय तो अन्न ये मुद्रा गाय भेंसि कपड़ा उहांसों जो ला यो हों सो आप के मन्दिर में आवे तब दुबे जीने कह्यो जो तुम तो जानत ही हो जो या द्रव्य के धनी तो श्री आचार्य जी महाप्रभू हैं तब वाने कह्यो जो आप की आज्ञा प्रमान तब दुबेजीनें कह्यो जो अन्न और गाय भेंस और सब द्रव्य इकठोरो करो पाछें दुबेजीसों दोउ भाई विदा होय कें अपने घर आये तब सब द्रव्य हुतो सो इकठोरो कीयो पाछें दिन थोरे से में श्री आचार्य जी महाप्रभू द्वारिका पधारे तब सिद्ध पुर में रणाव्यास के घर उतरे तब राजा दुबे माधोदुबे और वह सब द्रव्य लेकें श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों सिद्ध पुर में आये तब आयकें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कीये पाछें इन दोउ भाईन कों श्री आचार्यजी महाप्रभून पास नाम निवेदन करवायो और वह द्रव्य हुतो सो सब भेट कीयो तब दिन है चार रहि कें आप आगें पधारें तब राजा दुबे माधोदुबे और वे दोउ भाई ब्राह्मण श्री आचार्य जी महाप्रभून सों विदा होय कें अपने घर आये पाछें वे दोउ भाई ब्राह्मण राजा दुबे माधोदुबे के संग ने

बड़े भगवदीय भए ताते सब कामों में भगवदीय के कामों में सावधान रहे भावौ इनके ऊपर कृपापात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥३५॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक उत्तम श्लोक दास सांचोरा ब्राह्मण तिनकी वार्ता लिख्यते ॥

सो उत्तम श्लोक दास श्रीनाथ जी के सेवकन की रसोई करते और सबन कूं आप परोसते ताते सब सेवक उत्तम श्लोक दास को महतारी करि बोलते सेवकन को प्रीत से परोसते ताते श्री गुसांई जी इनके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते सो उत्तम श्लोकदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥३६॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक ईश्वर दुबे सांचोरा ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो ईश्वर दुबे श्रीनाथ जी के सेवकन की रसोई करते और उत्तम श्लोक दास हू श्रीनाथ जी के सेवकन की रसोई करते सो तब उत्तम श्लोकदास की देह छूटी तब श्री गुसांई जी ने ईश्वर दुबे को नाम उत्तम श्लोकदास राख्यो सो वे श्रीनाथ जी की

सेवकन की रखाई करते सो अपनी गांठि ते घृत म
मगाय कें सबन के गैाने अधिक घृत परोसते ताते
याह सों सब सेवक महतारी कह के बोलते सो य
ह बात श्री गुसांई जी ने सुनी सो सुनि के बहुत प्रसन्न
भये तब ईश्वरदुबे सों श्री गुसांई जी ने पूछी जो तुम
अपनी गांठि ते द्रव्य को घृत मगाय के काहे को
परोसत हो तब ईश्वर दुबे ने कह्यौ जो महाराज इ
न की सेवा में श्रम बहुत होत है तब यह सुनके श्री
गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये और कहे जो याको
सब सेवकन ऊपर ऐसी बात सत्य है तब ईश्वरदु
बे सों श्री गुसांई जीने कह्यौ जो तू मागि हों तेरे
ऊपर बहुत प्रसन्न भयौ हों तब ईश्वर दुबे ने प्रसन्न
होय के कही जो महाराज मेरो मन तुम ऊपर तेंम्र
प्रसन्न होय तब श्री गुसांई जी सूं वैस्नवन नें कही
जो महाराज याने यह कहा माग्यो तब श्री गुसांई
जी सुनि के चुप करि रहे तब श्री गुसांई जी सूं हरिदा
स ने पूछी जो महाराज मेरे मन में सन्देह है जो उत्तम
श्लोक ने यह कहा माग्यो तब श्री गुसांई जी ने क
ह्यो जो यह सन्देह तो उनही सों मिटैगो तब उन
वैस्नवन नें उत्तम श्लोक दास सों पूछी जो तुमने श्री
गुसांई जी पास कहा माग्यो तब उत्तम श्लोक दास
ने कह्यौ जो जब श्री गुसांई जी मोपर प्रसन्न होय
कें कह्यो जो हूं तेरे ऊपर प्रसन्न भयौ हों ताते तू
मागि तब श्री गुसांई जी मोकों प्यारे लागे तब मु
झ में विचार भयौ जो श्री प्रभू जी को प्रसन्नता ते

स्वौ प्यारो लागत हौं और मैं सेवक हों और जो क
या चित कोऊ अपराध तैं मन प्रसन्न होय जाय त
न मेरो मन कहूं बिगरै तातें यह मांग्यो जो सदा
श्रीगिरिधर तुमारे चरणारविंद पर मन रहे सो उनके
दीए ते रहे तब यह बात सुनि कें सब वैष्णव प्रसन्न
भए तब बिचारें जो सेवक कों ऐसोई धर्म चाहिये
पाछें श्री गुसांई जी प्रसन्न होय के श्री अंग की से
वा दीनी सो वे सुखिया भीतरिया भये — वे उत्तम
श्लोक दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे
परम कृपापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता को
पार नाहीं तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ३७ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक वासुदेव दासछ
कड़ा सारस्वत ब्राम्ह
ण सीहनंद के।
तिनकी।
वार्ता

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून के बड़े
पुत्र श्री गोपीनाथ जी सो अडेल ते आगरे पधारे
सो आगरे में वैष्णवन नें एक सौ एक मोहर भेट
कीनी पाछें आगरे ते श्री गोपीनाथ जी नें आज्ञा
करी जो कोऊ ऐसो वैष्णव है जो एक सौ एक मो
हर हमारे घर पहुंचावै तब वासुदेव दास नें कह्यो
जो महाराज मोहर मोकों देउ मैं पहुंचाउंगो तब वे

मौहर वासदेव ठकड़ा कों दीनी सो मौहर लाय कें
मैलके गोला कीयो सो गोला की पूजा करत
मार्ग में चले गाये सो दिन पांच में अडेल जाय प
हुंचे सो गांव के बाहर गोला फोरि के मौहर काढि
पाछें श्री गुसांई जी कों दीनी और श्री गोपीनाथ
जी को पत्र श्री गुसांई जी कों दीनों पाछें श्री गु
सांई जीनें वह पत्र बांचि के मौहर गिनलीनी
पाछें श्री गुसांई जीनें वासदेव दास कों महाप्र
साद लिवायो पाछें वासुदेव दासने श्री गुसांई
जी सों वीनती कीनी जो महाराज पत्र को जुवाब
लिखिये और पत्र में मौहरन को पहुंच लिखि
यें जो हूं तौ सवारें जाउंगो तब श्री गुसांई जीनें
वा पत्र कौ जवाब लिखि दीनों जो मोहर पहुंची
ताकी पहुंच लिखि ... पत्र दीयो सो वेउ कें
वासदेव दास कों दीनों पाछें वासुदेव दास सोय र
हे तब रात्रि घड़ी एक रही तब वासदेव दास उठि
कें श्री गुसांई जी के पास आय कें दंडौत करिकें
अडेल तें चले सो पांच दिन में श्री द्वार आय श्री
गुसांई जी कौ पत्र श्री गोपीनाथ जी कों दीनों दि
न दश में अडेल आय और गये सो पत्र बांच
कें गोपीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये और पूछो जो
वासदेव दास मौहर कौन भांति सों लेगये हुते तब
वासदेव दास नें कह्यो जो महाराज मौहरन को
गोला करिकें वा गोला की पूजा करत ले गयो त
ब श्री गोपीनाथ जी नें कह्यो जो या भांति कबहू

न राखिये "जो स्वरूप करि मानिये ताको या भां ति कैसे करिये तब वासुदेव दासनें कह्यो जो महा राज अनिरुद्ध तो न भई हुती ॥+

## वार्त्ता प्रसंग ॥ २ ॥

बहुर एक समय श्री गुसांईं जी श्री मथुरा में विराजत हुते सो एक समय श्री गुसांईं जी शृंगार करि सेवा ते पहुंचि के बाहर बैठक में विराजे सो बैठक में बैठि के रूपचन्द नंदा कों पत्र लिख्यो तामें वसंत की सामग्री मंगाई तब वासदेव सों कह्यो जो तू इतनी सामग्री लेकें संध्या कों आइयो तब भंडारी कों आज्ञा दीनी जो एक टोकरा याकों प्रसाद को देउ तब भंडारी ने ऐसे रीत को आहार दीनौ टोकरा में तब श्री गुसांईं जी ने वासदेव दास कों आज्ञा दीनी जो तोकों पनही पहरें को कछु चिंता नाहीं पेंडे में प्रसाद खात चल्यो जैयो तब वासुदेव दास सोई करत आये सो तब आपु आप पहुंचे तब नांई प्रसाद खाय चुके तब झारी भरिकें रूपचन्द नन्दा के घर गये ता समय रूपचन्द नन्दा अपने घर प्रसाद लै चुके हे पत्रू लैकें सीक करत हे सो वासदेव दास पत्र लैकें आए तब रूप चन्द नंदा ने हाथ धोय पोंछि कें वह पत्र माथे च ढाय के लीनो और भाई सों कह्यो जो वासदेव दास आए हैं सो घर में कहीये भूखे होयगे तब वासदेव दास ने कह्यो जो मोकों तो मथुरा जानों है तासों मोको सखड़ी महाप्रसाद लेबे को अवकाश नाहीं ताते

सामग्री लै वेउ तौमैं जाउं इहां तौ अवार है ओ नौ ही
तव रूपचन्द नन्दा वस्त्र पहर कें सामिग्री लैन गये
तव वासदेव दास साथ गये तव रूपचन्द नन्दा नें
छोटे भाई गोपाल दास सौं कह्यौ जो अपने घर में
जितनौ प्रसाद होय सो तू लैकैं द्वारकू दरवाजे वै-
ठि यो हम आवत हैं तव छोटे भाई नें जितनौं घर
में प्रसाद हो सो सव लैकें द्वारकू दरवाजे आय वै
ठौ और रूपचन्द नन्दा वाजार में आयकें सव सा
मग्री लीनी तव वासुदेव दास ने कह्यो जो मेरौ स
गरौ घर तौ प्रसादी है तव सव सामग्री पिछली औ
र कटि सौं दृढ़ कर वांधी पाछें रूपचन्द नन्दा औ
र वासदेव दास द्वारकू दरवाजे आए तव देखें तौ
छोटौ भाई वैठ्यौ है प्रसाद लीये सो सव प्रसाद सौं
वासदेवदास की झोरी भरी और विदा कीए आप-
दोऊ भाई घर कौं आए और आप वासदेव मथुरा
कौं आए सो तीसरे पहर श्री गुसांई जी स्नान क-
रवें कौं पधारे इतने ता समय वासदेव दास सामग्री
लैकैं आय ठाड़ो भयौ तव श्री गुसांई जी उठि कें वा
सदेव दास की कटि ते सामग्री खोलि लीनी औ
र श्री गुसांई जी वासदेव दास के ऊपर वहुत प्रस
न्न भए और आज्ञा दीनी जो तोकौं महा प्रसाद
की सामग्री राखी है सो जाय कें प्रसाद लै तव वा
सुदेव दास विश्राम स्नान करि कें आयौ तव प्र-
साद लीनौं सो वासुदेव की क्षुधा वहुत हती मर्या
देव खातौ परि जैसो खातो वहुत नैसें ही वहुत-

पराक्रम हुतो मथुरा ते दोय पहर में आगरे गयो औ
र आए ऐसे पराक्रमी हुते ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २

बहुरि नित्य प्रति श्री गुसांई जी श्री ठाकुर जी
को सेवा करिकें बाहिर आय कें खवास सों कहते
जो तू थैली पीढ़ा लैकें विश्रान्त जैयो और आप
दर्शनार्थ जन्मस्थान पधारते सो जन्मस्थान दर्शन
करकें पाछें श्री गुसांई विश्रान्त स्नान को पधार
ते या भांति सों श्री गुसांई जी नित्य करते सो एक
दिन मथुरिया चौबे सब मिल कें काजी के पास
आय कें चुगली करी जो तुम इनसों लामा बांधो क
ो सो इनके सेवक खास हैं सो तुमकों दोय चार

हजार रुपैया दे देउंगो तब काजी मनुष्य दोय सौ हथियार बांधि कें जन्म स्थान आय ठाडो भयो इ-ने में श्री गुसांई जी श्री केशोराय जी के दर्शन को पधारे तब दर्शन करिकें बाहर आए पाछें घोडा ऊपर सवार भये तब काजी ने कह्यो जो अब तुम कहां जाउंगो तब वासुदेव दास नें श्री गुसांई जी सों बीनती कीनी जो महा राज मोकों बुरी नजर दीसत है तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो ये तेरी कहा करेंगो तोसों होय सो तू करि तब वासदेव दास देखें तो एक के हाथ में ढाल और गुरज देखी तासें वासदेव नें एक थपेड मारी सो थपेड़ लागत मात्र वह तो गिर पर्यो तब वाकी ढाल और गुरज लेकें वासदेव दास के पाछे मनुष्य बीस पचीस हुते तब वे भाजि कें हवेली में पैठि कें दरवाजो देकें छिपरहे तब श्री गुसांई जी घोड़ा ऊपर सवार भये और उनके दरवाजे होकर पधारे तब वासदेव दास ने श्री गुसांई जी सों कह्यो जो महाराज अब भले इकठोरे भए हैं जो आज्ञा होय तो इन सबन कों दरवाजो तोरि कें मारुं तब श्री गुसांई जी ने नाहीं करी और कह्यो जो तेरो ये कहा लेत हैं पाछें श्री गुसांई जी विश्रांत पधारे तब दूसरे दिन श्री गुसांई जी स्नान कों पधारे तब वह काजी अपने मनुष्यन कों साथ लेकें गेरे में पढ़का देकें आय कें बीनती करी जो महाराज आज तुम कन्हैया देखे और भीम हू देखे जो प्रभु

जीके प्रतापतें सब डरे तब श्री गुसांई जीने कह्यो जो यह ऐसो हुतो जो फिर यासों बोलते तो अकेलो यह सबन को मारतो तुम सब ठौर रहते और याको मन में तो बहुत आई हुती परि हमने तो ऐसी न करनी हुती पाछे काजी को समाधान करिके घर को पठायो सो श्री गुसांई जीकी कृपा ते श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक ऐसे सामर्थ वान हुते॥ वा॰ प्रसंग २

और सीहनन्द में उत्सव होतो तब बासुदेव दास को बुलावते नाही तब एक समय सीहनन्द के वैस्नव मिलिके श्री गोकुल श्री गुसांई जी के दर्शन को आये सो तिनके साथ बासदेव दास हू आये तब वैस्नवन ने श्री गुसांई जीको दर्शन कीयो पाछे उहां रहिके कोई समै पाय के बासदेव दास ने श्री गुसांई जी सों बीनती करिकें कही जो महाराज ये वैस्नव मोकों सीहनन्द में उत्सव होत हैं तब बुलावत नाहीं तब श्री गुसांई जी चुप करि रहे तब पाछे उन वैस्नवन को जब डेरा को बिदा कीये तब तिन में ते चार पांच मुखिया रहे सो तिनको श्री गुसांई जी ने राखे और सब वैस्नवन को डेरा पठाये तब श्री गुसांई जीने उन वैस्नवन सों पूछी जो तुम बासदेव दास को उत्सव कीर्तन में क्यों नाहीं बुलावते हो तब उन वैस्नवन ने बीनती करिके कही जो महाराज बासदेव दास को बडे उत्सव में क्यों नाहीं बुलावते हैं और छोटे उत्सव में नाहीं बुलावते जो ये भूखे रहेंगे तो दोष लागे तब श्री गुसांई जीने उन को आज्ञा दीनी जो तुम

बंधान बांधौ जो १०० वैस्नवन कों बुलावो तो पचा
स ५० तो और वैस्नवन कों बुलावो और पचास में
एक बासदेव दास कों बुलावो और जहां ५० पचास
बुलावो तो २५ पचीस तो और वैस्नवन बुलावो औ
र पचीस में एक बासुदेव दास कों बुलावो और ज
हां पचीस बुलावो तहां तेरह तो और वैस्नवनें बु
लावो और बारह में एक बासदेव कों बुलावों औ
सें दसतांई श्रीगुसांई जी नें बंधान बांध्यो ऐसें
पांच तांई बंधान बांध्यो ऐसें जितने बुलावने हो
य तितने तो और वैस्नव बुलावो और आधेन
में एक बासदेव कों बुलावो तब उन वैस्नवननें
नें कह्यौ श्रीगुसांई जी सों जो महाराज येतो भूखे
रहेंगे तब श्रीगुसांई जी नें उन वैस्नवन सों कह्यौ
जो दसतांई तुम आधे में बासदेव दास कों बुला
वो तामें चाहे सो होय ताकों तुम कहा करोगे सो
यह प्रकार मैंनें तुम कों कर दीनों है सो मेरी आज्ञा
तें तुम कों कछु बाधा नाहीं जो तुम आधे में बास
देव दास कों खुसी सों बुलावों पाछें भूखो रहै तो
तुम कों कछु दोष नाहीं परि यह श्री आचार्यजी
महाप्रभुन को सेवक है ताते बुलाए बिना बासदे
व दास कों तुम उत्सव मति करियो तब वैस्नवन
नें कही जो महाराज की आज्ञा होयगी सोई करेंगे
तब वे कोई क दिन श्रीगोवर्द्धननाथ के पाछे सब वैस्न
व सोरह नन्द कों गये तब वे वैस्नव सोई करन लागे
श्रीगुसांई जी बासदेव कों श्री आचार्य जी महाप्र-

भून कौ सेवक जानि कें ऐसी कृपा करते सो वे वासदेव दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हैं ता ते इन की वार्ता कहां तांई निरविये ॥ ५

वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ३८ ॥ संबंध १०८

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के।
सेवक बावा वेणु और कृस्न
दास घघरिया देव दा
स तिन की वार्ता
लिख्यते।

सो ते बावा वेणु हृदय के नैत्रन सों देखते सो बावा वेणु और छोटे भाई कृस्न दास ये दोउ भाई श्री केसौ राय जी के आगें कीर्तन करते तहां यादव दास हू कीर्तन में साथ हुते तब कीर्तन करन लागे सो यह पद गावत हुते जो देखौ नैनन गिरधर सो यह पद गावत कृस्न दास नें अपनी देह छो डी तब यादव दास नें बावा वेणु सों कह्यो जो यह पद गावत कृस्नदास नें अपनी देह छोडी तब बावे वेणु नें कह्यो जो हम तो अपनी देह श्री नाथ जी द्वार में छोडेंगे पाछें कृस्न दास को संस्कार श्री केसौ राय के पीछे कीयो ता पाछें सूतक उतर्यो तब शु द्ध होय के श्री नाथ जी द्वार चले सो कितनेक दिन में श्री नाथ जी द्वार आय पहुंचे तब पर्वत ऊपर आ य कें बावा वेणु नें श्री नाथ जी के दर्शन कीये पाछें बावा वेणु नें कीर्तन किये तब श्री नाथ जी के कंठ

ने फूल की मालतिरी सो माला और एक बीड़ा रामदास भीतरया नें बाबा वेणु कूं दीनो सो बाबा वेणु ने माथे चढ़ाय कें लीनों तब रामदास भीतरिया नें बाबा वेणु सों कह्यो जो तुम्हारी विदा श्री नाथजी नें कीनी तब बाबा वेणु ने श्री नाथजी कों दंडोत कीनी पाछें नीचे उतरे सो आन्योर की ओर उतरे तब बाबा वेणु नें यादवदास सों कह्यो जो हूं तो पर्वत ते नीचे उतरि कें अपनी देह छोडूंगो तू सावधान रहियो और तू वेगो आइयो ऐसें यादवदास सों कहि कें बाबा वेणु पर्वत ते नीचे उतरि कें श्री नाथ जी कों दंडोत करत मात्र अपनी देह छोडी पाछें यादवदास ने बाबा वेणु को संस्कार कीयो पाछें सूतक उत्यो तब सुद्ध होय कें यादवदास श्री गुसांई जी के पास आए सो श्री गुसांई जी को दर्शन कीयो और दंडोत कीनी तब श्री गुसांई जी यादवदास कों परम भगवदीय जानकें मन में विचारें जो कोई एक दिन में यादवदास कों हू स्थिति है ताकें लिये श्री गुसांई जी विचारे जो श्रीनाथजी की सेवा में यादवदास कों राखिये तें आछौ है तब श्री गुसांई जीनें कह्यो जो यादवदास तुम अकेले हो ताते अब श्री नाथजी की सेवा करो तब श्रीगुसांई जी की आज्ञा ते यादवदास ने श्रीनाथजी की सेवा नीकी भांति सों करी सो सेवा सों पहुंचि कें यादवदास नीचे उतरे और नीकी भांति सों सेवा करते सो कहूं वार्त्ता में जाय

के यादव दास लकड़ी परी होंय सो इकठौरी करी पा-
छैं जब जान्यौ जो लकड़ी सिद्ध भई तब श्रीनाथजी
पास आज्ञा मांगि कें दंडौत करि कें नीचे उतरे सो अ-
गिन लैकें जहां लकड़ी इकठौरी हुती तहां आप श्री-
ए सो लकड़ीन कौ श्रीनाथजी की ध्वजा के आगारि
चौंतरा बनायौ सो चौंतरा के ऊपर आप पाछे जा दि-
शा कौ ब्यार चलत हुती ता दिशा कों अगिन धरि-
कें ध्वजा कों प्रनाम करि कें श्रीनाथ कौ स्मरण क-
र कें यादवदास नें अपनी देह छोड़ी पाछें ब्यार ते-
अगिन जरि उठी सो जर कें भस्म होगई यादव दासनें

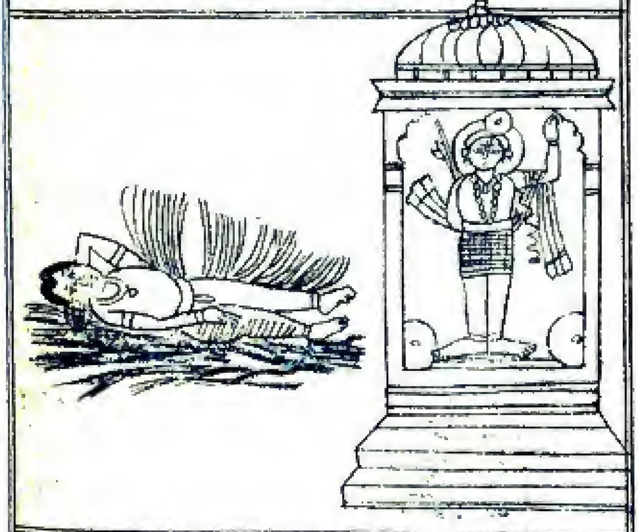

अपने हाथन सों अपनो संस्कार कीयौ तथा वावा-
वेणु को संस्कार कीयौ ताते यादवदास नें अपनो-

यही विचार कीयो जो सब सेवकन कों मेरो संस्कार करिबे में कष्ट होयगो और सेवा में विरोध होयगो ताते यादव दास नें अपनों संस्कार अपने हाथन सों कीयो और पहिलें बाबा वेणु ने यादव दास सों कह्यो हतो जो तू वेगो अइयो विलम्ब मति करियो सो श्री गुसांई जी ने श्री नाथजी की सेवा सोंपी ताते इतने दिन विलम्ब भयो पाछें दिन द्वै भए तब श्री गुसांई जी नें पूछो जो यादवदास देखियत नहीं सो कहां गयो है तब सेवकन ने कह्यो जो महाराज यादवदास कहूं वन में लकड़ी इकठोरी करत हते तब श्री गुसांई जी नें कही जो उहां जाय कें देखो तो तब श्री गुसांई जी के कहत मात्र वैष्णव जाय कें देखें तो उहां कछू नाहीं राख की ढेरी परी है तब वैष्णवन नें श्री गुसांई सों आय कें कह्यो जो महाराज उहां तो कछू देखियत नाहीं राख की ढेरी परी है तब श्री गुसांई जी अपने श्रीमुख सों कह्यो जो ऐसो भगवद भक्त जो काहू को दुख न देतो वे यादवदास श्री महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय जो स्वइच्छा नें अपनी देह कोड़ी सो सब ग्वालन ने देखो सो चकत होय रहे ताते बाबा वेणु और कृष्णदास घघरिया और यादवदास वनिया ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कोपार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥

वार्ताप्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ ९८ ॥ संबंध १०८ ॥

# अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जगतानन्द सारस्वत थानेश्वर के वासी तिनकी वार्ता लिख्यते

सो जगतानन्द सरस्वती ऊपर कथा कहते तब समय श्री आचार्यजी महाप्रभू थानेश्वर पधारे सो जगतानन्द सरस्वती ऊपर कथा कहि रहे हुते सो तहां श्री आचार्य जी महा प्रभू जाय बिराजे तब जगतानन्द सरस्वती नें एक श्लोक को व्याख्यान कीयो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो याको व्याख्यान भावतो बहुत है तब जगतानन्द नें कह्यो जो श्लोक को अर्थ तो कह्यो जो श्री शुकदेव जीने कह्यो सो कह्यो तब श्री आचार्यजी महा प्रभून नें कह्यो जो श्री शुकदेव जी लरिका हैं तब जगतानन्द नें कह्यो जो अधिको व्याख्यान होय तो तुमही आपके कहो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तू तो व्यास आसन बैठ्यो है हम तेरो आन क्रम कैसे करि सकें तब इतनो सुनत मात्र जगतानन्द चोकी छोड़ के उठि ठाडो भयो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें चोकी ऊपर वस्त्र बिछाय कें पोथी धरी और फिर आप ताके नीचें बैठे और वा श्लोक को भाव फेरि कें वाको अर्थ कह्यो सो व्याख्यान करत करत तीन पहर व्यतीत भये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो या श्लोक को व्याख्यान

मास दोय तीन लों वीतेगो परि अब तुम भूखेहो
उगे ताते अब तुम उठो तब जगतानन्द ने कह्यौ
जो महाराज आप तो ईश्वर आप के भाव घटिवे
के नाहीं जहां चाहो तहां तांई कहो तब श्री आ
चार्य जी महाप्रभून ने पोथी बांधी तब जगतानन्द
नें साष्टांग दंडवत कीनी और कह्यौ जो महाराज मे
रो घर पावन करिये तुम तो साक्षात् पूरन पुरुषोत
म हो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो
तूं तो अन्य मार्गीय है हम तेरे घर कैसें पधारें
गे तब जगतानन्द सरस्वती स्नान करि कें आ
य ठाड़ो भयो और वीनती करि कें कह्यौ जो म
हाराज मोकों कृपा करि कें नाम दीजिये तब

श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कृपा करिकें नाम दीये।
तब श्री आचार्य जी महाप्रभू वाके घर पधारे और ज॰
गतानंद के घर सेव्य ठाकुर जी हुते सो वे तुलसीमाभ
वैठिसे तहां वे मदा सक लोटी श्री ठाकुर जी के ऊपर
डारते हें तब श्री ठाकुर जी कूं श्री आचार्य जी महा॰
प्रभून नें तुलसी भसू काढि कें पंचामृत सों स्नान कर
वाय न्यारे वैठाये पाछें शृंगार करि राजभोग समर्प्यो
पाछें जगतानंद कौं सेवा की विधि सिखाई और क
ही जो नित्य याही भांति सों सेवा करियो तब जगता
नंद भले भगवदीय भये सो श्री ठाकुर जी की सेवा नी
की भांति सों करन लागे सो वे जगतानन्द श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ता
तें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥
॥वार्ता प्रसं॰ ॥१॥ सम्बंध ॥१९०॥ वैस्नव ४०

॥ अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक आनंद दास वि
श्वंभर दास दोउ भाई
स्त्रीहुते तिन॰
की वार्ता॰

सो वे दोउ भाई अति कृपा पात्र भगव
दीय हे सो वे दोउ भाई एकत्र वेठिकें भगवद्वा
र्ता करते तथा श्री आचार्य जी महाप्रभून की वार्ता
अहनिस करते कबहूं वार्ता कहत दोउ भाई॰
कौं निंद्रा आय जाती तब श्री ठाकुर जी हुंकारी देते

बड़े भाई आनन्द दास सो तो भगवद वार्ता के आ
वेश में जानते नाहीं जो हुंकारो कौन देत है जब
वार्ता कहि चुकते तब आनन्द दास विश्वंभर
दास सों पूछते जो मैंने तोसूं वार्ता कही सो तू स
मझ्यो तब विश्वंभर दास ने कही जो मैंने तो इहा
ताईं सुनी पाछें मोको तो निन्द्रा आई हुती तब
आनन्द दास ने कह्यो जो तू तो अब तांई हुकारो
देत हुतो तब विश्वंभरदास ने वासों कह्यो जो मैं
ने तो हुंकारो दीनो नाहीं तब आनन्द दास ने कही
जो श्री ठाकुर जी ने हुंकारो दीनो होयगो तब दोउ
आनन्द दास विश्वंभरदास अपने मनमें बहुत
प्रसन्न भए और कह्यो जो हमारो बड़ो भाग्य है
है श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपाते श्रीठा
कुर जीने हुकारो दीनो हमारी कही सब वार्ता
सुनी ताते वे दोउ भाई आनन्द दास विश्वंभर
दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा
पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता अब तांई
लिखिये ॥ +

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ८१ ॥
॥ अब श्री आचार्य महाप्रभून ॥
॥ की सेवक एक ब्राह्मणी ॥
॥ हुती तिनकी वार्ता ॥
॥ लिख्यते ॥

सो ब्राह्मणी के माथे श्री आचार्यजी महाप्रभूनने
श्री बालकृष्ण जी की सेवा पधराई हुती सो तह

ब्राह्मणी श्री बालकृष्ण जी की सेवा करती परंतु
अपने घर में निपट निकंचन हुती ताते श्रीठाकुर
जी के आगे मांटी के कूजा भरराखती और रसोई
में मांटी के पात्र और घर निपट संकोरा हुतने ही
में सब रसोई मन्दिर आचार हुते और नेत्रन सों
थोरो दीसे वृद्ध भई ताते ऐसी सेवा करती सो और
वैष्णव देखिकें सेवा करन में सो आपुस में सब
चर्चा करन लागे जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
या ब्राह्मणी के माथे कहा जानिकें सेवा पधराई है
यह तो कछू समझत नाहीं ऐसे सब वैष्णव आ
पुस में चर्चा वार्ता करन लागे सो एक दिन श्री आ
चार्य जी महाप्रभून को कोस ऊपर गाव हुतो तहां
पधारे हुते पाछें तहां ते फिरे तब तहां ते वा ब्राह्म
णी के द्वार के आगे होय कें निकसे तब साथ के
वैष्णव हुते तिननें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों
बीनती कीनी जो महाराज आपने वा ब्राह्मणी के
माथे श्री बालकृष्ण जी की सेवा पधराई है ताको य
ह घर है सो या के घर पधार कें देखिये याको घ
र याको आचार कैसो है तब श्री आचार्य जी महा
प्रभू आप असरण सरण अंतरयामी वा ब्राह्मणी
के घर पधारे सो तासमें वह ब्राह्मणी रसोई क
रत हुती रोटी करकें घी सों चुपरत जाय और श्री
ठाकुर जी आप आरोगत जाय परि बाकों तो दी
सत कछू नाहीं हाथ सों टटोरे कहे जो रोटी आगें
रासत नाहीं कहा मूसा बिलाई लै जात हैं ऐसें

कहे और रोटी करन जाय और श्रीठाकुर जी।
आरोगन जाय सो श्री आचार्यजी महाप्रभू आप
ठाड़े ठाड़े देखें पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें ता
डोकरी सों कह्यो जो अरी बाई तेरो बड़ो भाग्य है जो
तेरी करी रोटी श्रीठाकुर जी आप आरोगत हैं तब व
ह बाई श्रीआचार्यजी महाप्रभून करि पाछें बोली
जो महाराज मैं नाहीं जानी जो राज पधारे हैं सो कोंतो
कछु दीसत नाहीं परि तुम्हारी कानि ते श्रीठाकुरजी
मान लेत हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून ने वैसे वचन
सों कह्यो जो श्रीठाकुर जी तो स्नेह के वस हैं तातें मे

री कानि सों श्रीठाकुर जी आरोगत हैं और उन की भक्ति

मान लेते हैं तब वैष्णव मुसिकाय कें चुप करि रहे॰
पाछें श्री आचार्य जी महा प्रभू आपने घर पधारे वा
बाई के ऊपर बहुत प्रसन्न भये वह बाई श्री आचार्य
जी महाप्रभून को ऐसो परम कृपा पात्र भगवदीय
ही तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं सो कहां ताई॰
लिखिये ॥ ॐ

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ८२ ॥ सम्बन्ध ॥

अब श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सेवक एक
घस्यारी तिन॰
की वार्ता
है

सो वह घस्यारी आप चरखा कातती सो सूत के
पैसा दोय तीन आवते सो ताकी जो सामग्री आव॰
ती सो ले आवती रसोई वाल भोग करि श्री ठाकुर॰
जी कों भोग समर्पती ऐसें निर्वाह करती सो एक दिन॰
ऐसो विचार कर्यो जो सूत कातें सो थोरो॰ अधिक का
ते सो इकठोरो करन जाय सो टका दश बारह को भयो कि
यो सो सूत बेचि कें टका दश बारह आये सो विनको घृत
खांड लै आई सो घर आय के मैदा छानी पाछें दूसरे दिन मे
वा के लड्डु वा सिद्ध कीये और मन में कही जो दिन दश बारह
की सामिग्री सिद्ध भई है सो दिन दश बारह कों निश्चिंत भ
ई हों सो तादिन श्री ठाकुर जी कों आरोगाई और वाकी समग्री
एक हांडी में करके मंदिर में धर राखी पाछें श्री ठाकुर जी कों

समर्प्यौ भोग सराय आरती करिकें आप महा
प्रसाद लेकें चरखा कातन लगी तब श्री ठाकुरजी
आप सिंहासन ते उतरि कें सामग्री की हांडी लेकें
सिंहासन ऊपर आय बैठे सो हांडी मेंते लडुवा का
ढिकें आप आरोगन लागे तब मन्दिर में हांडी ख
ट खटान लागी तब वा क्षत्राणीनें कही जो कहा

मूसा बिलाई होय देखूं तो सही कौन है तब वह क्ष
त्राणी कातत हुती सो तहां ते उठि कें देखन गई
मन्दिर के किवाड़ खोल कें देखें तो श्री ठाकुरजी
सिंहासन ऊपर हांडी लेकें बैठे हैं और वा मेंते ल
डुवा काढि काढि कें आरोगत हैं तब वह क्षत्रा
णी देखि कें हातों कूटन लागी और कहन लागी

जो यह सामग्री तो तुम्हारे ही लिये दिन दसबार
ह को करि राखी हुती यह तुमने कहा कीयो जो
आजही आरोगे तब श्री ठाकुर जीनें कह्यो जो
कहा तू लेखो करि कें आजही निवरी तेनें आ
लस के लिये इकठौरी करि राखी हुती सो कहा
नित्य नई न होती तब वह क्षत्राणी बोली जो म
हाराज मेरो अपराध क्षमा करो अब ते नई सा
मग्री नित्य प्रति करि कें समर्पूंगी सो श्री ठाकुर
जी याके लिये आरोगे जो यह दिन दश बारह
को निश्चत होतो तो याको आरत रहती नाहीं
और जो नित्य की नित्य सामग्री करे तो याको
आरति रहे जो मोकों सामग्री करनी है ताते श्री
ठाकुर जीने ऐसें करी ताते श्री ठाकुर जी को सा
मग्री दिन चारि ते अधिक़ी न करनी और या
क्षत्राणीनें छाती कूटी जो श्री ठाकुर जी आरोगे
ताके लिये कूटी श्री ठाकुर जी तो प्रसन्न होय के
आरोगे वाने छाती याके लिये नाहीं कूटी जो श्री
आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की तो यह मर्या
दा है जो श्री ठाकुर जी के आगें भोग धरिये सो
आरोगे उठाय धरिये सो सामग्री होय सो नइ
होगी तो श्री ठाकुर जीनें आचार्य जी महाप्रभु
के मार्ग की मर्यादा छोड़ी तो कदाचित मोहू
छोड़ें याके लिये वा क्षत्राणीनें छाती कूटी तब
श्री ठाकुर जीनें कही जो तू तो आजही लेखो क
रि निवरी नित्य नई कहा न होती तब याको नि

स्वय भयो जो मार्ग की मर्य्यादा तो श्री ठाकुर जीनें
नाहीं छोडी हो दश बारह दिन को निश्चंत होय बैठ
ती ताके लीये श्री ठाकुर जी आरोगे ताते वह सास
ऐसी परम भगवदीय ही तिन को श्री ठाकुर जी भुवा
ते एक क्षण हू स्वास्थ्य होन देत नाहीं सेवा में सदा
आसक्ति रहे सो कियो वा दसआणी सो श्री ठाकुर जी
ऐसे सानुभाव हते जो चहिये सो मांगि लेत ऐसी
कृपा पात्र भगवदीय ही तातें इनकी वार्ता को पा
र नाही सो कहां तांई लिखियें ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ४३॥ सम्बंध ११३

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून।
के सेवक सास बहू दोउ ख
त्राणी सास को नाम गो॰
रजा बहू को नाम॰
ममराई सीहनं॰
द की वासीति
नकी वार्ता
लिख्यते
॥ है ॥

मां इनके मांथे श्री आचार्य जी महा प्रभूनने श्री दामो
दर जी की सेवा पधराई हती सो इन सास बहूनते श्री ठा
कुर जी बहुत सानुभाव हते सो एक समय श्री आचार्य
जी महा प्रभू थाने स्वर पधारे तब थानेस्वर ही में रहे परि॰
सीहनन्दन पधारने जो काहे तें थानेस्वर और सीहनंद के

बीच सरस्वती नदी है सो श्री आचार्यजी महाप्रभु
सरस्वती उल्लंघन न करते काहेतें जो आप आचा
र्य हैं ताते याके घर ही में रहते सो श्री आचार्यजी
महाप्रभु याके घर पधारे तब सास ने बहू सों
कह्यो जो मैं श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन
को जात हों तू श्री ठाकुरजी की सेवा नीकी भांति
सों करियो सिंगार करि रसोई करिकें भोग समर्पि
यो इतनो बहू सों सास कहिकें श्री आचार्य
महाप्रभून के दर्शन कों गई तब बहू न्हाय कें
सेवा करन लागी जब पाक सिद्ध भयो तब श्री
ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो तब समयानुसार
भोग सरावन गई तब देखे तो सामग्री सब यथा
स्थित ज्यों की त्यों है तब बहू ने बीनती कीनी
जो महाराज मैं तो जानत कछू नाहीं और सास
ने हू मोसों कह्यो नाहीं और तुम आरोगत ना
हीं सो काहे ते अब हूं कहा करूं ऐसें बहुत बि
लबिलाय कें खेद करन लागी जो मोसों कछू
चूक परी होयगी रसोई आछी न भई होयगी त
था पात्र मांजिवे में सुद्ध न भये होयगे कछू तो
भयो होयगो जो श्री ठाकुरजी आरोगत नाहीं
पाछें भोग सराय पात्र मांजे आछी भांति सों धोय
पाछें फेरि रसोई करि दूसरी बार जब पाक
सिद्ध भयो तब श्री ठाकुरजी को भोग समर्प्यो
पाछें मन में कहन लागी जो मोते कछू चूक परी हो
यगी हों तो कछू जानत नाहीं कहा भयो ताते

श्री ठाकुर जी आरोगे न होयंगे अब आछी भांति
सों पात्र मांजि कें रसोई करी है सो अब श्री ठाकुर
जी आरोगेंगे सो जब समय भयो तब दूसरी बेर भो
ग सरावन गई तब देखे तो श्रीठाकुर जी के आगे
सामग्री यथास्थित है तब फेरि बिलबिलावे रोवे
और बीनती करे और कहे जो महाराज हों कछु जा
नत नाहीं सो तुम क्यों नाहीं आरोगत और अपने
मन में विचार करती जाय जो मोकों रसोई करनो
आवत नाहीं के मेरी देह को कछु दोष है ऐसें वि
चार करत जाय और भोग सरावत जाय और का
ती भरि आवे और कहे मेरो कौन अपराध होयगो
जो श्री ठाकुरजी आरोगत नाहीं पाछें फेरि जब पा
त्र आछी भांति सों मांजि कें तीसरीबार भोग सम
र्प्यो समय भयो तब भोग सरावन गई तब फेरि सा
मग्री यथा स्थिति है तब तो महा खेद भयो जो अ
बहू कहा करूं श्रीठाकुरजी भूखे रहेंगे सासनें तो
मोसों कछु कह्यो नाहीं ऐसें कहे तब मूर्छा खा
य कें श्री ठाकुर जी के आगे भूमि में गिर परी औ
र बहुत दुख करन लागी श्रमित बहुत भई तातें वा
को तनक निद्राहू आई सवारे सों जलहू नाहीं
लीनों सो कंठ जुदो सूखे आनि व्याकुल है कें परी
तब श्री ठाकुर जी ने वाको बहुत दुख सह्यो न ग
यो तब सिंहासन ते नीचें उतरि कें श्री ठाकुर जीने
वासों कह्यो जो तू काहे कों खेद करत है हों तो
न्यो बेर आरोगों हूं तू कछु संदेह मति करे तब

याने कह्यो जो में कैसें जानूं तब श्रीठाकुर जीनें कह्यो जो तू भूखी है कछु खायले तब कह्यो जो हूं तो न खाउंगी तब आप कों आरोगत देखूंगी तब लेउंगी तब श्रीदामोदर जीने कह्यो परि यह तो बात नाहीं तब आप जल की झारी लेकें आए और कह्यो अरी तेरो गरो सूखो जात है सू तनक जल पान तो लै तब श्री ठाकुर जी अपने श्री हस्त सों वाके मुख में जल चुवायो तब कह्यो जो सवारें तू देखेगी तो में आरोगूंगो तब उठि कें सखड़ी महाप्रसाद सब गायन कों लिवायो रसोई पोत कें रसोई की सामग्री सब सिद्धि करि सगरी रात्रि कों उत्साह सों सोय रही पाछें प्रातःकाल उठिके नित्यकर्म तथा स्नान करि तथा रसोई करि तब पाक सिद्धि भयो तब श्रीठाकुर जी कों भोग समर्प्यो जब टेरा सरकावन लागी तब श्री दामोदर जी बोले जो अब तू टेरा अब काहे कों सरकावत है अब तू देखि मैं आरोगत हों और सब सामग्री यथा स्थित रहेगी तब समराई तहां ठाढ़ी भई और श्रीठाकुर जी भोजन करत देखे तब श्री ठाकुर जी आप भोजन कीए पाछें सब सामग्री थार में ज्यों की त्यों यथा स्थित रही तब श्री ठाकुर जीनें कह्यो जो याही भांति सों तू नित्य जानि लीजियो तब समराई ने कह्यो जो हूं तो देखूं तबही मानूं ता पाछें नित्य भोग धरें तब श्री ठाकुर जी कों भोजन करत देखे तब श्रीठाकुर जी हू समराई के देखत भोजन करें जो वाहे

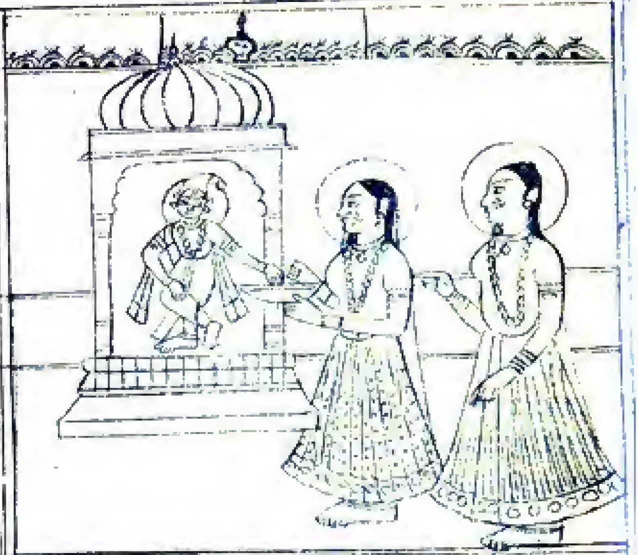

सो मांगि लैंय पाछें रामादिक कों पाछें वाकों सब
रसको अनुभव करवायौ सो समराई सकल रस-
को अनुभव करन लागी तब यह वात श्री दामोद
रजी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यौ तब
श्री आचार्य जी महाप्रभून नें समराई की सास-
गांगजा सों कही जो श्री ठाकुर जी कछु सानुभाव-
जतावत हैं तब गांगजा नें कछु बोली नाहीं पाछें
गांगजा श्री महाप्रभून सों विदा होय कें सोंहनंद-
अपने घर आई तब दूसरे दिन सासनें सेवा करि
रसोई करि कें अपनें श्री ठाकुर जी कों भोग सम
र्प्यौ जब भोग सर्यो तब वह चौंकि उठी जो श्री
ठाकुर जी आरोगे नाहीं तब सास नें कह्यौ जो मुनि

वहू श्री ठाकुर जी तौ लरिका हैं ताते तोही सौं छि-
ले होयंगे ताते रसोई तू वेगि करि तब वहू नें रसो-
ई करि भोग समर्प्यौ तब श्री ठाकुर जी नें कह्यौ-
जो मैंतो अबही आरोगौंहों तब वहू ने कह्यौ जो हूं
तौ देखूं तब मानूं तब भोग समर्पि कै कह्यौ जो महा-
राज आरोगौ तब समराई के देखत श्री ठाकुर जी-
आरोगे सो जब सास रसोई करै तब वहू कौं बुल-
वै जो थार ले जाउ सो वहू थार ले जाय कै आरो-
गावै ऐसें नित्य प्रति करै सो यह बात श्री ठाकु-
र जीनें श्री महाप्रभुन सों कही पाछें वहू श्री आ-
चार्य जी महाप्रभून के दर्शन को थाने स्वर गई
तब आय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ दर्श-
न कीयो ता समय श्री आचार्य जी महाप्रभू पा-
क करत हुते तब समराई रोटी वेलन कौं वैठी-
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने वहू सों कह्यौ
जो तेरी सब बात हमसों श्री ठाकुर जी ने कही है-
जो हम कौं समराई भलीभांति सों सुख देत है तब
समराई मुसिक्याय रही और कह्यौ जो इतनीहू
बात श्री ठाकुर जी के पेट में नाहीं ठहरी तो क-
हा करिये पाछें कह्यौ जो महाराज लरिकौं क-
हा पूछत हो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू सुनकें
बहुत प्रसन्न भये और आप श्री मुख सों कहन
लागे जो देखो इनसों कैसो सम्बन्ध है श्री ठाकुर-
जी कौ और कहें जो या वहू के ऊपर बहुत कृ-
पा है और वहू लालन कारनो सो नीकी भांति सों

करती सो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो नि
त्य सालन क्यों नाहीं करत तब बहू बोली जो ल
रिका के मन में आवे सो करिये तब यह सुनि कें
श्री आचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये याकी
सास गोरजा बहुत उत्तम सामिग्री करती ताते
श्री ठाकुर जी कों बहुत प्रिय लागती तातें इन सा
स बहुन के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते ताते इन सास
बहून कों दर्शन देवे कों श्री महाप्रभू जी लघादे
गिवे के निमित्त प्रति वर्ष आय यांके स्वर पधार
ते तब श्री आचार्य जी महाप्रभू कहते जो कहा
करिये सो सरस्वती उलंघनी नाहीं नातर इन
कों सोरू नन्द में दर्शन देती सो वे सास बहू ऐसी
परम कृपा पात्र भगवदीय ही ताते इनकी वार्ता क
हां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ४८ ॥
अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
की सेवक रुक्मा दासी रु
क्मिनी बहू जी की दा
सी हुती ताकी
वार्ता ॥

सो रुक्मा दासी अडेल में श्री रुक्मनी बहू जी की
खवासी करती सो एक समय रुक्मनी बहू जी
के गर्भ रह्यो हो तब रुक्मा दासी नें कह्यो जो अब
के बेटा होयगो तिनको नाम श्री गोकुलनाथ
जी धरूंगी सो गर्भ के दिन सम्पूरण भये तब रु

कमनीजी वहू के पेट में विथा भई तब कृष्मादा
सी नें जाय कें जोतषी सों पूछो जो अब मुहूर्त कैसो
है तब वा जोतषी नें दिन नीकौ न कह्यौ तब कृस्मा
दासी फिरि आय कें श्री रुकमनी वहूजी के पेट पे
हाथ फेर्यौ और कह्यौ जो महाराज अब तो मति
पधारौ आज कौ दिन नीकौ नाहीं तब पेट की व्य
धि सब दूर भई पाछे दिन दोय तीन बीते तब कृस्म
दासी ने विचार्यौ जो अब फेर पूछिये जो आज दि
न कैसो है तब कृष्णदासी ने फेरि जाय के पूछो
जो आज दिन कैसो है तब वा जोतषी ने कह्यौ जो
आज दिन बहुत नीकौ है तब कृस्मा दासी नें आ
य कें श्री रुकमनी वहूजी सों वीनती करिकें क
ह्यौ जो महाराज अब पोढ़िये अब बालक प्रग

द होयगो भलौ है तब वहूजी महाराज पौढ़ीं तब कृ
ष्णादासी नें वहूजी महाराज के पेट पै हाथ फेरयौ
और कह्यौ जो महाराज अब पधारिये तब श्री गुसां
ईं जी श्रीनाथ जी द्वार पधारे हुते तब पेट में व्यथा भ
ई और बालक कौ जन्म भयौ तब नामँ कृष्णादासी
नें श्री गोकुलनाथ जी नाम धरयौ ता पाछें श्री गुसांई
जी कों बधैया पठायो तब श्री गुसांई जी महाराज ४
अडैल कों पधारे तब नाम करण कीयौ तब ४
श्री वल्लभ नाम धरयौ परि कृष्णा दासी की कानि
तें श्री गोकुल नाथ जी नाम राख्यौ ऐसी कृष्णादा
सी के ऊपर कृपा थी जो जाके कहेते दोउ नाम प्रसि
द्धि भये ॥१॥

## वार्ता प्रसंग १

पाछें श्री घनश्याम जी कौ जन्म भयौ तब नाम कर
ण विचारन लागे तब श्री वल्लभ जीनें कह्यौ जो
श्री गोकुल नाथ जी नाम धरौ तब श्री गुसांई जी
नें कह्यौ जो यह नाम तौ तिहारौ है तब दोउ नाम प्र
माण कीये सो श्री वल्लभ कुल के विषें सब कों श्री
वल्लभ नाम कहत हैं और सब जगत में श्री गोकुल
नाथ जी नाम प्रसिद्ध भयो और जन्म पत्र में श्री कृष्ण
हैं सो गोप्य राख्यौ श्री गुसांई जी नें कह्यौ जो यह ना
म गोप्य रहे तातें कृष्णादासी श्री आचार्य जी महा
प्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदीय ही सो इनकी
वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ५

वार्त्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७५ ॥ ❖ ॥ ❖
॥ अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के ॥
सेवक बूला मिश्र पंडित तिनकी वार्त्ता है

सो बूला मिश्र एक कपूर क्षत्री के प्रोहित हते ताकी स्त्री कें संतति न हती तब वानें दूसरो विवाह कीयो तब ताहू स्त्री कें संतति न भई तब वहू नें वा क्षत्री सों कह्यौ जो तुम हरिवंश पुराण सुनों तब तुम्हारें संतती होयगी तब वा क्षत्री नें जाय कें बूला मिश्र सों प्रार्थना करी जो तुम मोकों हरिवंशपुराण सुनावो तब बूला मिश्र नें कह्यौ जो अब तो मोकों अवकाश नाहीं जब अवकाश होयगो तब तुम्हारे घर जाय कें सुनाउंगो तब वह क्षत्री अपने घर आयौ जब एक महीना बीत्यौ तब एक दिन अचानक बूला मिश्र वा क्षत्री के घर पधारे तब बूला मिश्र कों वा क्षत्री ने बहुत आदर सन्मान कीयो तब बूला मिश्र नें कह्यौ जो तुम दोउ स्त्री पुरुष स्नान करि कें आय बैठो तब दोउ स्त्री पुरुष स्नान करि कें आय बैठे तब बूला मिश्र ने देह शुद्ध होवे के लिये एक दान करवायो पाछें हरिवंश पुरान को एक श्लोक अंत कौ सुनायो ॥ ❖

श्लोक

इदं मयाते हरिकीर्तनं महत् श्री
कृष्णमहात्म्याय पारमुदतं श्रव-
णाय च स्त्रीषु समासुतत्फलं पद्या
पि लोकेषु स दुर्लभं महत् ॥ १ ॥

यह हरिवंश पुराण के अंत को श्लोक सो वूला
मिश्र ने वा क्षत्री कौं सुनायौ और आशीर्वाद दीयौ
और मंत्राक्षत पढ़ि कें वा क्षत्री की बड़ी स्त्री की गो
द में दीयो तब वा क्षत्री नें कह्यौ जो यह मिश्र जी तु
मने कहा कीयौ यह तौ स्त्री धर्म हूं नाहीं होत है त
ब वूला मिश्र नें कह्यौ जो श्री ठाकुर जी सर्व साम-

र्थवान हैं जो दैनहार होयगे तौ याही कौं पुत्र देयंगे
अब तौ मैंने याकौं अक्षत दीये सो तो दीये तब द
नौं कहि कें वूला मिश्र अपने घर कौं चलन ला
गे तब वा स्त्री नें बहुत वीनती कीनी जो मोकौं
सम्पूर्ण हरिवंस पुराण सुनावौ तब वूला मिश्र नें
कह्यौ जो तोकौं श्री ठाकुर जी सम्पूर्ण कौ फल

एक ही श्लोक में देहिंगे ऐसें कहि कें वूला मिश्र
सौ अपने घर कों आये पाछें ता वड़ी स्त्री कों ऋ
तु आई पाछें गर्भवंत भई तब कित्तनेक ......
...... दिन में वाकें पुत्र भयो वे मूला मिश्र श्री
महाप्रभून के ऐसे भगवदीय हे तिनके अनुग्रह
ते वाकें पुत्र भयौ हरिवंस पुराण कौ एक श्लोक
सुनेते सम्पूर्ण सुने कौ फल भयौ ताते वूला मिश्र
ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी
वार्ता कहां ताई लिखियें ॥ ❋

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ७६ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न की सेवक मीराबाई के
पुरोहित रामदास ति
नकी वार्ता
लिख्यते

सो एक दिन मीरावाई के श्री ठाकुर जी के आगें रा
मदास जी कीर्तन करत हुते सो रामदास जी श्री आचा
र्य जी महा प्रभून के पद गावत हुते तब मीराबाई बोली
जो दूसरो पद श्री ठाकुर जी कौ गावो तब रामदास
जीने कह्यो मीराबाई सों जो अरे दारी रांड यह कौन
कौ पद हे यह कहा तेरे खसम कौ मूंड हे जो जा।
आज ते तेरो मूहडो कबहूं न देखूंगो तब तहां ते स
ब कुटुम्ब को लेके रामदास जी उठि चले तब मी
रा बाई ने बहुतेरो कह्यो परि रामदास जी रहे नाहीं
पाछें फिरि कें वाकौ मुख न देख्यो ऐसें अपने प्रभु

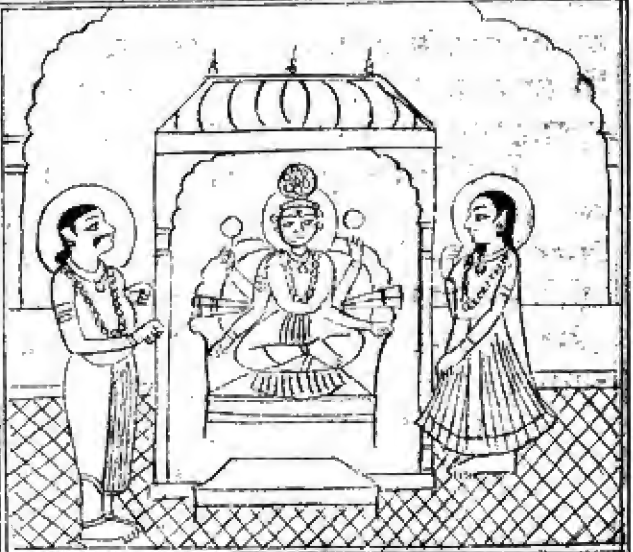

नसों अनुरक्त हुते सो वा दिन ते मीराबाई को मुख
न देख्यो वाकी वृत्ति छोड़ दीनी फेर वाके गांव के आ
गे होय कें निकसे नाहीं मीराबाई ने बहुत बुलाए
परि वे रामदास जी आए नाहीं तब घर बैठें भेट पठा
ई सोई फेरि दीनी और कह्यो जो रांड तेरो श्री आचा
र्य जी महाप्रभून ऊपर समत्व नाहीं जो हम कों ते
री वृत्ति कहा करनी हैं हमारे तो श्री आचार्य जी म
हाप्रभू सरबस्व हैं हम तो उन के हैं उन बिना हमारें
सर्वस्व त्याग करनो उनके चरणारविंद को आश्रय
राखनो ऐसो वृत्त बहुतरी होयगी वे रामदास श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय
हैं तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥५॥

॥वार्ता प्रसंग ॥ १॥ वैष्णव ॥ ६७॥

## अब श्री आचार्य जी महाप्रभू न के सेवक रामदास चौहान तिनकी वार्ता लिख्यते

सो रामदास चौहान श्री गोवर्द्धन की कन्दरामें रहते सो प्रथम श्री आचार्य जी महा प्रभू श्रीनाथ जी द्वार पधारे तब श्री गोवर्द्धन नाथ जी कौं पाट बैठाये तब रामदास कंदरा में सूं बाहिर आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें रामदास जी सों कहौ जो राम दास श्री गोवर्द्धन नाथ जी की सेवा भाव धानी सों करियों तब रामदास जी नें कहां

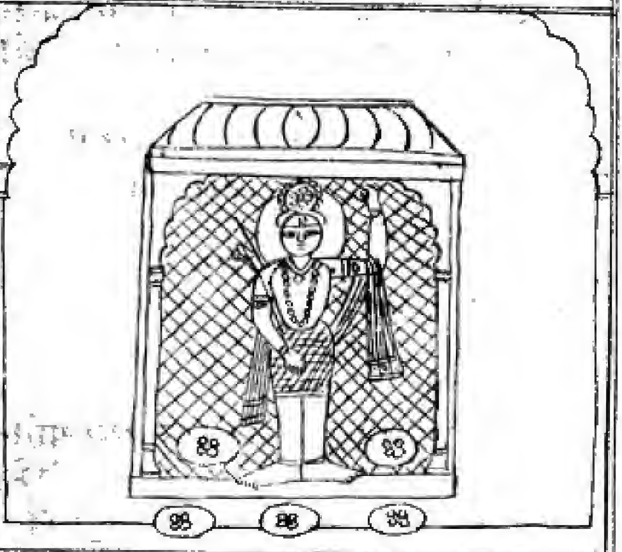

एक मन्दिर छोटो सो ईटन को चनवायो तब श्री-आचार्य जी महाप्रभून नें ता मन्दिर में श्रीनाथ जी को पधराये सो पहिलें श्री गोवर्द्धन नाथ जी श्री गोवर्द्धन पर्वत ऊपर बिराजते सो ब्रजवासी लोगन नें एक फूस की छानि करि राखी हती ता छानि में बैठते और कबहूं कबहूं दूध दही ब्रजवासी समर्पते देवदमन यह नाम कहते सो दूध दही माखन सब आरोगते तथा श्री गोपाल लाल जी यह नाम कहते सो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री गोवर्द्धन नाथ जी को मन्दिर में पधराय पीछें श्रीनाथ जी नाम प्रगट कीयो तब ते सब कोउ श्रीनाथ-जी कहन लागे वे रामदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे-ताते इन की वार्ता को पार नाहीं सो अब कहा ताईं लिखिये ॥ ❖

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४८ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्र
भून के सेवक रामानंद
पंडित सारस्वत।
ब्राह्मण ति-
नकी वा
र्ता है

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू थाने-स्वर पधारे तहां रामानन्द पंडित के घर पधारे सो रात्रि को उहां रहे हुते सो जब पिछली रात्रि भई

तब रामानन्द परिडत नें अपनी स्त्री सों कह्यौ॰
जो वेगि उठि गोबरि और लै चौका कौं कहियेगो
नातरि सवारें ये वैष्नव उठेंगे सो लै जायंगे तब य
ह बात श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सुनी तासमय
श्री आचार्यजी महाप्रभू हाथ पांव धोय वे कौं॰
उठे हुते तब अति क्रोधवंत भये तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें रामानन्द परिडत कौं बुलायौ तब
आपने गडुआ मेंते जल लै कें वाकें हाथ में मेलि
कें मंत्र पढ़ि कें वा जल कौं वा ऊपर छिरक्यौ और

आपने श्री मुख सों कह्यौ जो में तेरौ त्याग कीयो॰
तेनें मेरे सेवकन सों यों कह्यौ जो तू वेगि उठि गो
बर और ले नातर वैष्नव उठेंगे तौ लै जायंगे तौ तू

रसोई को सामान कहांते करोगो ऐसो कहिकें तहांते
उठि चले परंतु एक रहे नाहीं सो थानेस्वर ते एक गा
वना ऊपर महा नाथ है सो तहां आये फिर वहां
आप ने स्नान कीयो सो जब श्री आचार्य जी महाप्र
भू रामानन्द पंडित के घर ते चलन लागे तब थाने-
स्वर के वैस्नव ने बहुत बीनती कीनी परि श्री आचा
र्य जी महाप्रभू रहे नाहीं और कह्यो जो मैं इहां रहि
कें जलपान न करूंगो ना पाछें काहू ने रामानन्द
पंडित पास नाम पायो हो तिनसों श्री गुसांई जी
गंगोत्र्य कहते तब श्री आचार्य जी महाप्रभू थाने
स्वर पधारे पाछें रामानन्द की अवस्था विकल-
भई तब बाजार में जो वस्तु देखतो सो खातो कछु
मर्यादा न रही परि इतनी मर्यादा तो करे जो खाय
सो समर्पि कें खाय यों कहे जो श्री गोवर्द्धननाथ
जी तुम आरोगियो इतनो कहि कें मुख में मेले
सो एक दिन हलवाई की दुकान पे जलेबी बहुत
आछी देखी सो जलेबी दाम ने लेकें कह्यो जो श्री
नाथजी तुम आरोगियो ऐसें कहि कें खांई ता स
मय श्रीनाथजी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों क
ह्यो जो आजतो हमनें जलेबी बहुत आछी आरो
गीहैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो
कोंने समर्पी हैं तब श्री नाथ जी नें कह्यो जो तुम्हा
रे सेवक रामानन्द ने समर्पी हैं तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून नें कह्यो जो महा राज मैंने वाको त्याग
कीयो तुम वाके यहां को आरोगे हो तब श्री नेप

जीने कह्यौ जो तुम मोकों काहू कों सोंपत हौ हम तुम्हारी कानि ते अंगीकार करत हैं तुम हम कों जाकों सोंपत हो ताकौ तुम त्याग करत हो परि हम तुम्हारे सोंपे कों नाहीं छोड़त हैं तब श्री आचार्य जी महा प्रभू चुप करि रहे तब यह बात श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास हरसानी सों कही तब दामोदर दास हरसानी नें बीनती की जो महाराज आप या कों अंगीकार कब करोगे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास सों कह्यौ जो यासों अब वैष्णव कौ अपराध पड़्यो तो हम या कों लक्ष जन्म पाछें अंगीकार करेंगे श्रीनाथ जीने अंगीकार कीयौ तौहू परि इतनौ अंतराय भयो ताते वैष्णव सों बोलनो सो विचार के बोलनों विना विचारें सर्वथा न बोलनों ऐसें वैष्णव कों रहनों ॥ ❖

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ८९ ॥ ❖

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक विष्णुदास
छीपी तिनकी वार्ता
लिख्यते ॥

सो विष्णुदास वृद्ध भए तब श्री गोकुल में श्री गुसांई जी की बैठक के द्वारे की द्वार पाल की करते और कोई पंडित आवते तो तासों विष्णुदास पूछते जो तुम क्यौं आए हो और कहां जात हो तब उन पंडितन नें कह्यौ जो हम श्री गुसांई जी के पास वा

द करन आए हैं तब बिष्णुदासने उन पंडितन सों
कह्यो जो तुम मोसों वाद करलेउ तब बिष्णुदास
उन पंडितन सों वाद करिकें निरुत्तर करदेते व्या
करण शास्त्र पुराण इतिहास सब शास्त्रन के वच
न लेकें निरुत्तर करि देते तब ने पंडित आपने म
न में समाधान करिके पाछें फिर जाते और ते क
हतें अपने मन में जो जिनके द्वार पालक ऐसे हैं
तो तिनके धनी की कहा बात होयगी सो श्रीगु
सांईजी लों काहू पंडित कों न जान देते द्वार ही
तें पंडित निरुत्तर होय कें फिरि जाते तब एक दि
न श्रीगुसांईजीनें कह्यो जो कोई पंडित अब वाद
करन कों नाहीं आवत सो काहेतें तब वैष्णवननें

कह्यौ जो महाराज उन पण्डितन कों विष्णुदास॰
निरुत्तर करदेत हैं ताते पण्डित अपने मनमें समा
धान करिकें फिर जात हैं तब श्रीगुसांई जी श्री
मुख सों कह्यौ जो विष्णुदास तुमकों तो श्रीमहाप्र
भून की कृपातें ऐसी सामर्थ्य है जो तुम पंडितन
कों जीत कें निरुत्तर करदेत हो परि उन शास्त्रगों
कों अति कष्ट होत है ताते अब जो कोई पंडित
बाद करन कौं आवै ताकों हमारे पास आवन॰
दीजो तब उन पंडितन कों॰॰ आन देने विष्णुदा
स श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा
पात्र भगवदीय हे उन कों ऐसी सामर्थ्य हुतो जो
पंडितन कों निरुत्तर करि दृथगा करते ॥

## वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और एक भट्ट हुतो सो श्रीगुसांई जी सों कह्यौ
जो तुम्हारे सेवकन कों मैं जिमाउंगो तब श्री गुसांई
जी चुप करि रहते सो वह श्री गुसांई को सुमरहु
तो श्री घनश्याम जी को नतोइ हुतो सो एक दिन॰
वा भट्टनें श्रीगुसांई जी कों न्योत्यो तब श्रीगुसांई
जी उन के घर भोजन कों पधारें तब तहां विष्णुदा
स जलपान को गडुआ लेकें साथ गये तब श्रीगु॰
सांई जी भोजन करिकें उठे तब श्री गुसांई जी कों
विष्णुदास ने शुद्ध आचमन करवायो पाछें श्री गु
सांई जी मन्दिर में पधारें तब विष्णुदास कों श्री॰
गुसांई जीने आज्ञा दीनी जो तुम प्रसाद लेकें चाणि
आइयो सो जा थार में श्री गुसांई जी भोजन कीय

इतने ता थार मैंनें प्रसाद आपनी पातरमें धरि कें-
थार धोय धर्यो पाछें-आप प्रसाद लेबे कों बैठे न
य भट्ट जी और सामिग्री लेकें आए तब विष्णुदा
सनें कह्यो जो मोकों नाहीं चहियत तब भट्टनें कह्यो
जो कुछ काहे कों लेत हो नांकी सामिग्री लेउ तब विष्णु
दासनें कह्यो जो मोकों नाहीं चहियत मेरी पातरमें डारो
गेतो मेरी पातर छूय जायगी तब भट्ट जी अति क्रोध
वंत भये पाछें उन भट्ट जीनें श्रीगुसांई जी सों कह्यो

तो तुम्हारे शूद्र ने मोसों ऐसें कह्यो जो मेरी पातर
में मति डारो और डारोगे तो मेरी पातर छूय जायगी
तब श्री गुसांई जी चुपकरि रहे पाछें श्रीगुसांई-
जी मुसिक्याय कें भट्टजी सों कह्यो जो तुम हमारे
सेवकन कों जिमावत कहत इनें सो तुमसों ह-
मारो १ शूद्र न जिमायो गयो और सेवकन कों कैं

में जिमाऔरो नवभट्ट जी मृसिक्याय के चुप क
रि रहे सो वे विष्णुदास श्री आचार्य जी महाप्रभु
न के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हैं ताते इन
की वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां ताईं लिखें
॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ५० ॥ सम्बंध ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक जीवनदास खत्री
कपूर मोहनन्द के वा
सी तिनकी वा र्
ता लिख्यते ०

सो एक समय मोहनन्द के सब वैष्णव मिलि
कैं श्री आचार्य जी महा प्रभून के दर्शन कों अडे
ल आवन लगे सो मार्ग में एक दिन मजल जाय रु

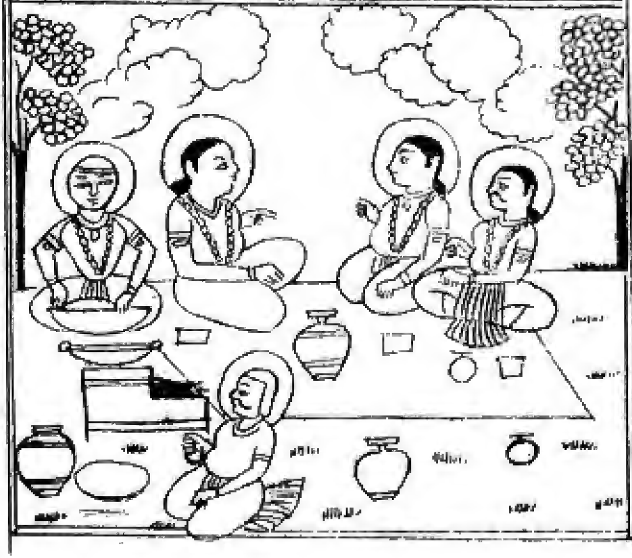

तें तहां सब वैष्णव अपने अपने चौका देत हुते तासमय मेह चढ़ि आयौ तब वैष्णवन नें कह्यो जो वर्षा आई ऐसो कार्य भयौ तब जीवन दास बोले जो तुम चिंता मति करौ तब जीवनदास नें श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ नाम लैकें मेह कौं आनि दीनी जो तो कौं श्री आचार्य जी महाप्रभून की आनि है जो तू बर्षे मति तब वह मेह रहि गयौ पाछें सब वैष्णवन नें भोग समर्पि महाप्रसाद लीयौ तहां रात्रि कौं सोये ता पाछें सब वैष्णव अडेल आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ दर्शन कीयौ पाछें यह बात सबन नें श्री गुसांई जी सों कही जो महाराज एक दिन सब हम वैष्णव पाक करत हुते ता समय मेह चढ़ि आयौ तब जीवन दास नें आप की आनि दैकें ऐसें कहि कें मेह कौं बरज्यौ तब यह सुनिकें जीवन दास सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पूछौ और कह्यौ जो वैष्णव हमारी तैनें आनि दीनी और कदाचित वर्षा होती तौ तू कहा करतौ तब जीवन दास नें कह्यौ जो महाराज वह कौन है जो आपकी आनि दिये उपरांत बरषे वह इन्द्र की कहा सामर्थ्य है तब यह बात जीवनदास की सुनिकें श्री आचार्य जी महाप्रभू मुसिक्याय कें चुप कर रहे तब उन जीवन दास पै श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी कृपा हुती उन जीवन दास कौं श्री आचार्य जी महाप्रभून के स्वरूप कौ ऐसो ज्ञान हुतौ सो आनि दैकें मेह बरज्यौ तिनकी कहा कहिये ........

तब वैष्णव बन ने कह्यो ये बड़े भगवदीय हैं वे जी
वनदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे प
रम कृपा पात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता अब
कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्र० ७ वैष्णव ७४॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक भगवानदास सारस्व
त ब्राह्मण तिनकी वा-
र्ता लिख्यते

सो उन भगवानदास ने श्री आचार्यजी महाप्रभू
न की सेवा नीकी भांति सों कीनी तब श्री आचार्य
जी आप भगवानदास के ऊपर बहुत प्रसन्न भये
तब भगवानदास कों श्री आचार्यजी महाप्रभून ने
आप कृपा करि कें अपनी श्री पादुका जी को से
वा दीनी जो तू इनकी सेवा नीकी भांति सों करियो
तब भगवानदास श्री पादुका जी की सेवा नीकी भां
ति सों ऐसी भांति सों सेवा करते जो श्री ठाकुर जी
इनसों सानुभाव हते बातें करते सो एक समय श्री
आचार्यजी महाप्रभु भगवानदास के घर पधारे
सो जा ठौर श्री आचार्यजी महाप्रभु बिराजते ता ठौ
र नित्य उठि कें सवारें भगवान दंडौत करते सो या
तें वा ठौर पर कोऊ पाव न धरतो ऐसो उनको भा
व हो सो ऐसे भगवानदास श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वा
र्ता कहां तांई लिखिये ॥७॥

॥ वार्त्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५२ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक भगवानदा
स श्रीनाथजी के भी
तरिया तिनकी
वार्त्ता है ॥

सो एक समय श्रीनाथजी के बालभोग की सामग्री करत भगवान दास सों कछु सामग्री दाझी

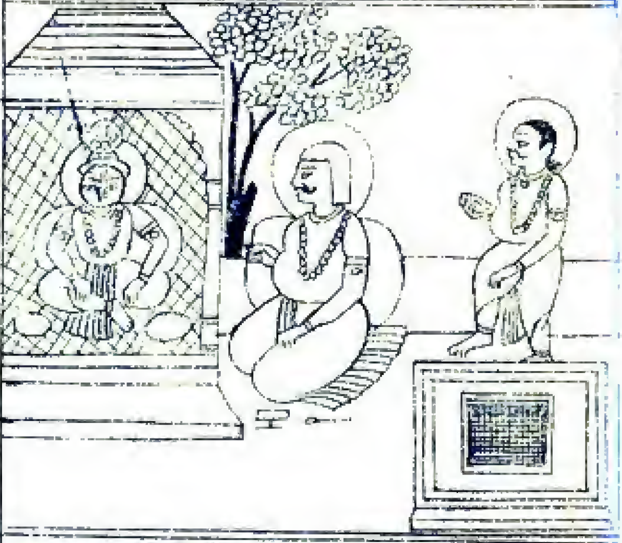

तब श्रीगुसांई जी भगवान दास के ऊपर बहुत खीजे और भगवान दास को सेवा ते भिन्न बैठारे सो भगवानदास गोविंदकुंड ऊपर आय अच्युत दास के पास आय बैठे पाछें श्री गुसांई जी आप

स्नान करिवे कों गोविंद कुंड ऊपर पधारे और भगवान दास नौ पूछरी कों और अच्युत दास के पास इने सो भगवानदास ने सब समाचार कहे पाछे तब श्री गुसांई जी गोविंद कुंड स्नान करिकें अच्युतदास को दर्शन दैन पधारे तब श्री गुसांई जी कौ दर्शन करिकें अच्युत दास की आंखन में सूं आंसून कौ प्रवाह चल्यो सो देखिकें अच्युत दास कों श्री गुसांई जीने अच्युतदास सों पूछो जो अ

च्युतदास तुमकों ऐसो दुःख कहा है तब अच्युत दास ने श्री गुसांई जी सों कह्यो जो महाराज श्री आचार्य जी महाप्रभून कों तो श्री नाथ जी ने आज्ञा दीनी है जो तुम जीवन कौ ब्रह्म सम्बन्ध करावो

सो साठ लाख जीवन कों तुम द्वारा अंगीकार करनो है और श्री आचार्य जी महाप्रभूनें तो तुमकों सोंपे हैं और तुम जीवन को अपराध देखन लागे और जीव तो सदा अपराधही ते भर्यो है और जीवन को अंगीकार करनों तुम्हारे हाथ है तातें अब जीवन को अंगीकार ...... कैसें होयगो तब श्रीगुसांई जी यह बात सुनिकें आप भगवानदास कौ हाथ पकरि कें श्री गोवर्द्धन पर्वत ऊपर ले चढ़े और श्री गोवर्द्धननाथ जी की सेवा जा गीतिसों करते ता रीति सों सेवा करन की आज्ञा दीनी और कही जो अबते सावधानी सों सेवा करियो और सामग्री आछी भांति सों करियो तब भगवानदास ने तासमय श्री गुसांई जी के आगे नयो पद करिकें गायो ॥ सो पद ॥ राग सारंग

श्री विट्ठलेस चरण कमल ॥ सो यह पद गायो सो सुनिकें श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये पाछें भगवानदास सावधानी सों सेवा करन लागे तातें भगवानदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहां ताई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५३ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक अच्युतदास मनोडिया ब्राह्मण तिनकी वार्ता है ॥

सो वे अच्युतदास गोनसी गंगा ऊपर रहते तहां चक्रतीर्थ है तहां रहते सो नित्य शृंगार के समय श्रीनाथ जी के दर्शन कौं आवते सो दर्शन करि के अपने स्थल कौं आवते सो उन अच्युतदासजीनें श्री नाथ जीकी तीन परिक्रमा दंडौती करी हुती तब श्री गुसांई जी अच्युतदास के ऊपर बहुत प्रसन्न भए और श्रीगुसांई जी अपने श्री मुख सों कहते जो अच्युत दास बड़े भगवदीय हैं और बड़े महा पुरुष हैं सो वे अच्युतदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के तथा श्री गुसांई जीके ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥॰

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५७ ॥॰

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक अच्युतदास गौड ब्राह्मण तिनकी वार्ता लिख्यते

सो वे अच्युतदास बड़े भगवदीय हैं और श्री आचार्य जी महाप्रभून नें इनके माथे श्रीमदन मोहन जीकी सेवा पधराई हुती आप कौं पाट बैठारे हुते सो अच्युतदास श्री मदन मोहनजीकी सेवा नीकी भांति सों करते तब श्री मदन मोहनजी आप अच्युत दास सों सानुभाव हुते बातें करते ऐसे अच्युतदास ऊपर श्री ठाकुर जी ऐसी कृपा करते और एक दिन अच्युतदास श्रीनाथजीके

दर्शनकों आवत हुते तब श्री गोवर्द्धन नाथ जीकि
एक दंडौती परिक्रमा करते ऐसे भगवदीय है औ
र जब श्री गुसांई जी के पास आवते तब श्री गुसांई
जी अच्युत दास कों दंडौत न करन देते और कहते

जो ऐसे श्री आचार्य जी महा प्रभून के कृपापात्र भ
गवदीय हैं तातें इनकों दंडवत न करन दीजिये पा
छें जब श्री आचार्य जी महा प्रभूनने लौकिक री
ता आसुर व्यामोह लीला दिखाई तब अच्युत
दासनें श्री मदन मोहन जी कों श्री आचार्य जी म
हाप्रभून के घर पधराये आप श्री बद्री नाथ जी के
दर्शन कों उठि गये तब उहां जायके श्री बद्रीनाथ
जी के दर्शन करि कें अन्नजल को त्याग करि कें

अपनी देह छोड़ी पाछें श्रीमदनमोहन जी कौंक-
रिके गोपीनाथ जीने श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के पास
पधराए ते अच्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के ऐसे भगवदीय हे जिन श्री आचार्यजी महा
प्रभून कौ स्वरूप साक्षात करि जान्यो और उन-
की श्री महाप्रभून के ऊपर बड़ी आसक्ति हुती जो
परोक्ष भए पाछें अन्नजल को त्याग कीयो तब
देह छोड़ी भक्ति मार्ग को स्वरूप केवल बिरहात्म
किदे सो वे अच्युत दास ऐसे भगवदीय हे तातें
उनकी वार्ता कहांताई लिखिये॥

॥ वार्ताप्रसंग॥१॥ वैष्णव॥ ७४॥

अब श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सेवक अच्यु
त दास सारस्वत ब्रा
ह्मण तिन की
वार्ता हे॥

सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभून के संग
अच्युतदास नें पृथ्वी परिक्रमा कीनी हुती सो श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें अच्युतदास कौ अपनी
पादुका जी की सेवा दीनी सो अच्युतदास नें आ
ति उत्तम रीति सों श्रीपादुका जी की सेवा कीनी
तातें श्री आचार्य जी महाप्रभू अच्युत दास कौं
नित्य दर्शन देते और जो श्री आचार्यजी महाप्रभू
ननें सन्यास ग्रहण कीयो सो केवल उनके भावार्थ
कीयो तब एक वैष्णव सों श्री आचार्य जी महा

प्रभून नें कह्यौ जो एक डोंगी कासी को भाडें करलें
उ तब वह वैस्नव डोंगी भाडें करि लाये ताके ऊप
र श्री आचार्य जी महा प्रभू चढ़ि कें बनारस पधारे
तहां सन्यास डेढ़ महीना तांई राख्यो तब वह वैस्न
व जो काशी में गयो हो सो कासी ते कंढा में आयो
तब अच्युतदास तथा सब वैस्नवन सों कह्यो
जो श्री आचार्य जी महा प्रभून नें सन्यास ग्रहण कि
यो फेरि कासी पधारे सो उहां डेढ़ महीना तांई रहे
पाछें असुर व्यामोह लीला दिखाई तब अच्युत
दास नें वा वैस्नव सों कह्यो जो तो को भ्रम भयो हो
यगो तब वा वैस्नव नें कह्यो जो में श्री आचार्य जी
महा प्रभून के साथ हतो सो कासी ते देखि कें अब

ढ़िहो आयो हो तब अच्युत दास ने कह्यो जो ऐसो प्रभु
कबहू न करें जो जीवन कौ आसुर व्यामोह लीला॰
दिखावत हैं तब अच्युत दास ने मन्दिर के किवाड़ खो
लि कें वा वैष्णव को श्री आचार्य जी महाप्रभून के॰
दर्शन करवाये तब देखें तो श्री आचार्य जी महाप्रभु॰
बिराजे हैं और पोथी देखत हैं तब वा वैष्णव ने दंडो
त कीनी तब श्री आचार्य जी महाप्रभु ने कह्यो तुम॰
कछु सन्देह मति करौ यह प्रागट्य लौकिक रीति सों
देह धरे की लीला है और सिंहासन बैठिकें अलौकि
क लीला नित्य है ताते यह लीला आवरण अमना
सपट है ताते तहां आयो है ताते सन्देह न करो यह
आसुर व्यामोह लीला है सो श्री गुसांई जी सर्वोत्तम
में लिखे हैं जो प्राकृतानुकृत व्याज मोहित असुरमा
नुष: मनुष्य देह धरे ताकी यह लीला है सो अच्युत
दास ऐसे स्वरूप निष्ठ के जिनको श्री आचार्य जी
महाप्रभून के स्वरूप को ऐसो दृढ़ विश्वास हो॰
ते अच्युत दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे
कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहांलों
है लिखिये ॥५॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ४८ ॥ सम्बन्धी ॥ १४०

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेव
क नारायणदास अम्बाले
के वासी हुते तिनकी
वार्ता लिख
ते हैं ॥

सो वे नारायणदास देशाधिपती के चाकर हुते तिनकों राजद्वार को काम बहुत हुतो ताते श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आय सकते नाही परि अंतःकरन में श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन की आतुरता बहुत जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों कब जाउंगो परि आय सकते नाही ताते नारायणदास ने एक चाकर राख्यो ताकों महीना रुपैया ४) चारि को कीनो और वासों कह्यो जो तेरो यह काम है जो मोकों छिनछिन में सुरत दिवायो करि जो भैया जी श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों कब चलोगे यह कहि कें सुनाउ जो हम कों श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन की सुधि रहे सो वह चाकर योंही कह्यो करे

तब नारायणदास अपने कार्य में बैठे तब आगें
आय कें ठाडो होयकें एक१ घडी उपरांत कहेजो
भैया जू श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों
कब जाउगे ऐसेंही नित्य प्रति कहे और नाराय
णदास श्री आचार्यजी महाप्रभून को भेट बहुत
पठावने नारायणदास ऐसे भगवदीय हे सो उन
कौ चित सदा श्री आचार्यजी महाप्रभून के चर
णारविंद में रहतौ ताते श्री आचार्यजी महाप्रभू
बहुत ही प्रसन्न रहते हे नारायणदास ऐसे कृ
पापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई
लिखिये ॥ ✻

वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्णव ॥५७॥ सम्बन्ध ९२६

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक नारायणदास मा
ट मथुरा में रहते ति
नकी वार्ता ✻
लिख्यते

सो नारायणदास कों श्री मदनमोहनजीनें आज्ञा
दीनी हुती जो वृन्दावन में अमुकी ठौर हों सो वहां
सों कादि कें मोकों बाहिर पधराउ तब नारायण
दास जायकें श्री मदन मोहनजी कों बाहिर पधरा
यकें पाछें जब श्री गोपीनाथजीने श्री मदन मोह
नजी कों पाट सिंहासन बैठारे तब कितनेक दिन
तांई नारायणदास नें सेवा कीनी तब उनके पाछें
उनको कोउ नहुतो ताते बङ्गाली गौडिया सेवा

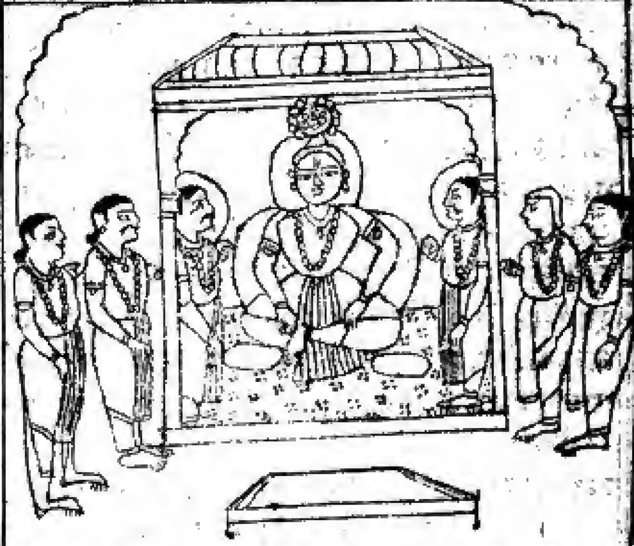

करन लागे श्रीगोपीनाथजी ने पाट बैठारे तातें सब
कोउ दर्शन कौं आवहें ते नारायणदास ऐसे भग
वदीय हे तिनकौं श्री मदनमोहनजी आप कृपा क
रिकें वृन्दावन पधारे श्री मदनमोहनजीने श्रीआचा
र्यजी महाप्रभून कौ सेवक जानि कें नारायणदास
के ऊपर कृपा कीनी तातें वे नारायणदास श्रीआ
चार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय
हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥ *
वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५८ ॥ सम्बंध १२० ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून *
के सेवक नारायणदास बी
हानटटु के वासी ति

नकी वार्ता है

सो वे नारायणदास ठट्ठे के पात्साह के दीवान कुल कु ली हुते जो नारायणदास दीवान करे सो हाय पाछे कि तनक दिन में वह पात्साह नारायणदास के ऊपर कोप्यो तब नारायणदास को पकस्यो तब बहुत मास्यो और बन्दीखाने में दे दीयो पाछे पचास लाख रुपैया वाके माथे दंड को कीयो सो दिन प्रति पांच हजार भरे और जा दिन रुपैया न भरे ता दिन नरायनदास के पांचसौ कोरड़ा मारने पात्साह ने असो बंधान कीयो तब एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक दोउ भाई ब्राह्मण तिननें अपने मन में बिचार कीयो जो ठट्ठे में नारायणदास दीवान हैं सो हम उनके पास चलें हम को अपनी कन्या को विवाह करनों है ताते जो वे कछु देंय तो कन्या को विवाह करें सो असो बिचार कें वे दोउ भाई अपने घर ते ठट्ठे को चले सो ठट्ठे में जाय कें पहुंचे तब वहां जाय कें सुन्यो जो नारायणदास तो बन्दीखाने में पस्यो है तब वे दोउ भाई अपने मन में बिचार करन लागे जो अब कहा करिये असो बिचार इन दोउ भाईन नें कीयो जो अब यहां सो चलिये तब प्रातःकाल यह बात नारायणदास ने सुनी जो द्वे दोउ भाई श्री आचार्य जी महाप्रभू के सेवक गाम में आये हैं सो उननें सुनी जो नारायणदास तो बन्दीखाने में परे हैं ताते अब यहां से प्रातःकाल चलेंगे तब नारायणदास ने उनके पास मनुष्य पठायो और कहिवाय पठाई जो तुम आये सो

मेरो बड़ो भाग्यहै मेरे पास तुम प्रातःकालहोय
के दर्शन अपने मोकूं देके जैयो तब वे दोउ भाई
प्रातःकाल उठि देह कृति करि तिलक मुद्रा क
रि नित्य कर्म सों पहुंच के श्री आचार्य जी महाप्र
भून को चरणामृत और महाप्रसाद लैके जहां ना
रायणदास बन्दीखाने में हुते तहां दोउ भाई नारा
यणदास के पास जाय मिले तब नारायणदास वे
उनकों देखि कें परम आनन्द भयो और बहुत प्र
सन्न भए तब उन दोउ भाईनिनें चरणामृत और म
हाप्रसाद नारायण कों दीनों तब नारायणदास ने
लीनों और कह्यो जो मोकों बन्दीखाने में वैष्ण
वन को दर्शन भयो तब नारायणदासनें श्री आचार्य

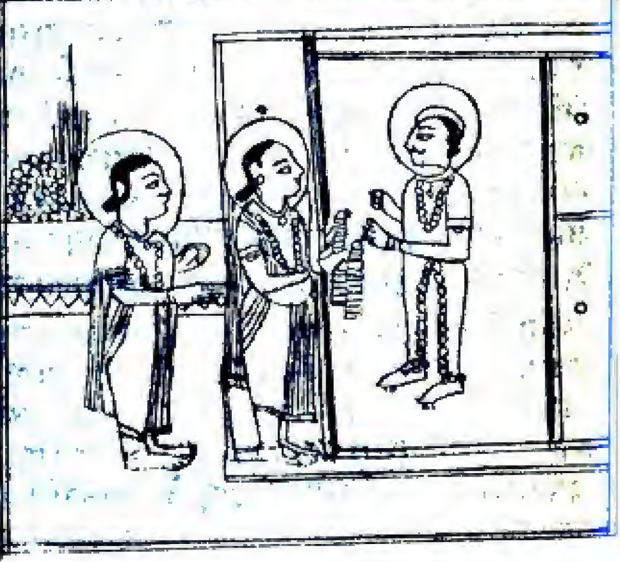

जी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे पाछें भगवद्‌वार्त्ता के प्रसंग करन लागे इतने में नारायणदास के घरते पांच हजार रुपैयान की थैली आई सो द्वारपालनें थैली के ऊपर मौहर छाप करि के नारायणदास के पास पठाई तब नारायणदास ने वे पांचों थैली उन दोउ भाइन कों सौंपि दीनी और दंडौत कीनी और कह्यौ जो अब तुम वेगि पधारो और श्री आचार्यजी महाप्रभून कों मेरी दंडौत कहियो और तुम अपनी कन्या को विवाह या द्रव्य ते भली भांति सों करियो तब वे दोउ भाई ब्राह्मण नारायणदास ते विदा होय के चले तब इतने में पात्साह बोल्यौ जो पांचों थैली नारायणवारी लावो तब दरवान बोल्यौ जो पांचों थैलीन ऊपर मौहर छाप करि कें नित्य नारायणदास के पास पठावत हैं त्योंही पठाई हैं तब पात्साह बोल्यौ जो खजानची कों बुलावो तब मनुष्य जाय कें खजानची कों बुलाय लाये तब खजानची आगें आय ठाढ़ो भयो तब पात्साह नें खजानची सों पूछ्यौ जो क्यों रे तेरे पास नारायणदास के पास ते पांचों थैली आई हैं तब खजानची नें कह्यौ जो साहब मेरे पास तो नाहीं आई तब पात्साह कों बहुत क्रोध भयो और कह्यौ जो नारायणदास कों बुलावो तब नारायणदास कों बन्दीखाने में ते बुलाय सो लाय कें पात्साह के आगें ठाढ़ो कीयो तब नारायणदास ने पात्साह ने पूछ्यौ जो नारायणदास आज थैली क्यों नाहीं आई पाछें थोड़ो सो गाढ़ो कोरड़ा करि कें

कोरड़ा वारी बुलायो और पातसाह नें पांचसौ कोर
ड़ा कौ हुकम दीयो और पातसाह बोल्यो जो नारायण
दास सांच कहि जो आज थैली क्यों नाहीं आई
द्वारपाल नें तो मुहर छाप करि कें तेरे हवाले कीनी
और तैंने यह कहा कीयो तू सांच कहि नाहीं कोर
ड़ा लागत हैं तब नारायणदास सलाम करि कें बो
ल्यो जो हजरत आज मेरे गुरू भाई आये हुते सो

वे पांचो थैली उनकों दीनी और मैनें अपने मन में
कह्यो जो मैं आज मार खाय रहूंगो परि यह घड़ी
कहां है तब पातसाह चुप करि रह्यो पाछे एक घ
ड़ी बिचार कें कह्यो जो स्याबास तू अपने गुरू के
मार्ग में ऐसो सांचो है सो मैं तेरे उपर बहुत प्रसन्न

तब पात्साह ने वाही समय बेडी कटवाइ के वा-
ही समय घोडा तथा सिरोपाउ मगायकें नारायण
दास कों पहरायो घोडा दीयो और निवाज्यो तब
फेरि कें अपनो कृष्ण कुल्ला दीमान राख्यो जैसो पह
ले हुतो वैसेंई कीयो काम सब सोप्यो और नारायन
दास के माथे दंड कीयो हतो सो सब माफ करि कें
सिरोपाव पहराय कें कह्यो जो जा घर होय आउ मो
सिरोपाव पहरिकें घोडा ऊपर चढि कें नारायणदा
स घर कों गये सो वे दोउ भाई वैस्नव गाम में ही
हते सो वे दोउ भाई वैस्नव सुनि कें नारायणदास
सों मिलिबे कों आये तब नारायण दास उनसों
मिले भेंटे और कह्यो जो मेरे गुरू के सेवक आये
तो मैं छूट्यो तब उन वैस्नवन ने कह्यो जो श्री आ
चार्य जी महाप्रभून की कृपा ते वेगि छूटे तब ना
रायणदास ने १००० हजार मोहरन की एक थै-
ली वैस्नवन के हाथ श्री आचार्यजी महाप्रभून
कों भेट पठाई पाछें वे दोउ भाई उहां सों चले सो
कितनेक दिन में श्री गोकुल आये तब श्री आचा
र्यजी महाप्रभू श्री गोकुल में हुते सो उन दोउ भा
ई वैस्नवन ने आय के श्री आचार्यजी महाप्रभून
को दर्शन कीयो और नारायणदास की हजार मो
हरन की थैली आगें राखी तब श्री आचार्य जी म
हा प्रभून ने नारायणदास के कुशल समाचार पू-
छे तब उन वैस्नवन ने सब समाचार कहे तब श्री
आचार्य जी महाप्रभू आपनो श्री मुख सों कहें जो

जाकों वैष्णव ऊपर ऐसो दृढ़ स्नेह है ताकों कहा करि-
वेंारहै पाछें वे वैष्णव ब्राह्मण श्री आचार्यजी-
महाप्रभून ते बिदा होय कें अपने घर को गये सो
बेटी को विवाह आछी भांति सों कीयो और यह
लेउन कों नाम नरिया हतो सो सेवक भए पाछें श्री
आचार्यजी महाप्रभूननें नारायणदास नाम ध-
र्यो जाको ऐसो मन होय तापे श्रीठाकुरजी ऐसे
कृपा करें प्रभूजी को नाम भक्त वत्सल है सो अपने
को थोरे ही में कृपा करतहैं सो वे नारायणदास-
ऐसे कृपा पात्र हते इनकी वार्ता कहां तांई लि-
खियें ॥ ✣

॥वार्ताप्रसंग॥१॥ वैष्णव ॥५८॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक एक क्षत्राणी
अकेली सीहनन्द
मे रहती तिन
की वार्ता

सो वा क्षत्राणी कें श्री नवनीत प्रिया जी बिराजे हैं
श्रीठाकुरजी सानुभाव हैं सो यह बाई अकिंचन-
सेवा जब करि पहुंचे तब सूत काते तामें जो कछु
बढ़नी आवे तासों निर्वाह करें सो घर के द्वारे का-
छिल तरकारी बेचन आवे तब श्री ठाकुरजी मन्दि-
र मेंने पुकार कें कहें अरी अमुकी तरकारी बिक-
ने आई है तूले ऐसें श्रीठाकुरजी कहें तब वह-
क्षत्राणी सब भांति की तरकारी लेहि सो केतिक

तौ कछू समर्प्यै लौकिक रसोई में ढाँकि कें समर्प्यै
और कबहूं काछिन कौ शब्द श्री ठाकुरजी न सु-
नें और वह काछिन आगें निकस जाय तब वह
बाई सामग्री कछू लैन सकै तब श्रीठाकुर जी वा
सों बहुत रारि करें जैसे लौकिक लरिका रार करें
तैसे श्रीठाकुर जी वा क्षत्राणी सों झगरौ करें और
एक दिन कछू पकवान बाल भोग कौ होय न आ-
यौ तब रोटी घी सों चुपरि कें राती के लिये ढाँकि
राखी सो जब रात्रि आधी भई तब श्रीठाकुर जी
बोले वा क्षत्राणी बाई कौं जगाई और कहें जो
हौं भूखौ हौं तब वा बाई नें कह्यौ जो लालजी प-
कवान तौ कछू नाहीं है और रोटी घृत सौं चुपरि
धरी है तब श्री ठाकुर जी कहें जो भलौ रोटी ही
लाउ तब वा बाई ने रोटी आगें आनि राखी तब
श्री ठाकुर जी ने वा बाई सों कह्यौ जो तू मोकों रो-
टी की तुतुरी कर कें दै तब वह बाई श्री ठाकुरजी
के हस्त में देन जाय तब अपने श्री हस्त में लेकें
कतरि कतरि कें आरोगत जाय पाछें जब पान क-
रकें पोढ़े परि वा क्षत्राणी के मन में क्षोभ भयौ त-
हुन सौ और कह्यौ जो सवारे उधारे लाय कें पक-
वान करि धरोंगी जो रात्रि कौं श्री ठाकुर जी नें फी-
की अकेली रोटी आरोगी पाछें दूसरे दिन पकवा-
न करि धर्यौ तब रात्रि कौं श्रीठाकुर जी नें मांग्यौ
तब पकवान लैकें आगें धर्यौ तब श्री ठाकुर जी
आरोगे तब कह्यौ जो अमुकी तैं नें पकवान तौ ध-

सो परि मोकों पकवान वीच रोटी की लुनरी अ
ति अद्भुत स्वाद लगी तब वा सन्यासी ने कह्यो
जो महाराज में कहा करूं मेरें कोई कमावनरे
हारो तो है नाहीं मैंतो अकेलो हों मोते तो कब
हू कछु होय आवत नाहीं तब श्री ठाकुरजीनें
वा सन्यासी सों कह्यो जो तू नित्य पकवान काहे
कों करत है तू मोकों रोटी चुपरि कें धरि राख्यो क
रि मोकों तो तेरी रोटी बहुत रुचित है तातें तू सं
कोच मति करे हमकों तो तेरी रोटी चुपरी बहुत
स्वाद लगत है पाछें वह रोटी और राखतो सो श्री
ठाकुर..जी आरोगते वह सन्यासी श्री आचार्य
जी महाप्रभून को ऐसो कृपापात्र भगवदीय हो।

ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां तांई
लिखिये ॥ ❋

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैस्नव ॥ ६० ॥ ✦ ॥ ✦

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक दामोदरदास का
यस्थ सेंभरवाड़े के वा
सी तिनकी वा
र्ता है ॥

सो तिनको सेव्य ठाकुर श्री कपूर राय जी सो ब-
हुत गौर स्वरूप हुतो तिनके पास श्री नवनीत प्रि
या जी बैठते सो एक समय दामोदरदास की स्त्री
वीरबाई ताके गर्भ रह्यो पाछे प्रसूत भई सो पुत्र
जन्म भयो सो घर की बहू बेटी सब प्रसूत के काम
काज करन लागी सो श्री ठाकुर जी की सेवा में वि
लम्ब भयो वीरबाई प्रसूतक में ते बहुत कहे जो
कोऊ सेवा में न्हाउ श्री ठाकुर जी की सेवा में अबे
र होत है पर कोऊ नाहीं न्हाय तब श्री ठाकुर जीने
वीरबाई सों कह्यो जो न्हान करि कें सेवा क्यों
नाहीं करत है तब वीरबाई प्रसूतक में ते उठि कें
श्री ठाकुर जी सों कह्यो जो महाराज मेरी तो यह अ-
वस्था है मोको तो सेवा में आपनो नाहीं प्रसूतिका
में हूं अपरस छूट जाइगी तब श्री ठाकुर जी मदा
[illegible]ने वीरबाई सों कह्यो जो मोकों तो सेवा में वि
लम्ब होय है मोको इतनी अबार भई है और को
ऊ न्हात नाहीं ताते तू ही न्हाउ तब वह वीरबाई-

श्री ठाकुरजी के आग्रह ते उठिके प्रसूनका में ते न्हा-
यके काछ देकें श्री ठाकुर जी की सेवा करिकें पाछें
भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय कें अ-
नोसर करिकें आप भोजन करिके खाट में सोय
रही श्री ठाकुर जी की आज्ञा सों सेवा कीनी सो ऐसे
ही चालीस दिन तांई नित्य करती तब श्री ठाकुरजी
ने कह्यो जो तैंने मेरी आज्ञाहू मानी और वेद मार्ग
की रीतिहू राखी याते श्री ठाकुर जी बहुत प्रसन्न
भए तब चालीस दिन बीते तब शुद्ध स्नान करकें
सेवा करन लागी पहले पात्र वस्त्र सब अपरस
दूर कीने और दूसरे सब नये मंगवाए पाछें भली
भांति सों सेवा करन लागी याते वह वीर बाई श्री
आचार्यजी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भग-
वदीय ही ताते इनकी वार्ता अब कहां तांई लि
खिये ॥ ❈

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६१ ॥ ❈

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक स्त्री पुरुष दोऊ
क्षत्री हते तिन की ॥
वार्ता लिख्यते

सो वे स्त्री पुरुष दोऊ जने सीहनन्द में आय रहे सो
वह घर निपट छोटो हतो ताते श्री ठाकुर जी ता स
मय बैठिने सो आधी कोठरी में तो रसोई करते औ
र आधी में रहते और सैया को ठौर न हुतो ताते एक
बांस को मेंडा कर राख्यो हुतो ताके ऊपर श्रीठाकु

श्री पौढ़ने आप .... स्त्री पुरुष दोउ जने रात्र
कों आगन मे सोय रहते ऐसें करत तब चातुर-
मास के दिन आये तब मेह बरसतो तोउ वे आ-
गन में सोय रहते परि भीतर न सोवते तब श्रीठा-
कुर जी भीतर सों बोलते जो अरे असुका अमु-
की हो तुम भीजत क्यों हो भीतर क्यों नाहीं सोव-
त हो बाहिर काहे कों पौढ भीजत हो तातें तुम भी-
तर आवो और हम तो ऊंचे मेंडा पर हैं तुम नीचे-
क्यों नाहीं सोवत हो तब वा बाइयाणी ने कही जो
महाराज तुम तो ऊंचा मेंडा उपर पौढत हो और
में नीचे कैसें सोऊं तब श्रीठाकुर जी प्रसन्न होय
के कहे जो कछू बाधक नाहीं तुम कछू संकोच
मति करो हम तुमते प्रसन्न होय के कहत हैं तातें

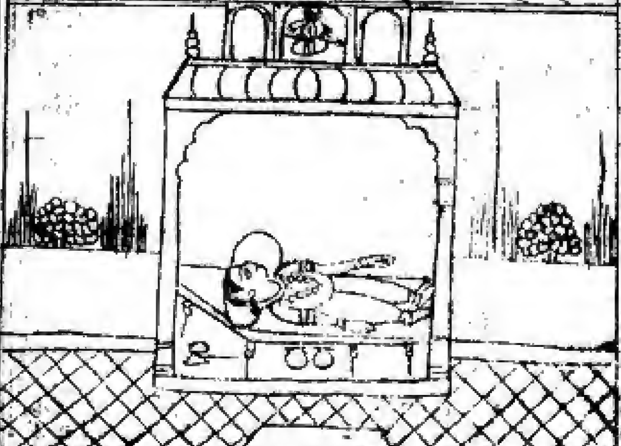

तुम भीतर खुसीसों सोय रहो पाछें तब वे दोउ-
जने भीतर सोवन लागे परि ऐसी भांति सों सोव
ते मति कहूं स्वास बाजे ऐसे सावधानी सों सोव
ते सो वे स्त्री पुरुष श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐ
से कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता क-
हां तांई लिखिये ॥ ❀

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ६२ ॥
अब श्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक सूतारिको
गाम अडेल में रह
ते तिनकी वा-
र्ता है ॥

सो उन सूतार ऊपर श्री आचार्यजी महाप्रभू
बहुत कृपा करते वा सूतार के ऐसो नेम हुतो जो
श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन बिना एक
दिना न रहतो ताते वह सूतार सब घर कौ काम-
काज छोड़ि कै नित्य श्री आचार्यजी महाप्रभून
के दर्शन कों आवतो तब घर के मनुष्य दुख पा-
वत पावते ताके लिये श्री आचार्यजी महाप्रभू
आप वा सूतार के घर पधारते तासों श्री आचार्य
जी महाप्रभू बहुत वार्ता करते और श्री आचार्य-
जी महाप्रभून की माता इल्लमागारुजी सो श्री आ-
चार्यजी महाप्रभून की माता खीजती और कहे
जो तुम ऐसे अनुचित कों करत हो ऐसे उचि-
त नाहीं ऐसे कहि कै इल्लमागारुजी बहुत रिस

करती परि श्री आचार्य जी महाप्रभू चौथे पल रे दिन तो पधारते ऐसी कृपा श्री आचार्य जी महाप्र भू या सुतार के ऊपर करते सो वह सुतार श्री आ चार्य जी महाप्रभून को ऐसी कृपा पात्र भगव दी हो ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६३ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू न के सेवक एक क्षत्री हते ताको अन्य मार्गीय सों स्नेह हतो

सो वा क्षत्री सों अन्य मार्गीय को स्नेह हतो सो एक दिन वह क्षत्री अन्य मार्गी के घर गयो तब वा क्षत्री सो कह्यो जो तुम आज यहांई पाक करियें तब वाके आग्रह ते वा क्षत्री वैष्णव ने पाक यहां ई कीयो तब पाक करिके वा अन्य मार्गीय ठाकु र के आगे श्री नाथ जी को नाम लेकें भोग सम र्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय वाको प्रसाद दीयो पाछें आपने लीयो पाछें वहांई विश्राम कीयो सो निद्रा वस भए तब वा अन्य मार्गीय के सेव्य स्वरूपने स्वप्न में कही जो आज तो हम भूखे रहे तब वा अन्य मार्गीय ने कह्यो जो तुम कों तो वा वैष्णव ने पाक भोग समर्प्यो हो और तुम भूखे कैसें रहिगये तब उनके सेव्य श्री ठाकुर जी ने कै ही जो वह तो श्री नाथ जी आप आरोगे हैं हम को तो श्री नाथ जी ने आंखि ते न देखेो . . . . .

तब वह अन्य मार्गीय को मित्र सोयो हो ताको जगायो तब वह जाग्यो तब सब समाचार कहे तब वा क्षत्री ने कह्यो जो मेंतो सों के ताकवार कह्यो ओर श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक होय रहो याही के लिये हमारे प्रभूजी श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ने सेवक के हाथ को आरो पत हूं पाछे वह अन्य मार्गीय सब कुटुम्ब सहित श्री आचार्य जी महा प्रभून की सरण आये सब भांत सेवक भयो पाछे वाके स्वरूप को श्री आचार्य जी महा प्रभूनने पंचामृत सों स्नान करवायो पाछे पाट बेठारे ना पाछे भोग समर्प्यो समयानुसार भोग सराय के सब वैष्णवन को बुलाय महाप्रसाद लिवायो पाछे वह अन्य मार्गीय श्री ठाकुर जी की सेवा भली भांति सों करन लाग्यो पाछे वह क्षत्री भलो वैष्णव भगवदीय भयो वा क्षत्री वैष्णव के संग ने भलो भगवदीय भयो ताने संग करनो तो वैष्णव को करनो भगवदीय को करनो वह क्षत्री वैष्णव श्री आचार्य जी महा प्रभून को ऐसो कृपा पात्र भगवदीय हो ताते इनकी वार्ता कहा ताई लिखिये ॥ ❖

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६५ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक लघु पुरुषोत्तम दास क्षत्री तिनकी वार्ता

सोवे लघु पुरुषोतम दास श्री आचार्यजी महाप्रभून कों तथा श्री नाथजी कों एक सार जानते श्री आचार्य जी महाप्रभून को स्वरूप साक्षात् पुरुषोतम करि जानते लघु पुरुषोतमदास को श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऊपर बड़ी आसक्ति हुती ताते श्री महाप्रभू जी लघुपुरुषोतमदास के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते लघु पुरुषोतम दास दूसरो स्वरूप जानते नाहीं श्रीठाकुर जी कों तथा श्री महाप्रभू जी कों एक जानते वे लघुपुरुषोतमदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ❖

॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैष्णव॥ ६५॥ ❖

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक कविराज भाट तिनकी वार्ता है॥ ०

सोवे कविराज भाट ब्राह्मण हुते सो तीन भाई हुते सो तीन्यों भाई श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे उनको नाम समर्पण करवायो पाछें श्री नाथ जी के सन्निधान बहुत कवित्त पढ़े नये २ कवित्त करिकें श्रीनाथ जी के सन्निधान कवित्त सुनावते पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून के कवित्त बहुत कीये ताते श्री आचार्य जी महाप्रभू कविराज भाट के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते सोवे कविराज भाट श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय

हे तातें इनकी वार्ता कहां लोंई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६६ ॥ ❋

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
नके सेवक गोपालदास
ठौरा के वासी तिनकी
वार्ता लिख्यते ॥

सो गोपालदास के कीये छन्द बहुत हैं सो गोपालदास को श्री आचार्य जी महाराज के ऊपर बहुत आसक्ति हुती सो एक समें गोपालदास अडेल आये सो दूसरे दिन श्री आचार्य जी महाप्रभून को जन्मोत्सव हुतो सो श्री आचार्यजी महाप्रभू मार्कन्डेय पूजा कीं नैहैं [illegible] ता समय गोपालदास नें एक नयो छन्द करि कें गायो ॥ सो पद

राग बिलावल

माधौ मास भरि वैसाख श्री वल्लभ वीर जन्म लीयो ॥ यह सुनिकें श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए पाछें गोपालदासनें बहुत छन्द कीये सो वे गोपालदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ❋

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६७ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्र
भून के सेवक जनार्दन
दास चोपड़ा क्षत्री
तिनकी वार्ता

एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री नाथ जी
द्वार पधारे हुते पाछें श्री गोकुल आये तव जना
र्दन दास ने श्री महा प्रभून कौ दर्शन कीयो तव क
ह्यो जो ये साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम हें ईश्वर हें त-
व जनार्दन दास नें वीनती कीनी जो महाराज मो-
को शरण लीजिये तब श्री आचार्य जी महा प्रभू
न ने जनार्दन दास को आज्ञा दीनी जो स्नान करि
कें आउ तव जनार्दन दास स्नान करिकें आयो
और दंडवत कीनो और वीनती कीनी जो महा
राज मोको नाम समर्पण करवाईये तव श्री आचा
र्य जी महा प्रभून नें श्री नाथ जी के सन्निधान ज
नार्दन दास को समर्पण करवायो पाछें श्री आ-
चार्य जी महा प्रभून की कृपा ते जनार्दन दास म-
हा वैष्णव भयो सो श्री आचार्य जी महाप्रभू ज
नार्दन दास के उपर बहुत कृपा करते ये जनार्दन
दास श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृपा
पात्र भगवदीय हें सो इनकी वार्ता कहांतांई
लिखिये ॥ ❋

❋ ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६८ ॥

अब श्री आचार्य जी महा
प्रभून के सेवक गडु स्वा
मी मनोडिया ब्राह्म
ण तिन की वा
र्ता हे ॥

सो वे गडु स्वामी आप स्वामी कहावते सो एक स-

मय श्री आचार्यजी महाप्रभू वृन्दावन में पधारे
हुते तब गडु स्वामी कों आज्ञा भई श्री ठाकुरजी
ने कृपा करि कें रात्रि कों स्वप्न में जनायो जो सवारे
श्री आचार्यजी महाप्रभू इहां पधारेंगे सो तू इन
की सरण जैयो तू सेवक हूजियो तब श्री आचार्य
जी महाप्रभू आप सवारे पधारे तब गडु स्वामी
स्नान करिकें जहां श्री आचार्यजी पधारे हुते त
हां गये तब जाय कें गडु स्वामी नें दंडोत कीनी
और बीनती करिकें यह कह्यो जो महाराज मो
कों सरण लीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्र
भू मुसिक्याय कें कहें जो तुम तो आप स्वामी हो
तुम कों सेवक कैसे करियें तब गडु स्वामी नें श्री
आचार्यजी महाप्रभून सों बीनती कीनी जो महा
राज मोकों भगवद आज्ञा भई है जो तू श्री आचा
र्यजी महाप्रभून की सरण जैयो ताते महाराज
मोकों सरण लीजिये तब श्री आचार्यजी महा
प्रभून नें गडु स्वामी कों नाम दीयो पाछें निवेदन
करवायो ता पाछें जो गडु स्वामी ने जो सेवक कीये
हुते तिन सबन कों श्री आचार्यजी महाप्रभून
पास नाम दिवायो पाछें ये गडु स्वामी बड़े भगव
दीय भये श्री आचार्यजी महाप्रभू आप गडु स्वा
मी के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते सो वे गडु स्वामी
ऐसे भगवदीय हैं ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६६ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्र

भून के सेवक कन्हैया सा
ल खत्री तिन की
वार्ता है ॥

सो उन कन्हैया साल खत्री के ऊपर श्री आचा
र्यजी महा प्रभू बहुत प्रसन्न रहते बड़ी कृपा कर
ते श्री आचार्यजी महाप्रभून नें आप कृपा करि
कें अपने ग्रंथ कन्हैया साल कौं पढाए सोई ग्रं
थ कन्हैया साल के पास नें श्री गुसांई जी नें पढ़े
सो श्री आचार्य जी महा प्रभून की कृपाते सब
स्फुर्द रूप भये सो वे कन्हैया साल खत्री श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भग
वदीय है ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये॥

॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैष्णव॥७०॥

अब श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सेवक नरहर
दास गौडिया तिन
की वार्ता है

सो एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून नें नरहर
दास के घर श्री मदन मोंहन जी पाट बैठारे हुते
सो श्री मदन मोंहन जी की सेवा नरहर दास नें नी
की भांति सों कीनी पाछें सरीर जब पर्यो तब सेवा
न होय आई तब नरहर दास नें श्री ठाकुर जी
श्री गुसांईजी के घर पधराये सो श्री गुसांईजी
श्री रघुनाथ जी कें पधराये सो श्री गोकुल चन्द्र
मा जी के पास जूरे बैठत है न्यारे सिंघासन ऊपर

विराजते सो श्री गुसांईजी नरहर दासके ऊपर ब
हुत प्रसन्न भये थे ऐसे भगवदीय हे और नरहर
दासनें आपने मन में बिचारी जो श्री ठाकुर जी के
घर्‍ह न सुख पावेंगे श्री गुसांईजीके घर सुख पा
वेंगे सोवे नरहरदास श्री गुसांईजी के ऐसे परम
कृपापात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहां तों
ई लिखिये ॥+

॥वार्ता प्रसंग ॥१॥वैष्णव ॥७१॥
अब श्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक चादराय
गादास तिनकी वा
र्ता लिख्यते

सो बादरायण दास और उनकी स्त्री मोरबी में
रहते सो बादरायणदास को पहिलो नाम बादा
हतो सो एक समय आछे भट द्वारिका श्रीरणछोड़
जी के दर्शन को जात हुते सो मोरबी में रात्रि को व
से सो बादरायण दास नें उनकों राखे तब बाद-
रायण दास नें उन पास नाम पायो पाछें आछे भ
ट के पास श्री भागवत श्रवण कीयो तब श्रीभाग
वत सम्पूरण करि कें बादरायण दास ते विदा हो
य कें आछे भट द्वारिका श्री रणछोड़ जी के दर्श
न को गये तब कितनेक दिन पाछें श्री आचार्य-
जी महा प्रभू आप द्वारिका श्री रणछोड़ जी के-
दर्शन कों पधारे हुते तब मोरबी में उतरे सो बाद
रायण दास और उनकी स्त्री दोउ जनेननें श्री आचा
र्यजी महा प्रभून के पास फेरि कें नाम पायो पा
छें समर्पण करवायो पाछें श्री आचार्य जी मह
प्रभू मोरबी में दिन द्वै रहे ता पाछें श्री आचार्य
जी महा प्रभू आप श्री रणछोड़ जी के दर्शन को
पधारे तब बादरायणदास और उनकी स्त्री श्री
आचार्य जी महाप्रभून के संग गये तब दोउ-
स्त्री पुरुष श्री आचार्य जी महा प्रभून की सेवा में
रहे सो उन दोउन नें ऐसी सेवा कीनी जो श्री-
आचार्य जी महा प्रभू उनके ऊपर बहुत प्रसन्न
भये तब याको नाम बादरायणदास धर्यो ता
पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू द्वारिका सों चले
तब ये दोनों जने श्री आचार्य जी महा प्रभून सें

साथ गये सो मोरवी लों साथ आए पाछें श्री आचा
र्यजी महाप्रभून ते आज्ञा मागि के मोरवी में रहे पा
छें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप श्री गोकुल पधा
रे वे बादरायण दास श्री आचार्यजी महाप्रभून के
ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता क
होंनाई लिखिये ॥ +

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७२ ॥
अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक सद्दू पांडे मानिक
चंद पांडे इनकी स्त्री
तथा नरो बेटी आ
न्यौर में रहते
हुते

सो जब श्री आचार्यजी महाप्रभू पृथ्वी परिक्र
मा करत झारखंड में पधारे तब श्री नाथजीने
श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कही जो तुम मेरी से
वा को चलावो व्रज में श्री गोवर्द्धन पर्वत है तहां
हम तीन दमन हैं देवदमन, नागदमन, इन्द्रदमन
तिनके मध्य में हम देव दमन हैं सो देवदमन मेरो
नाम है सद्दू पांडे को बडो भाई मानकचन्द पांडे
है तहां हम प्रगट भये हैं तब श्री आचार्यजी महा
प्रभू परिक्रमा झारखंड में राखि के व्रज को पाउं
धारे सो सेवक हू पांच सात साथ हैं दामोदरदा
स हरसानी कृष्णदास मेघन रामदासजी माधौ
दास एम्हन इत्यादिक श्री आचार्य जी महाप्रभून

कै सेवक सब आन्योर में आए सो सन्ध्यासमय
श्री आचार्य जी महाप्रभू आप सद्दू पांडे के घर पां
व धारे सो एक बड़ो चोंतरा सद्दू पांडे के घर के द्वारे
हुतो ताके ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभू विराजे
तब सद्दू पांडे ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों क
ह्यो जो स्वामी कछु खाउगे तब श्री आचार्य जी म
हाप्रभून ने कह्यो जो हम तो कछू न खांयगे तब
कृष्णदास मेघन ने कह्यो जो ये तो आपने सेवक
के हाथ को लेत हैं बिना सेवक तो ये काहू के हा
थ को लेत नाहीं इतने में श्री गोवर्द्धन पर्वत से
श्रीनाथ जी पुकारे जो नरो मेरो दूध लाउ तब न
रो ने कह्यो जो महाराज आज तो हमारे पाहुनें आ
ये हैं ताते दूध नाहीं तब श्री नाथ जी ने कह्यो जो

तेरे पाउंने आए हैं सोतो भली भई हम कहा करें
परि मेरो दूध तो लाउ तब नरो बोली जो बारी लाल
लाई तब नरो कटोरा भरिकें लेगई श्री नाथ जी
कों प्यायो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर
दास सों पूछी जो दमला ते कछु सुन्यो तब श्री आ
चार्य जी महा प्रभून सों दामोदर दास ने कह्यो जो
महाराज यह शब्द और भारद्वाज को शब्द सब
मिलत है सो ऐसो जान्यो परत है जो इहांई प्रगटे
हैं सवारें चलेंगे तब इतने में नरो दूध प्याय कें आ
ई तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने नरो सों पूछी
जो तू कहां गई हुती और कहा लेगयी हुती तब न
रो बोली जो राज देव दमन कों दूध प्याय आयी
हों तब नरो पे मांग्यो जो यामें दूध है तब नरो नें
कह्यौ जो सेवक है तब श्री आचार्य जी महा प्रभून
नें कह्यो जो यामें ते बच्यो है सो हमकों दे तब नरो
बोली जो महाराज घर में बहुत दूध है तब सद्दू पां
डे नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों बीनती कीनी
जो महा राज हम हारे आप जीते अब हम कों ना
म दीजिये तब श्री आचार्य जी महा प्रभून के मानि
कचन्द तथा सद्दू पांडे तथा इनकी स्त्री तथा नरो
ये सब सेवक भए उनके ऊपर आपने हाथ फेरो
और नाम दीयो ता पाछें वह दूध लीयो पाछें उ
नके हू घर को दूध दही अंगीकार करो सो ऐसे भ
ले भगवदीय हैं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून
नें सद्दू पांडे सों पूछी जो कहो पांडे यहां ऊपरके

व दमन प्रघट भए हैं सो कौन भांति सों प्रघट भये हैं तिनको प्रागट्य तुम हमसों कहो सो श्री आचार्यजी तो साक्षात ईश्वर हैं आपही करत हैं और आपही फुरत हैं सो काहे ते जो आप जीव के ऊपर कृपा करिबे के लीये तब सद्दू पांडे ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यौ जो महाराज एक हमारे गाव कौ ग्वाल हतो सो सब गांव की गायन कौं चरावतो सो सब प्रकार सद्दू पांडे नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें कह्यो। सो सब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सुन्यौ सो श्री आचार्य जी महाप्रभू तो आप पूरणपुरुषोत्तम हैं आपही जानत हैं सो वे सद्दू पांडे तथा मानिक चन्द पांडे और सब श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हैं जिनके पास ते श्री आचार्य जी महाप्रभू तथा श्री नाथजी जो चहिये सो मांगि लेते और आप जिन के घर पधारते ॥ ४

## वार्ता प्रसंग ॥१॥

और एक दिन श्री नाथजी इन के घर दूध पीवे कौं सोने को कटोरा ले आए तब श्री नाथजी ने नरो सों कह्यौ जो दूध लाउ तब नरो तो वा कटोरा में दूध डारत जाय और श्री नाथजी आप आरोगत जाय सो दूध पीके श्री नाथजी आप तो पधारे और कटोरा वहांई भूलि आए तब सवारे भए पाछें मंगला आरती के समय भीतरियानें देख्यो तो मन्दिर में कटोरा नाहीं तब इतने में नरो एक

दोना लै आई और कह्यो जो यह कटोरा सेठ पत्रि
को लरिका भूलि आयो है तब सबजनें बहुत प्र-
सन्न भए वह नरो ऐसो भगवदीय हो ॥ ७

## वार्ता प्रसंग २

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून सों
श्री नाथजी ने कह्यो जो मोकों गाय मगाय देउ -
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने दामोदर दास -
हरसानी सों कह्यो जो श्री नाथ जी नें गायन के ली
ये आज्ञा ... दीनी है सो श्री आचार्य जी महाप्र
भून नें आपने हस्त को कड़ा सुवर्ण को दीनो और
दामोदरदास हरसानी सों कह्यो याके दामनकी
गाय लै आवो तब दामोदर दास ने यह कड़ा स
दू पांडे को दीनो और कह्यो जो याकों बेचि के या
के दामन की गाय लै देउ श्री आचार्य जी महाप्र
भून नें गाय मगाई है तब सदू पांडे ने कह्यो जो -
श्री आचार्यजी महाप्रभू आप गायन को कहा क
रेंगे तब दामोदर दास ने कह्यो जो श्री नाथ जी नें
श्री आचार्य जी महाप्रभून सों गाय मंगाई है ताके
लिये उनने कह्यो है तब सदू पांडे नें कह्यो जो मेरे
यहां गाय है सो कौन की है वह तौ श्री आचार्य
जी महाप्रभून की है जो चहिये सो लीजिये तब दा
मोदर दास नें कह्यो जो श्री आचार्य जी महाप्रभू
न की ऐसी ही आज्ञा है तातें याकों बेचि के गा
य लै देउ तब सदू पांडे नें वह कड़ा बेचि के ताकी
गाय ही लै दीनी सो ठाकु गाय श्री आचार्य जी म

हाप्रभून नें श्री नाथजी कौं समर्पी पाछें दस गाय
मरु पाडे नें श्री नाथजी कों भेंट कीनी पाछें सब-

वैष्णवन कौं खबर भई जो श्री नाथ जीने गायन
के लिये श्री आचार्य जी महाप्रभून सों आज्ञा
करी है सो वैष्णवन नें गाय पठाई काहू नें दोय
काहू नें चारि काहू नें दश पठाई ऐसें करत दो
यसै के आसरे गाय भेली भई सो श्री नाथ जी
कौं गाय बहुत प्रिय हैं तबसे श्री नाथजी कौ ना-
म गोपाल श्री आचार्यजी महाप्रभून ने धर्यो है
तब श्री गुसांई जीने गोपाल नामते गोपालपुरगां
व बसायौ ताही ते सूरदास जीने श्री आचार्य जी
महाप्रभून के प्रगट गोपाल नाम कीये हैं प्रथम

गाय सुर गायैा सो वे सब पांडु तथा नरोसव को
उ श्री आचार्यजी महा प्रभून के ऐसे कृपा पात्र
भगवदीय है सो इनकी वार्ता को पार नाहीं ता
ते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ ३॥ वार्ता प्रसंग ॥ वैस्नव ॥ ७३॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक नरहर दास स
न्यासी तिनकी वार्ता
लिख्यते है

सो एक वेंना कोठारी हुतो ताने प्रथम नरह
रदास सन्यासी के पास नाम पायो हुतो सो एक
समय श्री आचार्यजी महा प्रभू आप द्वारिका प
धारे हुते तब नरहर दास सन्यासी और वेना को
ठारी श्री आचार्यजी महाप्रभून के साथ हुते सो
द्वारिका गये तहां श्री आचार्यजी महा प्रभू आप
नरहर दास सन्यासी के ऊपर बहुत प्रसन्न भये
तब नरहर दास सन्यासी नें वीनती कीनी जो महा
राज मेरे ऊपर कृपा करियै तो मैं प्रार्थना करत हों
तब श्री आचार्यजी महाप्रभू मुसिकाय कें चुप
कर रहे पाछें कहें जो कहा प्रार्थना करत है त
ब नरहर दास सन्यासी नें कह्यो जो महाराज वेना
कोठारी को सरण लीजिये तब श्री आचार्यजी
महाप्रभून नें कृपा करिकै नाम दीयो समर्पण
करवायौ पाछें वे नरहर दास सन्यासी के ऊपर
प्रसन्न बहुत भये सो वे नरहरदास सन्यासी श्री

आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखियै ॥वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैस्नव ॥ ७४ ॥ सं॰ ४५७ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक गोपाल दास जटा
धारी श्री नाथ जी
की खवासी
करते
हुते

सो श्री नाथ जी उनसों सानुभाव हुते और गरमी के दिन में श्री नाथ जी को भोग आवतो तब गोपालदास आप नेत्र मूंदि के पंखा करते तब रात्रि को श्री नाथ जी जगमोहन में पौढ़ते तहां गोपालदास ठाड़े होय कें आंख मूंदि कें पंखा करते चार पहर ठाड़े रहते परि देह कौ लस कछु बाधा न करतो रात्रि के विषे श्री ठाकुर जी के श्री स्वामी जी के वचन सुनतो तब आप कहते · · · जो गोपालदास आंख खोल देउ तेरो पखा कैसो तब गोपालदास कहते जो महाराज मोकों श्री आचार्य जी महाप्रभून की आज्ञा नाहीं ताते में क्यों करि खोलों तब कबहू श्री नाथ जी अपने श्री हस्त सों गोपालदास के मुख में मेलते ऐसी कृपा करते तब ऐसे करत कितनेक दिन बीते तब एक दिन गोपाल दास ने बीनती करिकें कही जो

महाराज मोकों पृथ्वी परिक्रमा करिवे की आज्ञा
दीजिये मेरो मनोरथ पृथ्वी परिक्रमा करिवे को
है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो अब
श्रय करिये पाछें गोपालदास आज्ञामागि कें
पृथ्वी परिक्रमा कों गये तब और वैस्नवनने क
ह्यौ जो महाराज ऐसे कृपापात्र को ऐसो मन क्यों
कर होय तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ
जो यह गयो तौहूं परि जाय सकैगो नाहीं मज
दोयच्यारि जायगो तब याकों बिरह होयगो ता
बिरह करिकें याकी देह छूटैगी तब सब वैस्नव
ननें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों वीनती कीनी
जो महाराज इन की देह या भांति क्यों पड़े तब
श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कह्यौ जो महद अ
पराध इन श्री ठाकुर जी सों बिगाड़्यो ताकों नाम
महद अपराध कहिये इनसों एक महद अपरा
ध पड़्यो है तासों इनकी यह गति भई तब सब
वैस्नवन ने पूछ्यो जो महाराज इनकी देह या भां
ति सों पड़े तो सही परि महद अपराध काहे सों
कहियतु है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
कह्यौ जो यह गोपालदास पहिलें श्री नाथ जी
के बाग की रखवारी करतो सो एक श्री ठाकुर
जी को सेवक ब्राह्मण को लरिका हुतो सो एक
कों वा बाग में ते फूल चुराय कें लै जातो सो एक
दिन गोपालदास ने वाकों पकर्‌यो सो वह
भाज्यो सो वह अपने मन्दिर में दुबक्यो सो गो

पालदास नें जाय कें वाकें मुक्की की मारी सो वान
अब श्री ठाकुर जी कों वह बात सुधि जो याकों महद अप
राध पर्यो है ताते पृथ्वी परिक्रमा की इच्छा भई है
सो गोपाल दास पांचचारि मजल गयौ पाछें विर-
ह भयौ सो विरह करिकें गोपाल दास ने देह छोडी
तब यह बात श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सुनी त
ब अपने श्री मुख ने कहे जो गोपाल दास के परलो
क में तो हानि नाहीं जो यह श्री नाथ जी के चरणान
पास पहुचौ ताते भगवदीय को सर्वथा बिगाड़ न
करनों भगवदीय को बिगाड़ करै तो या भांति सो
होय भगवदीय के बिगाड़े ते गोपाल दास की यह
गति भई वे गोपाल दास श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इन-
की वार्ता अब कहां तांई लिखिये ॥+
॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ७५॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक कृष्णदास
ब्राह्मण तिनकी
वार्ता है

सो वे कृष्ण दास वा गाम में रहते परि अकिंचन
रहते सो एक समय वैष्णव दस पन्द्रह मिलिकें श्री
आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन को अडेल को-
जात हुते सो जा गाव में कृष्ण दास रहते ता गाम में
आए सो कृष्णदास के घर आए तब कृष्णदास-
के घर हुते नाहीं कछू कायार्थ के लिये कौसती

न उपर गये हुते और कृस्नदास की स्त्री घर हुती
तब वा स्त्री नें उन वैस्नवन कों साष्टांग दंडवत-
कीनी श्री कृस्न स्मरण कहि बहुत आदर सन-
मान करिकें अपने घर में बैठारे पाछें मन में बिचा
रे जो अब कहा करिये तब सुधि आई जो वह-
बनियां नित्य टोक करत है जो तू मोसों मिलि-
तू मांगेगी सो देउंगो सो आज वासों सीधो साम
ग्री लाउं ऐसें बिचार के स्त्री चली सो वा बनियां
की हाट पे गई तब वा बनियां ने टोकी तब वा ब
निया सों स्त्री ने कही जो में तोसों कालि मिलों
गी तू मोकों आज सोदा चहियत है सो दे तब वा
बनियां नें कह्यौ जो तू मोसों कोल करै तो में मा
नूं तब वा स्त्री नें वासों कोल करि दीनों तब वा-
स्त्री को सीधो सामग्री चहियत हुतो सो दीनों
सब लैकें घर आई तब घर आय के रसोई करि
श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो समयानुसार भो
ग सराय अनोसरि करि के पाछें वैस्नवन को-
महाप्रसाद लिवायो तब वैस्नवन नें महाप्रसा
द भली भांति सों लीनो पाछें कृस्नदास घर आए
सब वैस्नवन सों मिले दंडोत करिकें भीतर गये
तब स्त्री सों कह्यौ जो कहा खबरि है वैस्नवन
कों महाप्रसाद लिवाइये तब स्त्रीनें कह्यौ जो
प्रसाद तो लिवायो है तब कृस्नदास नें कह्यौ जो
सीधो सामग्री कहां ते लाई कहा प्रकार कीयो त
बजो प्रकार कीयो हुतो सो सब कह्यौ और कह्यौ

जो यह बनियां मोसों नित्य टोको करतो जो तू मोसों
एक दिन मिलि तू कहैगी सो देउंगो तब आज म
वासों कौल करार करिकें सीधो सामग्री लाई
हों तब कृस्नदास वा स्त्री के ऊपर बहुत प्रसन्न
भए पाछें स्त्री पुरुष दोउ जनेन ने सीरो महाप्रसा
द लीयो पाछें कृस्नदास वैस्नवन के पास आप
बैठे सगरी रात्रि भगवद वार्ता करत बीती जब स
बारो भयो तब सब वैस्नव बिदा होय कें चलें तब
कृस्नदास थोरी सी दूर पहुंचावन गयो पाछें आप
घर आय स्नान करि श्री ठाकुर जी की सेवा करि
कें याहत कों गये पाछें वा स्त्री ने रसोई करि श्री
ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो भोग सराय अनोसरि
करि महाप्रसाद ढांकि धर्यो तब कृस्नदास घर
सांझ कों आए तब वही सीरो महाप्रसाद दोउ ज
नेन नें लीयो तब कृस्नदास ने अपनी स्त्री सों कही
जो तुमनें कालि वा बनिया सों कौल कीयो हुतो
सो वह बनियां पैंडो देखत होयगो तातें वाको
कौल पूरो करिये सो भलो है तब वह स्त्री उबटनो
करि न्हाय कें स्त्री जन के शृंगार होत हैं सो सब
करि कें वह स्त्री चली सो वर्षा के दिन हुते सो मेह
बरष गयो हुतो सो मार्ग में कीच भई हुती ताके
लिये कृस्नदास नें अपनी स्त्री सों कही जो तू मे
रे कांधे पे बैठि ले में पहुंचाय आउं मार्ग में की
च बहुत भई है तेरे पांय कीच में भरि जायंगे सो व
ह बनियां देखि कें तेरो अनादर करैगो तब वा स्त्री

कों अपने कांधे ऊपर चढ़ाय कें लै चले सो वा बनिये
की हाट के आगे उतार दीनी तब वा स्त्री नें वा बनि-
यां कों हेला पार कें कह्यौ जो किवाड़ खोलि तब
वा बनियां नें किवाड़ खोलि दीने और वा स्त्री कों
भीतर लीनी तब वह बनियां पांय धोयवे कों पा
नी लै आयौ और कह्यौ जो पांय धोय तब वा स्त्री
नें कह्यौ जो मेरे पांय कीच सों भरे नाहीं तब वा ब
नियां ने कह्यौ जो मार्ग में तौ कीच बहुत भई है
और तेरे पांय कोरे कैसे रहे तब वा स्त्री नें कह्यौ
जो तू पूछि कें कहा करेगो तू तेरौ काम करि तब वा
बनिया नें कह्यौ जो यह तौ बात कही चाहिये।
तब वा स्त्री नें कह्यौ जो मेरौ भरतार मोकों कांधे
ऊपर .... चढ़ाय कें लायौ है तब यह बात सु-
निकें वा बनियां कों बड़ौ आश्चर्य भयौ और स
ब वृत्तांत तोसों पूछौ जो यह कहा कारन है सो सब
मेरे आगें कहि तब वा स्त्री ने जो प्रकार भयौ हो-
सो सब कह्यौ सो सुनि कें वह बनियां अपने मन
में धिक्कार करन लाग्यौ और कह्यौ जो धन्य जन्म
तुम्हारौ जो जिनकौ ऐसो मन सांच्यो है और धिक्का
र जन्म मेरौ है तब दोउ हाथ जोरि कें दंडौत कीनी
और कह्यौ जो मेरो अपराध क्षमा करिये और मे
रे ऊपर कृपा रखिये मेरी तुम बहन हौ ऐसे कहि
वा बनियां नें बहुत दुख मान्यौ पाछें वा बनियां नें
स्त्री कों कपड़ा पहराय कें वाके घर पहुंचाय दी
नी और कृष्णदास सों वा बनियां नें बहुत बीनती

सी नीजो तुम मेरी अपराध समा करौ यह मेरी बहन है और तुम मेरे पूज्य हौ तब कृस्नदास नें कही जो तेरो कहा अपराध है तू संकोच मति करै फेरि वह बनियां कितनेक दिन पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक भयो नाम समर्पण कीयो तब वा बनियां को नाम श्री आचार्य जी महाप्रभून नें ग्यानचंद धर्यो पाछें वह बनियां बड़ो भगवदीय भयो सो कृस्नदास के संग ते भयो ताते संग करनों सो भगवदीय को करनों जासों भगवद भक्ति उत्पन्न होय पाछें वह बनियां सदा कृस्नदास सों ममत रहतो उनको स्त्री सों बहन कहतो सो ऐसो सम्बंध राखतो सो वे कृस्नदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैस्नव ॥ ७६ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक संत दास चोपड़ा क्षत्री आगरे के तिनकी वार्ता लिख्यते

सो वे संतदास पहिलें बहुत संपतवान हुते ब्योपार बहुत हुतो तासुन को ब्योपार करतेमें द्रव्य सब ब्योपार ही में खोयो पाछें सेतु के बाजार में कोडी बेचन लागे टका २५ की पूंजी हुती सो

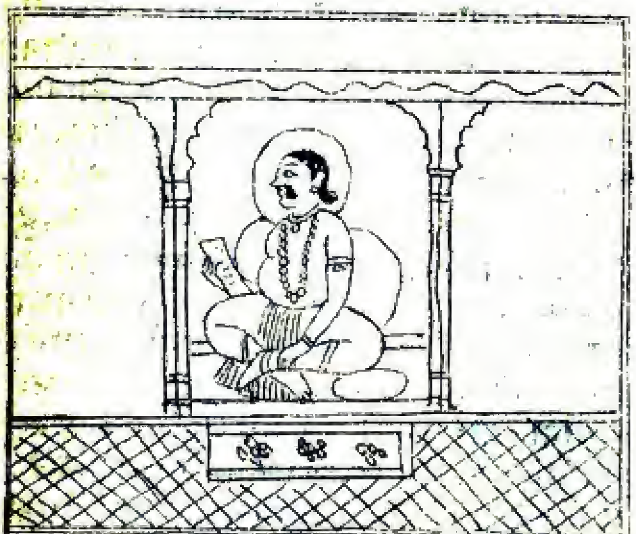

जबतांई पैसा ढाई कमावते तब तांई उहां बैठे र
हते कौड़ीन की ढेरी पैसा की करि राखते सो गा
हक पैसा धरिकें कौड़ीन की ढेरी ले जाते और
संत दास आप पोथी बांचते मार्ग में काहू सों
बोलते नाहीं भगवद रस में छिके रहते और जो
कोउ भगवद भक्ति आवतो तासों बड़े भगवद
वार्ता करिकें और सों संभाषण न करते रसोई
कों टका एक लगावते और धेला की चबैनी
आनि राखते सो रात्रि कों वैष्णव आय कें बैठ
ते भगवद वार्ता कीर्तन करते सो सब चबैनी म
हाप्रसाद बांटि देते सो वैष्णव लेकें उठते ऐ
से ढाई पैसा में निर्वाह करते ऐसें करत कि

तनेक दिन बीते तब नारायणदास गौड़ देसके नें सु
नी जो संतदास के द्रव्यको बहुत संकोच है ताते ना
रायणदास नें संतदास कों पत्र लिख्यो और एक
मोहरन की थैली पठाइ सो हुंडी कासद लैकें आ
यो तब संतदास कों पत्र दीनों तब वह पत्र संत
दास नें वाच्यो और तामें हुंडी ही सो बांची तब हुं
डी ही सोतो श्री गुसांई जी के पास पठाई और ए
क टका कासद कों दीनो और संतदास नें नारा
यणदास कों पत्र लिखो तामें लिख्यो जो तुमनें
हुंडी पठाई ही सोतो अडेल श्री गुसांई जी को पठा
य दीनी और तुम्हारी प्रभुता में हमारे एक दिन
की रसोई न भई ता दिन की कमाई कासद कोंदी
नी जब हुंडी पहुंची तब भंडारी नें श्री गुसांई जी कों
बचाई सो एक सो मोहरन की है सो नारायणदा
स नें गौड़देस ते संतदास को पठाई सो संतदास
नें इहां पठाई है तब श्री गुसांई जी नें कह्योजो सं
तदास तो श्री आचार्य जी महाप्रभून के बड़े ही
कृपापात्र भगवदीय है ताते वैष्णव को द्रव्य का
हे कों राखेंगे ॥

## वार्त्ता प्रसंग ॥९॥

पहुरि कितनेक दिन पाछें श्री गुसांई जी नें श्रीगो
कुल वास कीयो तब संतदास उत्सव के दिन
आगरे ते दर्शन को आवते और श्री गुसांई जी
आप आगरे पधारते तब संतदास के घर बिना
बुलाए पधारते आप श्री गुसांई जी श्री आचा

र्य जी महाप्रभून के सेवक जानि ऐसी कृपा करते तब किननेक दिन पाछें संतदास की देह थकी तब श्री गोकुल तें चापा भाई कों बुलायौ सो चापा भाई श्री गुसांई जी की आज्ञा मानि कें आगरे आए तब संतदास ने चापाभाई सों कह्यौ जो यह घर तुम्हारौ है जानौ तौ कोई एक दिन श्री कों रहन दीजियौ और जानों तौ गहने धर दीजियौ अथवा बेचि कें दाम ले जाउ ऐसे कहि के घर के पत्र खत चापा भाई कों सौंप दीनों तब चापाभाई खतपत्र लैकें श्री गोकुल आए तब श्री गुसांई जी सों सब समाचार कहे पाछें संतदास बहुत असमर्थ भए तब वैस्नव सब आय जुरे तब संतदास सों कह्यौ जो तुम कहौ तौ रेणुका स्थल अथवा मथुरा जहां कहौ तहां लै चलै तब संतदास नें कह्यौ जो मोकों कहा रेणु का स्थल कृतार्थ करैगो तब वैस्नवन ने कह्यौ जो श्री गोकुल लै जांय तब संतदास नें कह्यौ जो श्री गोकुल जाय कें कहा रारव भड़ा‑ ऊंगो ऐसें कहि कें आगरे ही में देह छोड़ी पाछें वैस्नवों कृत्य उहांई कीयौ पाछें यह बात वै‑ स्नवन ने श्री गुसांई जी के आगें कही तब श्री गुसांई जी अपने श्री मुख तें कहें जो वे संतदास ऐसे भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तां ई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २॥ वैस्नव ॥ ७७॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू

न के सेवक सुन्दर दास श्री ज
गन्नाथ रायजी के दस को
स परे एक गांव में रह
ते तिनकी वार्ता

सो सुन्दर दास उहां रहते नहां कृस्नचैतन्य को सेवक माधौदास सो उहां रहतौ सो सुन्दर दास के ओर माधौदास के परस्पर स्नेह बहुत हुतौ सो सुन्दर दास जब श्री आचार्य जी महा प्रभून की सराहना करतो तब माधौ दास कहतौ जो मेरे जो कछु है सो सब कृस्न चैतन्य को है सो जहां एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू पाउ धारे हुते त ब सुन्दर दास नें अपने घर पधराये तब श्री आ चार्य जी महा प्रभून ने उहां रसोई करिकें श्री ठा कुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें भोग सरायो तब माधौदास नें थार आवत देख्यो ता पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो भोजन करि कें पोढे तब माधौदास ने सुन्दर दास से कही जो तेरे गुरू के हाथ ने श्री ठाकुर जी आरोगे नाहीं ओर में श्री ठाकुर जी कों आरोगावत हों सो तो एक हू ग्रास घटत नाहीं तब सुंदर दास ने श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कही तब श्री आचार्य जी महा प्रभून ने माधौदास को बुलाय कें पूछो तब माधौदा सनें जो वृतान्त हतौ सो सब कह्यो जो कालि हम तेरे घर आमेंगे सो देखेंगे मेरें आगें श्री ठाकुर जी आरोगेंगे तब जानूंगो तब दूसरे दिन श्री आ

चार्यजी महा प्रभू माधौदास के घर पधारे और कह्यौ जो अब थार श्री ठाकुर जी के आगें आन राखि तब माधौदास थार लैगयौ श्री ठाकुर जी के आगें भोग धर्यो फिर बाहिर आयौ तब श्री आचार्यजी महा प्रभू मन्दिर के द्वार ऊपर॰ बैठे रहे सो उहां एक प्रेत नित्य आय के श्री॰

ठाकुर जी के आगेते खाय जातो सो वह प्रेत॰ वाहू दिन आयो तब देखे तो श्री आचार्य जी॰ महाप्रभू बिराजे हैं तब वह प्रेत खिस्यानो औ र कह्यौ जो राज अबहूं भूखो रहूंगो तब श्री आ चार्यजी महाप्रभून ने कह्यौ जो तेनें अब तांई॰ खायो सो तो खायो परि अब न खान पावेगो॰

ताते अब इहां सों जानन बह प्रेत फिर गयौ तब माधोदास भोग सराबन गयो तब देखें तौ थार ज्यों का त्यों भरयौ है तब माधोदासने कह्यौ जो तुम्हारे आगे मेरे श्रीठाकुर जी आरोगेनाहीं ऐसे सामान्य वचन बहुत बोले परि श्री आचार्यजी महाप्रभू आप चुपकर रहे कछु बोले नाहीं तब माधोदास रात्रि को सोयो तब श्रीठाकुर जी के अनुचर आए सो बहुत मारयो और खाट ते औंधो परक मारयो तब माधोदासने उन सों कह्यौ जो तुम मोको काहे को मारत हो जब जगन्नाथ राय जीने कह्यौ जो तू श्री आचार्य जी महाप्रभून सों ऐसे सामान्य वचन क्यों बोल्यो मैं तेरे इहां कब आरोगत हों जो तू भोग धरतो सो तो प्रेत खाय जातो हो आज श्री आचार्यजी महाप्रभु भीहार ऊपर बैठे हुते ताते न खाय सक्यो तू उनसों क्यों बुरो बोल्यो वे तो मेरो स्वरूप हैं तब माधोदास ने उनसों कह्यौ जो मैं सवारें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों अपराध क्षमा कराय लुंगो मैंने ऐसें न जान्यो तब माधोदास प्रातःकाल उठि कें श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास आयो और साष्टांग दंडवत कीनी और बीनती करि कें कह्योजो महाराज मेरो अपराध क्षमा करिये सो श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो परमदयाल हैं सब प्रसन्न होय कें कहें जो तेरो कहा अपराध हे हम तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न हैं तब माधोदास

नें बीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पाव धारि·
तब श्री आचार्यजी महाप्रभू माधोदास के घर
पाव धारे और प्रसन्न होय के माधोदास कोंना
म सुनायो ता पाछें माधोदास को निवेदन करवायें
पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें माधो दास·
के ठाकुर कों पंचामृत से स्नान करवायो ता पा
छें श्री ठाकुर जी कों सिंगार करिकें सिंहासन पार
बेंठारे पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पाक·
करिकें भोग समर्प्यो तब समयानुसार भोग सरा
य अनोसरि करिकें पाछें श्री आचार्य जी महाप्र
भू नें माधोदास सों कह्यो जो तू वेस्नवन कों बु·
लाय लावो तब माधोदासनें कह्यो जो महाराज
पांच सात वेस्नव बुलाय लाउं तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून नें कह्यो जो पांच सात की कहा हे जि
तने तेरे मन में आवे तितने वेस्नव बुलाय लाउ
तब माधो दासनें श्री महाप्रभू जी सों कह्यो जो महा
राज प्रसाद तो थोरो हे और वेस्नव बहुत आवें
गे सो कैसें होयगो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून
नें कह्यो माधोदास सों जो अरे तेरी अकल मारी
गई हे प्रसाद कबहू न घटे तेरे या गांव में जितने
वेस्नव होय तिन सब को बुलाय लाउ पाछें जि
तने वेस्नव हे तिन सबन को बुलाय लायो तब·
सबन को महाप्रसाद लिवायो तोहू वह थार·
भर्यो रह्यो तब माधो दास सों श्री आचार्य जी महा
प्रभून नें कह्यो जो वेस्नव कें विषें विस्वास चहिये

जो भगवद प्रसाद सदा अटूट रहे या भांति सों माधो दास को श्री महाप्रभू जीने अंगीकार कस्यो सो सुन्दर दास के संगते भयो ताते संग करनो तो भगवदीय को करनो सो वे सुन्दरदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥+

॥वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैस्नव ॥७८॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक माधवजी पटेल तथा इनकी स्त्री विरजो तिन की वार्ता हे

सो वे माधवजी पटेल तथा इनकी स्त्री विरजो दस दिन में दोय वेर श्री गोकुल आवते श्री नाथ जी के दर्शन कों तथा श्री गुसांई जी के दर्शन कों आवते सो श्री गुसांई जी इनके उपर बहुत प्रसन्न रहते बहुत कृपा करते पाछें उनको कृस्न भट्ट को संग भयो तब विरजो ने कृस्न भट्ट सों कह्यो जो तुम हमारे माथे सेवा पधरावो तो भलो है तब कृस्न भट्टने महाराज गुसांई जी सों वीनती करि कें कह्यो और उन कें माथे सेवा पधराई सो श्री गुसांई जीने श्री ठाकुरजी कों पाट वेठास्यो सो स्नेह पूर्वक सेवा करते सामग्री भलीभांति सों करते श्री महाप्रभू जी के सेवक दस कोस पर रहते तिन कों प्रसाद लिवावते ऐसें भली भांति सों सेवा करी कृस्न भट्ट आवि वें करी ॥+

॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय वैस्नव सब प्रसाद लेंन कों उ
त्सव के दिन बेठे हते तब विरजो नें वैस्नवन कों अ
नसखडी महा प्रसाद परोस्यो तब विरजो नें कृस्न
भट्ट सों वीनती कीनी जो मोकों ऐसो मनोरथ है
जो सब वैस्नव मंडली बेठी होय और में सखड़ी म
हा प्रसाद सबन कों लिवाऊं. तब कृस्न भट्ट ने कह्यो
जो यह मनोरथ है सो तो भक्ति भाव सों होय परि
यह द्रव्य साध्य है तब विरजो ने पूछी जो द्रव्य सा-
ध्य सो कहा ताको अर्थ मोकों समझाय के कहो
तब कृस्न भट्ट नें कह्यो जो यह वैस्नव मंडली लेके
श्री गोकुल श्री गुसांई जी के पास जेये पाछे श्री
गुसांई जी आज्ञा देंय सो करिये जो श्री गुसांईजी
आज्ञा देंय तो सखड़ी महा प्रसाद लीयो जाय.
ताते यह द्रव्य साध्य है जो मार्ग में सब खरच क
रिये और वैस्नवन की आज्ञा लेनी तब विरजो
नें मावजी पटेल ते कह्यो जो मोकों यह मनोरथ
है सो मनोरथ कियो चाहिये तब मावजी पटेल
नें कह्यो जो मेरे पास दो रुपया मुद्रा है तिनसों काम
होय तो भलेंई करिये तब कृस्न भट्ट नें कह्यो श्री
तिनसों काम अवश्य होयगो आपन श्री गुसांई जी पा
स चलें तब श्री गुसांई जी आज्ञा देंय सो करिये
सो मावजी की गांठि में द्रव्य बहुत हतो सो सब
लेके उज्जेन आये पाछे कृस्न भट्ट नें वैस्नव सब
इकठोरे कीर के. श्री गोकुल श्री गुसांई जी के दर्शन

न कौं आये पाछें श्री गोकुल आय कें श्री गुसांईजी
के दर्शन कीये पाछें रुक्म भट्टनें श्री गुसांईजी सें
बीनती कीनी जो महाराज चिरजो कौ ऐसो म
नोरथ है जो सखडी महाप्रसाद मेरे हाथ सों
सब वैस्नवन की मंडली बैठी होय तिनकों पे
रोसों तब श्री गुसांईजीनें कही जो यह मनोर
थ तो पुरुषोत्तम क्षेत्र बिना न होय तब सब वै
स्नवन की मंडली लेकें चिरजो चली श्रीजगन्ना
थ राय जी कूं सो कितनेक दिन में जाय पहुंची
तब श्रीजगन्नाथ जी के दर्शन कीये पाछें जो
मनोरथ हतो सो सब नाना प्रकार की सामिग्री
करवाय कें श्री जगन्नाथ रायजी कों भोग सम
र्प्यो पाछें वह प्रसाद सखडी अनसखडी सब वै

स्नवन कों विरजो नें अपने हाथ सों परोसि के लि
वायौ विरजो नें अपनो सब मनोरथ पूरन कीयौ
पाछें विरजो उहां कछुक दिन रहि कें सब वैस्नवन
सहित श्री गोकुल आई तब श्री गुसांई जी को द
र्सन कीयो दंडवत कीनी ता पाछें जो बात करी सो
सब श्री गुसांई जी के आगें कही पाछें और जो द्रव्य
बच्यो सो सब गुसांई जी को भेट कीनों तब श्री गुसां
ई जी विरजो को भाव देखि कें वाके उपर बहुत प्रस
न्न भये पाछें सब वैस्नवन कों महा प्रसाद लिवा
यौ तब श्री गुसांई जी नें आप प्रसाद लीयौ ता पा
छें विरजो तथा सब वैस्नव श्री गुसांई जी के सा
थ श्री नाथ जी द्वार आए तब श्री नाथ जी के द
र्सन कीये तब विरजो तथा श्री गुसांई जी सब वैस्नवन
सहित श्री नाथ जी ते विदा होय के अपने देस
कों गये वह विरजो ऐसी भगवदीय ही ॥

## वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और विरजो बरस दिन में दोय बेर श्री गोकुल
आवती तब एक गाड़ा तो गुड़ को भर लावती
और एक गाड़ा घृत को भर लावती सो एक मही
ना लों रहती तामें पन्द्रह दिन तो श्री गोकुल रह
ती और पंद्रह दिन श्री नाथ जी द्वार रहती या
भांति सों विरजो रहती तब सामग्री करि कें भो
ग समर्पि भोग सराय कें सब ढांकि धरे जब गायन
के ग्वाल आवते तब महाप्रसाद दूध अंगीकार
करते और खिरक में लिवावती और आवती

न कौं आये पाछें श्री गोकुल आय कें श्री गुसांईजी
के दर्शन कीये पाछें कृष्ण भट्टनें श्री गुसांईजी सों
बीनती कीनी जो महाराज विरजो कौं ऐसो म
नोरथ है जो सखडी महाप्रसाद मेरे हाथ सों
सब वैस्नवन की मंडली बैठी होय तिनकों मैं
परोसों तब श्री गुसांईजीनें कही जो यह मनोर
थ तो पुरुषोत्तम क्षेत्र बिना न होय तब सब वै
स्नवन की मंडली लैकें विरजो चले श्री जगन्ना
थ राय जी कूं सो कितनेक दिन में जाय पहुंचे
तब श्री जगन्नाथ जी के दर्शन कीये पाछें जो
मनोरथ हतो सो सब नाना प्रकार की सामिग्री
करवाय कें श्री जगन्नाथ राय जी कों भोग सम
र्प्यो पाछें वह प्रसाद सखडी अनसखडी सब वै

स्नवन कों विरजो नें अपने हाथसों परोसि कें लि
वायौ विरजो नें अपनो सव मनोरथ पूरन कीयौ॰
पाछें विरजो उहां कछूक दिन रहि कें सव वैस्नवन
सहित श्री गोकुल आई तव श्री गुसांई जी कौ द
र्शन कीयौ दंडवत कीनी ता पाछे जो वातकरी सो
सव श्री गुसांई जी के आगें कही पाछें और जो द्रव्य
वच्यो सो सव गुसांई जी की भेट कीनो तव श्रीगुसां
ई जी विरजो कौ भाव देखि कें वाके उपर वहुत प्रस
न्न भये पाछें सव वैस्नवन कों महाप्रसाद लिवा
यौ तव श्री गुसांई जीनें आप प्रसाद लीयौ ता पा
छें विरजो तथा सव वैस्नव श्री गुसांई जी के सा
थ श्री नाथ जी द्वार आए तव श्री नाथ जी के द
र्शन कीये तव विरजो तथा श्री गुसांई जी सव वैस्नवन
सहित श्री नाथ जीते विदा होय कें अपने देस
कों गये वह विरजो ऐसी भगवदीय ही॥

## वार्ता प्रसंग॥ २॥

और विरजो वरस दिन में दोय वेर श्री गोकुल
आवती तव एक गाड़ा तो गुड़ को भर लावती॰
और एक गाड़ा घृत को भर लावती सो एक मही॰
ना लों रहती तामें पन्द्रह दिन तो श्री गोकुल रह
ती और पंद्रह दिन श्री नाथजी द्वार रहती या॰
भांति सों विरजो रहती तव सामग्री करि कें भो
ग समर्पि भोग सराय कें सव ढांकि धरे जव गायन
के ग्वाल आवते तव महाप्रसाद वृथ अंगीकार
करते और खिरक में लिवावती और आवती

तब दोऊ पधरावती करती सो वह त्रिजो ऐसी॰
भगवदीय ही सो भयगवन्त के संगते ताते संग॰
करनों तो भगवदीय कौ करनों सो इनकी वार्ता॰
कौ पार नाहीं ताते अब कहा तांई लिखिये ॥॰
॥ वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैश्नव ॥ ७८ ॥ सम्पूर्ण ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक गोपालदास रोड़ा
में रहते तिनकी
वार्ता है

सो श्री आचार्य जी महाप्रभूननें उनकों आ
ज्ञा दीनी हती जो तुम सबन कों नाम दीजियें ताते
वे गोपालदास नाम देते सो एक समय श्री आ॰
चार्य जी रोड़ा में पधारे हुते तब गोपालदास तो घर
न हुते गोपालदास के बेटा घर हुते गोपालदास
कछू याचृति कों गए हुते तब श्री आचार्य जी महा
प्रभून नें गोपालदास के बेटान सों पूछी जो गोपा
ल दास कहां गए हैं तब गोपाल दास के बेटाननें
कह्यो जो कछू श्री ठाकुर जी के काम गयो है तब
यह सुनि कें श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ मन
अप्रसन्न भयो जो गोपाल दास के बेटा ऐसे बै
से बोलत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने॰
कह्यो जो ये कैसे वैश्नव हैं तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून ने कह्यो जो यहां रहनों उचित नाहीं है
तब फिर आपने मन में विचारे जो गोपाल दास॰
कों तो आचन दीजिये वह कैसे बोलत है तब प

हैं संध्या समै गोपालदास आए तब गोपालदास
ने संध्यासमय श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ द
र्शन कर्यो तब गोपालदास सौं श्री आचार्य जी
महाप्रभून ने पूछी जो गोपालदास तुम कहा ग
ये हते तब गोपालदास ने कही जो महाराज पेर
लागे हे ताते या रीति कों गयो हुतो तब यह
सुनि कें गोपाल दासके ऊपर बहुत प्रसन्न भये और
आप श्री मुख सों कहीं जो यह वैष्णव कौ लक्ष
ण है जो या रीति में श्री ठाकुर जी कौ नाम न लेय

वार्ताप्रसंग ॥ ११ ॥

और एक समय गोपालदास श्री नाथ जी के
दर्शन को आये सो साथ एक सेवक हतौ तहां
ज्वर चढि आयो सो लंघन है चारि किये तब रात्र

कों गोपाल दास कों प्यास लागी सो वा सेवक के पास जल मांग्यौ सो सेवक तौ सोयो हुतौ सेवक नें तो सुन्यौ न हुतो तब श्री ठाकुर जी जल पान के झारी लैकें आये सो गोपाल दास कों जल पिवा यो और वह झारी उहां ही धरि आये श्री नाथ जी कौ हृदय अति कोमल है ताते भक्ति की आर्ति सहि न सकें ॥

## वार्ता प्रसंग ॥२॥

और एक समय गोपाल दास नें चोपरा विरह करिकें गायो सो चोपरा येकी + सिखंडी श्याम घन सखी कंठ मनि हरहार + धन्य दिन जेनौं देख सूं नयनन नन्द कुमार ॥१॥ औसे चोपरा बहुत कीये ॥२॥

## वार्ता प्रसंग ॥३॥

और एक समें श्री गुसांई जी आप रोडा में पधारे तब बाहिर डेरा कीये हुते पाछें जब गोपालदास उत्थापन के समय श्री गुसांई जी के दर्शन कों आए तब द्वै वैस्नवन नें कह्यो जो हम कों श्री गुसांई जी के पास नाम दिवावो तब गोपाल दास नें कह्यो जो हम नाम देत हैं सो नाम श्री गुसांई जी देत हैं ताते तुम कों घर चालि कें नाम देयंगे परि उन वैस्नवन कौ मन श्री गुसांई जी पास नाम पायवे कौ सो तीन वेर उन वैस्नवन नें कह्यो सो तीनों वार गोपाल दासनें वैसें ही कह्यो जो तुम कों घर चालि कें नाम देंगे सो यह बात श्री गुसांई जी नें अपने कान

न सों सुनी पाछें उन वैस्नवन सों श्री गुसांई जीनें कही जो तुम कहा कहत हो तब उन वैस्नवन ने कही जो महाराज हम कौ नाम दीजिये तब श्री गुसांई जीने उन कौ नाम सुनायौ उनको कृतार्थ करे पाछें गोपाल दास सों श्री गुसांई जी यों कहें जो गोपाल दास तुम्हारो अंगीकार श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कीयो है सो तो दृढ़ भयो है परि जिनने तुम्हारे पास नाम पायो है सो तो हमारे कबहूं न होंयगे सो श्री गुसांई जीने सो भ करिकें गोपालदास सों कह्यौ पाछें गोपालदास नें जितनेन कौं नाम दीयौ हुतो तिन सबन कें फिर सबन कों सांई जी के पास नाम दिवायौ तब वे सब कृतार्थ भये तिन सों श्री गुसांई जी गंगा ज्व कहते उन गोपाल दास कों सामित्व आयौ तातें इन जीवन कौं अकाज भयौ तातें वे गोपालदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ❀

वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ वैस्नव ॥ ८० ॥ संबन्ध ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के सेवक सूरदास जी
गऊ घाट ऊपर रह
ते तिन की वा
र्ता लिख
ते हैं ॥

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभु अड़ैल ते व्रज कों पाव धारे सो कितनेक दिन में गऊघाट आगरे और मथुरा के बीचा बीच है तहां श्री आचार्य जी महाप्रभु पाव धारे सो गऊघाट ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभु उतरे तहां श्री आचार्य जी महाप्रभु आप स्नान करि के संध्यावंदन करि कें पाक करन कों बैठें और श्री आचार्य जी महाप्रभुन के सेवकन को समाज बहुत हुतो और सेवक हू अपने अपने श्री ठाकुर जी की रसोई करन लागे सो गऊघाट ऊपर सूरदास जी को स्थल हुतो सो सूरदास जी स्वामी हे आप सेवक करते सूरदास जी भगवदीय हैं गान बहुत आछो करते तासे बहुत लोग सूरदास जी के सेवक भये हुते सो श्री आचार्य जी महाप्रभु गऊघाट ऊपर उतरे सो सूरदास जी के सेवक देखि कें सूरदास जी सों जाय कही जो आज श्री आचार्य जी महाप्रभु आप पधारे हैं जिनने दक्षिण में दिग्विजय कीयो है सब पंडितन को जीते हैं भक्ति मार्ग स्थापन कीयो है सो श्री वल्लभाचार्य यहां पधारे हैं तब सूरदास जी ने अपने सेवक सों कह्यो जो तू जायके दूर बैठि तब आप भोजन करि के बिराजें तब खबरि कीजियो हम श्री आचार्य जी महाप्रभुन के दर्शन कों जायंगे सो वह तनक

दूर जाय बैठौ तब श्री आचार्यजी महाप्रभु आप
पाक करत हुते सो पाक सिद्ध भयो तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभून नें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्
पीं पाछें समयानुसार भोग सराय अनोसर
करिकें महाप्रसाद लेंकें श्री आचार्यजी महाप्र
भू गादी ऊपर बिराजे तहां सब सेवक हू पहोंच
कें श्री आचार्यजी महाप्रभून के आस पास आ
य बैठे तब सूरदास को सेवक आयो सो सू
रदास सों कही जो श्री आचार्यजी महाप्रभु पधारे
हैं तब सूरदास अपने स्थल तें आयकें श्री
आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आये तब
श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो सूर आव
बैठो तब सूरदासजी श्री आचार्यजी महाप्रभून

को दर्शन करिकें आगें आय बैठे तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभून में कही जो सूर कछू भगवद
जस वर्णन करौ तब सूरदास नें कही जो आज्ञा
सो सूरदास नें श्री आचार्यजी महाप्रभून के आ
गे एक पद गायो ॥ (सो पद)

राग धनासरी ॥

हों हरि सब पतितन को नायक ॥ को करि सकै
बराबर मेरी इते मान को लायक ॥ १ ॥ जो तुम
अजामेलि सौं कीनी जो पाती लिखि पाउं ॥
होय विस्वास भलो जिय अपने और पतित बु
लाउं ॥ २ ॥ सिमिटे जहां तहां ते सब कोउ आय
जुरे इक ठौर ॥ अब कें इतने आनि मिलाउं बे
र दूसरी और ॥ ३ ॥ होड़ा होड़ी मन हुलास करि
करे पाप भरि पेट ॥ सबहिन लै पायन तरि परि
हों यही हमारी भेट ॥ ४ ॥ ऐसी कितनी क बना
उं प्रान पति सुमरन है भयौ आडो ॥ अब की बे
र निवार लेउ प्रभू सूर पतित को टाडो ॥ ५ ॥

और पद गायो राग धनाश्री

प्रभू में सब पतितन को टीको ॥ और पतित सब
द्यौस चारि के मैतौ जन्मत ही को ॥ १ ॥ वधिक अ
जामिल गनिका त्यारी और पूतना ही को ॥ मोहि
छांडि तुम और उधारे मिटे सूल कैसें जीको ॥ २ ॥
कोउन समरथ सेव करन को खैंचि कहत हौं ली
को ॥ मरियत लाज सूर पतितन में कहत सबन
में नीको ॥ ३ ॥ ऐसो पद श्री आचार्य जी महाप्र

भून के आगे सूरदास जीने गायौ सो सुनि कें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यौ जो सूर ह्वै कें ऐसो घिघियात काहे कौं है कछु भगवत्लीला वर्णन करि तब सूरदास नें कह्यौ जो महाराज हौं तो समझत नाहीं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यौ जो जा स्नान करि आउ हम तो कों समझावेंगे तब सूरदास जी स्नान करि आये तब श्री महाप्रभुजी नें प्रथम सूरदास को नाम सुनायौ पाछें समर्पण करवायौ और फिर दशमस्कंध की अनुक्रमणिका कही सो ताते सब दोष दूर भये ताते सूरदास जी कों नवधा भक्ति सिद्ध भयी तब सूरदास जीने भगवद् लीला वर्णन करी अनुक्रमणिका से सम्पूर्ण लीला फुरी सो कों जानिये सो दसमस्कंध की सुबोधिनी में मंगलाचरण को प्रथम कारिक कीये हैं सो यह श्लोक सूरदासजीनें कह्यौ

सो श्लोक

नमामि हृदये शेषे लीला क्षीराब्धि शायिनं लक्ष्मी सहस्र लीलाभिः सेव्यमानं कलानिधि

और ताही समय श्री महाप्रभून के सन्निधान पद कीये सो पद ॥

राग बिलावल

चकई री चलि चरण सरोवर जहां न प्रेम वियोग ॥ यह पद सम्पूरण करि कें सूरदासजीनें गायौ सो यह पद दसमस्कंध के मंगलाचरण को ५

कारिका के अनुसार कीयो सो यातें कह्यो है ॥
जो तहां श्री सहस्त्र सहित नित क्रीडत शोभित
सूरदास या भांति पद कीये ताते जानी जो सूरदा
स कों सम्पूर्ण सुबोधिनी स्फुरी सो श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें जान्यो जो लीला को अभ्यास
भयो पाछें सूरदास जी नें नंद महोत्सव कीयें
सो श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे गायो॥

राग देव गन्धार

ब्रज भयो महर के पूत जब यह बात सुनी॥ सो यह
श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें गायो सो सु
निकें श्री आचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये
और अपने श्री मुखते कहें जो सूर दास मानों
निकट ही हुते पाछें सूरदास जी नें अपने सेवक
कीये हुते तिन सबन को नाम दिवायो पाछें सू
र दास जी नें बहुत पद कीये पाछें श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें सूरदास जी कों पुरुषोत्तम स
हस्त्र नाम सुनायो तब सूरदास जी कों सम्पूर्ण
भागवत स्फुर्तना भई पाछें जो पद कीये सो श्री
भागवत प्रथम स्कंध ते द्वादस स्कंध तांई की
ये ताते वे सूरदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभू
न के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हैं पाछें
श्री आचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दो
य तीन बिराजे पाछें फेरि ब्रज कों पाव धारे तब
सूरदास जी हू श्री आचार्य जी महाप्रभून के सा
थ ब्रज कों आये ॥ ✦

## ॥ वार्ताप्रसंग ॥ १

अब जो श्री आचार्यजी महाप्रभू ब्रज कों पधारे
सो प्रथम श्री गोकुल पधारे तब श्री आचार्यजी
महाप्रभून के साथ सूरदासजी हू आए तब श्री-
आचार्य महाप्रभून नें अपने श्री मुख सों कह्यौ जो
सूरदास श्री गोकुल कौ दर्शन करौ सो सूरदास
नें श्री गोकुल कौ दंडवत करी सो दंडवत करत मा
त्र श्री गोकुल की बाल लीला सूरदासजी के हृदै
में फुरी और सूरदासजी के हृदय में प्रथम श्री म
हाप्रभून नें सकल लीला श्री भागवत की स्थापी
है तातें दर्शन करत मात्र सूरदास जी कों श्री गो-
कुल की बाल लीला स्फुरनी भई तब सूरदास-
जी नें विचार्यौ मन में जो श्री गोकुल की बाल-
लीला कौ वर्णन करि कें श्री आचार्यजी महाप्र
भून के आगें सुनाइये जन्म लीला कौ पद तौ-
प्रथम सुनायौ है अब श्री गोकुल की बालली
ला कौ पद गायौ ॥ सो पद

### ॥ राग बिलावल

सोभित कर नवनीत लियें ॥ घुटुरुवन चलत रे
णु तन मंडित मुख लेप किये ॥ १ ॥ चारु कपोल
लोल लोचन छवि गोरोचन कौ तिलक दियें ॥
लट लटकन मानौ मत्त मधुप गन माधुरी म-
धुर पियें ॥ २ ॥ कठुला कंठ वज्र केहरि नख रा
जत हैं सखी रुचिर हियें ॥ धन्य सूर एकौ पल
यह सुख कहा भयो सत कल्प जियें ॥ ३ ॥

यह पद सूरदास नें गायो सो सुनि कें आप बहुत
प्रसन्न भए पाछें और हू पद गाए तब श्री महाप्र
भूजी अपने मन में विचारे जो श्री नाथजी के यहां
और तो सब सेवा को मंडान भयो ॥ और कीर्त
न को मंडान नांही कीयो है ताते अब सूरदास
जी कों दीजिये तब आप श्री जी द्वार पधारे सो
सूरदास जी कों साथ लीए हीं सो श्री नाथ जी
द्वार जाय पहुंचे तब आप स्नान करिकें मन्दि
र में पधारे तब सूरदास जी सों कह्यो जो सूरदा
स ऊपर आउ स्नान करि कें श्री नाथ जी को
दर्शन करि तब सूरदास पर्वत ऊपर जाय कें श्री
नाथ जी को दर्शन कीयो तब आपने कह्यो जो
सूरदास कछु श्री नाथ कों सुनावो तब सूरदास
ने प्रथम विनयम कों पद गायो ॥ सो पद

राग धनासरी

अब हों नाच्यो बहुत गुपाल ॥ यह पद सम्पूर
ण करि कें श्री नाथ जी के आगें गायो तब श्री
महाप्रभूजी नें कह्यो जो अब तो सूरदास तुम में
कछु अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या तो श्री
भून ने दूर कीनी ताते कछु भगवद जस वर्णन क
रो तब सूरदास ने महात्म और लीला ऐसो जस
करि कें गाय सुनायो ॥ सो पद

राग गोरी ॥

कैंन सुकृत इन ब्रजवासिन कों यह पद संपूरण
करिकें गायो सो सुनि कें श्री महाप्रभूजी बहुत प्र

न भये सो जैसो श्री आचार्यजी महाप्रभूनें मार्गप्र
कास कीयो है ताके अनुसार सूरदासजीनें पद
कीये श्री आचार्यजी महाप्रभून के मार्ग को कहा
स्वरूप है महात्म ग्यान पूर्वक सुदृद स्नेह की
यो परम काष्ठा है और स्नेह आगे भगवान को म
हात्म रहत नाहीं ताते भगवान वेर वेर महात्म्य ज
नावत हैं नाम प्रकरन में पूतना करि संकट तृ
नावर्त करि गर्गाचार्य करि यमलार्जुन करि वै
कुंठ दर्शन करि असें करिकें भगवान नें बहुत म
हात्म जतायो परि इन व्रजभक्तन को स्नेह परम
काष्ठापन्न है ताते ताही समै तो महात्म्य रहे पा
छें बिसरत हो जाय ॥ +

## वार्ताप्रसंग ॥ २ ॥

और सूरदासजीनें सहस्त्रा विधि पद कीये हैं ता
कों सागर कहिये सो सब जगत में प्रसिद्ध भए सो
सूरदासजी के पद देशाधिपत ने सुने सो सुनिकें
यह विचारी जो सूरदासजी काहू विधि सों मिलें
तो भलो सो भगवद इच्छा ते सूरदासजी मिले
सो सूरदासजी सों कह्यो देशाधिपति नें जो सूर
दासजी में सुन्यो है जो तुमनें विसन पद बहुत की
ये हैं जो मोकों परमेश्वर नें राज्य दीयो है सो सब
गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते तुमहूं कछु गावो
तब सूरदासजीनें देशाधिपति के आगें कीर्तन
गायो ॥ सो पद

राग बिलावल

मनारे तू करि माधौ सों प्रीति ॥+॥ यह पद देशा
धिपति के आगें सम्पूरण करि कें सूरदासजी नें
गायो सो यह पद कैसो है जो या पद कों अहर्नि
स ध्यान रहे तो भगवद अनुग्रह की सदां साति
रहे और संसार ते सदां वैराग्य रहे और कुसंग
को सदां भय रहे और भगवदीय के संग की सदा
चाह रहे और श्रीठाकुर जी के चरणारविंद ऊपर स
दा स्नेह रहे वेसाधिक ऊपर आसक्ति न होय ऐसो
पद देशाधिपति कों सुनायो सो सुनि कें देशाधि
पति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो सूरदास
जी मोकों परमेश्वर ने राज दीनों है सो सब गुनी
जन मेरो जस गावत हैं तातें मेरो जस कछू गावो त
ब सूरदासजीनें यह पद गायो ॥+ सो पद +

राग केदारा

नाहिन रह्यो मन में ठौर ॥+॥ यह पद सम्पूर्ण क
रिकें सूरदास जी नें गायो सो सुनि कें देशाधिपति
अकबर बादशाह अपने मन में विचार्यो जो ये
मेरो जस काहे कों गावेंगे जो इनकों मेरो कछु ध
न कों लालच होय तो गावें ये तो परमेश्वर के जे
न है और सूरदास जी ने या पद के समाप्त में गायो
हो जो सूर ऐसे दर्श कों मरत लोचन प्यास +
यह गायो हो सो देशाधिपति नें पूछो जो सूरदास
जी तुम्हारे लोचन तो देखियत नाही सो प्यासे
कैसे मरत हैं और बिन देखें उपमा कों देत हौ

तुम

सो तुम कैसे देत हो तब सूरदास जी कछू बोले नाहीं तब फेरि देशाधिपति बोलो जो इनके लोचन हैं सो तो परमेश्वर के पास हैं सो उहां देखत हैं सो दर्शन करत हैं तब देशाधिपति ने सूरदास जी के समाधान को मन में बिचारी जो इनकों कछू दीयो चाहिये परि यह तो भगवदीय हैं इन कों कछू काहू बात की इच्छा नाहीं पाछें सूरदास जी देशाधिपति सो बिदा होय कें श्रीनाथजी द्वार आये ॥ ॥

## वार्ता प्रसंग ३॥

एक समें सूरदास जी मार्ग में चले जात हे सो कोउ चौपड़ खेलत हुते सो वा चौपड़ खेल में ऐसे लीन हे जो कोउ आवते जाते की सुधि नाहीं ऐसे खेल में मगन हे सो देख सूरदास जी के संग के भगवदीय हे तिनसों सूरदास जीनें कह्यो जो देखो यह प्राणी कैसो अपनो जनम खोवत हे भगवान नें तो मनुष्य देह दीनो है सो तो अपनी सेवा भजन के लिये दीनी है सो ये तो या देह सों हाड कूटत हे यामें यह लौकिक सिद्धि नाहि सो काहे ते जो या लोक में तो अपजस और परलोक में भगवान ते बहिर्मुख ताते श्री ठाकुरजीनें इन कों मनुष्य देह दीनी है तिनकों चौपड़ ऐसी खेलनी चाहिये सो ता समय एक पद सूरदास ने अपने संग केन सों कह्यो ॥ सो पद

राग केदारो ॥

मन तू समझ सोच विचार ॥ भक्ति बिन भगवान
दुर्लभ कहत निगम पुकार ॥ साध संगति डारि पा-
सा फेरि रसना सारि ॥ दाव अब के परयो पूरो उत
रि पहिली पार ॥ २ ॥ वाक सत्रे सुनि अठारे प-
चही को मारि ॥ दूर ते तजि तीन काने च मकि चौ
क विचार ॥ ३ ॥ काम क्रोध जंजाल भूल्यो ठग्यो ठ
गनी नारि ॥ सूर हरि के पद भजन बिन चल्यो दो
उ कर झार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदास जी नें अपने संग के भगवदीयन
सों कह्यो सो या पद में सूरदास जी नें कहा कह्यो
मन तू समझि सोच विचार ये तीन्यो वस्तु चौपड
में चहिये सोई तीनों वस्तु भगवान के भजन में चाहिये
काहे ते जो समझि न होय तो अपयश कहा करे-
गो ताते पहिलें तो समझ चाहिये और सोच क-
हिये चिंता सो भगवान के प्राप्त की चिंता न होय
तो संसार उपर वैराग्य कैसें आवें ताते सोच क-
हिये और विचार जो या जीव कों विचार ही नही
तो संग कुसंग में कहा करैगो ताते विचार चहिये
सो ये तीनो वस्तु होंय तो भगवदीय होय ताते ये
तीनों वस्तु भगवदीय कों अवश्य चाहिये औ
र चौपड़ में हूं ये तीनों वस्तु चहिये समझि कहैगि
न वो न आवतो गोट कैसें चले और सोच आग
म जो मेरो यह दाव पडे तो यह गोट चलूं विचार जो
वाही में तन मन जो येती नो वस्त होय तो चौप
ड खेली जाय सो वे सूरदास जी श्री आचार्य जी

महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे

वार्ता प्रसंग ॥ ५ ॥

वहुर सूरदासजी श्री नाथजी द्वार आय कें वहुत दिन तांई श्री नाथजी की सेवा कीनी वीच वीच में श्री गोकुल श्री नवनीत प्रियाजी के दर्शन कों आवते सो एक समय श्री सूरदासजी श्री गोकुल आये श्री नवनीत प्रियाजी के दर्शन कीये और वाल लीला के पद वहुत सुनाये सो श्री गुसांई जी सुनिकें वहुत प्रसन्न भये पाछें श्री गुसांई जी ने एक पालना संस्कृत में कीयो सो पालना सूरदास जी कों सिखायो सो पालना सूरदास जीनें श्री नवनीत प्रियाजी झूलत हुते ता समय गायो सो पद ॥

राग राम कली

प्रेंख पर्यंक सयने ॥ यह पद सूरदास जीने सम्पूर्ण करिकें गाय सुनायो श्री नवनीत प्रियाजी कों पाछें या पद के भाव के अनुसार वहुत पद कीये सो सुनिकें श्री गुसांई जी वहुत प्रसन्न भए पालना के भाव अनुसार पद गायो ॥ सो पद

राग विलावल

वाल विनोद आंगन में की डोलनि ॥ मणि मय भूमि सुभग नंदालय वलिवलि गई तोतरी वोलनि ॥ १ ॥ कठुला कंठ रुचिर केहरि नख ब्रज माल वहु लई अमोलनि ॥ वदन सरोज तिलक गोरोचन लट लटकन मधु गनि लोलनि ॥ २ ॥ लीन्यों कर परसत आ

नन पर कछु खाय कछु नायो कपोलनि॥ कहै जन सूर कहालों बरनों धन्य नंद जीवन जग तो लोने॥३॥

गोपालन दुरे हैं माखन खात॥ देखि सखी सो भा लो वदी अति स्याम मनोहर गात॥१॥ उठि अ वलोकि ओट ठाडो है जिह विधि नहिं लखि लेत॥ चकृत नैन चहूं दिस चितवत और सखन कों देत॥२॥ सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत य ह आकार॥ ॥ जनु जलरुह तजि बैर बिधि सों लायों मिलन उपहार॥३॥ गिरि गिरि परत बदन ते ऊपर हैं दधि सुत के बिंदु॥ मानहु सुधा कन खार वत पिय जिय दंद॥ बाल विनोद विलोक सूर प्रभु वित भई ब्रज की नारि॥ फुरत न बचन बरजि वे कों मन रही विचार विचार॥

राग जैत श्री

कहां लगि बरनों सुन्दरताई॥ खेलत कुमर क लिक आंगन में नैन निरखि सुख पाई॥१॥ कुल है लसत श्याम सुन्दर कें वहु विधि रंग विवनाई॥ मानहु नव घन ऊपर राजत मघुवा धनुष चढाई॥ सेत पीत अरु असनि लाल मणि लटकनि भाल रुराई॥ मानहु असुर देव गुरु मों मिलि भूमिज सो समुदाई॥३॥ अति सुदेस म्रदु चिहुर हरत मन मोहन मुख वगराई॥ मानहु मंजुल कंज ऊपर वर अलि अवलि फिर आई॥ दूध दंत छवि कही न जात कछु अनिपम लप भलकाई

॥ किल कत हंसत दुरति प्रगटत मानों विधु में वि
पुलताई ॥५॥ खंडित वचन देत पूरन सुख अद्भुत
यह उपमाई ॥ घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन
सूरदास बलि जाई ॥६॥

## राग रामकली

देखो सखी एक अद्भुत रूप ॥ एक अम्बुज मध्य दे
खियत बीस दधि सुत जूप ॥१॥ एक अवली दोय
जलचर उभै अर्क अनूप ॥ पंचबार चढ़ि गहि देखि
यत कहो कहा स्वरूप ॥२॥ सिसु गन में भई सोभा
कोऊ करो विचार ॥ सूर श्री गोपाल की छवि राखो
यह निरधार ॥३॥

ऐसे पद सूरदास जीनें गाये पाछें फेरि श्रीनाथ
जी द्वार आये ॥०॥

## वार्ता प्रसंग ५॥

अब सूरदास जीनें श्रीनाथजी की सेवा बहुत कीनी
बहुत दिन तांई ता उपरांत भगवद इच्छा जानी जो
अब प्रभून की इच्छा बुलाय वे की है यह विचारिकें
जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहां करें
हैं ऐसी जो परासोली तहां सूरदास जी आए श्रीना
थजी की ध्वजा कों दंडोत करिकें ध्वजा के साम्हें
सन्मुख करिकें सूरदास जी सोये परि अंतःकरन
यह जो श्री आचार्य जी महाप्रभू दर्शन देयंगे अब
यह देह तो थकी तातें अब या देह सों श्रीनाथजी
को दर्शन होय तो जानिये परमभाग्य हैं श्री गुसांई
जी को नाम कृपासिंधु है भक्तन के मनोरथ पूरन

कती हैं ऐसे विचार कें सूरदास जी श्री गुसांई जी
को चिंतवन करत हैं और श्री गुसांई जी कैसे कृपा
सिंधु हैं जैसें सूरदास जी उहां स्मरण करत हैं तेसेंही
श्री गुसांई जी इनकों छिनहूं नाहिं भूलत हैं श्रीना
थ जी कों सिंगार होतो तासमय सूरदास जी मणि
कोठा में ठाड़े ठाड़े कीर्तन करते सो ता दिन श्री गु
सांई जी श्री नाथ जी कौ सिंगार करत हुते और
सूरदास जी कों कीर्तन करत न देख्यो तब श्री गुसां
ई जी नें पूछी सूरदास जी नाहीं देखियत सो काहे
तें तब काहू वैस्नव नें कह्यो जो महाराज सूरदास
जी तो आज परासोली की ओड़ी जात देखे हैं तब
श्री गुसांई जी नें जान्यो जो भगवद इच्छा तें अवसा
न समें है ताते सूरदास जी परासोली गये है तब श्री
गुसांई जी नें अपने सेवकन सों कह्यो जो पुष्टि मा
र्ग को जिहाज जात है जाकों कछू लेनों होय सो
लेउ और जो भगवद इच्छा तें राज भोग आरती प
र्छे रहत हैं तो मेंहूं आवत हों पाछें श्री गुसांई जी
रखेर सूरदास जी की खबरि मंगायो करें जो आवे
सोई कहे जो महाराज सूरदास जी तो अचेत हैं क
छू बोलत नाहीं ऐसें करत श्री नाथ जी के राज
भोग को समय भयो सो राजभोग आरती करि
कें श्री गुसांई जी श्री गिरि राज तें नीचे उतरे सो
आप परासोली पधारे भीतरिया सेवक रामदा
स जी प्रभृत और कुंभन दास जी और श्री गुसांई
जी के सेवक गोविंद स्वामी चत्रभुजदास प्रभृत

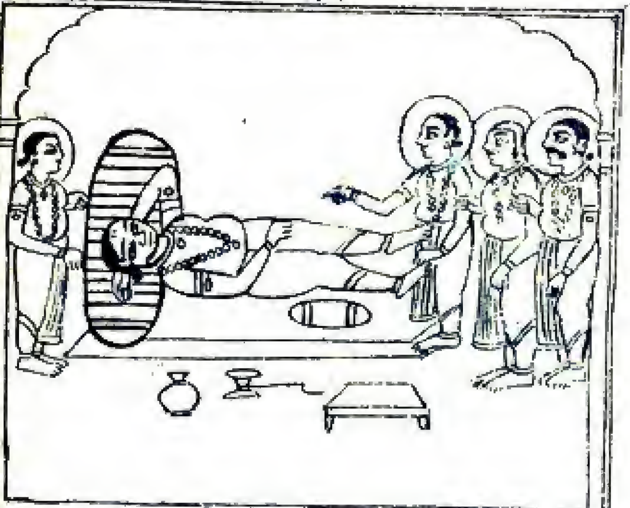

और सब श्री गुसांई जी के साथ आए सो आव
तही सूरदास जी सों श्री गुसांई जी नें पूछी जो सूर
दास जी कैसें हो तब सूरदास जी नें श्री गुसांई जी कों
दंडोत करिकें कह्यौ जो महा राज आए हो महारा
ज की बाट देखत हुतौ यह कहि कें सूरदास जी ने
एक पद गायो सो पद ॥

राग सारंग ॥

देखौ देखौ हरि जू कौ एक सुभाव ॥ अति गंभीर
उदार उदधि प्रभू जानि सिरोमन राय ॥१॥ राई
जितनी सैवा कौ फल मानत मेरु समान ॥ समझि
दास अपराध सिंधु सम बूंदन एकौ जानि ॥२॥
वदन प्रसन्न कमल पद सनमुख दीखत ही है

ऐसे ॥ ऐसे बिमुख हु भए कृपा या मुख की जब
देखौ तब तैसे ॥ ३ ॥ भक्त विरह करत करुणा मय
डोलत पाछें लागें ॥ सूरदास ऐसे प्रभु कों कत दी
जे पीठ अभागे ॥ ४ ॥

यह पद सूरदास जीने कह्यौ सो सुनि कें श्री गुसां
ई जी बहुत प्रसन्न भए और कह्यौ जो ऐसौ दैन्य ॥
प्रभु अपने सेवकन कों देहि या दैन्य के पात्र एही
हैं तब वा बेर श्री गुसांई जी पास ठाड़े हुते और चत्र
भुजदास हू ठाड़े हुते तब चत्रभुजदास ने कह्यौ जो
सूरदास जीनें बहुत भगवद जस वर्णन कीयो परि
श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ जस वर्णन ना कीयो
तब यह बचन सुनि कें सूरदास जी बोले जो मैं तौ सब
श्री आचार्य जी महा प्रभून कोही जस वर्णन की
यो है कछु न्यारौ देखूं तौ न्यारौ करूं परि तेरे साथ
कहत हों या भांति कहि कें सूरदास जीनें एक पद
कह्यौ ॥ सो पद

राग बिहागरो

भरोसौ दृढ़ इन चरणन केरो ॥ श्री वल्लभ नख चंद्र ॥
छटा बिनु सब जग मांझि अंधेरो ॥ १ ॥ साधन औ
र नहीं या कलि में जासों होत निवेरो ॥ सूर कहा
कहि दुविधि आंधरो बिना मोल कौ चेरो ॥ २ ॥ ५
यह पद कह्यौ पाछें सूरदास जी कों मूर्छा आई तब
श्री गुसांई जी कहें जो सूरदास जी चित की वृत्ति
कहां है तब सूरदास जीने एक पद और कह्यौ ॥ ४

सो पद

रागविहागरो ॥
बलिबलिबलि हौ कुमर राधिका नंद सुवन जासौं
रति मानी ॥ वे अतिचतुर तुमचतुर सिरोमन प्री
त करी कैसें होत है छानी ॥ १ ॥ वेजु धरत तन कन
कपीत पट सोतो सब तेरी गति ठानी ॥ तें पुनि स्या
म सहज वे सोभा अंबर मिस अपने उर आनी ॥
२ ॥ पुलकित अंग अबही है आयौ निरखि दे
खि निज देह सियानी ॥ सूर सुजान सखी के बूझें
प्रेम प्रकाश भयौ विहसानी ॥ ३ ॥
यह पद कह्यौ इतनों कहि कें सूरदास जी कौ चित्त
श्रीठाकुर जी कौ श्री मुख तामें करुणा रस के भरे
नेत्र देखे तब श्री गुसांई जी पूछो जो सूरदास जी
नेत्र की वृत्ति कहां है तब सूरदास जी ने एक पद
और कह्यौ ॥ सो पद

रागविहागरो

खञ्जन नैन रूप रस माते ॥ अति सैचारु चपल अ
नियारे पल पिंजरा न समाते ॥ चलि चलि जात नि
कट श्रवनान के उलटि पुलटि ताटंक फंदाते ॥ सू
रदास अंजन गुण अटके नातर अब उडि जाते ॥
इतनों कहत ही सूरदास जीनें या शरीर कौ त्याग
कीयौ सो भगवद् लीला में प्राप्त भये पाछें श्री गु
सांईजी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आपेता
से सूरदासजी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे
परम कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कौ पार
नाहीं तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ ६ ॥ वैष्णव ८४ ॥ सम्बन्ध ॥ ÷

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक परमानन्द दास कनौ
जिया ब्राह्मण तिनकी
वार्ता लिख्यते
हैं

सो परमानन्द दास जी परम भगवद लीला मध्य या
ती श्रीठाकुर जी के परम सखा हैं सो जब श्री आचा
र्य जी महाप्रभू आप भूतल पर प्रगट भये तब श्रीगो
वर्द्धन नाथ जी की आज्ञा ते दैवी जीवन के उद्धारार्थ
और तैसेई श्री आचार्य जी महाप्रभून को श्रीठाकु
र जी को परकार सब प्रगट भयो और आप श्रीगो
वर्द्धन पर्वत में प्रघट भए सो गोपाल दास जी वल्लभा
ख्यान में गाये हैं जो अपने क जीव कृपा करी वांदे प्रांतर पर
देस ताते परमानन्द दास जी को जन्म कनौज में हैं क
नौज या ब्राह्मण के घर भयो सो वे परमानन्द दास जी
बहुत योग्य भए और कवि भये भगवद कृपा के पात्र
भये कीर्तन बहुत आछे गावते ताते परमानन्द दास
जी के संग समाज बहुत रहतो आप स्वामी कहावते
आप सेवक करते सो भगवद इच्छा ते एक समय
परमानन्द दास जी कनौज ते आप प्रयाग को आ
वे सो प्रयाग में उतरे सो वहां कीर्तन बहुत आछे
गावते ताते बहुत लोग कीर्तन सुनिवे को आवते
और अडेल ते कार्यार्थ लोग बहुत आवते सो इ
न के कीर्तन सुनि के पार अडेल में जाय कहते

जो परमानन्द दास जी इहां प्रयाग में आये हैं सो की
र्तन बहुत आछें गावत हैं सो श्री आचार्यजी महाप्र
भून के सेवक जल घरिया कपूर छत्री सो उनके राग
पर बहुत आसक्ति परि वे अवकाश नाहीं ..... पा
वें जो परमानंद दासजीके कीर्तन सुनिवे कौं आवें
सेवा में अवकाश नाहीं जो प्राग जाय सकें सो एक
दिन एक वैष्णव प्राग ते अडेल में आयो सो वानेक
ह्यौ जो आज एकादशी है सो परमानन्द दास जी
आज जागरन करेंगें सो यह सुनिकें वा जल घरि
यानें अपने मन में विचार्यौ जो आज परमानन्द जी
के कीर्तन सुनिवे कौं चलनों सो वे छत्री कपूर जल
घरिया अपनी सेवा सों पहुंचि कें रात्रि कों अपने
घर आये सो घर आयकें अपने मन में विचार की
यौ जो या बेर नाव तौ मिलेगी नाहीं ताते कहा कर्त
व्य परि वे पैरवे में भले निपुन हते सो मन में विचारी
जो पैर कें पार जैये पाछें अपने घर ते चले सो श्री य
मुनाजी के तीर उपर आय ठाड़े भये तब पर्दनी प
हर कें वस्त्र सब माथे सों बांधि कें श्री यमुनाजी में
पैर कें पार प्रयाग आये पाछें वस्त्र पहर कें जा ठौ
र परमानन्द स्वामी उतरे हुते तहां आये सो इनकों
कछु मिलाप तौ परमानन्द स्वामी सों हुतौ नाहीं
जहां और सब जने बैठे हुते तहां एक जाय बैठे परि
एउ श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक हे सो सब
कोउ जानत हुते ताते सबन ने इनकों आदर कर
कें बैठायो सो ए बैठे ता पाछें परमानन्द स्वामी ने

कीर्तन कों प्रारंभ कीयो सो परमानन्द स्वामी ने बिर
ह के पद गाये सो बिरह के पद काहे कों गाए सो
प्रथम इनकों स्वरूप कहि आये हैं कही जो येली
ला मध्यपाती श्री ठाकुर जी के परमानन्द स्वामीपर
म सखा हैं सो उहां सों बिछुरे और इहां तो अबही
श्री ठाकुर जी कों दर्शन नाहीं भयो और श्री आचा
र्यजी महाप्रभून कों दर्शन अब होयगो श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के मार्ग कों यह सिद्धांत है जो भग
वदीन कों संग होय तो श्री ठाकुर जी कृपा करें ता
ही के लियें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें परमान
द स्वामी के ऊपर अनुग्रह करि कें अपने कृपापा
त्र भगवदीय के अंतकरन में प्रेरना करिकें परम

नंद स्वामी के इहां पठाये सो ये श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक कैसे हैं जो जिनकों श्री ठाकुर जी ए क क्षन हूं नाहीं छोडत इनके संगही रहत हैं काहे ते सूरदास जी गाए हैं भक्ति विरह करत करुणा म य डोलत पाछें पाछें और जगन्नाथ जोसी की हूवा र्ता मे लिख्यो है जो जब रजपूत ने तरवार चलाई त व श्री ठाकुर जी नें हाथ पकर्यो ताते श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवकन के सदां श्री ठाकुरजी नि कट ही रहत हैं ताते परमानन्द स्वामीने विरह के प द गाये सो पद ॥

## राग विहागरौ ॥

ब्रज के विरही लोग विचारे ॥ विन गोपाल ठगे से ठा ढे अति दुर्बल तन हारे ॥१॥ मात जसोधा पंथ निह रत निरखत सांझ सकारे ॥ जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत अंखियन बहत पनारे ॥२॥ यह मथु रा काजर की रेखा जे निकसे ते कारे ॥ परमानन्द स्वामी विनु ऐसे जैसें चन्दा विनु तारे ॥३॥

और पद गायो सो राग विहागरौ

तब गोकुल गोपाल उपासी ॥ जो गाहक साधन के ऊधो सो सब बसत ईस पुर कासी ॥ जद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि अब छाडत क्यों रति जासी ॥ अपनी सीतलता नहीं छांडत जद्यपि विधु राहु है ग्रासी ॥२॥ किंह अपराध जोग लिखि पठयो प्रेम भजन ते करत उदासी ॥ परमानन्द ऐसी को विर हन मांगें मुक्ति गुन रासी ॥३॥

## राग कान्हरौ

कौन रसिक है इन बातन कौ ॥ नंदनंदन बिन का
सों कहिये सुनरी सखी मेरे दुखिया मन कौ ॥१॥
कहा वे जमुना पुलिन मनोहर कहां वह चंद सरद
राति कौ ॥ कहां वे मंद सुगंध अमल रस कहां वे
षट पद जल जातन कौ ॥२॥ कहां वे सेज पौढिवो
बन कौ फूल बिछौना म्रदु पातन कौ ॥ कहां वे दरस
सपरस परमानन्द कोमल तन कोमल गातन कौ
॥३॥+

## राग कान्हरौ

माई कों मिलवे नंदकिसोर ॥ राक घार को नैन
दिखाये मेरे मन कौ चोर ॥१॥ जागत नाम मनत नहीं
सूटत क्यों पाउंगी भोरे ॥ सुनरी सखी अब कैसें
जीजे सुनत मचर खग रोरे ॥२॥ जो यह प्रीति स
न्य अंतर गति जिन काहू बन होरे ॥ परमानन्द प्र
भू आन मिलेंगे सखी सीस जिन ढोरे ॥३॥+

इत्यादिक पद बिरह के ऐसे परमानंद स्वामीनें
सगरी राति गाय पाछिली घ डी चारि रात्र रहीसं
व जोजो जागरन में आए हुते सो सब अपने घरको
गये तैसेंई श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक ए
जल घरिया कपूर हू परमानंद स्वामी सों जैसी कृ
ष्ण स्मरण करि कें चले और परमानंद स्वामीके
कीर्तन सुनि कें बहुत प्रसन्न भये और परमानन्द
स्वामी सों कह्यो जो जैसे हमने सुने हुते ताते अ
धिक देखे तुम परम भगवद अनुग्रह पूरण हो

ये जलघरिया क्षत्री कपूर श्री महाप्रभून के परमभ
गवदीय है सो ऐसे जो चलि आए सो परमानन्द स्वा
मी के उपर अनुग्रह करिवे कों आए है नातर भ
गवदीय काहे कों काहू के घर जांय और यह उ
पर कहि आये हैं जो श्री आचार्य जी महाप्रभून के
निकट ही रहत हैं सो याको हेत यह जो निकट रहत
हैं सो इन जल घरिया क्षत्री कपूर की गोद में बैठि कैं
श्रीनवनीत प्रिया जीने परमानंद स्वामी के पद सुने
जो श्री आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की मर्य्यादा
है जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के अनुग्रह बिना
श्रीठाकुर जी कृपा न करें सो उन जल घरिया क्षत्री
कपूर उपर श्री आचार्यजी महाप्रभून को परम अनु
ग्रह है तातें श्रीनवनीत प्रिया जी इनकी गोद में
बैठि के परमानन्द स्वामी के पद काहे को सुनने
पडे सो ताको हेत यह जो भगवदीय परमानन्द
स्वामी के उपर श्री नवनीत प्रयाजी अनुग्रह क
रवे कों आप पधारे हैं तातें सुने सो श्री आचार्य
जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री परमा
नन्द स्वामी सों जैसी कृस्न कहि कें चले सो श्रीय
मुनाजी के तीर उपर आये सो वहां आय कें बिचा
र कीयो जो नाव की याट देखें तो अबार होयगी
और सेवा छूटेगी और श्री आचार्यजी महाप्रभू
भी खीजेंगे तातें जैसे पैर के आये हुते तैसेंही चले
सो पैर के पास गये सो पार आवत ही स्नान कर
कें अपनी सेवा में तत्पर भये पाछें वहां प्राग में ॥

परमानन्द स्वामी की रात्रि के जागरन के श्रमित
सों आंखि लगी निंद्रा आई सो इतने में स्वप्न आ
यो सो स्वप्न में देखे जो जैसें रात्रि के जागरन में श्री
आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जल घरिया प्र
भी बैठे हैं और उनकी गोद में श्री नवनीत प्रिया
जी के दर्शन भये और स्वप्न में श्री नवनीतप्रिया
जी परमानन्द स्वामी सों कहें और परमानंद स्वा
मी की निद्रा खुली सो वा श्री मुख को कोउ सौं
दर्य कोटिक दर्पसापहराय परमानन्द स्वामी नें
देख्यो सो स्वप्न में तो हृदय में धरि लीये और मन में च
टपटी लगी सो यह दर्शन फेरि कब होयगो तब यह
मन में विचार्यो जो यह दर्शन उन श्री आचार्यजी
महाप्रभुन के सेवक स्वामी जलघरिया विना न हो
यगो तातें होय तो उनके पास जैये जो उनसों मिलें
तब कार्य सिद्धि होय ऐसो परमानन्द स्वामी नें अ
पने मन में विचार कियो सो तत्काल प्रागनें अ
डेल कूं चले सो श्री यमुनाजी के तीर ऊपर आय
ठाढे भये सो प्रातःकाल को समय भयो सो प्रथम
नाव चली तापर बैठि के पार उतरे तब आगें आय
के देखें तो श्री आचार्यजी महाप्रभुजी स्नान संध्या
वंदन करत हैं सो परमानन्द स्वामी को श्री महाप्र
भूजी को कैसो दर्शन भयो साक्षात पूरन पुरुषोत्तम
श्रीकृष्णचंद्र सो श्री गुसांईं जी वल्लभाष्टक में लि
ख्यो है सो वस्तुतः कृष्ण एव ऐसो दर्शन भयो
जो श्री आचार्यजी महाप्रभुन के सेवक जल घरि

या छत्री कपूर की गोद में श्रीठाकुर जी काहे कों वे
रे यह कारण जिन के माथे ऐसे प्रभू विराजत हैं परप
रमानन्द स्वामी के मन में यह जो छत्री कपूर मिले
सो साक्षी सो काहेते जो जिन के माथे ऐसे प्रभू औ
र जिनके दर्शनत श्री आचार्य जी महाप्रभून कों द
र्शन भयो तापाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून जू
ने अपने श्री मुख सों कह्यो जो परमानन्द कछु भग
वदीयजस वर्णन करि तब परमानन्दस्वामी ने वि
रह के पद गाये ॥ सो पद

## रागसारंग ॥ ❊

कौन वेर भई चलेरी गोपाल ॥ हों ननसार गई हीं ए
ओते वार वार बूझत ब्रजबाले ॥ १ ॥ तेरो तन कौ रू
प कहा गयो भामिन अरु मुख कमल सुखाय रह्यो
सब सोभा गयो हरि के संग वृंद सो कमल विरह दह्यो
॥ २ ॥ को बोले को नैन उघारे को प्रति उतर देहि वि
कल मन ॥ जो सर्वस्व अक्रूर चुरायो परमानन्द
स्वामी जीवन धन ॥ ❊

## रागसारंग

जिय की साधन जिय ही रहीरी ॥ बहुरि गोपाल दे
खि नहीं पाए बिलपन कुंज अहीरी ॥ १ ॥ एक दि
न सों ज समीप यह मारग बेचन जात दहीरी ॥ प्री
त के लिये दान मिस मोहन मेरी बांह गहीरी ॥ २ ॥
बिनदेखे घड़ी जात कलप सम बिरहा अनल द
हीरी ॥ परमानंद स्वामी बिन दर्शन नैनन नींद बा
हीरी ॥ ३ ॥ ❊

राग सारंग ॥+

वह बात कमल दल नैनन की ॥ बार बार सुधि औ
वत रज नी वह दुरि देनी सैनी सैन की ॥ वह ली
ला वह रास सरद की गोरज रजति आवनि ॥ अ
रु वह उंची टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि
॥ २ ॥ बसन कुंज में रास खिलायौ विथा गमाई
मैन की ॥ परमानन्द प्रभू सों क्यों जीवै जे पोखी
म्रदु बैन की ॥

या भांति परमानन्द स्वामी ने विरह के पद गाए
सो सुनि कें परमानन्द स्वामी सों कह्यौ जो कछु बा
ल लीला वर्णन करि तब परमानन्द स्वामी नें कह्यौ
जो महाराज में कछु समझत नाहीं तब श्री महाप्र
भून नें कह्यौ जो स्नान करि आउ हम तोकों सम
झावेंगे तब परमानन्द स्वामी नें श्री महाप्रभून
सों पूछौ जो महाराज आप के सेवक विरक्त कहाँ हैं
तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यौ जो कछु स
हल करत होयगो तब परमानन्द स्वामी स्नान कों
गये सो तब परमानन्द स्वामी आगे जाय कें देखें तो
यमुनजल की गागर लैकें वह कपूर क्षत्री आव
त हैं तब निकट आए सो साम्हें मिले सो उनकों दे
खकें परमानन्द स्वामी बहुत प्रसन्न भए और पर
मानन्द स्वामी नें उनकों नमस्कार करी और कह्यौ
जो रात्रि कों जागरन में आप पधारे हते सो श्री ठा
कुर जीनें आप की गोद में बैठि कें मेरे कीर्तन
सुने सो आप की कृपा ते श्री ठाकुर जी नें मोसों क

यौ जो में श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जल
घरिया स्त्री की गोद में बैठि के तैं कीर्तन सुने
हैं और आप की कृपा ते मेरो भाग्य सिद्धि भयो है
सो आवत ही तुम्हारी कृपा ते मोकों दर्शन भयो
इतनी बात सुनि कें उन जल घरिया नें कह्यो जो ए
से मति कहौ जो श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे
तो खीजेंगे सो सेवा छोड़ कें क्यों गये ताते यह बा
त मति कहौ तब इतनी सुनि कें परमानन्द स्वामी
कों आश्चर्य भयो और कह्यो जो या धन्य है जिन
ऊपर श्रीठाकुर जी को ऐसो अनुग्रह है और ये

अपनो स्वरूप छिपावत हैं पाछें परमानन्द स्वामी
तो स्नान कों गये और जल घरिया जल की गागर

लेकें मन्दिर में गयो पाछें परमानन्द स्वामी श्रीज
मुनाजी में स्नान करिकें ततकाल आप श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के आगें आय ठाड़े भये तब
श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो परमानन्द
स्वामी आगें आउ बैठि तब परमानन्द स्वामी आ
प आगें आय बैठे तब श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें परमानन्द स्वामी कों नाम सुनायो पाछें मन्दि
र में पधार कें श्री नवनीत प्रियाजी के सन्निधान
परमानन्द स्वामी कों ब्रह्म संबंध करवायो पाछें
अनुग्रह करिकें परमानन्द स्वामी कों अनुक्रमणि
का सुनाई काहेते जो प्रथम परमानन्द स्वामी
सों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें अपने श्री मुख

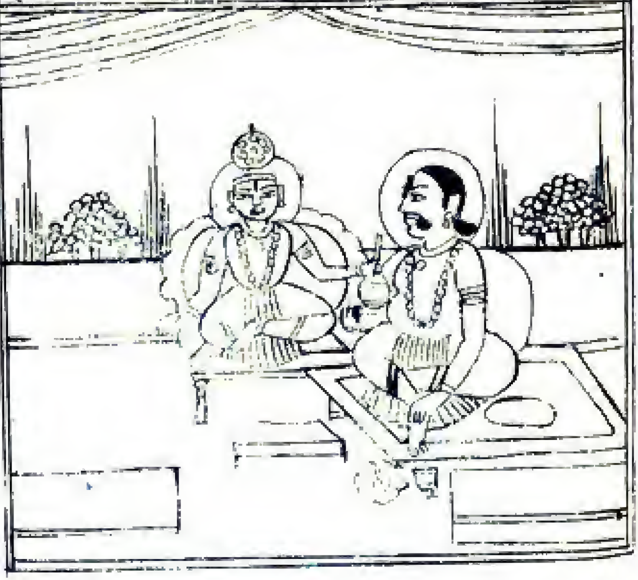

सों कह्यो जो भगवद जस वर्णन करि सो परमानं
द स्वामी नें विरह को पद गायो तब श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो परमानंद स्वामी बा
ल लीला गाउ तब परमानन्द स्वामी नें कह्यो जो
राज में कछु समझत नाहीं सो परमानन्द स्वामी
नें काहे ते कह्यो जो ऊपर कहि आए हैं जो ये श्री
ठाकुर जी सो बिछुरे हैं सो बिछुरे के दुख की तो
स्फूर्ति रही और संयोग जो सुख भयो ताको वि
स्मरन भयो जो काहे ते जो सब लीला विशिष्ट ···
··· पूरण पुरुषोत्तम तो श्री आचार्य जी महाप्रभून
सों घर पधारे हैं सो परमानन्द दास कों श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें अनुक्रमिणका सुनाई तब सब
लीला की स्फूर्ति भई और अनुक्रमणिका सुना
ई ताको कारण कहा जो श्री आचार्य जी महाप्र
भून को नाम है श्री भागवत पीयूष समुद्र मथन:
क्षम: सो श्री भागवत को श्री गुसांई जी अमृत
को समुद्र करिकें वर्णन कीये हैं सो अनुक्रमणि
का द्वारा श्री भागवत रूपी समुद्र श्री आचार्य जी म:
हाप्रभून नें परमानन्द स्वामी के हृदय में धर्यो ता
ते वाणी तो सब अष्ट काव्य की समान है और ये
दोउ परमानन्द स्वामी और सूरदास जी सागर भये
सो याते जो श्री भागवत रूपी अमृत को स्वरूप
इनके हृदय में श्री आचार्य जी महाप्रभून नें ध
र्यो सो काहे ते जो सब कोउ सूरसागर और पर
मानन्द सागर कहते अब परमानन्द दास सो अ

आचार्य जी महाप्रभू श्री मुख में कहें जो बाल लीला वर्णन करी सो परमानन्द जी ने तत्काल बाल लीला के पद करिकें श्री नवनीतप्रिया जी के सन्निधान गाये ॥ सो पद

राग सामरी

माईरी कमल नैन श्याम सुंदर झूलत हैं पलना ॥ बाल लीला गावत सब गोकुल के ललना ॥१॥ अरुण तरुण कमल नख मनि जस जोती ॥ कुंचित कच भवरा कुल लटकत गज मोती ॥२॥ अंगूठा गहि कमल पान मेलत मुख माहीं ॥ अपनो प्रतिविम्ब देखि पुनि पुनि मुसिकाहीं ॥३॥ जसुमति के पुन्य पुञ्ज बार बार लाले ॥ परमानन्द स्वामी गोपाल सुत सनेह पाले ॥४॥

यह पद सुनि कें श्री आचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए फेरि और पद गायो ॥ सो पद

राग बिलावल

जसोधा तेरे भाग्य की कही न जाय ॥ जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्लभ सो प्रघटे हैं आय ॥१॥ शिव नारद सनकादिक महा मुनि मिलवे करत उपाय ॥ ते नंद लाल धूर धूसरे व पु रहत गोद लिपटाय ॥२॥ रतन जटित पौढ़ाय पालने बदन देखि मुसिकाई ॥ झूलो मेरे लाल बलिहारी परमानन्द जस गाई ॥३॥

राग बिलावल

नरिा मय आंगन नंद के खेलत दोउ भैया ॥ सो कैसे

बाल लीलाके पद परमानन्द दास नें गाए सो सुनि कें श्री आचार्य जी बहुत प्रसन्न भए से। परमानन्द दास जी श्री आचार्य जी महा प्रभून के पास हैं सो परमानन्द दास कों आपने कीर्तन की सेवा दीनी सो परमानन्द दास जी श्री नवनीत प्रिया जी कों नित्य नये पद करि कें भांति भांति के सुनावते जब अनोंसर होतो तब परमानन्द दास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें पद कीर्तन करें श्री आचार्य जी महाप्रभू नित्य कथा कहते सो परमानन्द दास जी नित्य सुनते सो ताही प्रसंग के कीर्तन करि कें परमानन्द दास जी सुनावते सो एक दिन परमानन्द दास जी नें श्री ठाकुर जी के चरणार्विंद कौ महात्म सुन्यो सो चरणार्विंद के महात्म को कीर्तन करि श्री आचार्य जी महा प्रभून कों सुनायो सुनि के श्री आचार्य जी महा प्रभू बहुत प्रसन्न भए सो पद॥

राग कान्हरौ

चरण कमल वंदौ जगदीस गोधन के संग धाए। जे पद कमल धूरि लपटाने करि गहि गोपीन के उर लाए॥१॥ यह पद संपूरण करि के परमानन्द दास जीनें गायो और श्री आचार्य जी महाप्रभून के स्वरूप को और प्रार्थना को पद गायो॥ सो पद

राग कान्हरौ

यह मांगों गोपी जन वल्लभ यह परमानन्द दास स्वामीनें संपूरण करि कें गायो सो सुनि कें श्री आचार्य जी महा प्रभू अपने मन में जाने जो यह मिस कर

कें परमानन्द दास या पद कों सुनाय के व्रज के दर्श
न की प्रार्थना कीनी हे, ताते व्रज कों अवश्य चल
नों ॥५॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥

अब श्री आचार्यजी महा प्रभू यह विचार करेंजो
व्रज कों पधार बे को उद्यम कीयो सो दामोदरदास
हरि सानी कृष्णदास मेघन परमानन्द दास और
यादव दास हल्लचाई तथा रसोई की सामिग्री सं

लेकें चले और सब वैष्णव संग ले आप श्री आचा
र्य जी महा प्रभू व्रज कों पधारें सो व्रज कों आवत
परमानन्द दास को गांव कन्नोज आयो तब परमा
नन्द दास नें श्री आचार्यजी महा प्रभून सों बीनती

कीनी जो महाराज मेरे घर पधारिये आपके अनु
ग्रह ते मेरो भाग्य सिधि भयो है अब मेरो घर हू पा
वन करिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप अं
तर यामी कृपानिधान भक्त मनोरथ पूर्वक आप
कृपा करि कें पधारे सो परमानन्ददास के घर आ
छी भांति सों श्री आचार्यजी महाप्रभूनने रसोई
करि श्री ठाकुरजी को भोग समर्प्यौ पाछें भोग सरा
य कें आप प्रसाद लीयो पाछें आप गादी तकिया
न के उपर बिराजे तब परमानन्द दास सों कह्यो जो
कछू भगवद जस गावो तब परमानंद दासजी नें
मन में विचारी जो या समय श्री आचार्यजी महा
प्रभून को मन तो ब्रज में श्री गोवर्द्धननाथजी के
पास है ताते विरह के पद गाउं सो विरह को पद
ऐसो गायो जामें छिनहू कल्प समान जाय ॥

सो पद राग सोरठ ॥

हरि तेरी लीला की सुधि आवे ॥ कमलनैन मन
मोहनी मूरत मन मन चित्र बनावे ॥१॥ एकवार जा
य मिलत माया करि सो कैसें बिसरावे ॥ मुख मु
सिकान बंक अविलोकन चाल मनोहर भावे ॥
कबहुक निबड तिमर आलिंगन कबहुक पिक
सुर गावे ॥ कबहुक सभ्रम क्वासि क्वासि कहि
संगहीन उठि धावे ॥३॥ कबहुक नैन मूंदि अं
तर गति मनि माला पहरावे ॥ परमानंद प्रभु स्या
न करि ऐसें विरह गवावे ॥ ४ ॥

यह पद परमानन्द दासनें गायो सो सुनि कें श्री

आचार्यजी महाप्रभून कों मूर्च्छा आई सो जा ली
ला को पद परमानन्द दास ने गायो ता लीला विषें ॥
श्री आचार्यजी महा प्रभू मान भये सो देहानु सं
धान न रह्यो सो तीन दिन लों श्री आचार्यजी महा
प्रभून कों मूर्च्छा रही सो सबरे सेवक दामोदरदास
हरसानी प्रभृति श्री आचार्यजी महा प्रभून के ॥
दर्शन करे सो वैसें ही बैठे रहे चतुर्थ दिन के प्रातः
काल श्री आचार्यजी महा प्रभू सावधान भए
तब सब वैस्नव प्रसन्न भए तब परमानन्ददासजी
मन में डरपे जो फेरि ऐसो पद न गाऊं फेरि सूधे
पद गाए ॥ सो पद

## राग विभाग

माईरी हों आनंद गुन गाऊं ॥ गोकुल की चिंता
मनि माधोजी मांगो सो पाऊं ॥ जब ते कमल नैन
व्रज आये सकल संपदा बाढी ॥ नंद राय के द्वारे
देखो अष्ट महा सिद्धि ठाढी ॥ २ ॥ फूलें फलें सदं
वृंदावन काम धेनु दुहि दीजे ॥ मारग मेघ इंद्र
बरसावे कृस्न कृपा सुख लीजे ॥ कहत जसोधा
सखियन आगें हरि उत कर्ये जनावें ॥ परमानंद
दास को ठाकुर मुरली मनोहर भावें ॥
और हू पद गायो ॥ सो

## राग गौरी ॥

बिमल जस वृंदावन के चंद्र को ॥ यह पद सम्पूर
ण करि कें गायो फेरि और गायो ॥

## राग सारंग ॥

चलिनी नन्द गांव जाय बसिये ।। यह पद सम्पूरण करि के गायो सो पद में यह कह्यो जो चलरी नंद गांव जाय बसिये सो श्री महाप्रभु जी भूमि के ब्रज कों पधारे सो प्रथम श्री गोकुल पधारे सो श्री गोकुल आवत हते श्री आचार्य जी महाप्रभु श्री यमुना जी के तीर ऊपर छोंकर के नीचे बैठक में तहां श्री आचार्य जी महाप्रभु बिराजे और एक बैठक श्री द्वारिकानाथ जी के मन्दिर के पास है सो भीतर की बैठक है सो रात्रि के विश्राम मन्द, रसोई को ठौर है उहां श्री आचार्य जी महाप्रभुन को घर हुतो जब आप श्री गोकुल पधारते तब उहां ई उतरते सो यह भीतर की बैठक है पाछे सब वैष्णवन ने श्री यमुना जी स्नान कीये और परमानन्द दास जी हू श्री यमुना जी को जस वर्णन कीये सो पद

## राग रामकली

श्री यमुना जी यह प्रसाद हों पाऊं ।। तिहारे निकट रहों निस बासर राम कृष्ण गुन गाऊं ।।१।। मंजन बिमल पावन जल चित कलुख बहाऊं ।। तिहारी कृपा भान की तनया हरि पद प्रीत बढ़ाऊं ।।२।। बिनती करों यही बर मांगों अधम संग बिसराऊं ।। परमानन्द दास फल दाता मदन गोपाल लड़ाऊं ।।३।।

## राग रामकली

श्री यमुना जी दीन जान मोहि दीजे ।। सो ऐसे पद सम्पूरण करिके श्री यमुना जी के परमानन्द दास जी ने बहुत गाये श्री आचार्य जी के आगे तीर विषे गाये ना उपरान्त श्री महाप्रभु जी ने परमानन्द दास कों

कों बाल लीला विशिष्ट श्री गोकुल के दर्शन करवा
ये सो परमानन्द दास कों ऐसौ दर्शन भयौ। सो सब
ब्रज भक्त श्री यमुना जल की गागरि भरि लै जात है
और श्री ठाकुर जी मार्ग में खेलत हैं और ब्रजभक्त
न कों जल की गागरि उठाय देत हैं और उनकी कंचु
की छोरे हैं या भांति सों दर्शन भए सो तैसोई पद श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के आगें गायौ सो पद

## राग बिलावल

यमुना जल घर भरि चली चन्द्रावलि नारी॥ मारग खे
लत मिले घनस्याम मुरारी॥१॥ नैनन सों नैना मिले म
न रह्यौ है लुभाई॥ मोहन मूरत जिय बसी पग धर्यौ न
जाई॥२॥ नव की प्रीति प्रगट भई यह पहली भेट
॥परमानन्द ऐसी मिली जैसी गुड़ में चेंट॥३॥

## राग सारंग

ग्वाल नेंक टेकौ मेरी बैंया॥ औघट घाट चल्यौ नहिं
जाई रपटत हों कालिन्दी मंहियां॥१॥ यह पद सम्पू
र्ण करके ऐसे पद गाये ता पाछें परमानन्द दास ने बा
ल लीला के पद बहुत गाये और श्री गोकुल कौ स्व
रूप जा में आवे ऐसो पद गायो॥ (सो पद)

## राग कान्हरौ

गावत गोपी मधु ब्रज बानी॥ जाके भुवन बसत त्रि
भुवनपति राजा नन्द जसोधा रानी॥१॥ गावत वेद भा
रती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी॥ गावत गुन
गन्धर्व काल शिव गोकुलनाथ महातम जानी॥२॥
गावत चतुरानन जद नायक गावत शेष सहस मुः

रवास ॥ मन क्रम वचन प्रीति पद अम्बुज अब गावत परमानन्द दास ॥३॥ यह पद परमानन्द दास नें गाये पाछें और पद गायो सो पद ॥

## राग कान्हरौ

जसुमति गृह आवति गोपी जन ॥ बासर ताप निवारन कारन बार बार कमल मुख निरखन ॥१॥ चाहत पर्कार देहरी उलंघन किलक किलक हुलसत मन मन हीं मन ॥ लोंन उतारि दोउ कर वारि फेर अपने तन मन धन ॥२॥ लेत उठाय आपन हीयो भरि प्रेम बिबस लागे दृग ढरकन ॥ ललीलें पलना पौढावन के अरु कमाय पौंढे सुन्दर घन ॥३॥ देत असीस सकल गोपीजन चिरं जीवो लाग रजमुन ॥ परमानन्द दास को ठाकुर भक्त वछल भक्त मन रंजन ॥४॥

## राग हमीर ॥

चितै चितै चित चाखौरी माई ॥ यह पद सम्पूरण कर के गायो सो ऐसे पद परमानन्द दास नें बहुत गाये ता पाछें श्री गोकुलनाथ जी के दर्शन करि कें परमानन्द दास श्री गोकुल उपर बहुत आसक्त भये सब ऐसे पद गाये जामें श्री आचार्यजी महाप्रभून को पधराय कीनी जो मोको श्री गोकुल में आय कें चरणारविंद के नीचें राखौ नित प्रति प्रभून के दर्शन करों सब लीला विसिष्ट पूरन पुरुषोत्तम हैं और यह पद गायो सो पद ॥

## रागकान्हरौ

यह मांगो जसोदानंदन ॥ चरण कमल मन मन मधु

र याछबि नैनन पाऊं दर्शन ॥ १॥ चरण कमल की से वा दीजे नन मजन बिजे लला घन नंदन ॥ वृषभानु [illegible] ॥ २॥ [illegible] जमुना जल अचिवो श्री वल्लभ को दास यही पन ॥ महाप्रसाद पाऊं हरि गुन गाऊं परमानन्द दास जीवन धन ॥ ३॥

## रागकान्हरौ

अब लगि जमुना गाय गोवर्द्धन तब लगि गोकुल गांव गुसांई ॥ यह पद सम्पूरण करके प्रार्थना के पद गाये तब कितनेक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री गोकुल में विराजे ता पाछें सब वैस्नवन कों संग लेके श्री गोवर्द्धननाथ जी के दर्शन को पधारे ॥

## वार्ताप्रसंग ३

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें पर्वत ऊपर पधारे सो आवत ही परमानन्द दास नें श्रीनाथ जी कों श्री मुख देखि कें वहां के वहां रहे तब श्री महाप्रभू जीनें श्री मुख सों कह्यो जो परमानन्द दास कछू भागवत लीला गावो तब परमानन्द दास अपने मन में विचारे जो कहा गाऊं तब ऐसें विचारो जो जामें प्रथम अवतार लीला ता पाछें चरणारविंद की वंदना पाछें भगवद वर्णन को स्वरूप ता पाछें बाल क्रीडा ता पाछें श्री ठाकुर जी को महात्म ऐसो पद परमानन्द दास नें गायो सो पद ॥

## रागकान्हरौ

मोहन नन्द राय कुमार ॥ अगट ब्रह्म निकुञ्ज नायक

क भक्त हित अवतार ॥१॥ प्रथम चरण सरोज वन्दो श्याम घन गोपाल ॥ मकर कुंडल गंड मंडित चारु नैन विसाल ॥२॥ बाल राम सहित विनोद लीला सें करहेंता दास परमानन्द प्रभू हरि निगम बोलत नेत ॥३॥ और आसक्ति कौ गायो

## राग पूरवी ॥

मेरौ माई माधौ सों मन लाग्यौ ॥ मेरो नैंन और कमल नैन कौ टूक ठौरी करि साग्यौ ॥१॥ लोक वेद की कानि तजी मैं न्यौतो अपने आन्यौ ॥ राक गोविंद चरण के कारण वैर सबन सों ठान्यो ॥२॥ अब कौ भिन्न होय मेरी सजनी दूध मिल्यौ जैसें पान्यौ ॥ परमानन्द मिली गिरधर सों है पहली पहचान्यौ ॥३॥

ऐसे पद परमानन्द दास नें गाए ता पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू सेन आरती करि श्रीनाथ जी कौं पौढ़ाये तब अनोसर करि आप नीचें पधारे तब परमानन्द दास हू नीचे आय बैठे तब रामदास भीतरियानें परमानन्द दास कौं महाप्रसाद दूध पठायो सो दूध परमानन्द दास जी लेवे लागे तब तातो लाग्यो तब परमानन्द दास जीनें सीरो करि कें लीयो ता पाछें रामदास नें पूछी जो तुमकौं महाप्रसाद दूध पठायो हो सो आयो तब परमानन्द दास नें कही जो हां आयो परि दूध बहुत तातो हुतो सो ऐसो दूध श्री ठाकुर जी कैसें आरोगत होंयगे तातें दूध तौ सुहातो भलौ तब रामदास नें कह्यौ जो बहुत आछौ आप भगवदीय हो जैसें आज्ञा करोगे तैसें करेंगे तब सकारें सब सेवक

स्नान करि कें श्री गोवर्द्धन नाथजी की सेवा में तत्पर भये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें स्नान करि कें श्री गिर राज उपर पधारे तब श्री गोवर्द्धननाथजी कौं जगाये तब प्रेममय परमानन्ददासजी जाय कें श्री ठाकुर जी के जगायवे कौ पद गायो सो पद ॥

## राग विभास

जागौ गोपाललाल मुख देखौं तेरौ ॥ पाछें गृह्‌का ज करौं नित्य नेंम मेरौ ॥ १ ॥ विगसत निसा अरुण दिसा उदित भयो भान ॥ गुंजत अलि पंकज वन जागिये भगवान ॥ २ ॥ द्वारे ठाडे वंदीजन करत हैं पुकार ॥ वंस प्रसंग गावत हरि लीला सार ॥ ३ ॥ परमानंद स्वामी दयाल जगत मंगल रूप ॥ वेद पुराण पढत महिमा लीला अनूप ॥ ४ ॥

यह पद परमानन्द दास नें गायो फिर कलेउ कौ पद गायो ॥ सो पद

## राग राम कली

पिछवारे ह्वे ग्वालन टेर सुनायो ॥ कमल नैन प्यारी करत कलेउ कोटन मुख लौं आयो ॥ १ ॥ अरी मैया सियो कच न ध्याय रही है चकुरा उहांही बसायो ॥ मुरली लई न लकुटिया न लीनी अरवराय कौ सखान बुलायो ॥ २ ॥ चकृत भई नंद जू की रानी सत्य आय कि धौं अपनों पायो ॥ फूलीन अंगस मानत सव त्रिभुवन पति सिर छत्र जो छायो ॥ ३ ॥ मिल बैठे संकेत सघन वन विविधि भांति कीयौ मन भायो ॥ परमानन्द सयानी ग्वालनि उलटि अंग मि

रधार पिय प्यारौ ॥४॥
ऐसे पद परमानंद दास नें गायौ ता पाछें श्री गोवर्द्ध
ननाथ जी के मंगला के दर्शन खुले तब परमानन्द
दास नें श्री गोवर्द्धन नाथ जी सों पूछी जो आप ता
तौ दूध क्यों आरोगत हौ तब श्री नाथजी नें कह्यौ
जो ये हम कौ समर्पत हैं सो आरोगत हैं ता पाछें प
रमानन्द दास जी नित्य कीर्तन करि कें सुनावते
तब ता समय एक राजा दर्शन कों आयौ सो श्री गो
वर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तब फेरि आय कें रानी
सों कही जो श्री गोवर्द्धन नाथ जी ठाकुर बहुत सुन्दर
हैं तातें तू जाय कें दर्शन करि आउ तब रानी ने कही
जो जैमें हमारी रीति हैं सो होय तौ दर्शन करें तब राजा
ने कही जो श्री गोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन में काहे
कौ परदा है तब रानी ने मानी नहीं तब राजा नें श्री
आचार्य जी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महा
राज मैं तौ रानी सों बहुत कहत हौं परि वह आवत
नाहीं तातें आप कृपा करि कें दर्शन करवावौ तौ पर
करें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो प
हां से आवौ जो प्रथम वाकों एकांत में दर्शन कर
वावेंगे ता पाछें और लोग दर्शन करेंगे तब राजा
अपनी रानी कों लिवाय कें श्री गोवर्द्धन नाथ जी के
दर्शन करवाये सो सब लोग सरकि गये तब रानी द
र्शन करिबे लागी तब इतने में श्री गोवर्द्धन नाथ जी
नें सिंह पौर के किवाड़ खोल दीए सो सब भीर दौरि
कें रानी के ऊपर परी सो रानी के सब वस्त्र सिकस गये

और बहुत लज्जित भई तब राजा नें रानी सों कही जो मैं नें तो तोसों पहिलेंही कह्यो हतो जो श्रीठाकुर जी कंदरान में काहे कों परदा है ये व्रज के ठाकुर हैं इन नें काहू को परदा राख्यो नाहीं तब वा समय परमानन्द दास जीनें पद गायो ॥

राग देव गंधार

कौन यह खेलवे की बानि ॥ मदन गोपाल लाल काहू की राखत नाहिन कानि ॥१॥ यह एक तुक परमानन्द दास जी नें गाई हुती तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो परमानन्द दास ऐसें कहो जो भली यह खेलवे की बानि ॥ तब परमानन्द दास ने ऐसो ही पद गायो ॥ (सो पद)

राग देव गंधार

भलीयह खेलबे की बानि॥ मदन गोपाल लाल का हू की नाहिन राखत कानि॥१॥ अपने हाथ लै देत हैं चन वर दूध दही घृत सानि॥ जो बरजों तौ आंख दिखावे पर धन को दिन दान॥२॥ सुनरी जसोधा सुत के करतब पहले भांट मथानि॥ फेर डारि दधि डारि आजर में कौन सहै नित हानि॥३॥ ठाढ़ी देखत नंद जू की रानी मूंदि कमल मुख हानि॥ परमा

नंद दास जानत है बोलि बूझि धों आनि॥

यह पद परमानन्द दास नें गायो ता पाछें कितेक पद गाए जो जो लीला श्री ठाकुर जी नें करी सो ता ता लीला के पद परमानन्द दास ने गायौ सो एक दिन भगवदीय रामदास जी और कृष्णदास जी कुंभन दास जी सब वैस्नव मिलकें परमानंन्द जी जहां रह तहुते तहां आये सो भगवदीय आए जानि कें परमा नन्द दास जी बहुत प्रसन्न भये जो आज मेरे घर भ गवदीय आये हैं सो मेरो बड़ो भाग्य है और आज मेरो भाग्य सिद्धि भयो है सो काहे ते जो श्री ठाकुर जी भगवदीय के हृदय में सदां सर्वदा बिराजत हैं ताते भगवदीयन की कृपा होय तो श्री ठाकुर जी अनुग्रह करैं जो ये सब भगवदीय मेरें घर पधारे हैं सो प्रथम भगवदीय की न्यौछावरि करी चाहि ये जो ऐसो तो कछू नाहीं जो न्यौछावरि करों ज बयह बिचार कें परमानंन्द दास नें ऐसो ही पद गा यो सो पद॥

## रागहमीर

आये मेरें नन्द नंदन के प्यारे ॥ मालातिलक मनो
हर बानों त्रिभुवन के उजियारे ॥१॥ प्रेमसहलवसत
मन मोहन नैंकहूं टरत न टारे ॥ हृदय कमल के मध्य
बिराजत श्री व्रजराज दुलारे ॥२॥ कहाजानों कौन
पुराय प्रगट भयो मेरे घर जो पधारे ॥ परमानंद प्र
भु नरी न्योछावर वार वार हों वारे ॥३॥
यह पद भगवदीयन को भेट करि आपने आए
भगवदीयन कों बिदा कीये ता पाछें औसी रीत सों पर
मानन्ददास नें श्रीनाथजी की भली भांति सों सेवा
कीनी सो वे परमानन्द दास जी श्री आचार्य जी म
हाप्रभून के अैसे कृपा पात्र भगवदीय हे सो इनकी
वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

## वार्ता प्रसंग ॥५॥ वैस्नव ८२ ॥ संबंध ॥१९६॥

## अब श्री आचार्यजी महा प्रभून के सेवक कुंभ नदास गोरवा ति न की वार्ता है ॥

सो वे कुंभनदास जी श्री गोवर्द्धन पर्वत के पास
जमुनावतो गांव है तामें रहते सो जमुनावतो नाम
या गाम को काहेते है जो जमुनाजी को प्रवाह सा
रस्वत कल्प में याके निकट हुतो ताते जमुनावतो ना
म या गाम को है तामें कुंभनदास जी रहते और प
रासोली चंद सरोवर के उपर उनकी नदास जी की
धरती हुती सो वहां खेती करते सो कुम्भनदास

जी श्री गोवर्द्धननाथ जी के परमसखा हुते और कृपा पात्र हुते सो अवही श्री गोवर्द्धननाथ जी प्रगट होय कें श्री महाप्रभूजी कों बुलावेंगे तव ये भगवदीय प्रसिद्ध होयगे सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू पृथ्वी परिक्रमा करत झार खंड में पधारे सो झार खंड में श्री गोवर्द्धन नाथ जी नें आज्ञा दीनी जो हम गोवर्द्धन में तीन दमन हैं ॥ नागदमन, इन्द्र दमन, देव दमन, तिनके मध्य में हम देव दमन हैं सो मेरो नाम है ताते तुम आय कें हमकों पधरावो और हमारी सेवा को प्रकार प्रगट करो तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा उहां ही राखि के वेग पधारे तव दामोदर दास हरसानी कृष्ण दास मेघन गोविंद दुवे जगन्नाथ जोसी रामदास ये पांच वैष्णव संग हुते सो श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री गोवर्द्धन की तरहटी आय कें सद्दू पांडे के चौंतरा उपर विराजे सो आगें श्री गोवर्द्धननाथ जी के प्रागट्य में यह सद्दू पांडे भवानी नरो श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनको श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री गोवर्द्धन नाथ जी की सेवा सोंपी और व्रजवासी व्रज में श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक बहुत भए और कुम्भनदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून की सरण आये सो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री गोवर्द्धननाथ जी को एक छोटो सो मन्दिर सिद्ध करवायो तामें श्री नाथ जी कों पधराये और रामदास चौहान कूं सेवा की आज्ञा

दीनी और सब ब्रजवासी लोग दूध दही माखन लावते
सो श्री गोवर्द्धन नाथ जी आरोगत हुते और रामदास
कों जो भगवद इच्छा ते जो आप प्राप्त होय सो भोग ध
रते और आप प्रसाद लेते और जे ब्रजवासी लोग
श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिन
कों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो यह
मेरौ सर्वस्व है सो तुम सब बातन सों यत्न राखियौं
और सेवा में तत्पर रहियो और कुम्भनदास कों
और सब सेवकन कों श्री आचार्य जी महाप्रभून
नें आज्ञा दीनी जो तुम देवदमन के दर्शन किये बिना
महाप्रसाद मति लीजियों तब या भांति सों आज्ञा
करि के श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्र
मा भारखंड में राखी हुती अब कुंभनदास जी नि
त्य श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते श्री गोवर्द्ध
न नाथ जी के दर्शन कों आवते सो कुंभन दास जी की
र्तन बहुत नीके गावते जो श्री आचार्य जी महाप्रभू
न नें कुंभनदास जी कों नाम सुनायो और ब्रह्मसंबंध
कर वायो तब कुम्भनदास जी नित्य नए पद करि
कें श्री ·· नाथ जी कों सुनावते और श्री नाथ जी
कुंभनदास जी के घर पधारते और बहुत क्रीड़ा क
रते खेलते बातें करते और बहुत कृपा कुंभनदास जी
के उपर करते अब रामदास जी श्री गोवर्द्धन नाथ
जी की सेवा करन लागे सो एक समय म्लेछ को उ
पद्रव भयो सो यहां मानिकचंद पांडे सद्दू पांडे राम
दास चौहान कुंभन दास सब मिल कें विचार कीयो

जो यह म्लेछ आयो है सो यह धर्म को द्वेषी है सो
कहा कर्तव्य है तब सब ने कही जो या में कहा क
र्तव्य कहा पूछनो आपनो विचार्यो कहा होत है ता
ते श्रीनाथजी कों पूछो जो महाराज कहा करें तब श्री
नाथजी नें आज्ञा दीनी जो हम कों यहां ते लै चलो हम
यहां ते उठेंगे तब सबन नें पूछी जो महाराज कहां प
धारोगे तब आपनें श्रीमुख सों कह्यो जो टोंड के घ
ने में चलेंगे तब एक भैंसा मंगायो ता पर श्रीगोवर्द्धन
नाथजी कों बैठारे तब एक ओर ते तो रामदास पक
रें रहे और एक ओर ते कुंभनदास जी पकरें रहे और

सब सेवक संग चले जात हैं तहां घने में कांटे बहुत
हुते सो उन्हीं कांटेन में वैठे सो वस्त्र सबन के फाटेग

ये और सरीर में कांटे लगे दुख बहुत पायो सो घनेमें
एक तालाव हुतौ तहां रूखन कौ एक चौक है त
हां वृंद रूख नीचे श्री नाथजी बिराजे सो कछुक सा
मिग्री संग्रह हुती सो रामदास ने भोग धरि जल कौ
करुआ भरि कें आगें धरि कें सब वैष्णव बैठे तब श्री
गोवर्द्धन नाथजी नें कुंभनदास सों कह्यौ जो कुंभन
दासजी कछु गावौ तब कुंभन दासजी तो मन में ष
कुद रहे हुते तब एक पद नयो करिकें गायो ॥ सो प
द

राग सारंग

भावत है तोय टोड कौ घनों ॥ कांटे लगे गोखरू टूटे
फटौ जात यह तनों ॥१॥ सिंह कहा लोकटी कौ डं
र यह कहा बानक बन्यौ ॥ कुंभनदास प्रभु तुम गोव
र्द्धन धर वह कौन रांड ढेडनी कौ जन्यौ

यह पद कुंभनदास ने गायो सो सुनिकें श्री नाथजी
मुसिकाय कें चुप करि रहे इतने में श्री गोवर्द्धन ते स
माचार आये जो वह म्लेच्छ की फ़ौज आई हुती सो
पाछी फिर गई तब श्री गोवर्द्धन नाथजी पर्वत ऊपर
मन्दिर में पधारे ॥

वार्ता प्रसंग १

अब श्री नाथजी पर्वत ऊपर मन्दिर में पधारे
सो व्रज के लोगन कौं बहुत हर्ष भयो जो धन्य देव
दमनजी ऐसो उपद्रव आयो हुतो सो इनके प्रता
पते सब मिट गयो तब कुंभनदास जी प्रसन्न होय
कें पद गाए सो पद श्री गोवर्द्धन नाथजी कौं सुना
ये ॥+

राग श्री ॥ चर्चरी

जयति जयति हरि दास सर्व धरने ॥ यह पद सम्पूरन करिकें गायो पाछें और पद गाये सो पर

रागसारंग ।

कुसुम तेनतर या नीर ॥ यह पद सम्पूरन करकें कुंभनदास नें गायो पाछें नित्य ऐसे पद कुंभनदास जी देव दमन कों सुनावते तब कुंभनदास जी के पद सब जगत में प्रसिद्ध भये सो सब लोग इनके पद गावते तब इनकों पद काहू कलामत ने सीख्यो सो फतेपुर सीकरी में देसाधिपति के आगें कुंभनदास जी को पद कीयो भयो पद वा कलामतने गायो सो सुन कें देसाधिपत कों चित्त वा पद में गड़ गायो और माथो धुन्यो जो ऐसे हू महापुरुष है गये हैं जिनकों ऐसे दर्शन परमेश्वर के होत हैं तब वा कलामतने कह्यो जो अजी साहब अबहू हैं सो सुनि के देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयो और वा कलामत सों कह्यो जो वे कहां हैं तब वा कलामत नें कही जो श्री गोवर्द्धन के पास जमुनावतो गांव है तहां वे रहत है तब देसाधिपतिनें कही जो यहां बुलावो हम उनसों मिलेंगे तब देसाधिपति ने मनुष्य और असवारी कुंभनदास जी के बुलायवे कों भेजे तब कुंभनदास जी तो घर हुते प रसोली में बैठे हुते सो मनुष्यन नें उहां बुलाय दीये तब कुंभन दास जो घर तो हुते नाहीं पातसाह ने याद कीये हो तब कुंभनदास दास ने कही जो भैया में कछु देशाधिपति को चाकर तो नाही मेरो देसाधिपति सों

कहा काम है तब देसाधिपति के मनुष्यन नें कही जो
बावा हमतौ काम कछु समझत नाहीं परि हम कौं
देसाधिपति कौ हुकम है जो कुंभनदास कौं ले आवौ
ताते यह पालकी है यह घोड़ा है जा पर चाहौ ता पर बै
ठि कें चलिये हम तौ आये हैं सो आप कौ ले जायगे
तब कुंभनदास ने मन में विचार कीयो जो बिना जाये
तो निर्वाह न होयगो सो कुंभनदास जी ततकाल उ
हां ते पनहीं पहरि कें चले तब कुंभनदास जी कौं जो ले
वे कौं आये हुते तिन नें कही जो बाबा सवारी में बैठि
ये तब कुंभनदास ने कह्यो जो भैया मैं तो कबहूं बैठ्यो
नाहीं पाऊं ऐसें ही चले सो फतेपुर सीकरी आय पहुं
चे सो देसाधिपति के डेरा हुते तहां गए तब मनुष्यन
नें देसाधिपति सों कह्यौ जो कुंभनदास जी आये हैं त
ब देसाधिपति नें कुंभनदास सों कही जो कुंभनदास जी
आवौ बैठौ सो आय बैठे सो वह स्थल कैसो है जामें
जड़ाव की रावटी तामें मोतीन की झालरि लगी है
ऐसो स्थल हो तामें बैठे तब मन में बहुत दुख लाग्यो
और कह्यो जो यासों तो हमारे व्रज के हीसन के रूख
आछे हैं सो जिनमें श्री गोवर्द्धननाथ जी खेलत हैं
तब इतने में देसाधिपति बोल्यो जो कुंभनदास जी तु
मने विसनपद बहुत कीये हैं सो मैंने तुम कौं बुलायो है
ताते तुम कछु विसन पद गावौ तब कुंभनदास जी
तो मन में कुढ़े हुते जो विचारें जो कहा गाऊं मेरी वाणी
के भक्ता तो श्री गोवर्द्धनधर हैं और कछु गाए बिना
ह्यां काम चलैगो नाहीं ताते ऐसो गाऊं जो कछु है

मेरौ नाम न लेय काहे ते जो याके संगते मेरे प्रभू छूटे हैं
ताते कछु कठोर वचन कहूं जो बुरौ मानेंगौतौ कहा करे
गौ तव यह मन में आई जो जाकौ मन मोहन संग करे ग
कोके सब से नहीं मिलत जो आगे पेर परे यह बिचारिके
तासमय कुंभन दासजीनें एक नयौ पद करि के गायौ।
सो पद ॥

राग सारंग

भक्तन कौ कहा सीकरी काम ॥ आवत जात पन्हैया
टूटी बिसर गयौ हरि नाम ॥१॥ जाकौ मुख देखे दुख
लागे ताकौ करन परी परनाम ॥ कुंभनदास लाल
गिरधर बिन यह सब झूठौ धाम ॥२॥

यह पद गायौ सो सुनि के देसाधिपति अपने मनमें ब
हुत कुढ़ौ और कह्यौ जो इनकौं काहू बात कौ लालच
न होयगौ ये मेरो जस गामें इनकौं तौ अपने परमेश्व
र सों साचौ स्नेह है इतनौं कहि के देसाधिपति ने कुंभ
न दास कौ सीख दीनी तब कुंभन दास जी उहां तें चले
सो मार्ग में आवत अति श्रम जो कबहों प्रभूनकौ मु
ख देखौं सो ऐसौ बिचार के कुंभनदास जी आवतहे
ता समय पद गायौ सो पद ॥

राग धनाश्री

कबहूं देखहौं इन नैननु ॥ सुन्दर श्याम मनोहर मूरत
अंग अंग सुख दैननु ॥१॥ वृन्दावन बिहार दिनदिन
प्रति गोप वृन्द संग लैननु ॥ हँसि हँसि हरष पतो
वन पावन बांटि बांटि पय फेननु ॥२॥ कुंभनदास कि
ते दिन बीते किये रेन सुख सैननु ॥ अब गिरधर बि

न निस और वासर मन न रहत कैसो चैननु ॥ ३॥

यह पद मार्ग में गावत आए सो आय कें श्री गोव
र्द्धन नाथ जी के दर्शन कीये और दोय दिन सों दर्शन
न भए सो कुंभनदास जी को दोय जुग की परावस्थाते
सो श्री मुख देखत ही सब दुख बिसर गयो तब एक प
द गायो सो पद ॥

## राग धनाश्री

नैन भरि देखौ नन्द कुमार ॥ ता दिन ते सब भूलि गयो
हों बिसर्यो पन परवार ॥१॥ बिन देखें हों बिकल भ
यो हों अंग अंग सब हारि ॥ ताते सुधि है सांवरी मूर
ति की लोचन भरि भरि वार ॥२॥ रूपरास पर मिनन
ही मानों कैसे मिलें लों कन्हाई ॥ कुंभनदास प्रभु
गोवर्द्धन धर मिलिये बहुर री माई ॥३॥

## राग धनाश्री

हिलगन कठिन है या मन की ॥ जाके लिये देखि मेरि
सजनी लाज गई सब तन की ॥१॥ धर्म जाउ अरु लोग
हँसो सब अरु आवो कुल गारी ॥ सो क्यों रहे ताहि बि
न देखें जो जाकों हितकारी ॥२॥ रस लुब्धक निमिख न
छांड़त ज्यों आधीन म्रग गानों ॥ कुंभनदास सनेह पर
म श्री गोवर्द्धन धर जानों ॥

ऐसे पद बहुत कुंभनदास जी ने गाये सो सुनि के श्री
नाथ जी बहुत प्रसन्न भए और कछोलर मो बिन
रहत नाही ॥४॥

## वार्ता प्रसंग ॥२॥

और एक समय राजा मानसिंह सब ठौर ते दिग्विजय

करि कें आपने देस कूं चले तब मन में विचारे जो बहुत
दिन में आये हैं ताते मथुरा विन्द्रावन होय कें चलनों
सो यह विचार कें आगरे ते चले सो मथुरा आए तब
विश्रांत स्नान करि कें श्री केसौराय जी के दर्शन करि
कें वृन्दावन चले सो उष्णकाल के दिन हुते तब वृन्दा
वन के सब महंतन ने जानी जो आज यहां राजा मान
सिंह दर्शन कों आवेगो सो यह जानि कें श्री ठाकुर जी
कों आछे आछे जरी के वागे बहुत आभरन पहराये
पिछवाई चंदोवा सब जरीन के बांधे इतने में राजा मान
सिंह दर्शन कों आयो सो भीतर मन्दिर के आय कें
श्री ठाकुर जी के दर्शन किये सो उष्णकाल के दिन हु
ते सो बहुत गरमी पड़े सो ता समय राजा मानसिंह पे ठा
डो न रह्यो गयो सो ऐसे दर्शन च्यार पांच जगह बडे हु
ते सो तहां सब ठौर दर्शन करि सब ठौर ते विदा होय
कें आपने डेरा में आये सो डेरा आय कें मन में विचारे
जो अब ही कूंच करें सो उहां सों असवार होय कें च
ले सो तीसरे पहर गोवर्द्धन गाम आये सो मानसीगं
गा ऊपर डेरा किये सो तहां श्री हरदेव जी के दर्शन किये
सो यहां वृन्दावन के महंतनने बड़े ठाठ बनाये हे ऐसोई
यहां ठाठ बनाय राख्यो हुतो सो राजा मानसिंह तहां ते
दर्शन करि कें चले तब काहू नें कही जो महाराज यहां
श्री गोवर्द्धननाथ जी बहुत सुन्दर ठाकुर हैं तहां आप
दर्शन कों चलौ तब राजा मानसिंह ने कह्यो जो यहां तो
अवश्य चलनों ये ठाकुर सब ब्रज के राजा हैं ताते इ
नके दर्शन तो अवश्य करने तब तहां ते चले सो गोपा

ल पुर गाम आए तब आय कें पूछी जो दर्शन कौ कहा
समय है तब काहू ने कही जो उत्थापन के दर्शन तो
होय चुके हैं अब भोग के दर्शन होयंगे तब यह सुनिकें
राजा मान सिंह श्री गोवर्द्धननाथ जी के दर्शन कों गि
रिराज ऊपर आये सो उष्णकाल के दिन मार्ग के श्रमि
त ह्वै के चले आये सो गरमी में राजा बहुत व्याकुल
भयो हुतो इतने में भोग के किवाड़ खुले सो राजा मान
सिंह कों मणि कोठा में लेगये तिन दिनन में श्रीनाथजी
की सेवा वैभव सों होतो हुती बड़ो मन्दिर सिद्ध भयो
हुतो श्री गोवर्द्धननाथ जी के आगे गुलाब जल कौ
सिंगार भयो हुतो निज मन्दिर मणि कोठा नि वारी स
ब जल मय होय रहे हुते सो ता समय राजामानसिंह

दर्शन कों गये हुते सो श्री गोवर्द्धननाथ जी के दर्शन करि कें साष्टांग दंडवत कीनी और गरमी में राजा व्याकुल भयो हुतो सो सीतलताई भई यहां चैन भयो और श्री गोवर्द्धननाथ जी को श्री मुख देखि कें राजा बहुत प्रस न्न भयो और कह्यो जो साक्षात पुरषोत्तम श्री कृष्ण वृन्दावनचन्द्र श्री गोवर्द्धननाथ जी हैं आगें श्रीभागवत में सुन्यो हुतो सो आज देख्यो आज को दिन सो धन्य है सो र आज मेरो बड़ो भाग्य है और मन में कह्यो जो यह भोग को समय है सो तो प्रभून की राजधानी है समय है सो प्रभू बिराजे हैं आगें ताल मृदंग बाजत हैं कीर्तन होत है सो कुंभनदास जी ठाड़े ठाड़े जगमोहन में दर्शन क रत हैं और कीर्तन गावत हैं सो राजा मानसिंह को मन या पद में गाढ गयो हुतो जैसोई कोटि कंदर्प लाव ण्य स्वरूप और जैसोई कीर्तन कुंभनदास जी करत हुते सो पद ॥

राग नट –

रूप देखि नैना पल लागे नहीं ॥ गोवर्द्धन के अंग अंग प्रति निरखि नैन मन रहत नहीं ॥ १ ॥ कहा कहों कछु कहत न आवे चित चाख्यो सोग येदही ॥ कुंभनदा स प्रभु के मिलन की सुन्दर बात सखिन सों कहीं ॥

राग धनाश्री

आवत मोहन मन जु हरयो हो ॥ सो वह अपने स . . . जु सों बैठी निरखि बदन अरबर बिसरयो हो ॥ १ ॥ रू पनिधान रसिक नंद नंदन निरखि बदन धीरज न प यो हो ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धनधर अंग अंग प्रेम

पियूष भरौ हो॥७॥

ऐसे पद कुंभनदासजी गावत है इतने में राजभो ग के दर्शन हो चुके तब राजा मानसिंह दंडोत करि के अपने डेरा में गयौ तब कुंभनदास जी संध्या आरती के दर्शन करिकें अपनी सेवा सों पहोंचि कें अपने घर कों पधे तब राजा मानसिंह अपने डेरा में जाय कें आप ने पास के मनुष्य हुते तिनमें श्री गोवर्द्धननाथजी के सिंगार की वार्ता करन लागे और कह्यो जो सब श्री

गोवर्द्धननाथ जी के आगें कौन गावत हुतौ इतने ऐसे विसन पद गाए हैं जो कछु कहिबे में नाहीं आवत तब काहू ने कही जो महाराज एक ब्रजवासी है कुंभ नदास नाम है सो आप सुने हो सोयंगो देसाधिपति सो

मिले हुते सोहें तब राजामानसिंह ने कही जो हमहू
नसों मिलें तो आछो तब राजामानसिंह सवारे उठ
के श्रीगिरराज की परिक्रमा कों निकसे जो परासो
ली आया सो परासोली में कुंभनदास जी न्हाय के बैठ
इतने में श्रीगोवर्द्धननाथजी पधारे सो श्रीमुख सों
कहें जो कुंभनदास जी होतौ सो एक बात कहूंगो ॥
तब इतने में राजा मानसिंह आयौ सो कुंभनदास जी
कों प्रनाम करिकें बैठौ और श्रीनाथजी तौ उहां तद
रूजाय ठाढ़े भए सो श्रीनाथ जी तो एक कुंभन दास
जी कों देखें हैं और दूसरे भतीजी को देखिहैं तब कुं
भनदास जी को दृष्टि तो श्रीनाथजी के संगही गई सो
श्रीनाथजी बैठे हैं तहां कुंभनदास जी देखिवे कों न
य भतीजी बोली जो बाबा राजा बैठे हैं तब कुंभनदास
जी ने कही जो मैं कहा करूं जो बैठे हैं तो जा चाल करत
हुते सो तो भाजि गये सो अब यहांतो तब दूसरे श्रीना
थजी कहें जो कुंभनदास मैं बात कहूंगो तब कुंभनदा
सजी प्रसन्न भये और भतीजी सों कहौ जो आपु को
आरसी लाउ तिलक करौं तब भतीजी ने कही जो
बाबा आरसी तो पड़िया पी गई तब राजा ने कुंभन
दास की भतीजी सों कही जो अरी छोरी पड़िया क
हां पी गई तब वह कटोरा में पानी लायकें कुंभन
दास जी के आगें धर्यो तब कुंभनदास जी वामें दे
खिकें तिलक करन लागे इतने में राजा मानसिंह
ने अपनी मोंति की आरसी कुंभनदास जी के आगें
धरी और कह्यो जो बाबा यामें देखिकें तिलक करि

ये तब कुंभनदास जी बोले जो अरे भैया याकों हौंक हा करूंगो हमारे तो यहां करील के घर हैं जाते कोउ याके पीछे हमारो जीव लेयगो जाते हमें तो यह नाहीं चहियत हैं तब राजा मानसिंह ने इनके आगे मोहर की थैली धरी तब कुंभनदास ने कह्यो जो भैया हम कों तो यह नाहीं चहियत हमारे तो यह खेती है ता को धन आवत हैं सो खात हैं तब राजा मानसिंह ने कह्यो जो भलो आप को गांव है ताकों लिखवा हौं करिदेउं तब कुंभनदास ने कह्यो जो भैया हमारो ग्राम गाम नाहीं जो तेरो उदक लेउं तब फेरि राजा मानसिंह ने कह्यो जो बाबा कछु तो आज्ञा करो तब कुंभनदास ने कह्यो जो हमारो कह्यो करोगे तब राजा मानसिंह ने हाथ जोर कह्यो जो आप कहोगे सो करूंगो तब कुंभनदास ने कह्यो जो फेरि मेरे पास तुम मति आइयो तब राजा मानसिंह ने कह्यो जो धन्य है माया के भक्त तो सगरी पृथ्वी में फिर्यो सो बहुत देखे परि भगवद्भक्त तो एक यही देखे यह कहि के राजा मानसिंह कुंभनदास को दंडोत करिके उठि चल्यो तब फेरि आय के कुंभनदास सों श्रीनाथजी ने बहुत मान करी और बहुत प्रसन्न भये तब फेरि कुंभनदास जी श्री गिरिराज ऊपर आय के श्रीनाथजी की सेवा में तत्पर भये॥

## वार्ताप्रसंग ३

और एक समय कुंभनदास जी कों मिलिवे कों वृन्दावन के मदन हरिवंसभक्त आये सो यह जानि

कें आये सो महापुरुष हैं इनमें श्रीठाकुरजी बोलतहैं
बातें करत हैं और काव्य इनकी सुनी सो कीर्तन बहु
त सुन्दर कीये ताते ऐसे पद श्रीठाकुरजी के साक्षा
त्कार बिना न होंय यह जानि कें कुंभनदास सों मि
लवे आये सो कुंभनदास जी सों मिलि कें बहुत प्रसन्न
भए और कह्यौ जो कुंभनदास जी तुमनें विसम पद
बहुत कीये हैं सो हमनें आय कें सुने हैं और आप के
पद श्रीस्वामिनी जी को नाहीं सुन्यौ ताते आप कोई
स्वामिनी जी कौ पद सुनावो तब कुंभनदास जीने श्री
स्वामिनीजी कौ पद करि कें गायो सो पद ॥

राग राम कली

ताल चरचरी ॥

कुमरि राधिका के तुव सकल सौभाग्य की वा वदन
पर कोटि सत चंद्र वारों ॥ खंजन कुरंग सत कोटि नै
घन ऊपर मिंद सत कोटि उपन्यौं छावर उतारो मन्न स
न कोटि चालि पर कुंभ सत कोटि इन कुचन पर वारि
डारों ॥१॥ कीर दश कोटि दशानन परि कोहिन वारौ
पंक के दूर बहूत सत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचिर
गर्भ टारों ॥ नाग सत कोटि बैनी ऊपर कपोत सत को
टि कीर जुगल परवार नें नाहिन कोउ लोक उपमा जु
धारौ ॥२॥ दास कुंभन स्वामिनी सुन खीसख आनि
अद्भुत सुठान कहां लगि समारों ॥ लाल गिरधर क
हत मोहि सोहि लो जीन्ह रूप छिन छिन निहारों ॥
॥३॥ ✣ ✣ ✣ यह प
द कुंभनदास ने गायौ सो सुनि कें महंत बहुत ही रीझे

और कहें जो हमनें श्री स्वामिनी जी के पद बहुत कीये हें परि यहां उपमा दीनी हे और वार फेरि डारी ताते कुंभन दास जी आप बड़े महा पुरुष हो आप की सराहना कहां तांई करिये सो महंत ने कुंभन दास की बड़ी बड़ाई करी बहुत रीझे ता पाछे वे महंत आदि सब कुंभन दास जी सों विदा होय कें अपने घर गये ॥

## वार्ता प्रसंग ॥ ८ ॥

और एक समय श्री गुसांई जी श्री गोकुल में आपने घरते श्री नवनीत प्रिया जी सों आज्ञा मांगि कें विदे सार्थ द्वारिका कों पधारे सो श्री गुसांई जी श्री नाथ जी द्वार पधारे सो श्री नाथ जी कों सेवा सिंगार कीये ता पाछे आप भोजन करिकें गादी उपर विराजे तब सब सेवक दर्शन कों आये तब बातचलत में कुंभन दास जी की बात चली तब काहू वैष्णव नें कह्यो जो महाराज कुंभन दास जी कों द्रव्य को बहुत संकोच हे सात बेटा हू हें और उपजत तो एक खेती की हे ताको धन आवत हे तासों निर्वाह करत हे सो यह बात श्री गुसांई जीनें अपने मन में राखी ता पाछें उत्थापन के समय कुंभन दास जी दर्शन कों आये तब श्री गुसांई अपने श्री मुख सों कहे जो कुंभन दास हम श्री द्वारिका रणछोड़ जी के दर्शन को पधारेंगे और विदेस हू होयगो वैष्णव ने बहुत करिकें लिख्यो हे ताते जो तुम संग चलोगे तो विदेस में भगवदीय को ग्रह काल बाधा न होय तब भगवदीय को काल व्यतीत हो आप कछू जान्यो न परे और में सुन्यो हे जो कछु तुम्हारे द्र

ब्य कों संकोच है सो उहां सिद्धि होयगो ताते सर्वथा तुम कों चल्यौ चाहिये तब कुंभन दास ने कही जो आ ज्ञा इतने में दर्शन को समय भयो सो श्री गुसांई जी आप स्नान करिकें श्री नाथ जी के मन्दिर में पधारे श्री नाथ जी की सेवा सों पहुंच कें श्री नाथ जी कों पो ढाय के बैठक में पधारे और कुंभन दास जी कों सीख दीनी जो कुंभन दास जी तुम सेवा ते पहुंच कें बेग आइ यो हम काल्हि आरती करिकें अपछरा कुंड उपर जा य रहेंगे तब कुंभन दास जी श्री गुसांई जी को दंडोत करकें अपने घर कों आये सवारे सेवा सों पहुंचि कें श्री नाथ जी के दर्शन करिकें अपछरा कुंड उपर आ ये और श्री गुसांई जी श्री नाथ सों सीख मांगि कें आ पनीचे आये पाछें आप भोजन किये और सब सेव कन को महा प्रसाद लिवायो सो पाछें ताही समय में महूर्त हुतो सो श्री गुसांई आप पर्वत नीचे आये सो अपछरा कुंड उपर आये सो तहां अपछरा उपर डेरा करे हुते सब सेवक आगारु सो ठाढे हुते सो श्री गुसांई जी डेरा पधारि कें पोढे इतने में सब सेवक सामान ले कें बेहु आये सो कुंभन दास उहां बैठि कें बिचारत हुते क हिये जो कहिवे को होय प्राननाथ बिछुरन की बिरियां जानत नाहिन कोउ यह बिचार करत उत्थापन को स भयो तब श्री गुसांई जी आप भीतर डेरा में जागे औ र कुंभन दास जी कूं दर्शन की सुधि आई सो यहां पू छरी को और कोने में जाय कें बैठि कीर्तन गावत हैं २ और आंखिन में ते जल को प्रवाह बहत हो सो कुंभ

नदास नें एक पद गायो सो पद ॥

राग सारंग

केतेकु दिन जु गए बिन देखें ॥ तरुण किशोर रसिक नंदनंदन कछु क उठति मुख रेखें ॥१॥ वह शोभा वह कांति वदन की कोटिक चंद विशेषें ॥ वह चितवन वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेषें ॥२॥ श्याम सुन्दर संग मिलि खेलन की आवत जिये अपेखें ॥ कुंभनदास लाल गिरधर बिन जीवन जन्म अलेखें ॥३॥

यह पद कुंभनदास नें गायो सो श्री गुसांईजी आपडेरा के भीतर सुनें सो कुंभनदास जी को कष्ट श्री गुसांई जी सों सह्यो न गयो सो श्री गुसांई जी आपडेरा के बाहर पधारे और श्री मुखनें कह्यो जो कुंभनदास अब तुम बेगि जाउ तुम्हारो बिदेस होय चुक्यो और जो तुम्हारी अवस्था है ऐसी उनकी अवस्था है सो कैसें जानियें जो श्री आकाजीने गज्जन धावन को पान लेवे को पठायो सो गज्जन कोतो भगवद आसक्ति देखे बिना एक क्षण हू न रह्यो जाय सो गज्जन धावन पान लेवे कों बाहिर गये सो थोरी सी दूर गये और ज्वर चढि आयो सो मूरछा खाय के गिरे और श्री आका जी ने श्री नवनीत प्रियाजी कों भोग समर्प्यो तब श्री नवनीत प्रियाजीनें गज्जन धावन को बोलन सुन्यो तब श्री नवनीत प्रियाजीनें अपने श्री मुख सों कह्यो जो मेरो गज्जन धावन कहां है तब श्री आकाजीनें कह्यो जो वह तो पान लेवे कों गयो है तब श्री नवनीत प्रियाजी ने कह्यो जो मेरो गज्जन धावन आवेगो तब

आरोगे सो श्री हस्त खैंचि कें बैठि रहे तब बेगि गज्जन धावन कों बुलायो तब गज्जन धावन ने कही जो वा बा आरोगो तब श्री नवनीत प्रिया जी आरोगे हैं यह श्री आचार्य जी महा प्रभून की मर्यादा है जो जिननो सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय और भगवद गीता में भगवान कहे हैं ॥ श्लोक

ये यथा मां प्रपद्यन्ते ।

तांस्तथैव भजाम्यहं

यह आधो श्लोक कह्यो ताते श्री मुख सों कहे जो इहां तुम्हारी विवस्था और उनकी विवस्था है सो ऐसो॰ कुंभनदास को और श्री नाथजी को विरह हुतो ताते श्री गुसांई जी ने कुंभनदास कों मंत्र दीनो तब कुंभन दास ने श्री नाथजी के दर्शन कीये तब कुंभनदास ने एक पद गायो सो पद ॥

राग सारंग

जो पै चोंप मिलन की होय ॥ तो क्यों रहे ताहि बिन देखे लाख करो जिन कोय ॥१॥ जो पै विरह परस्पर व्यापे जो कछु जीवन बने ॥ लोक लाज कुल की मर्यादा एको चित न गने ॥२॥ कुंभनदास प्रभु जाहि तन लागी और न कछु सुहाय ॥ गिरधर लाल तोहि बिन देखे छिन छिन कलप बिहाय ॥३॥

सो यह पद कुंभनदास ने श्री नाथजी के सन्निधान गायो सो सुनिके श्री नाथजी बहुत प्रसन्न भए सो कुंभनदास श्री नाथजी को देखि के प्रसन्न भये ॥

## वार्ताप्रसंग ५

और एक समय कुंभनदास जी श्री गुसाईं जी के पास बैठे हुते तब कुंभनदास ने श्री गुसांई जी सों कह्यो जो महाराज बेटा डेढ़ है और हैं तो सात तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो कुंभनदास डेढ़ कौ कारन कहा तब फोर कुंभनदास जी कहे जो महाराज आखो बेटा तो चत्रभुजदास है और आधो बेटा कृस्नदास है सो श्री नाथ जी की गायन की सेवा करत है तासों आधो है कुंभनदास जी कृस्नदास सों आधो क्यों कहे ताको हेत यह जो श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पुष्टी मार्ग प्रगट कीयो है सो पुष्टी मार्ग कहा है जो ब्रज भक्तन को हेत यह मार्ग प्रगट कीयो है सो भगवदीय गाए हैं जो सेवा रीति प्रीत ब्रज जन की जन हित जग प्रगटाई सो ब्रजभक्तन की कहा रीति है जो श्री ठाकुर जी के सन्निधान तो सेवा करें और श्री ठाकुर जी वन में पधारें तब गुण गान करें जो ए यस होय तो आखो और इनमें ते एक होय तो आधो ताते चत्रभुजदास सेवा और गुण गान है ताते आखो और कृस्नदास में एक सेवा है सो आधो तब श्री गुसांई जी श्री मुख ते कहे जो भगवदीय हैं तेई बेटा हैं और बहुत भये तो कौन काम के यह चत्रभुजदास की वार्ता में लिखे हैं ॥

## अब कृस्नदास की वार्ता

सो वे कृस्नदास श्री नाथ जी की गायन के ग्वाल हुते श्री गुसांई जी ने इनको गायन की सेवा दीनी हुती सो कृस्नदास श्री नाथ जी की गायन की सेवा करते सवा

रें खिरक सेवा सों पहुंच कें फेरि गायचरायवे कौंजा
ते सो सारे दिन कृस्नदास गायन की सेवा करतेसे
एक दिन गायचरायकें पूछरीकी और कृस्नदास गा
यन के संग आवत हुते सो सगरी गाय तो खिरक में
आई और गाय बड़ी हुती ताकौं ओन बहुत भारी हु
तो सो वह गाय बहुत हरवे चलती सो वा गाय कौं
आवत अंधियारौ परिगयौ सो तहां पर्वत के नीचे
अंधियारे में एक नाहर निकस्यौ सो गाय पै दौरयौ
तब कृस्नदास कहें जो अरे अधर्मी यह श्रीनाथ
जी की गाय है तू भूखौ होय तो मेरे ऊपर आउ तब
इतने में गाय तो भाजि खिरक में गई और नाहर ने
कृस्नदास कौं अपराध कीयो और ऊपर कहि आ

रहे हैं जो गाय सब खिरक में आई तब श्रीनाथ जी आ
प गाय दुहिवे कों आये सो सब गाय श्यान दुहत हैं
और वह बड़ी गाय खिरक में आई सो वह गाय कों
श्री दुहिवे कों बैठे और कृस्नदास बछरा थामें हैं
और वह गाय बछरा कों चाटत है सो ऐसे दर्शन कुं
भनदास जी कों भये ता पाछें गोदुहन करीके श्रीना
थजी गिरराज ऊपर मन्दिर में पधारे तब श्रीगुसांई
जीनें भोग समर्प्यो और कुंभनदास जी खिरक में से
आये सो दंडोती सिला पास ठाड़े भये इतने में समाचा
र आये जो कृस्नदास कों नाहर नें मार्यो सो सुनि कें कुं
भन दास जी मूर्छा खाय कें गिरे सो ऐसे गिरे जो देहा
नु संधान भूलि गये तब कुंभनदास जी कों सब कोउ
बुलावें परि बोलें नाहीं तब ये समाचार काहू नें श्रीगु
सांई सों कहे जो महाराज कृस्नदास कों नाहर नें मा
र्यो और गाय कों कृस्नदास नें बचाई सो कृस्नदास
उहां ही परे हैं तब श्री गुसांई जी कहे जो गाय कबहूं
न छोड़ि आवें अंत समै गाय संकल्प करत हैं ताकों
गाय उत्तम लोक कों लै जात है और कृस्नदास नें तो
श्रीनाथ जी की गाय बचाई है ताते कृस्नदास कों गाय
बैकुंठ छोड़ आवेगी और श्री गुसांई जी नें कह्यो जो
कुंभन दास जी कहां हैं तब काहू वैस्नवन नें कही
जो महाराज कुंभन दास जी कों कलेस बहुत बाधा
कीयो है जो कुंभनदास जी ऊपर आवत हुते सो कुंभ
नदास जी के आगें काहू नें कृस्नदास के समाचार
कहे सो सुनत ही कुंभनदास जी मूर्छा खाय के गिरे

सो लोग बहुत ही बुलावत हैं परि आवत नाहीं तब श्री
गुसांई जीने अपने श्री मुख सों कह्यौ जो फेरि कुंभन॰
दास जी को खबर लावो जो कुंभनदास जी की देह कैसें
है सो वे आय कें कुंभनदास जी को पुकारे तब समा
चार श्री गुसांई जी सों कहे जो महाराज कुंभन दास जी
तो कछु समझत नाहीं तब श्री गुसांई जी तो सेनभोग
के दर्शन करि कें श्रीनाथ जी को पोढ़ाय कें आपनीचे
पधारे सो देख कें मार्ग के सामें कुंभनदास जी परे हैं
और लोग चारों ओर ठाड़े हैं सो कहत हैं जो कुंभन
दास जी कैसें भगवदीय हैं परि पुत्र को सोक बहुत चु
रो होत है या पीरा सों कोई बच्यो नाहीं काहे ते जो अप
नी आत्मा है तब यह बात लोगन की सुनि कें श्री गुसांई
जी मन में विचारे जो इहां तो कारण कछु और है और
लोगन को तो कछु और भाखत हैं तातें भगवदीय को
स्वरूप करिबे के लियें श्री गुसांई जी अपने श्री मु
ख सों कहे जो कुंभनदास जी सवारें तुम वेगि आइयो
तुम कों श्री गोवर्द्धननाथ जी के दर्शन करामेंगे तुम मन
मे खेद मति करो इतनो श्री गुसांई जी श्री मुख सों कहे
तब कुंभनदास जी उठि ठाड़े भये और प्रसन्न भए तब
श्री गुसांई जी कों दंडौत करि कें कुंभनदास को जो कै
य करनो हो सो सब कीयो पाछे सवारें कुंभनदास जी
दर्शन कों आये श्रीनाथ जी को सिंगार करि कें श्री
गुसांई जी सों कह्यौ जो प्रथम कुंभनदास जी को दर्शन
कराय देउ सो कुंभन दास जी बहुमवन के ऊपर यह प्र
कार कीयो जो सूत की को कौन मन्दिर मे जान देतो सो

कुंभनदासजी के अनुग्रह ते सबकोउ दर्शन करतहैं सो कुंभनदास जी नित्य एक बेर दर्शन करिकें परासोली में आय बेठते सो वहां बेठें बेठें विरह के पद गावते सो पद ॥

## राग धनाश्री

तुम्हारे मिलन बिन दुखित गुपाल ॥ अति आतुर व्रज सुन्दर प्यारे विरही बेहाल ॥१॥ सीतल चन्द तप तभयो दाहक किरण कमल जनु जाल ॥ चन्दन कुमुम सुहाय घनसार लगत बड़ी ज्वाल ॥२॥ कुंभनदास प्रभू नव धन तुम बिन कनक लता मानो सूखी जीवमाकाल ॥ अधरामृत बंसी सींचि लेउ तुम गिरगोवर्द्धन लाल ॥३॥

## राग धनाश्री

अब दिन रात्रि पहर से भए ॥ तब ते निघटत नाहिन जबते हरि मधुपुरी गये ॥१॥ यह जानियें विधाता जुग सम कीने जाम नए ॥ जागत जाग बिहातन के ऐसे सात ठये ॥ व्रजवासी अति परम दीन भए व्याकुल सोच लये ॥ उन प्राण दुखित जलरुह गन दारुण हेम परा ॥ कुंभनदास बिछुरत नंद नंदन बहुत संताप करे ॥ अब गिरधर बिन रहत निरंतर नैनन नीर झरा ॥

## राग केदारा

ऐसन को समीप बिछुरनो आयो मेरी हिसा ॥+॥ सबकोउ सोवे सुख अपने आली मोकूं बाढ़त रिसा ॥ नाजानों यह विधाता की गति मेरे आंक लिखे ऐसो कौन रिसा ॥ कुंभनदास प्रभू गिरधर कहत

निस दिन रहज्यों चातक घन त्रिसा ॥७॥
ऐसे पद गाय गाय कुंभनदास जीनें मूल ते पद कीये
पाछें वृद्ध होय कें कुंभनदास जी भगवद सेवा में आर्त
ऐसो जिनकों दर्शन की आरति सो वे कुंभन दास जी
श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र
भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं ताते इ
नकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥१॥
॥ वार्ता प्रसंग ॥६॥ वैस्नव ८३ ॥ सम्वंध १७५ ॥

अब श्री आचार्य जी महा
प्रभून के सेवक कृष्ण
दास अधिकारी
तिनकी वार्ता
लिख्यते

सो वे कृष्णदास शूद्र एक वेर द्वारिका गए हुते सो श्री
रणछोड जी के दर्शन करिकें तहां ते चले सो आधन
मीरा बाई के गांव आये सो वे कृष्णदास मीरा बाई के
घर गए तहां हरिवंश व्यास आदि दे विशेष सब वैष्ण
व हुते सो काहू कों आये आठ दिन काहू कों आये द
श दिन काहू कों आए पंद्रह दिन भये हुते तिनकी वि
दा न भई हुती और कृष्णदास ने तो आवतें ही कह्यो
जो हूं तो चलूंगो तब मीराबाई ने कह्यो जो बैठो तब वि
तनीक मोहर श्री नाथ जी कों देन लागी सो कृष्णदास
नें न लीनी और कह्यो जो तू श्री आचार्य जी महाप्रभु
न की सेवक नाहीं होत ताते तेरी भेट हम हाथ ते छूवेंगे
नाहीं सो ऐसें कहि कें कृष्णदास उहांते उठि चले सो

जब आगे आये तब एक वैस्नवन नें कह्यौ जो तुम नें श्री
नाथजी की भेंट नाहीं लीनी तब कृस्नदास ने कह्यौ जो
भेंट की कहा है परि मीराबाई के यहां जितने सेवक बैठे
हुते तिन सबन की नाक नीची करिकें भेंट फेरी है इतने
दूक ठौर कहां मिलते येह जानेंगे जो एक बेर सुद्ध श्री
आचार्य जी महाप्रभून कौ सेवक आयौ हुतौ ताने भेंट
न लीनी तो तिनके गुरु की कहा बात होयगी ॥ ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥

और प्रथम सेवा श्रीनाथ जी की बंगाली करते जो श्री
आचार्य जी महाप्रभून नें मुकट काछनी हीरा के आभ
रन भराय दीने हैं सो नित्य धरते सो भेंट आवती सो खर्च
होती कछु संग्रह न राखते सब खर्च होय जातो और
बंगाली सेवा करते पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कृ
स्नदास कों आज्ञा दीनी जो तुम श्री गोवर्द्धन रहो सेवा
टहल करौ तब कृस्नदास अधिकारी भए अधिकार
करन लागे पाछें एक दिन मथुरा कों चलन लागे सो
अडींग लों पहुंचे तब पेंड़े में अवधूत दास मिले महापुरु
ष हुते व्रज में फिरौ करते सो कृस्नदास कों मिले तब
अवधूत दास ने कह्यौ जो कृस्नदास तुम कहां चले तब
कृस्नदास नें कही जो मथुरा जात हों कछु काम है तब
अवधूत दास ने पूछी जो श्रीनाथ जी की सेवा कौन क
रत है तब कृस्नदास नें कही जो बंगाली करत हैं तब अव
धूत दास नें कही जो श्री नाथ जी कों अपनों वैभव बढाव
नो है ताते तुम बंगालीन कों दूर क्यों नाहीं करत सो अव
धूत दास सों श्रीनाथ जी नें कह्यौ जो मोकों बंगाली बहु

त दुखदेनहैं सो तब बंगाली श्री नाथजी कों भोग धरते
सो उनकी चुटि में छोटो सो स्वरूप हतो देवी को सो सा
म्हें बैठावते जब भोग सरावते या देवी कों अपनी चुटि
या मे धर लेते ऐसे सदा करते सो बात अवधूतदास ५
कों श्रीनाथजीने जनाई ताते अवधूत दासने ५
कृस्नदास सों कह्यो जो तुम बंगालीन कों दूर करो तब
कृस्नदास नें कही जो श्री गुसांईजी की आज्ञा बिना वे
सें कादें तब अवधूतदासने कह्यो जो तुम अडेल में जा
यके श्री गुसांईजी की आज्ञा ले आवो जैसें बनें तैसें
इन बंगाली कों कादो तब कृस्नदास अडींग ते फिरे सो
श्री गोवर्द्धन आए तब बंगालीन सों कह्यो जो हूं तो
श्री गुसांईजी के पास अडेल जात हों तुम श्री नाथजी
की सेवा सावधानी सों करियो और सब सेवक हते
तिनसों कृस्नदासनें कह्यो जो हूं तो श्री गुसांईजी के
पास कछू काम है सो अडेल कों जात हों तुम साव
धान रहियो ता पाछें श्री नाथजी सों बिदा होय के अ
डेल कों चले सो दिन पंद्रह में श्री गुसांईजी के पास
आय पहुंचे सो आय कें श्री गुसांईजी को दंडोत कीये
तब श्री गुसांईजीने पूछो जो कृस्नदास तुम क्यों आये
तब कृस्नदास नें कही जो श्री नाथजी को अपनों वै
भव बढावनों है और बंगालीन नें बहुत मांयो उठायो
है जो भेट आवत है सो ले जात हैं सो सब अपने गुरू
न कों देत हैं तब श्री गुसांईजी कहे जो श्री आचार्यजी
महाप्रभू आसुर्व्यामोह लीला दिखाई ता पाछें श्री गो
पीनाथजी पूरब को परदेश कीयो सो एक लक्ष की

भेट भई पाछें अडेल आये तब श्री गोपीनाथजीनें क
ही जो यह फल्लो परदेश है ताते यामें आयौ सो सब
श्री नाथजी कौ है श्री नाथजी कौ विनियोग कीयो चा
हियै तो पाछें श्री गोपीनाथजी दिन दश बारह रह कें
पाछें श्री नाथजीद्वार पधारे सो जाय पहुंचे तब श्री गो
पीनाथजीनें दर्शन कीयौ पाछें जो लाये हते सो सब
भेट कीयौ आभूखन सब जड़ाव के समराये थार कटो
रा, डबरा, चमचा, तष्टी, प्रभृत, सब सोंना रूपा के कीये
सब करिकें श्री नाथजी सों विदा होय कें श्री गोपीना
थजी अडेल आये तो पाछें बंगाली बरस एक के भीत
र सब लेगये अपने गुरू के यहां जाय कें दीयौ यह बात
श्री गुसांई जीनें कृस्नदास सों कही और कह्यो जो बं
गालीननें माथौ उठायो है परि ये श्री आचार्यजी महा
प्रभून के राखे हैं सो कैसें निकसेंगे तब कृस्नदास नें श्री
गुसांई जी सों कह्यो जो महाराज श्री नाथजी की आ
ज्ञा है जो बंगालीन कौं निकासो ताते आप या बात में
कछू मति बोलो मोकों आप आज्ञा करो तो अपनों
आप करि लेउंगो जैसें बंगाली निकसेंगे तैसें काढूं
गो तब श्री गुसांई जीनें कह्यो जो अवश्य तब कृस्न
दास नें कह्यो जो महाराज दोय पत्र लिखिये एक राजा
टोडर मल्ल के नाम को एक बीरबल के नाम को तब श्री
गुसांई जीनें दोय पत्र लिखि दीने राजा टोडरमल्ल कों
और बीरबल कों लिख्यो जो कृस्नदास कों श्री नाथ
जीद्वार भेजे हैं जो तुम सों कृस्नदास कहे सो करि दे
ये सो पत्र लेकें श्रीनाथजी द्वार कों चले सो आगरे आ

ए तहां टोडरमल्ल राजा बीरबलसों मिले पत्र श्री गु
सांईजी के हुते सो दीये सो उन पत्र बांचि कें कृष्णदास
सों कह्यौ जो तुम कहो तैसें करें तब कृष्णदासनें क
ह्यौ जो अब तौ में मथुरा जात हों बंगालीन कों काढि
वे कों ना पाउं कृष्णदास राजा टोडरमल्ल सों बिदा हो
य कें श्रीनाथजीद्वार कों चले सो मथुरा आए तब मा
र्ग में अवधूतदास मिले तब कृष्णदास सों अवधूत
दासनें कही जो कृष्णदासजी ढील कहा करि राखी
है बंगालीन कों काढो श्रीनाथजी की ऐसी इच्छा है
श्रीनाथजी कों अपनों वैभव बढावनों है तब कृष्ण
दासनें कह्यौ जो श्रीगुसांईजी की आज्ञा लेकें आयो
हों अब जाय कें बंगालीन कों काढत हों इतनों कहि
कें कृष्णदास चले सो श्रीनाथजीद्वार आये सो वे
बंगाली सब रुद्रकुंड उपर रहते सो उहां उनकी झों
परी हुती सो कृष्णदास नें जराय दीनी तब सोर भयो ॥
तब बंगाली सेवा छोड़ कें पर्वत के नीचें आये तब कृ
ष्णदासनें पर्वत उपर अपने मनुष्य पठाय दीये तब बं
गाली देखे तौ कृष्णदासनें झोंपरी में आग लगाय
दीनी हैं तब सब बंगाली कृष्णदास सों लरन लागे
तब कृष्णदास नें दैदै चारचार लाठी सबन में दीनी
तब वे बंगाली तहां ते भाजे सो मथुरा आये तब रूपस
नातन के पास आय कें सब बात कही तब इतने में कृ
ष्णदास हू आय ठाडे भये तब रूपसनातन ने कृष्णदा
स के उपर खीजि कें कह्यौ जो बेचारे शूद्र तू कौन जो ॥
इन ब्राह्मनान कों मारें तब कृष्णदास ने कही जो हूं

सूद्रहौ परि तुमहूं तौ ब्राम्हनहो औ नाहीं तुमहूतौ का
यस्थहौ तव सनातन नें कह्यौ जो यहवात पात्साह
सुनेंगौ तौ तू कहा जुवाव देयगौ तव कृष्णदासनें क
ह्यौ जो हौं तौ नीके जुवाव देयगौ परि तुम कों जुवाव
देत में दुखहोयगौ और तुमकों जवाव न आवेगौ
जो तुम कायस्थ होयकें इनब्राह्मनन सौं दंडौत करा
वतहौ तव रूप सनातन तौ चुप है रहे और वंगालीन
सौं कह्यौ जो तुम जानौं ए जानौं तव वंगाली मथुरा
के हाकिम पास गये तव कृष्णदास जाय ठाडे भये
तव हाकिम नें कह्यौ जो भयौ सो तौ भयौ परि अव इ
न कौं राखौ तव कृष्णदासनें कह्यौ जो अव तौ इन
कौं न राखेंगे क्यौं हमारे चाकर हुते सो हमनें इनकौं
सेवा सौंपी हुती सो ए सेवा छोड़ के क्यौं आये जो इन
की झोंपरी जरगई हुती तौ हम नई छवाय देते तातें
अव हम तौ न राखेंगे ता ऊपर तुम कहत हौ जो हम
श्री गुसांई जी कौं लिखेंगे वे कहेंगे तैसें करेंगे तुम
श्री गुसांई जी कौं लिखौ पाछें कृष्णदास श्रीनाथ
जीद्वार आये और वंगाली सव अपने श्री कुंड आये
तव कृष्णदासनें श्री गुसांई जी कौं पत्र लिख्यौ तामें
वंगाली काढ़े सो सव समाचार विस्तार करि कें लिखे
और लिख्यौ जो अव पधारिये तौ भलौ है सो पत्र श्री
गुसांई जी के पास अडेल आयौ तापाछें श्री गुसांई
जी अडेल तें चले सो श्रीनाथ जीद्वार आये तव वे वं
गाली सव आये तव श्री गुसांई जी सौं कह्यौ जो हम
कौं श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सेवा में राखे हुते सो

कृष्णदास नें हमकों काढे तब श्री गुसांईं जी ने कह्यौ॥ जो तुम सेवा छोड़िकें क्यों गये दोष तुम्हारौ है तातें अब तो सेवा में न आवौगे तब वे बंगाली बहुत बीनती करन लागे जो महाराज अब हम न आवेंगे कहा तब श्री गुसांईं जीनें इनकों श्रीनाथ जीके बदले श्री मदन मोहन जी की सेवा दीनी और कह्यौ जो इनकी सेवा तुम करियो जो आवै॥ सो खाइयो तब वे बंगाली श्री मदन मोहन जीकी सेवा करन लागे तातें उन बंगालीन नें श्री गोवर्द्धन रहिबो छोड़ दियो ता पाछें श्री नाथ जीकी सेवा में गुजराती ब्राह्मण भीतरिया राखे श्री नाथ जीकों अपनों वैभव बढावनो हो सो सब भीतरियान कौ नेग और सब सेवकन कौ नेग जो जा भांति श्री नाथ जीनें कह्यौ ता भांति श्री गुसांईं जीनें बांध्यौ तबतें श्री नाथ जी की सेवा प्रनालिका तें होन लागी और कृष्णदास अधिकार करन लागे॥५

## वार्ता प्रसंग॥७॥

बहुरि श्री नाथ जीनें कृष्णदास कों आज्ञा दीनी जो श्याम कुमरि कों लैकें ताल पखावज लैकें तू परासोली में आइयो सो श्याम कुमर आछो मृदंग बजावतो॥ सो श्री नाथ जीकी सेन आरती उपरांत अनोसर भयौ तब कृष्णदास श्याम कुमरि के घर गये तब कृष्णदास नें श्याम कुमरि सों कह्यौ जो श्री नाथ जीनें आज्ञा करी है सो मृदंग लैकें परासोली चलो तब श्याम कुमर नें कह्यौ जो मोहू कों श्रीनाथ जीनें आज्ञा करी है तातें चलिये तब श्याम कुमर मृदंग लैकें आयौ तब कृष्णदास और श्याम कुमर ए दोउ जनें परासोली आए

सोदेखें तो श्री नाथ जी स्वामिनी जी सहित बिराजें हैं।
तब श्री नाथ जी ने श्याम कुमर सों कह्यो जो तू तौ मृदंग
बजाय और कृष्णदास सों कह्यौ जो तू कीर्तन करि और
श्रीनाथ जी और श्री स्वामिनी जी नृत्य कीयो तहां कृष्ण
दास नें पद गायौ सो पद

## राग केदारो

श्री वृषभानुनन्दनी नाचत गिरधर संग लागडाट उर प
तिर परस रंग राख्यौ ॥ झपताल मिल्यौ राग केदारो
सम सुरन अवघर तान रंग राख्यौ ॥१॥ पाई सुख सि
द्धि भरत काम विविधि रिद्धि अभिनव दल सत सुहाग
हुलास रंग राख्यौ ॥ वनिता सत जूथ संग लिये निर
खत कौं सघन चन्द बलिहारी कृष्णदास सुघर रंग
राख्यौ ॥२॥

यह पद कृष्णदास नें गायौ श्याम कुमार नें मृदंग बजा
यौ श्री नाथजी और स्वामिनी जी नृत्य कीयौ तातें श्री
महाप्रभुजी की कानितें श्रीनाथजी कृष्णदास के ऊपर
ऐसी कृपा करत हुते ॥

वार्ता प्रसंग ३ ॥

और कृष्णदास नें बहुत पद कीये तब एक समें सूर
दासजीनें कृष्णदास सों पूछी जो तुम पद करत हो तामें
मेरी छाया है तब कृष्णदास नें सूरदास जी सों कही ५
जो अब कें ऐसो पद करूं जो जामें तुम्हारी छाया न
आवै तब कृष्णदास एकांत में बैठि कें एकाग्र चि
त्त करि कें नयौ पद करन लागे सो जामें तीन तुक कौ
कीयौ और चौथी तुक बनें नाहीं तब घड़ी दोय लों
विचारे जो आगें तुक चलत नाहीं तो भलौ फेरि प्रसाद
लै कें विचारेंगे सो जा पत्र में लिखत हुते सो पत्र तथा द्वा
ति लेखनी उहांई धरि कें प्रसाद लेवे कों उठे जब कृष्ण
दास प्रसाद लेवे कों बैठे तब श्रीनाथजीनें आप तीन तु
क वा पत्र में अपने श्रीहस्त सों लिखि दीये कृष्णदा
सनें आधौ पद कियौ हुतो ताकों आप श्रीनाथजी पू
रो करि कें आप तो पधारे तापाछें कृष्णदास प्रसाद ५
लै कें आये तब देखौ तो श्रीनाथजी पूरो पद करि कें
श्रीहस्त सों लिख गये हैं सो देख कें कृष्णदास बहुत
प्रसन्न भये और कहें जो सूरदास जी आवें तो पद सु
नावें तब उत्थापन के समय सूरदास जी दर्शन कों आ
ये तब कृष्णदास नें कही जो सूरदास जी नयौ पद एक
मैंनें कीयौ है तामें तुम्हारी छाया नाहीं धरी तब सूरदा

सजीनें कह्यौ जो कह्यौ सुनोंतब आनों तब पद कह्यौसो
पद ॥*

राग गौरी ॥*

आवत बनें कान्ह गोपबालक मगनें चुकी खुर रेनु
कुटिल अलकावली ॥ भौंहें मनमथ चापवक्र लोच
न बान सीस सोभित मत्त मयूर चन्द्रावली ॥१॥ उदित
उडुराज सुन्दर सिरोमणि बदन निरखि फूलीन बल्लभ
बली कुमुदावली ॥ अरुना सकुच अधर बिंब फल
हसात कहत कछुक प्रकोटित होत कुंद दसनावली ॥
२॥ श्रवण कुंडल भाल तिलक बेसरि नाक कंठ कौ
स्तुभमणि सुभग त्रिवली बली ॥ रत्न हाटक खचित उर
सि पदिक निर्पाति बाच राजत सुभ उलक मुक्तावली

॥३॥ अथ श्रीनाथजी कृत ॥ वलय कंकण बाजूबंद
आजानु भुज मुद्रिका करतल विराजत नखावली ॥ कुं
णातर मुरलिका मोहित अखिल विश्व गोपिकाजनम
नि सु सथित प्रेमावली ॥४॥ कटि क्षुद्र घंटिकाजटित
हीरा मयी नाभि अम्बुज वलित भृंग रोमावली ॥ धाय
कबहुक चलत भक्त हित जानि पिय गंड मण्डल रुचि
र श्रम जल कणावली ॥५॥ पीत कौसेय परिधाने सुं
दर अंग चरणा नूपुर वाद्य गीत सब बावली ॥ दास कृ
ष्णदास गिरधर चरण लाल की चरणा नख चन्द्रिका ह
रति तिमिरावली ॥६॥ यह पद कृष्णदास नें सूरदास
जी के आगें कह्यौ सो सूरदास जी तीन तुक तोई तौ बो
ले नाहीं और तीन तुक के आगे कहन लागे तब सूरदा
सजी नें कृष्णदास सों कह्यौ जो कृष्णदास मेरें तुम
सों वाद है और प्रभून सों वाद नाहीं मैं प्रभून की बानी
पहिचानत हों तब कृष्णदास चुप करि रहे ताते कृष्ण
दास ऐसे भगवदीय हैं ॥

वार्ता प्रसंग ॥४॥

और एक समय श्रीनाथ जी के भंडार में कछु सामिग्री
चहियत हती सो कृष्णदास गाड़ा लैकें आगरे कों आ
ये सो आगरे के बाजार में एक वेस्या नृत्य करत हती
ख्याल टप्पा गावत हती और भीर हती सब लोगन
मासौ देखत हुते सो कृष्णदास बाजार में तमासे में
जाय ठाड़े भये तब भीर सरकि गई तब वह वेस्या कृ
ष्णदास के आगें नृत्य करन लागी सो वह वेस्या ब
हुत सुन्दर और गावै बहुत आछौ नृत्य तैसौई क

रे सो कृष्णदास वा वेस्या के ऊपर रीझे और मन में कही
जो यह तो श्रीनाथजी के लायक है ता पाछें वा वेस्या
कों दश मुद्रा तो उहांही दीये और कही जो रात्रि कों स
माज सहित आइयो ता पाछें कृष्णदास उहां हवेली
में उतरे सो सामिग्री चहियत हती सो सब लैकें गाड़ा
लदाय सिद्ध करवायौ ता पाछें रात्रि पहर गई तब वे
स्या समाज सहित आई ता पाछें नृत्य भयौ गान भयौ
वा पै कृष्णदास बहुत रीझे सो रुपैया सत एक दीये तब
वा वेस्या सों कह्यो जो तेरो गान हू आछौ और नृत्य
हू आछौ पर हमारो सेठ है सो तेरे ख्याल टप्पान ऊ
पर रीझैगो नाहीं ताते हों कहों सो गाइयों ता पाछें कृ
ष्णदास नें एक पूर्वी राग में पद करिकें सिखयौ ता पा
छें दूसरे दिन वा वेस्या कों साथ लैकें चले सो आगरे तें

आय पाछें तीसरे दिन श्रीनाथजी द्वार आये सामग्री
सब भंडार में धराई ता पाछें जब उत्थापन कौ समय भ
यौ तब कीर्तनिया कुंभनदास कौं बारी न दीयें तब वा वे
श्या कौं समाज सहित लेगये श्रीगुसांईजी मन्दिर में
ठाड़े श्रीनाथजी कौं मूर्दा करत हैं और मणि कोठा में
वेश्या नृत्य करन लागी और यह पद गायौ ॥ सो पद

राग पूरवी ॥

मो मन गिरधर छवि पर अटकौ ॥ ललित त्रिभंगी अं
गन परि चलि गयौ तहांई ठटकौ ॥१॥ सजल श्याम
घन बरण लीन है फिर चित आनि न भटकौ ॥ कृ
ष्णदास कियौ प्राण न्यौछावरि यह तन जग सिर प
टकौ ॥ यह पद वा वेश्या नें गायौ सो जब गावत २
पिछली तुक आई जो कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछा
वरि यह तन जग सिर पटकौ इतनौं कहत मात्र वा
वेश्या के प्राण ततकाल निकसि गये और दिव्य स्वरू
प धरिकें श्रीनाथजी की लीला में प्राप्त भई और वा
वेश्या के समाजी हुते सो मरन लागे जो हमारी तौ या
तें जीविका हुती अब हम कहा खायगे तब कृष्णदास
नें कह्यौ जो तुम कौं रोकत हौ चलौ नीचे खाय वे कौं
देउं तब उन समाजीन कौं नीचें लायकें कृष्णदास नें २
सहस्र रुपैया दे बिदा किये कृष्णदास नें अपने मन
ते समर्पी ताते श्रीनाथजी नें वा वेश्या कौं अंगीकार
करी ताते श्री आचार्यजी महाप्रभून की कानि तें
सेवक की समर्पी वस्तु या भांति सों अंगीकार कर
त हैं ॥

## वार्ताप्रसंग ५

और कृष्णदास कों गंगाबाई सों बहुत स्नेह हुतो सो श्री
गुसांई जी कों न सुहावते सो एक दिन श्री गुसांई जी श्री
नाथजी कों भोग समर्पित हुते सो सामिग्री ऊपर गंगा
बाई की दृष्टि परी ताते श्री नाथ जी आरोगे नाहीं परि
भोग तो समर्प्यौ ता पाछें समय भयो तब भोग सराये
तब आरती करि अनोसरि करिकें श्री गुसांई जी आप
नीचें पधारे तब सेवक आदि भीतरिया सबनें प्रशाद
लीयौ तब श्री गुसांई जी आप तो भोजन करिकें पो
ढे तब श्री नाथजीनें भीतरिया कों लात मारि कें
जगायौ और वासों कहें जो हूं तो भूखो हूं तब वा भी
तरिया नें कह्यौ जो महाराज श्री गुसांई जी ने भोग सम-

ग्यौ हो और तुम भूखे क्यों रहे तब श्री नाथ जी नें कह्यो
जो राज भोग में तो गंगाबाई की दृष्टि परी हुती तातें आ
जभोग आरोग्यो नाहीं तब वह भीतरिया उठि श्री गु
सांईं जी के पास आयो सो श्री गुसांईं जी भोजन करि
कें पाछे हुते तब भीतरिया नें आय कें श्री गुसांईं जी के
चरण दाबे तब श्री गुसांईं जीनें कि उठे तब तेरे तो
श्री नाथ जी को भीतरिया है तब वा भीतरिया सों पूछी
जो यहां इतनी बेर कहां आयो है तब वा भीतरिया
नें कह्यो जो महाराज आज श्री नाथ जी भूखे हे मोकों
लात मारि कें जगायो और कह्यो जो आज तो में भूखो
हों तब मैंनें श्री नाथ जी सों कह्यो जो महाराज भोग
तो श्री गुसांईं जी नें समर्प्यो है तुम भूखे क्यों रहे तब
श्री नाथ जी नें कह्यो जो सामग्री पर तो गंगाबाई की दृ
ष्टि परी तातें में नाहीं आरोग्यो तब श्री गुसांईं जी सुन
तही तत्काल स्नान करि कें पर्वत ऊपर पधारे सो व
ह भीतरिया हू स्नान करकें श्री गुसांईं जी के साथ ही
आयो तब श्री गुसांईं जी नें वा भीतरिया सों कही
जो भात और बड़ी करो जो तत्काल सिद्ध होय आवे
तब भात और बड़ी करी सो तत्काल सिद्ध भयो तब
श्री नाथ जी को भोग समर्प्यो पाछें भीतरिया रसोई
करि कें स्नान करि कें पर्वत ऊपर आये तब श्री गुसां
ईं जी की आज्ञा भई जो राजभोग की सामग्री तो भई
सिद्ध तो पाछें राजभोग सेन भोग इकठोरे समर्प्यो ता
पाछे समय भयो तब भोग सराय सेन आरती करी
तब श्री नाथ जी कों पोढाये भोग सरायो हो सो प्रसाद

एक डबरा में उहांई रहि गयौ तब रामदास भीतरियानें कह्यौ जो पहलौ भात समर्प्यो हतो सो उहांही रहि गयो तब श्री गुसांईं जी डबरा मेंतें ठलाय कें लेन उतरे पाछें सब संपकल कों बह बड़ो भात को महाप्रसाद स्वाद तें कहि दीनों ता पाछें श्री गुसांईं जी आपहू आरोगे सो वह बड़ो भात को प्रसाद अति अद्भुत भयो अति अलौकिक स्वाद भयो सो श्री गुसांईं जी आप सराह्यौ तब कृस्नदास ठाड़े हते तब कृस्नदासनें कही जो महाराज आपही करनेहारे आपही आरोगनेहारे तो कौंन उत्तम होय तब श्री गुसांईं जीनें हँसि कें कह्यो जो तुम्हारे ही कीये भोगत हैं ॥

## वार्ता प्रसंग ६

अब जो यह बात श्री गुसांईं जीनें कही जो ये तुम्हारे ही कीये फल भोगत हैं सो यह बात सुनि कें कृस्नदासनें श्री गुसांईं जी सों बिगाड़ी तब श्री गुसांईं जी सों कृस्नदासनें कह्यौ जो तुम पर्वत उपर मति चढ़ौ तब श्री गुसांईं जी आप तो तहां ते फिरे सो परासौली में आय रहे तब मन में बिचारे जो कृस्नदास कहा मनें करेगो पर श्री नाथ जी की इच्छा ऐसी है सो श्री नाथ जी की इच्छा जानि कें कछू बोले नाहीं सो आप परासौली में रहे सो परासौली में ध्वजा के साम्हें बैठ के बिज्ञप्ति कीये और श्री गुसांईं जी तीन दिन तो श्री गोवर्द्धन रहते और तीन दिन श्री गोकुल रहते तब ते परासौली आय रहे तब श्री गुसांईं जी श्री नाथ जी के मन्दिर की ध्वजा को परासौली की ओर

पदनी ताके साम्हें बैठि ने तब श्री नाथजी आप खिर
की में आय दर्शन देते तब यह जानि कें कृष्णदासने
परासौली की और की खिर की तनवाय दीनी तब ते
श्री गुसांई जी गोकुल ते जब परासौली आवते तब
रामदास जी सब सेवक आदि दे श्री नाथ जी को राज
भोग आरती कार कें अनोसर करिकें श्री गुसांई जी के
दर्शन कों परासौली आवते सो आय कें चरणोदक
लेंय पाछें प्रसाद लेते सो कृष्णदास कों सुहावतौ
नाहीं और सब सेवक श्री गुसांई जी के दर्शन बिना
महाप्रसाद कैसें लेंय परि सेवकन सों कृष्णदास
की चलै नाहीं और श्री गुसांई जी एक पत्र लिख कें
रामदास भीतरिया कों देते और कहते जो श्रीनाथ
जी कों दे दीजो सो पत्र श्री नाथ जी कों देते श्रीनाथजी
विज्ञप्ति उत्तर लिखि कें रामदास कों देते सो रामदास
श्री गुसांई जी कों देते तब श्री गुसांई जी वा पत्र कों
बांचि कें पानी में पीजाते या भांति सों छै महीना बी
ते परि श्री गुसांई जीनें श्रीनाथजी कों अधिकारी
वैष्णव जानि कें और श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक जानि कछू न कह्यो परि श्री नाथ जी के विरह
कौ स्नेह बहुत करते या भांति छै महीना भए तब ए
क दिन राजा बीरबल आय निकसे तब ता दिन तौ
श्री गुसांई जी परासौली हुते श्री गिरधर जी घर हुते
तब राजा बीरबल ने श्री गुसांई जी कों खबर कराई
तब पौरियान नें कही जो श्री गुसांई जी तौ परासौली
हैं श्री गिरधर जी घर हैं तब राजा श्री गिरधर जी के

दर्शनकों आए तब वीरबल सों श्री गिरधर जीने क
ही जो कृष्णदास अधिकारी काकाजी कों श्रीनाथ
जी के दर्शन नाहीं करन देत सो काकाजी कों खेद ब
हुत होतहै काकाजी परासोली में जाय दर्शन करतहैं
तब बीरबलनें श्री गिरधर जी सों कह्यौ जो अब हूं जा
य के कृष्णदास को काढूंगो यों कहिकें राजा बीरबल
श्री गिरधर जी सों बिदा होय के मथुरा आये और
श्री गुसांई जी परासोली तें श्री गोकुल आये और
बीरबलनें पांच सौ मनुष्य भेजे और कह्यौ जो कृष्ण
दास कों पकरि लावो सो वे मनुष्य श्री गोवर्द्धन औ
य कें कृष्णदास को पकरि लाये सो वे बीरबल नें
कृष्णदास कों बन्दीखाने में दीनो तब श्री गिरधर जी
सों कहवाय पठाई जो कृष्णदास को बन्दीखाने में
डालोहै तब श्री गिरधर जीनें श्री गुसांई जी सों कह्यौ
जो कृष्णदास को बन्दीखाने में दीनें हैं तब श्री गुसांई
जी नें कह्यौ जो हाय हाय श्री आचार्य जी महाप्रभून
को सेवकन कों ऐसो कष्ट तब श्री गुसांई जीनें श्री गि
रधर जी सों कह्यौ जो तुमनें कह्यो होयगो तब श्री गि
रधर जीनें कह्यौ जो हमनें तो बीरबल सों सहजही क
ह्यो हुतो जो काकाजी कों दर्शन नाहीं करन देत सो
काकाजी कों बहुत खेद होत हैं तब श्री गुसांई जी
ने कह्यौ जो भोजन तब करूंगो तब कृष्णदास आ
वैगो तब श्री गिरधर जी तत्काल घोड़ा मंगाय अस
वार होयकें मथुरा को आये तब बीरबल सों कह्यौ
जो काकाजी भोजन नाहीं करत तातें कृष्णदास कों

कोईदेउ तब राजा बीरबलनें कृष्णदास श्री गिरधरजीके

हवालें करदीयो तब श्री गिरधरजी तत्काल सगले श्री गोकुल आये तब श्री गुसांईजीनें सुनी जो श्री गिरधरजी कृष्णदास कों साथ लेकें आवत हैं सो श्री गुसांईजी ठकुरानी घाट ऊपर पहुंचे और वा और ते कृष्णदास आये सो श्री गुसांईजी को दर्शन कीयो और दंडोत करी और एक नयो पद करिकें गायो सो पद ॥

राग केदारो

श्री विठ्ठल जू के चरण की वलि ॥ हमसे पतित उधारन कारन परम कृपालु आप आपन चलि ॥ १ ॥ उज्वल अरुण दया रंग रंजित दश नख चन्द्र बिहरत मन निर्दलि ॥ शुभग कर सुख कर सोभन पावन भक्त मुदित

ललितकर अंजलि ॥२॥ आनि सेमर बुल सुगंधसु सीतल परन त्रिविध तापहारत मल ॥ भजि कृस्न दास चार एक सुधि करि तेरो कहा करेगो रिपुकल ॥३॥ ✦

यह पद श्री गुसांई जी के आगे गायो पाछें श्री गुसांई जी कृस्नदास कों अपने घर ले आये पाछें कृस्नदास सों श्री गुसांई जीनें कह्यो जो उठो भोजन करो तब कृस्नदास नें कह्यो महाराज आप भोजन किये पाछें में झूठन लेउंगो तब श्री गुसांई जी भोजन कों बैठे तब कृस्नदास ने एक पद और गायो सो पद

राग कान्हरौ

ताही कों सिर नाइये जो श्री वल्लभ सुत पद रज रति होय ॥ कीजे कहा आन ऊंचे पद तिनसों कहा सगाई मोय ॥१॥ सप्त सार विचार मतो करि श्रुति वच गोधन लियो निचोय ॥ तहां नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजई गोरस लियो बिलोय ॥२॥ जाके मन में उपभरमहे श्री विठ्ठल श्री गिरधर दोय ॥ ताको संग विषम विषहू से भूलिहू चातुर करहे जिन कोय ॥ जिन प्रताप देखि अपने चख असम सास्त्रो भिदेन तोहि ॥ कृस्नदास ते सुर ते असुर भये असुर ते सुर भये चरणन छोइ ॥४॥

यह पद सुनि कें श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये पाछें श्री गुसांई जी भोजन करिकें पधारे तब कृस्नदास सों कह्यो जो अब जाउ भोजन करो तब कृस्नदास भीतर गये तब श्री गिरधर जीनें श्री गुसांई जी की

झूंठन की पातर कृष्णदास के आगे धरी तब कृष्णदास ने महाप्रशाद लीनों पाछें बीड़ा दोय दीये रात्रि कों कृष्णदास वहांई सोय रहे ता पाछें पिछली रात्रि घड़ी दोय रही तब श्री गुसांई जी उठि देह कृत करिकें स्नान कीयो श्री नवनीत प्रिया जी के मंगला के दर्शन करिकें बाहिर पधारे तब श्री नाथ जी द्वार पधारबे की तैयारी कीये तब घोड़ा दोय मंगाये एक घोड़ा ऊपर श्री गुसांई जी असवार भये एक घोड़ा ऊपर कृष्णदास असवार कीयो और श्री गोकुल ते चले सो श्री नाथ जी द्वार दिन पहर सवा एक चढ़े जाय पहुंचे सो यहां श्री नाथ जी को राज भोग आयो हुतो सो श्री गुसांई जी तत्काल स्नान करि कें ऊपर पधारे और श्री गुसांई जी विज्ञप्ति पत्र पासैं लातें लिखते सो रामदास भीतरिया के हाथ पठावते ता को प्रति उत्तर श्री नाथ जी पत्र में लिखि कें श्री गुसांई जी कों पठावते सो श्री गुसांई जी जल में धोय पीजाते सो पिछले दिन को पत्र श्री नाथ जी के हस्ताक्षर को सो श्री गुसांई जी राखे हुते सो पत्र साथ ही ले आये हुते पाछें श्री नाथ जी को राज भोग आयो हुतो सो समय भयो तब श्री गुसांई जी भोग सराइबे कों पधारे तब श्री गुसांई जी कों देखि कें श्री नाथ जी बहुत प्रसन्न भये और पूछे जो नीके हो तब श्री गुसांई जी कहे जो तुम कों देखे सोई नीके हैं पाछें परस्पर दोउ जने मुसिकाये पाछें श्री गुसांई जी राज भोग सराये पाछें यह पत्र हुतो सो झांपी में धर्यो पाछें राजभोग के दर्शन खुले तब

कृस्नदास नें कीये पाछें श्री गुसांई जी राजभोग आरती
करि अनोंसर करि नीचें पधारे पाछें रसोई करि भोग
समर्पित भोजन करि श्री गुसांई जी पोढे सो उत्थापन
ते घड़ी दोय पहिलें उठे पाछें उत्थापन को समय भयो
स्नान करि ऊपर पधारे सो संखनाद करवायो श्री
नाथ जी के उत्थापन भए पाछें सेंन आरती उपरांत द
र्शन करिकें कृस्नदास कों श्री नाथ जी के सन्निधान
बुलायो और कह्यो जो कृस्नदास तुम अधिकार करौ
और श्री नाथ जी जी की सेवा नीकी भांति सों करियों
तब कृस्नदास नें श्री नाथ जी के सन्निधान एक पद गा
यो सो पद ॥

## राग कान्हरौ

परम कृपाल श्री वल्लभ नंदन करत कृपा निज हाथ दे
माथे ॥ जे जन सरन आये अनुसरही गहि सों पति
श्री गोवर्द्धन नाथें ॥१॥ परम उदार चतुर चिंतामणि रा
खत भव धारा ते साथें ॥ भजि कृस्नदास काज सब स
व सरहीं जो जानें श्री विट्ठल नाथें ॥२॥

यह पद गायो और बीनती कीनी जो महाराज मेरो
अपराध क्षमा करो तब श्री गुसांई जीनें कह्यो तुम्हा
रो अपराध श्री नाथ जी क्षमा करेंगे पाछें कृस्नदास को
बिदा कीयो पाछें श्री नाथ जी कों पोढाय कें श्री गुसां
ई जी नीचें उतरे श्री गुसांई जी परम दयाल कृस्नदास
को कृत कछु मन में न आनो श्री आचार्य जी के सेव
क जानि अनुग्रह कीयो पाछें श्री गुसांई जी दिन दो
य रहे पाछें श्री गोकुल पधारे फिर कृस्नदास श्री गु

साईं जी की आज्ञा तें अधिकार करन लागे ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ७ ॥

सो बहुत बरस लों भली भांति सों अधिकार कीयो पाछें एक वैष्णव नें कृष्णदास सों कही जो मोकों एक कूआ बनवावनो है और मोकों अपने देश कों जानो है तातें द्रव्य तुम कों दे जात हों सो तुम बनवाय दीजो तब कृष्णदास नें कही जो आछो तब वह वैष्णव तीन सौ रुपये दैकें अपने देस कों गयो तब कृष्णदास ने उन रुपैयान में तें एक सौ रुपैया एक कलस में धरि कें आम के वृक्ष के नीचे गाड़ दीये कह्यो जो दाय से रुपैया लागि चुकेंगे तब इनकों काढेंगे सो आछो महूर्त देखि कें रुद्र कुंड ऊपर कूआ खुदायो तब कितेक दिन में वह कूआ मौंहड़े तांई बनि कें तैयार भयो और दाय से रुपैया लगे सो लोटा वाको रह्यो तब उत्थापन के दर्शन करिकें कृष्णदास कूआ देखन कों गये सो हाथ में आसा हतो सो आसा टेक कें कूआ के ऊपर ठाड़े भये सो वह आसा सरक्यो तब कृष्णदास कूआ में जाय पड़े तब तो मनुष्य दोय कूआ में उतरे सो बहुत से ढूंढें परि कृष्णदास को सरीर हू न पायो तब सब मनुष्य उहां तें फिर आये सो ता समय श्री गुसांई जी श्री नाथ जी कों सैन भोग धरिकें मंदिर में बिराजे हते और रामदास श्री गुसांई जी के पास बैठे हते ता समय काहू नें आय कें कह्यो जो महाराज कृष्णदास नें कूआ बनवायो है सो कृष्णदास देखन गये हते सो आसा टेकि कें कूआ के मौंहड़े ऊपर ठाड़े

हुते सो आसा सरकौ सो कूआ में गिर परे और मनु
ष्य दोय कृष्णदास को ढूंढवे कौ उतरे सो बहोतेरौ

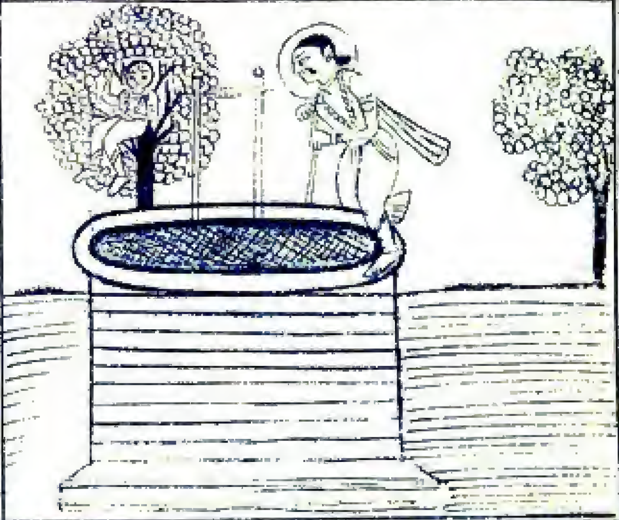

ढूंढे पर सरिरहू न पायौ कहा जानिये कहा भयौ तब
रामदास जी कहें ॥ जो

अथोपक्रान्ततामसा:

तब श्री गुसांई जी कहें जो रामदास ऐसें न कहि अ
ब जो कृष्णदास कूआ में गिरे सो सरीर न मिल्यौ ता
कौ कारन कहा सो ताकौ कारन यह जो कृष्णदास में
कोई अलौकिक जीव हुतो सो तो श्रीनाथ जी की
सेवा में प्राप्त भयौ और कृष्णदास ने या सरीर सों
श्री गुसांई जी को अवज्ञा करी है जो यह सरीर अलौ
किक जीव भुगत नाँहीं सो कूआ में गिरत मात्र कृ

स्नदास कौ सरीर लौकिक भयो होयकें पूंछरी की ओर एक वृक्ष है पीपर कौ तहां प्रेत होय कें रह्यो भग वत कौ तातें कृस्नदास कौ सरीर कृष्ण में न मिल्यौ श्री गुसांई जी को आवत जाने कृस्नदास को यह गति भई जो प्रेत होय कें पूंछरी की ओर पीपर के वृक्ष ऊपर बैठे रहत हैं ॥

## वार्ता प्रसंग ॥ ८ ॥

और एक समय श्री नाथ जी की भैंस खोय गई हती सो गोपीनाथ ग्वाल और चार पांच ग्वाल पूंछरी की ओ र ढूंढवे कों गये हुते सो गोपीनाथ देखें तो पूंछरी की ओर श्री नाथ जी खेलत हैं और एक पीपर ऊपर कृ स्नदास प्रेत ह्वै कें बैठे हैं तब कृस्नदास नें गोपीनाथ ग्वाल सों कही जो और भैया मेरी बीनती श्री गुसांई

श्री सों करियो और कहियो जो कृस्नदास नें कह्यो
है जो हों तुम्हारो अपराधी हों ताते मेरी यह अवस्था
है हूं श्री नाथ जी के पास हूं तोहू मेरी गति होत नहीं
ताते मेरो अपराध क्षमा करो तो मेरी गति होय औ
र बाग में एक आम के वृक्ष के नीचे कुल्हरा में एक सा
रुपैया गड़े हैं सो काढ़ि के या कूआ को मठोठा या
कीर होहै सो बनवाओ तो मेरी गति होय सो गोपी
नाथ ग्वाल नें यह बात श्री गुसांई जी के आगें कही
जो महाराज कृस्नदास अधिकारी नें यह बीनती करी
है तब श्री गुसांई जी नें आम के नीचे ते रुपैया लाय
के मठोठा कूआ को बनवायो तब कृस्नदास की ग
ति भई कृस्नदास को प्रेत जोन में श्री नाथ जी दर्शन
देते ताको कारन यह जो श्री नाथ जी के सन्निधान
श्री गुसांई जी नें कृस्नदास सों कह्यो जो कृस्नदास
तुम अधिकार करो और श्री नाथ जी की सेवा नीकी
भांति सों करियो तब कृस्नदास नें कह्यो जो महाराज
मेरो अपराध क्षमा करो तब श्री गुसांई जी नें कह्यो
जो तुम्हारो अपराध श्री नाथ जी क्षमा करेंगे सो श्री
नाथ जी की कृपा ते श्री नाथ जी नें अपराध क्षमा
करो सो प्रेत जोन में दर्शन देते पर स्पर्शन कीयो जो
स्पर्श होय तो उद्धार होय सो उद्धार तो श्री गुसांई जी के
हाथ है कृस्नदास श्री नाथ जी सों कहते जो महाराज
तुम मोकों दर्शन देत हो मोसों बोलत हो और मैं प्रे
त हों ताते मेरो उद्धार क्यों नाहीं करत तब श्री नाथ
जी नें कह्यो जो हूं तोको दर्शन देत हों बोलत हों सो तो

श्री गुसांई जी के वचन के लिये नाहीं तो प्रेत जौन में
दर्शन नाहीं देनो और बोलनो हू नाहीं और उद्धार
तो श्री गुसांई जी के हाथ है तेने श्री गुसांई जी को अ
पराध कीयो है ताते श्री गुसांई जी उद्धार करेंगे तब
होयगो तो पाछें श्री गुसांई जी आप परम कृपाल
कृष्णदास के ऊपर दया आई जो अब तो बहुत
दिन भये हैं ताते अब उद्धार होय तो भलो तब श्री
गुसांई जी ध्रुव घाट ऊपर आय कें कृष्णदास कौ
कर्म करवाय उद्धार कीयो तब कृष्णदास कौ उद्धार
भयो और लीला में प्राप्ति भयो और श्री गुसांई जी
कहें जो कृष्णदास ने तीन बात आछी करी एक
तौ अधिकार कीयो सो ऐसो कीयो जो फेरि ऐसो
न करेगो दूसरें कीर्तन कीये सो अद्भुत कीये और
तीसरे श्री आचार्य जी महाप्रभून की सेवक होय
कें सेवाहू ऐसी करी जो कोउ न करेगो ताते वे कृ
ष्णदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम
कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कौ पार
नाहीं ताते इन की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥
॥ प्रसंग ॥ ६ ॥ सम्बन्ध ॥ ८४ ॥ वैष्णव ॥ ८४ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक परम कृपापात्र।
चौरासी मुख्य वैष्णव
न की लिखी सो।
सम्पूर्णम् ॥

श्रीगणेशाय नमः

अथ श्रीचौरासी वार्ता के वैष्णवों की वार्ताओं का सूचीपत्र लिख्यते॥



| नाम वैष्णव | पृष्ठ | पंक्ति | नाम वैष्णव | पृष्ठ | पंक्ति |
|---|---|---|---|---|---|
| दामोदरदास हरसानी की | २ | ५ | वेणीदास माधोदास दो | ७२ | ४ |
| कृष्णदास मेघन क्षत्री | १० | ५ | उ भाईन की वार्ता | | |
| दामोदरदास सम्भरवार | १९ | १ | हरिवंश पाठक सारस्वत | ७५ | १६ |
| क्षत्री की वार्ता | | | गोविंददास भल्ला की वा | ७७ | ९ |
| पद्मनाभदास कन्नौजिया | ३१ | १३ | रम्या क्षत्राणी की वार्ता | ८१ | १२ |
| ब्राह्मण की वार्ता | | | गज्जन धावन क्षत्री की | ८३ | २४ |
| पद्मनाभदास की बेटी तु | ४३ | २४ | नारायनदास ब्रह्मचारी | ८७ | ६ |
| लसा बाई की वार्ता | | | सारस्वत ब्राह्मण की वार्ता | | |
| पद्मनाभदास के बेटा की | ४५ | २३ | महावन की वासी एक | ९३ | ४ |
| बहू पार्वती ता की वार्ता | | | सन्यासी ता की वार्ता | | |
| पद्मनाभदास की नाती पै | ४७ | १३ | जीयदास क्षत्री सर की | ९४ | १८ |
| ठेनी को बेटा रघुनाथदास | | | देवा क्षत्री कपूर की वार्ता | ९६ | ८ |
| रजो क्षत्राणी अडेल की | ४९ | ४ | सेठ दिनकरदास की | ९७ | १२ |
| सेठ पुरुषोत्तमदास क्षत्री | ५१ | २० | मुकुन्ददास कायस्थ की | ९९ | १२ |
| बनारस के वासी की वार्ता | | | प्रभूदास जलोटा क्षत्री सि | १०० | १८ |
| सेठ पुरुषोत्तमदास की | ६० | २५ | हनंद के वासी की वार्ता | | |
| बेटी रुक्मणी की वार्ता | | | प्रभूदास भाट की वार्ता | १०७ | ९ |
| सेठ पुरुषोत्तमदास के बे | ६३ | ६ | पुरुषोत्तमदास आगरे में | ११० | ७ |
| टा गोपालदास की वार्ता | | | राजघाट पै रहते ता की | | |
| रामदास सारस्वत ब्राह्मण | ६४ | १७ | त्रिपुरदास कायस्थ शेर | ११२ | १५ |
| गदाधरदास सारस्वत ब्रा | ६६ | ७ | गढ के वासी की वार्ता | | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पूरनमल्ल खत्री की वार्ता | ११८ | २३ | बाबा वेणु और कृष्णदास | १८० | ६ |
| यादवेंद्रदास कुम्हार की | १२१ | २ | घघरिया तथा देवदास | | |
| गुसांईदास सारस्वत की | १२३ | ७ | दूलर की वार्ता | | |
| माधौदास भट्ट काश्मीर | १२५ | १९ | ज्ञानानंद सारस्वत ब्रा | १८१ | २ |
| के वासी की वार्ता | | | थानेश्वर के वासी की | | |
| गोपालदास की वार्ता | १२९ | २३ | आनंददास विश्वंभरदा | १८३ | २५ |
| पद्मनावदास सांचोरा ब्राह्म | १३७ | १८ | स दोऊ भाई क्षत्रीन की | | |
| ण उज्जैन के वासी की वा | | | एक ब्राह्मण की वार्ता | १८४ | २० |
| पुरुषोत्तम जोसी की वार्ता | १४१ | ८ | एक ब्राह्मणी की वार्ता | १९७ | ८ |
| जगन्नाथ जोसी की वार्ता | १४४ | २ | गोरजा, सम्बाई, सास ब | २०० | ११ |
| जगन्नाथ जोसी की माता की | १४६ | ११ | हू सीहनंद की वासी की | | |
| जगन्नाथ जोसी के बड़े भा | १५२ | ७ | रुक्मनी बहू जी की दासी | २०६ | १६ |
| ई नरहर जोसी की वार्ता | | | कृष्णा दासी की वार्ता | | |
| गणाव्यास सांचोरा ब्राह्मण | १५७ | २२ | बूला मिश्र पंडित की वार्ता | २०८ | २ |
| गोधरा के वासी की वार्ता | | | मीराबाई के पुरोहित राम | २११ | ११ |
| रामदास सारस्वत ब्राह्मण | १६२ | २४ | दास की वार्ता | | |
| सिद्धनपुर के वासी की वार्ता | | | रामदास चौहान की वार्ता | २१२ | २ |
| गोविंददुबे सांचोरा की वा | १६५ | १ | रामानंद पंडित की वा | २१४ | १२ |
| राजादुबे माधोदुबे दोऊ | १६० | १६ | विष्णुदास छीपी की वा | २१७ | १५ |
| भाईन की वार्ता | | | जीवनदास क्षत्री कपूर | २२१ | २ |
| उत्तम श्लोकदास सांचो | १७१ | ५ | सीहनंद के वासी की वा | | |
| रा ब्राह्मण की वार्ता | | | भगवानदास सारस्वत | २२३ | ६ |
| ईश्वरदुबे सांचोरा की वार्ता | १७७ | १७ | ब्राह्मण की वार्ता | | |
| वासदेवदास छकड़ा सा | १७८ | २३ | भगवानदास श्रीनाथजी | २२४ | २ |
| रस्वत ब्राह्मण की वार्ता | | | के भीतरिया की वार्ता | | |

| | | |
|---|---|---|
| अच्युतदास सनोढिया ब्राह्मण की वार्ता· | २२६ | २२ |
| अच्युतदास गौड़ ब्रा· की· | २२७ | २४ |
| अच्युतदास सारस्वत की· | २२८ | २२ |
| नारायनदास अम्बाले के वासी की वार्ता· | २३१ | २२ |
| नारायनदास भाट मथुरा के वासी की वार्ता· | २३३ | २३ |
| नारायनदास चौहान· ठट्ठे के वासी की वार्ता· | २३४ | २३ |
| गोविन्द की॰ ब्राह्मणी की· | २४० | २३ |
| दामोदरदास कायस्थ की | २४३ | ४ |
| स्त्री पुरुष दोउ दालीन की· | २४४ | २० |
| गडेन्ध के मूर्ति कारीगर की· | २४६ | ८ |
| एक अन्य मार्गीय के से ही एक ब्राह्मी की वार्ता· | २४७ | ७ |
| लघु पुरुषोत्तमदास की· | २४८ | २२ |
| कविराज भाट की वार्ता· | २४९ | २३ |
| गोपालदास गंगा के वासी की वार्ता | २५० | २ |
| जनार्दनदास चोपड़ा की | २५० | २२ |
| गदू स्वामी सनोढिया की· | २५१ | २० |
| कन्हैया साल क्षत्री की· | २५२ | २३ |
| नरहरदास गौड़िया की | २५३ | १४ |
| चाचा गमप्रसादास की वार्ता | २५४ | २२ |

| | | |
|---|---|---|
| मदूपांडे तथा मानिकचंद्र पांडे तथा इनकी स्त्रीन· यानरोचंदी की वार्ता· | २५६ | ८ |
| नरहरदास संन्यासी की· | २६१ | ६ |
| गोपालदास जटाधारी श्री नाथ जी की रसोई के की· | २६३ | ४ |
| कृष्णदास ब्राह्मण की· | २६५ | १६ |
| संतदास चोपड़ा क्षत्री· आगरे के वासी की वार्ता | २७१ | २१ |
| सुन्दरदास श्री जगन्नाथ जी के पास रहते तिनकी वा· | २७७ | ९ |
| माधजी पटेल तथा इनकी स्त्री विरजो की वार्ता· | २७८ | ८ |
| गोपालदास गौड़ा के वासी की वार्ता | २८२ | ६ |
| सूरदासजी गऊघाट के वासी तिनकी वार्ता· | २८५ | ७८ |
| परमानन्ददास कनौजिया ब्राह्मण की वार्ता | ३०४ | २ |
| कुम्भनदास गोरवा की वार्ता | ३३० | १४ |
| कृष्णदास अधिकारी की वार्ता· | ३५१ | २९ |


इति सम्पूर्णम् ॥